बापूकी छायामें

बलवन्तसिंह

नवजीवन प्रकाशन मंदिर
अहमदाबाद

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद – १४

पहली आवृत्ति ५०००, १९५७

ढाओी रुपये

जनवरी, १९५७

श्रद्धाके फूल

पूज्य दादीजी, माताजी और पिताजीके श्रीचरणोमे
जिनके परिश्रमी और सस्कारी जीवनसे मुझे
परम पूज्य वापूजीके चरणोमे रहने
योग्य शुभ सस्कार मिले।

बलवतसिह

सेवककी प्रार्थना

हे नम्रताके सम्राट्!
दीन भंगीकी हीन कुटियाके निवासी!
गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्राके जलोंसे सिंचित
जिस सुंदर देशमें
तुझे सब जगह खोजनेमें हमें मदद दे।
हमें ग्रहणशीलता और खुला दिल दे,
तेरी अपनी नम्रता दे,
हिन्दुस्तानकी जनतासे
अेकरूप होनेकी शक्ति और अुत्कंठा दे।
हे भगवान!
तू तभी मददके लिअे आता है,
जब मनुष्य शून्य बनकर तेरी शरण लेता है।
हमें वरदान दे,
कि सेवक और मित्रके नाते
जिस जनताकी हम सेवा करना चाहते हैं,
अुससे कभी अलग न पड़ जावें।
हमें त्याग, भक्ति और नम्रताकी मूर्ति बना,
ताकि जिस देशको हम ज्यादा समझें,
और ज्यादा चाहें।

रांची, १२-९-'३४ मो० क० गांधी

प्रस्तावना

बड़े वृक्षके नजदीक या अुसकी छायामें लगाये हुअे छोटे पौधेकी वृद्धि कुंठित हो जाती है। यह मिसाल लेकर अक्सर कहा जाता है कि बड़े पुरुषोंके आश्रयमें छोटे बढ़ नहीं सकते। बात सोचने लायक है। ये बड़े कौन, जिनके आश्रयमें छोटे बढ़ते नहीं? यह भी अुस वृक्षकी मिसालसे मालूम हो सकता है। बड़े वृक्षके आश्रयमें छोटा पौधा क्यों नहीं बढ़ता? अिसलिअे कि छोटे पौधेको मिल सकनेवाला पोषण वह बड़ा वृक्ष खा जाता है। दूसरोंका पोषण खा जानेवाला बड़ा पुरुष याने बड़ा स्वार्थी या बड़ा महत्त्वाकांक्षी। अुसके आश्रयमें दूसरा कौन किस तरह पनपे?

बड़े पुरुष भिन्न हैं और महापुरुष भिन्न हैं। महापुरुष महत्त्वाकांक्षी नहीं होते। वे महान ही होते हैं। वे दूसरोंका पोषण खानेवाले नहीं होते, बल्कि दूसरोंको पोषण देनेवाले होते हैं। अुनको मिसाल वत्सल गायकी दी जा सकती है। गाय बछड़ेको अपना दूध पिलाकर पोषण देती है, तो बछड़ा दिन-ब-दिन बढ़ता ही जाता है। महापुरुषोंकी यही आकांक्षा होती है कि अुनसे सबकी अुन्नति हो, सबको अूंचा अुठानेमें वे मददगार बनें। यहां तक कि जैसे बच्चेको अूपर अुठानेको मां झुक जाती है, वैसे दूसरोंको अूपर अुठानेके लिअे वे अपने महत्त्वको भुला देते हैं। महत्त्व ही अुनका अिसीमें होता है कि वे झुक जायं और दूसरे अूपर अुठें।

वृक्ष भी चन्दन बन जाते है।" अिसीलिअे भारतीय हृदय राजा-महाराजाओकी महिमा नही गाता, पर सत्पुरुषोकी महिमा गाते अघाता नही। शकराचार्यका बचन विश्रुत ही है·

क्षणमिह सज्जन-सगतिरेका।
भवति भवार्णव-तरणे नौका॥*

बलवन्तसिहजीकी किताबसे महापुरुषोकी अिस कीमियाका कुछ दर्शन पाठकोको होगा अैसा मुझे विश्वास है।

कोअीमुत्तूर जिला,
१०–९–'५६

* अिस ससारमे क्षण भरके लिअे भी सज्जनकी सगति मिल जाय तो वह ससार-सागरसे पार होनेके लिअे नौकाका काम देती है।

निवेदन

ता० २१-११-'५० को सुबहकी प्रार्थनाके बाद पूज्य जमनालालजीकी पवित्र जन्मभूमि सीकर (राजस्थान) में गोसेवा-आश्रमके पवित्र और शान्त वायुमंडलमें बैठकर जब मैंने अिन पवित्र संस्मरणोंका आरंभ किया था, तब मुझे कोअी स्पष्ट कल्पना नहीं थी कि क्या और कितना लिख सकूंगा। मैंने सोचा था थोड़े दिनमें थोड़ासा लिखकर रख दूंगा, जो कभी सेवाग्रामके विस्तृत संस्मरण लिखनेवालोंके लिअे अेक [illegible] होगा। स्वतंत्र पुस्तकके रूपमें छापनेकी कल्पना तो स्वप्नमें भी नहीं थी। लेकिन जब अिन लेखोंने कुछ रूप लिया और मैंने पुराने साथियोंको दिखाया तो अुनकी पुरानी स्मृतियां ताजी हो गअीं और अुन्होंने अिनके साथ बड़ी ममता बताअी तथा मेरा अुत्साह बढ़ाया। अिन्हें छपवानेका प्रेमभरा आग्रह भी किया। मुझे अुनकी सूचना पसन्द आअी। तो भी [illegible] काफी लम्बा समय गुजर ही गया। मैं कोअी लेखक तो था नहीं, न डायरी आदिके साधन मेरे पास थे। जिसके लिअे जब जिसने सुविधाके अनुसार जितनी मदद मिल सकी अुतनीसे ही मुझे संतोष मानना पड़ा।

है। लेकिन आखिर तो जैसा रूप होगा वैसा ही चित्र भी आयेगा। मैं जैसा था और जिस रूपमें मैंने बापूका दर्शन किया, अुनके कथनका मैंने जो अर्थ समझा, अुस पर किसी प्रकारका रंग चढाये बिना सागरमें से गागर भरनेका नम्र प्रयत्न अिसमें मैंने किया है।

अिन लेखोंके लिखनेमें बापूजीका चिन्तन जितना सतत और गहराअीसे चला, अुसने मेरे विचारोंको स्पष्ट करनेमें और मनके मलको धोनेमें काफी मदद की। और मेरे श्रमका बदला बापूजीके चिन्तनसे बढकर और क्या हो सकता है? अगर अिसमें से जनता-जनार्दनको भी बापूजीके अपार स्नेह, अुनकी सहनशीलता, अुनका धैर्य, अुनकी दूर-दृष्टिका कुछ दर्शन मिल सका तो मैं अपने अिस प्रयत्नको धन्य मानूंगा।

अिसमें रही भूलें और दोष जो भाअी-बहन मुझे सुझानेका निःसंकोच कष्ट करेंगे अुनके मैं अनेक आभार मानूंगा। और अगर अिसकी दूसरी आवृत्ति छपने लायक कदर हुअी और तब तक मैं जिन्दा रहा तो अवश्य ही अुसमें सुधार करूंगा।

पूज्य विनोबाने मेरे अिस अल्प-से प्रयासका जो ममताभरा गौरव किया, अुसके आनंदको प्रगट करनेके लिअे मुझे कोअी शब्द नहीं मिल रहे हैं। अिसके लिअे मैं अुनका अत्यन्त कृतज्ञ हूं।

मेरे अिस प्रयासमें जो कुछ सफलता मिली है, वह बापूजीके पवित्र स्मरण और अुनके आशीर्वादका ही प्रताप है। अिसमें जो खामियां हैं वे मेरी अपनी खामियोंकी सूचक हैं।

यह दैवयोग ही कहा जायगा कि आज बापूजीकी कुटियामें ही बैठकर अुनकी मासिक पुण्यतिथि पर अपने अिन पवित्र और मधुर संस्मरणोंकी अंतिम पंक्तियां मैं लिख रहा हूं। बापूजीके प्रति तो अपनी नम्र श्रद्धांजलि मैं अिन्हीं शब्दोंमें अर्पण कर सकता हूं

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव।

बापू-कुटी, सेवाग्राम, — बलवन्तसिंह
३०–११–'५६

कृतज्ञता-प्रकाश

जिन साथियोंने मुझे बापूजी तक पहुंचानेमें हाथ बंटाया, जिन्होंने अिन लेखोंके लिखनेकी प्रेरणा की, जिन्होंने अिनके लिखने, टाअिप करने, शुद्ध सुधारने, लेख व्यवस्थित जमाने तथा प्रेसमें सम्पादन करने, प्रूफ पढ़ने आदिमें कीमती मदद की है, अुनके प्रति कृतज्ञता प्रकट किये बिना मैं कैसे रह सकता हूं?

जिन्होंने अपने शुभ आशीर्वादोंके साथ मुझे साबरमती आश्रमके लिअे रवाना किया था।

यहा मै अपनी पुण्य जन्मभूमि समसपुर गावको भी कृतज्ञतापूर्वक नम्र प्रणाम करता हू, जिसकी गोदमे पल-पुसकर मै बडा हुआ और जिसकी मिट्टी तथा हवा-पानीसे मुझे अैसे सस्कार मिले जिनके प्रतापसे मै बापूजी तक पहुच सका।

वडे वन्धुके समान आज भी जिनका मै आदर करता हू और आज भी जिनको आश्रमका मत्री मानता हू, अुन माननीय श्री नारणदासभाअी गाधीके भी मेरा दिल अनेक आभार मानता है, जिन्होने मेरी अरजी मजूर करके मुझे सावरमती आश्रममे प्रवेश दिया और मुझ पर प्रेम वरसाया। आज भी अुनका प्रेम मुझ पर वैसा ही वना हुआ है।

अिन लेखोको लिखनेकी मूल कल्पना और आग्रह सेवाग्राम आश्रमके व्यवस्थापक और मेरे २५ वर्षके साथी भाअी श्री चिमनलालभाअीका रहा और अुन्हीसे अिस विचारको वल मिला। पूज्य जमनालालजीकी द्वितीय पुत्री भक्तहृदया श्री मदालसा बहनके आग्रहसे अिसे मूर्तरूप मिला। मेरे गोसेवाके साथी भाअी व्रह्मदत्तजी शर्मा अिस कार्यमे मेरे प्रेरक और लेखक वने, सारा मूल मेटर अुन्होने ही लिखकर तैयार किया। पीछेसे अुसमे जो मेटर जोडा गया, अुसे लिखने तथा ठीकसे जमानेमे भाअी जमनाप्रसादजी मयुरियाने कीमती मदद की। मेरे परममित्र श्री रामनारायणजी चौधरीने भाषाकी दृष्टिसे रही भूले सुधारनेमे मदद की। नवजीवनके हिन्दी विभागमे भाअी सोमेश्वरजी पुरोहितने सारे मेटरको व्यवस्थित रूप देने और अुसका सपादन करनेमे तथा अन्य भाअियोने प्रूफ सशोधनमे काफी मेहनत की है। अिन सवका मै हृदयसे कृतज्ञ हू।

आज मै पू० श्रीकृष्णदासजी जाजू (काकाजी) का भी पवित्र स्मरण करता हू, जिन्होने अिन सस्मरणोको सुना, पसद किया और जल्दीसे छपवा देनेका आग्रह और आशीर्वाद भी दिया। मुझे स्वप्नमें भी कल्पना नही थी कि काकाजी अिस तरह चले जायेगे। मेरे मनमे अुनसे दो शब्द लिखवानेका रह गया। अिसका आज वहुत दुःख होता हे।

जिन अनेक भाअियोने अिसके टाअिप करनेमे कीमती मदद दी है, आज मै अुन सवके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट किये विना भी कैसे रह सकता हू? नवजीवन-ट्रस्टने अिसे प्रकाशित करनेकी जो ममता वताअी

अुनके लिअे मैं अुनका भी अहसान मानता हूं। और भी जिन भाअियोंका अिसमें हाथ लगा और जिनसे मुझे अुत्साह मिला, अुन सबके प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूं और सबको नम्रतापूर्वक प्रणाम करता हूं।

अन्तमें मैं अपने सामने खडी गोमाताओंको श्रद्धापूर्वक नमस्कार करता हूं जिनके अमृत जैसे दूध और पवित्र मानसे मेरा दिल और दिमाग हमेशा ताजा बना रहा और मेरी स्मरणशक्तिने मेरा पूरा पूरा साथ दिया।

राजस्थान गोसेवा संघ
कृषि-गोपालन-केन्द्र,
दुर्गापुरा कैम्प (जयपुर)
३०-१२-'५६

बलवन्तसिंह

स्वपरिचय

यहां अपना परिचय देनेमें मुझे संकोच और अटपटापन लगता है। लेकिन जब मैं किसीका लिखा हुआ लेख पढता हूं तो सहज ही लेखकका परिचय जाननेकी मेरी अिच्छा हो जाती है। मेरे अिन संस्मरणोंमें भी पाठकोंको यह अिच्छा होना स्वाभाविक है। बापूजी कहते थे कि नअी तालीम माके गर्भसे आरंभ होनी चाहिये। अिस पर मैंने विचार किया तो मुझे लगता है कि माके गर्भमें नहीं बल्कि दादी और नानीके गर्भमें होनी चाहिये। और वह वहींसे आरंभ होती है। गायके नस्ल-सुधारमें भी मुझे यही अनुभव आया है। मुझ जैसा साधारण व्यक्ति भी बापूजी जैसे महान पुरुषका दुलार प्राप्त कर सकता है, अिसका दर्शन भी जनताको मिल सके अिस लोभमें थोडासा अपना परिचय देना मुझे अनिवार्य लगा है। बापूजीका हृदय किस हद तक ग्रामीण भारतने घेर लिया था तथा किस हद तक वे अपनी अमूल्य शक्ति, अपार सहनशीलता तथा धीरजके साथ अेक देहातीको अूपर अुठानेका प्रयत्न कर सकते थे, जिसका मर्म पाठक क्यों कर समझेंगे यदि मैं संकोचवश यह भी न बताअूं कि मैं करीब करीब अेक निर-क्षर देहाती किसानके सिवा और कुछ न था। अितना-सा आवश्यक लिखनेमें भी यदि किन्हीं पाठकोंको आत्मश्लाघा जैसा लगे तो मैं अुन पाठकोंसे नम्रता-पूर्वक क्षमा-याचना करता हूं।

मेरा जन्म विक्रमी सनत् १९५५ के फाल्गुन शुक्ल द्वितीयाको तदनुसार लगभग मार्च १८९८ मे अेक छोटेसे गाव समसपुर (तहसील खुर्जा, जिला बुलन्दशहर, अुत्तर प्रदेश) मे अेक साधारण जाट परिवारमे हुआ था। परिवारका धधा खेती था। पिताका नाम भागमलसिंह तथा माताका नाम ज्ञानोदेवी था। मेरे पिताके चार भाओ थे। सबमे बडे मगलसिंह, दूसरे मेरे पिताजी, तीसरे चाचा दयारामसिंह और चौथे चाचा रणजीतसिंह थे। दादाका नाम फतेसिंह और नानाका नाम दलेरामसिंह था। दादाजी और ताअूजीको मैने नही देखा था। कनिष्ठ चाचा रणजीतसिंहजीकी थोडीसी याद है। मेरे दादा और नाना दोनो ही बडे गोभक्त थे। नानाजीको गाय चराते मैने देखा था। मुझे लगता है कि मेरे दादाजी और नानाजीकी गोभक्तिका वारसा मुझे मिला है।

पिताजी और माताजी दोनो ही सीधेसादे और परिश्रमी थे। मेरी माने पुत्रकी अिच्छामे बडे कठोर व्रत-अुपवास किये थे। वे कहा करती थी कि तेरे लिअे मैने ५ बरस तक बरतनमे न खाकर ओखलीमे खाना खाया था। मै करीब १० सालका था तब पिताजीका स्वर्गवास हो गया। मुझसे छोटा भाओ पदमसिंह और बडी बहन रघुवीरकौरके पालन-पोषणका भार भी माताजी पर ही आ पडा। मेरी दादीजी तुलसादेवी जिन्दा थी। वे मेरे चाचा दयारामसिंहके साथ अलग रहती थी। मेरे जन्मके पहले हमारे घरकी स्थिति अच्छी थी। लेकिन पिताजीके मर जाने पर हालत यहा तक बिगडी कि माताजीको पिसाओ करके हमारा पालन-पोषण करना पडा। माताजीका शरीर मजबूत था। वे १५–२० सेर मक्का प्रतिदिन पीसनेकी शक्ति रखती थी। मेरे मामा बडे सज्जन पुरुष थे। वे हमारी बहुत मदद करते थे। मै अधिकतर अुनके पास ही रहता था। दुर्भाग्यसे माताजी भी हमे छोडकर जल्दी ही चल बसी। तब हमारा भार दादी और चाचाजी पर आ पडा। हमारा सारा ही परिवार निरक्षर था। चाचाजीने थोडीसी हिन्दी सीख ली थी। मेरी दादी बडे सस्कारी परिवारकी थी। अुनको रामायण और महाभारतकी कथाये तथा और भी बहुतसी कथाये याद थी। मेरा बहुतसा समय अुन्हीके सान्निध्यमे बीता। अुन्होने मुझे न जाने कितनी बार रामायण और महाभारतकी तथा दूसरी कथायें कहानीके रूपमें सुनाओ होगी। मै मानता हू कि वही मेरी सच्ची तालीम थी, जो मुझे बापूजीके जैसी महान आत्माके पास खीच कर ले गओ।

जहा रोटियोंके भी लाले हों वहा पढनेका तो सवाल ही नही था। हमारे पास जमीन काफी थी, लेकिन कोअी जोतनेवाला नही था अिसलिअे गरीबी थी। मेरी पाठशाला तो नदीके आसपास थी या अेकान्त जगहमें टाकके वृक्षोंकी छायामें। अुसका आरंभ अेक रोज अिस तरह हुआ। हमारे अेक खेतमें चने बोये थे। अुनकी रखवालीके लिअे चाचाजीने मुझे वहा बिठा दिया था। दिनभर खाली बैठे मन भी तो कैसे लगता? मैंने चाचाजीसे पहली किताब और लिखनेकी पट्टी मगा ली थी। अुस समय पहली किताब अेक पैसेमें आती थी। पट्टी पढनेवाले लडकोंसे माग ली गअी थी। अिस तरह मेरी पाठशाला बिना शिक्षकके सिर्फ अेक विद्यार्थीकी पाठशाला थी। मैं किताबमें से पट्टी पर अक्षरोंकी नकल करता रहता और जब शामको घर लौटता तब रास्तेमें जो भी लिखा-पढा मिलता अुनसे अुन अक्षरोंके नाम पूछ लेता या घर आकर चाचाजी से पूछ लेता। रातको सोते समय और सुबह अुठते समय खाटमें पडा पडा अुन अक्षरोंको घोखता। सुबह अपनी रोटी, किताब, पट्टी आदि लेकर फिर खेत पर पहुच जाता। रास्तेमें कोअी पढा-लिखा लडका या आदमी मिल जाता तो अन्य अक्षरोंके नाम पूछ लेता। धीरे धीरे मैंने बारहखडी पूरी कर डाली। जो विषय मुझे याद होता अुसे पुस्तकमें पढता। मेरी याद अक्षरोंकी सडक पर चलती। अिस प्रकार मैं कुछ पढने लगा था। जब मैं छोटा ही था तब मेरे अेक चाचाने मेरी मातासे कहा कि यह लडका ठाला रहता है। क्यों न मेरे ढोर चराया करे? मैं सुन रहा था। अुनकी बोली मुझे अितनी प्यारी लगी कि मैंने मासे स्वीकार करा लिया कि मैं अिन चाचाका काम करूगा। और फिर अेक साल तक सवा रुपया मासिक लेकर मैंने अुनके ढोर चराये।

१९ वर्षकी अवस्थामें २५ जनवरी १९१७ को मैं फौजके घुडसवारोंमें २६ नबर रिसालेमें भरती हो गया। और मार्च १९२१ में समरी कोर्ट मार्शल (फौजी अदालत) द्वारा दो मासकी सजाके बाद नाम काटे जाने पर घर आ गया। अिसका जिक्र पुस्तकमें आ चुका है। दादीजी १९१७ के अगस्तमें चल बसी थीं। २२ वर्षकी अवस्थामें चाचाजीने मेरी शादी कर दी। और खुद सन्यासी बनकर भगवानके भजनमें लग गये। यहा तक कि फिर अुनके दर्शन भी न मिल सके। पत्नी जानकीदेवी बडी सरल, सुन्दर, अुदार और समझदार थी। लेकिन अुस विचारीका और मेरा साथ

अधिक न हुआ। होता भी कैसे? विधाताका विधान तो दूसरा ही था। अिसलिअे वह मुझे लगभग तीन वर्षमे ही मुक्त करके चली गअी। वचपनसे ही मेरी मनोवृत्ति साधु-सगतकी थी। हमारे जिलेका गगा-किनारा गगाजीके सारे वहावमे सर्वश्रेष्ठ व रमणीय था। और वहा पर बडे वडे सत साधना करते थे। जव घरसे फुरसत मिलती मै गगाके किनारे अुनके सत्सगमे १५–२० रोज जाकर रह आता। अुन दिनो वहा पर अुडिया वावा, हरि वावा, भोले बाबा, दोलतरामजी (अच्युत स्वामी), शकरानदजी, निर्मलानदजी, अुग्रानदजी आदि सतोसे मेरा परिचय और सत्सग हुआ। अुडिया वावाकी मुझ पर खास कृपा रही।

'नारि मुअी घर सपति नासी, मूड मुडाय भये सन्यासी।' अिस न्यायसे कपडे रगनेका विचार भी मेरे मनमे आया। लेकिन भिक्षाका अन्न खाना मेरे स्वभावके अनुकूल नही था। अिसलिअे वह रग मुझ पर न चढ सका। और पूर्वजन्मके किन्ही पुण्योके प्रभावने मुझे कर्मयोगी वापूकी छायामे पहुचा दिया, जहासे वहुत छटपटाने पर भी मै भाग नही सका। 'शुचीना श्रीमता गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते' अिस वचनके अनुसार मेरे पुण्य तो थे या नही भगवान जाने। परन्तु मेरे पूर्वजोके पुण्यप्रतापसे शरीर रहते हुअे भी पूज्य वापूजी जैसे श्रेष्ठ पुरुषके घर मेरा पुनर्जन्म हुआ। और मेरा मानव-जीवन कृतार्थ हो गया।

मैने सावरमती आश्रममे कताअी ओर धुनाअी सीखी। सावलीके खादी अुत्पत्ति-केन्द्रसे वुनाअी सीखी। और सेवाग्राम आश्रममे खेती और गोसेवाका काम सहज ही मुझ पर आ गया। किसान होनेके नाते अिसे वापूजी मेरा 'स्वधर्म' कहा करते थे। वही वापूकी छत्रछायामे रह कर अुनके पवित्र सकल्प और आशीर्वादके प्रतापसे मै अिस 'स्वधर्म' के पालनमे थोडा कुशल वना।

विनोवाजीके आदेशसे राजस्थानमें वैठकर पिछले ५ वर्षसे सीकर केन्द्रमे मैने गोसेवाका कार्य किया। और पिछले १ वर्षसे दुर्गापुरा कैम्प (जयपुर) मे गोसेवा-सघका कृषि-गोपालन तथा सवर्धन केन्द्र चला रहा हू। वापूजीके आशीर्वादसे राजस्थानके समस्त रचनात्मक और राजनैतिक कार्य-कर्ताओका प्रेम और सद्भावना प्राप्त करनेका सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। अव विनोवाने मुझे यह आदेश दिया है कि मै गोसेवाकी सीधी जिम्मेदारीसे मुक्त होकर केवल यह काम करनेवालोका मार्गदर्शन करू और साथ ही

आध्यात्मिक अुन्नतिकी साधना करके जीवनको समृद्ध बनाअू। अिसी दिशामें बढनेका मेरा प्रयत्न चल रहा है।

अिस तरह बापूजीकी भाषामें मेरी नअी तालीमकी पाठशाला माके नही बल्कि दादी और नानीके गर्भसे आरंभ होकर आजतक अुसी प्रकार चल रही है। अिसी पूंजीके बल पर मैं बापू जैसे महापुरुष तक पहुच सका और अुनका कृपापात्र बन सका। तुलसीदासजीने कितना सुन्दर कहा है

प्रभु तरुतर कपि डार पर ते किये आप समान।
तुलसी कहू न राम से साहिब शील निधान॥

अिन वचनोंका मैंने अपने जीवनमें प्रत्यक्ष अनुभव किया है। सत्संगकी महिमा सुन्दरदासजीने बडे सुन्दर शब्दोंमें बताअी है

मातु मिले पुनि तात मिले सुत भ्रात मिले युवती सुखदायी,
राज मिले गजबाज मिले सब साज मिले मन वाछित पाअी।
लोक मिले सुर लोक मिले विधि लोक मिले वैकुण्ठ अुजाअी,
सुन्दर और मिले सबही सुख संत समागम दुर्लभ भाअी।

अैसा दुर्लभ सत-समागम मुझे बापूजीके चरणोमें बैठ कर सहज ही प्राप्त हुआ। अब अिससे अधिक और मैं भगवानसे क्या चाहू?

बलवन्तसिंह

अनुक्रमणिका

लेखक बापूजीको नया पैदा हुआ गायका बछड़ा दिखा रहे हैं ।

बापूकी छायामें

१

पूर्वभूमिका

बापूका नाम पहली बार मैंने १९१९ में अदनमें सुना जब कि मैं फौजमें था। अदनमें टर्कोंसे लड़नेके लिअे अंग्रेजोंका अेक मोर्चा था। अुसी पर मैं नियुक्त था। अुनसे पहले फौजमें तिलक भगवानका नाम तो सुना जाता था। कहा जाता था कि वे अंग्रेजोंके साथ हिन्दुस्तानियोंकी समानताकी सिफारिश करते हैं और जितनी तनख्वाह अंग्रेज सिपाहियोंको मिलती है अुतनी ही हिन्दुस्तानी सिपाहियोंको मिलनेकी हिमायत करते हैं। लेकिन बापूका नाम नहीं सुना था।

रॉलेट अेक्टके नामके साथ साथ बापूका नाम कान पर आया था। रौलेट अेक्टका विरोध करनेके लिअे जब जलियांवाला बागमें सभा हुआी और अुस पर गोली चली, तो पंजाबमें शांति स्थापित करनेके लिअे बापूजी पंजाब जा रहे थे। अुनको कोसी स्टेशनसे पकड़ कर वापिस भेज दिया गया। यह समाचार फौजी अखबारोंमें छपा। फौजी अखबारोंमें सब चीजें अिस ढंगसे छपती थीं कि मिस्टर गांधी और दूसरे कुछ लोग अंग्रेज सरकारके खिलाफ बगावत कर रहे हैं और वे अच्छे आदमी नहीं हैं। बापूके विरुद्ध जितना फौजी अखबारोंमें लिखा जाता था, अुतना ही मेरा चित्त अुनकी ओर आकृष्ट होता था और मुझे लगता था कि यह आदमी अैसा है जो हिन्दुस्तानको अंग्रेजोंके चंगुलसे छुड़ायेगा। क्योंकि फौजमें अंग्रेजों और हिन्दुस्तानियोंके बीच जो भेदभाव बरता जाता था वह मनको चुभता था। अेक मामूली अंग्रेज, जो अेक हिन्दुस्तानी सिपाहीसे भी कम योग्यता रखता था, अफसर बना दिया जाता था और हिन्दुस्तानी अफसर भी अुसके सामने भीगी बिल्लीकी तरह तुच्छता महसूस करते थे।

जब जलियांवाला बागमें गोलीकांड हुआ तो हमें लगा कि हिन्दुस्तानमें अंग्रेजों और हिन्दुस्तानियोंके बीच लड़ाअी शुरू हो गअी है और हो सकता है कि हम लोग हिन्दुस्तान न पहुंच सकें। अुस समय हिंसा-अहिंसाका भेद तो हम कुछ जानते नहीं थे। अिसलिअे आपसमें यह चर्चा करते थे कि जो दो चार अंग्रेज अफसर हैं अुनको खतम करके हम खुश्कीके रास्तेसे

हिन्दुस्तान निकल चलेंगे। १९२० की जनवरीके लगभग मैं हिन्दुस्तान वापिस आया। झासीमे मैं फौजी अस्पतालमे बीमार था। अुसी समय बापूजी और मौलाना शौकतअली झासी आये थे। जब अैसे प्रसग आते थे तब शहर फौजकी हदसे बाहर कर दिये जाते थे और कोअी फौजी आदमी वहा नही जा सकता था।

मेरा अेक मित्र अेक अग्रेज अफसरके यहा अरदली था। वह किसी तरह झासीकी अुस सभामे पहुच गया। अुसने वहाका सब वर्णन मुझे सुनाया तो मनमे लगा कि मैं भी वहा गया होता तो अच्छा होता। अुसने मुझे कहा कि वहा 'वन्देमातरम्' बहुत बोलते थे। अुसका क्या अर्थ हे? अुसका शब्दार्थ करके मैंने अुसे समझाया। 'वन्देमातरम्' मे अितनी भावना छिपी है, अिसका अुस वक्त मुझे पूरा ज्ञान नही था। अुस वक्त तो मैं अितना ही समझता था कि बापूजीने अग्रेजोंसे लडनेके लिअे हिन्दुस्तानियोकी अेक स्वतत्र फौज बनाअी हे, वे सदाचारका प्रचार करते है, मास और मदिराके विरोधी है, और खादी पहननेके लिअे कहते है।

अिस बीच हमारी फौज पेशावर चली गअी थी। जनवरीके अन्तमें मैं भी पेशावर पहुचा। यह सन् १९२१ की बात है। मैं अिन चीजोका फौजमे प्रचार करने लगा। क्योंकि फौजमें शराब भी पी जाती थी, मास भी खाया जाता था और नैतिक जीवन भी कुछ अूचा नही रहता था। फौजके अूपर कडा प्रतिबध था। वहा न तो कोअी अैसे अखबार पढ सकता था जिनमें काग्रेस आन्दोलन और बापूजीकी किसी तरहकी खबरे हो, न शहरमे किसी सभा या जुलूसमे भाग ले सकता था और न फौजमें कोअी अैसा आदमी प्रवेश ही कर सकता था। लेकिन तो भी हवाके जरिये बहुतसे समाचार फौजमे पहुच जाते थे। हमारी अेक विशिष्ट टोली थी जो अिस प्रकारके सात्त्विक जीवनके लिअे छटपटाती थी। सब लोग मुझसे कहते थे कि तुम अिस्तीफा देकर बाहर जाओ और गाधीजीकी फौजमे हमारे लिअे भी स्थान निश्चित करके हमे खबर दो तो हम भी आ जायेंगे। अेक विचार यह भी चलता था कि कही पर अेक आश्रम बनाया जाय। अुसमे दिन भर सब लोग काम करे और रातको अेकसाथ मिलकर प्रार्थना करें, भोजन करे और स्वाध्याय करे। अिसके लिअे वे लोग मुझे ही अगुवा मानते थे और मुझे 'गाधी' नाम दे रखा था। मेरे अन्दर भी छटपटाहट चलती ही थी। लेकिन पैसे और फौजकी शानका मोह था। अिसलिअे अिस्तीफा

देनेकी हिम्मत नही होती थी। मनमें लगता था कि किसी तरहसे नौकरी छूट जाय तो अच्छा हो।

अुसी समय मुझे कुछ धार्मिक ग्रंथ पढनेका शौक लगा था। अेक रोज पहरे पर कुछ पढते पढते नींद आ गयी और मुझे सोते हुअे अेक सार्जेन्टने पकड लिया। रातके बारह बजे मुझे कैद करके 'कोर्ट-गार्ड' में भेज दिया गया। सुबह होते ही फौजमें यह खबर बिजलीकी तरह फैल गअी। मैं चुस्त सिपाही माना जाता था और आज तक अिस प्रकारकी कोअी भी गलती मुझसे नहीं हुअी थी, जिससे मुझे किसी भी अदालतके सामने जाना पडा हो। लोग मिलनेके लिअे मेरे पास आने लगे। अैसे मामलोंके लिअे फौजमें दो अदालतें होती थीं। अेक तो सिर्फ बयान लेती थी, जिसको सजा देनेका कोअी अधिकार नहीं होता था। दूसरी 'समरी कोर्ट मार्शल' करनेवाली होती थी, जो जन्म-कैद या फासी तककी सजा दे सकती थी। और अुसके आगे कोअी अपील नहीं होती थी। अुसके पाच सदस्य होते थे। अेक कमांडिंग अफसर और चार दूसरे होते थे, जिनमें हिन्दुस्तानी अफसर भी रहते थे। अिनमें अेक अैसा मुसलमान अफसर था जो पहले मेरा मास्टर रह चुका था और मुझ पर बहुत प्यार करता था। वह मेरे पास आया और दर्दके साथ मुझसे सब बात पूछी। जब अुसने मुझसे यह पूछा कि मैं कोर्ट मार्शलके सामने क्या बयान दूंगा, तो मैंने कहा कि घटना जैसी कुछ घटी है वैसी ही सच-सच कहूंगा। अपने बचावके लिअे कोअी झूठ नहीं बोलूंगा, यह मेरा निश्चय है। यह सुनकर वह अफसर बहुत खुश हुआ और मेरी पीठ ठोककर चला गया। मैं कोर्ट मार्शलके सामने गया और सारी घटना जिस तरहसे घटी थी वैसी ही बता दी। अुसमें मेरे बचावके लिअे अेक बडा मुद्दा यह था कि मैं तीन रातसे बराबर पहरा दे रहा था और आखोंमें नींद भरी थी। अिरादतन् जमीन पर लेटा भी नहीं था, लेकिन दीवारके सहारे खडे खडे नींद आ गयी थी। अगर मेरे गार्डका अफसर गलत बयान नहीं देता, तो मैं साफ छूट सकता था। लेकिन अीश्वरको अैसा ही मंजूर था। मुझे दो महीनेकी सजा हुअी और फौजसे मेरा नाम कट गया। अुस समय सारी फौजमें अेक तहलका-सा मच गया और अैसा प्रतीत होने लगा कि विद्रोह हो जायगा। मैंने निकटके मित्रोंको समझाया और शांत रहनेको कहा।

अुस समय पेशावर लडाअीका मोर्चा समझा जाता था और मोर्चे पर सोनेके अपराधमें गोलीसे मारने तककी सजा दी जा सकती थी। लेकिन

मेरे पक्षमें अैसे कारण थे जिनसे मुझे दो महीनेकी नाममात्रकी सजा देकर ही अदालतने अपना रोब रखनेका सन्तोष माना। मै पेशावर सेंट्रल जेलमे भेज दिया गया। वापूजीके पास पहुचनेकी जो धीमी धीमी आग मेरे मनमे सुलगने लगी थी, अुसका पहला पाठ मुझे जेलमे मिला। मुझे जेलका अनुभव करानेमे अीश्वरका ही हाथ है, अैसा जेलमे जाकर मैंने अनुभव किया। मैने भगवानको धन्यवाद दिया कि जिस मोहमे मै फसा था अुससे अुसने थप्पड मार कर मुझे छुडा दिया। 'करू सदा तिनकी रखवारी, जिमि बालक राखे महतारी।' यह कथन मेरे लिअे सार्थक सिद्ध हुआ।

अुस दो महीनेके जेल-जीवनमे जो कठिन परिश्रम मुझे करना पडा और जो शुद्ध विचार मेरे मनमे चले, वह सब सुनाने बैठू तो अेक लबा किस्सा हो जाय। अितना ही कह सकता हू कि अुस जेलके कठिन जीवन और शुभ विचारोंसे मेरा मन और तन अितना निर्मल हो गया था कि फिर मुझे सत्याग्रहके जेल-जीवनमे किसी प्रकारकी अडचन महसूस नही हुअी।

मै अपने अतरमे यह तो महसूस करता ही था कि भगवानने जो कुछ किया है अच्छा किया है, मगर यह स्पष्ट खयाल नही था कि वापूके पास पहुचनेकी पहली शर्त जेलकी तैयारी और अन्तरशुद्धिका प्रयत्न है। जेलमे मेरा काग्रेसके कुछ राजनैतिक कैदियोसे भी परिचय हुआ। जेलसे छूटनेके वाद मै पेशावर काग्रेस कमेटीके सदस्योसे मिला। घर आते समय लाहौरमे लाला लाजपतरायसे मिला। राजनैतिक क्षेत्रमे मुझे पहला गुरुमत्र लालाजीसे मिला माना जा सकता है। अुन्होने मुझे आशीर्वाद दिया और कहा कि तुम अपने यहा जाकर काग्रेसके कार्यकर्ताओसे मिलो और जैसा वे कहे वैसा काम शुरू कर दो। अीश्वर तुम्हारी मदद करेगा।

लालाजीके दर्शन और आशीर्वादसे मुझे वहुत ही आनन्द हुआ। और मै १९२१ के मार्च मासके अतमे अपने घर पहुच गया। हमारे गावके पास सीकरा गावमे विश्ववधुजी तिलक राष्ट्रीय पाठशाला चलाते थे। अुनसे मेरा परिचय हुआ। अुन्होने मुझे वापूजीके लेख और भाषणोका सग्रह 'महात्मा गाधी' नामक पुस्तक पढनेको दी। अुसे पढकर मुझे वहुत ही शाति मिली, क्योकि मेरा मन आर्यसमाजके 'सत्यार्थप्रकाश' आदि कुछ ग्रथ पढनेसे तर्क-वितर्कके अधेरेमे फस गया था। वापूजीके लेखोसे मुझे प्रकाश मिला। मै 'हिन्दी-नवजीवन' का ग्राहक भी वन गया। मै खुद पढता और दूसरोको सुनाता। अुसके ग्राहक भी वनाता। साधु-सगत लगानेमे और वापूजी तक भेजनेमे

विश्वबन्धुजीने मेरी बहुत मदद की। ये बड़े त्यागी और विद्वान पुरुष हैं। अिनका बापूजीके पास भीचनेकी मैंने कोशिश की लेकिन सफलता नहीं मिली। खुर्जामें कांग्रेसके कार्यकर्ताओंसे परिचय करके मैं कांग्रेसके काममें लग गया। लेकिन जो लोग आध्यात्मिक दृष्टिसे बापूजीके भक्त थे, अुनसे विशेष परिचय और प्रेम न था। प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी अुनमें से अेक थे। ये सस्कृतके विद्यार्थी थे। श्री राधाकृष्ण सस्कृत पाठशालामें पढ़ते थे और कांग्रेसका काम भी करते थे। सीकराकी पाठशाला भी अिन्हीं ही कृति थी। बापूजीके परम भक्त थे। अिनसे भी मेरा घनिष्ठ सबध था। और मेरे गावमें कांग्रेसका काम जमानेमें भी अिन्होंने ही मदद की थी। विश्वबन्धुजीका हाथ तो था ही। आज तो प्रभुदत्तजीको सारा हिन्दुस्तान जानता है। अिन्होंने भक्ति पर अनेक ग्रथ भी लिखे हैं। झूसीमें वे आश्रम बनाकर साधना करते हैं। खुशीकी बात है कि हम दोनों ही बालपनके साथी अपने अपने ढगसे सेवामें लगे हुअे हैं।

मुनिलालजी खुर्जाके व्यापारी वर्गके थे। वे बापूजीके अेक निष्ठावान भक्त थे। साबरमती आश्रममें आनेका सारा पत्रव्यवहार, प्रमाणपत्र आदि अुन्होंने दुरुस्त करके दाखिल कराये और मेरा अुत्साह बढ़ाया। बड़े ही विचारशील और अध्ययनशील व्यक्ति हैं। अुन्होंने सस्कृतके अनेक ग्रथोंका अनुवाद भी किया है। आजकल वे सन्यासी हैं और अुनका नाम स्वामी सनातनदेव है। साधु-समाजमें भी अुनकी बड़ी प्रतिष्ठा है। अब भी जब कभी हमारा मिलन होता है तो बड़े प्रेमसे कोली भरकर मिलते हैं। अिनके साथसे भी मुझे बापूजीके पास आनेकी प्रेरणा और व्यावहारिक सहायता मिली। प्यारेलालजी गर्ग हमारी ही तहसीलके नीमका नामक गावके बापूजीके भक्त, कांग्रेस कार्यकर्ता और अच्छे साधकोंमें से हैं, जिन्होंने आश्रममें पहुचने तक मेरा अुत्साह तो बढ़ाया ही, आर्थिक सहायता भी दी।

अिस प्रकार खुर्जामें हमारा अेक सत्सगियों और बापूजीके भक्तोंका मण्डल था, जो अेक-दूसरेको आगे बढ़ानेमें दिलोजानसे मदद करते थे। पत्थर आखिरकी अेक चोटसे ही नहीं, पहलेकी अनेक चोटोंके पड़नेसे ही टूटता है। अिस प्रकार मनुष्यको अूपर अुठानेमें अनेकोंका हाथ होता है। भगवानने गोवर्द्धन पर्वत भी तो बालग्वालोंके बलसे ही अुठाया था। अुसमें कविकी कल्पना यही रही होगी कि किसी बड़े कामका कोअी अकेला आदमी अभिमान न कर बैठे। अुसमें सबका हिस्सा होता है। मैं तो पद पद पर अिसका अनुभव

करता हू कि मुझे वापूजीके पास पहुचानेमे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूपसे न मालूम कितनी जड-चेतन सृष्टिका हिस्सा रहा है। अिससे मेरे मनमे वापूजीके पास जानेका अपना अभिमान कभी होता ही नही और सव साथियोके प्रति कृतज्ञताका भाव वना रहता हे।

२

वापूका प्रथम दर्शन

मेरा खयाल है १९२१ के अगस्तका महीना था। वापूजी विलायती कपडेकी होली करनेके लिअे हिन्दुस्तानका दौरा कर रहे थे। अुसी समय अुनके अलीगढ आनेकी खवर मिली। जव यह खवर मुझे मिली अुस समय मैं अपने अेक चाचा और चचेरे भाअीके साथ अेक खेतका वाध वना रहा था। हमारे यहा अेक छोटीसी नदी थी, जिसका पानी चढ रहा था। और खेतमे पानी घुस आनेकी आशका थी। अिसलिअे हमारा काम जोरसे चल रहा था। मेरे सारे कपडे कीचडसे भरे थे। हमारा खेत स्टेशनके पास ही था। अुसी समय अलीगढ जानेवाली अेक गाडी आ रही थी। मैंने अपने चाचा और भाअीसे पूछा कि मैं गाधीजीके दर्शन करने जाअू? वे मेरे अूपर विगडे और वोले, देखते नही हो, अगर अभी यह वाध नही वधा तो रातको सारा खेत पानीमे डूव जायगा। मेरा दिल द्वन्द्वमें फस गया। अिधर अिन लोगोका भय था और अुधर वापूका आकर्पण था। अतमे मैं काम छोड कर स्टेशनकी ओर चल दिया। ज्यो ज्यो गाडी नजदीक आती गयी त्यो त्यो मेरा दिल वापूकी ओर खिचता गया और मैं अुन लोगोसे दूर हटता गया। अव मैंने सोचा कि अगर मै भागकर गाडीमे वैठ जाअू तो ये लोग मुझे पकड नही सकेंगे। गाडी आकर खडी ही होना चाहती थी कि मैंने फावडा फेक दिया और कहा, "लो, मैं तो चला।" और दौडकर गाडीमे वैठ गया। टिकट लेनेका तो होग ही कहा था और मेरे पास पैसे भी नही थे।

रातको साढे सात वजे अलीगढ पहुचा। भीड वहुत थी। वापूजीको दो जगह भापण करना था। मस्जिदमे स्त्रियोंके लिअे प्रनव था और वाहर पुरुपोंके लिअे। वापूजीके साथ मौलाना मोहम्मदअली और स्टोक्स साहव भी थे। मैंने मचके नजदीक पहुचनेकी खूव कोशिश की और अैसी जगह पहुच

गया जहांसे बापूजीको स्पष्ट देख सकू। बहुत भीड़ और कोलाहल था। आसमानमे बादल थे और डर था कि पानी बरसेगा। सबकी प्रार्थना यही थी कि पानी न बरसे और बापूजीका भाषण सुनें। यही हुआ। बापूजी मच पर आये और अुन्होंने लोगोंसे शान्त रहनेको कहा। सब लोग शात हो गये। बापूजीके अुस भाषणका सारांश करीब करीब सारा मुझे याद है। अुन्होंने कहा था:

"भाअियो और बहनो,

गुलामीसे छूटनेका सबसे बड़ा हथियार है स्वदेशीधर्मका पालन। स्वदेशीका अर्थ है कि जो चीज हमारे देशमें बनती हो वह परदेशसे न लाये, जो हमारे प्रान्तमे बनती हो वह परप्रान्तसे न लाये, जो हमारे जिलेमे बनती हो वह दूसरे जिलेसे न लायें और जो हमारे गाव या घरमे बनती हो वह बाहरसे न ले। चरखा तो घर घर चलाया जा सकता है। गावका जुलाहा बुन सकता है। तो हम क्यों विलायती कपड़ेके मोहमें पड़े? विलायती कपड़ा तो जहरके समान है। कोअी भी अपने घरमें जहरको या सापको नही रख सकता। अुसे जला देना चाहिये। लोग कहते है कि खादी मोटी और खुरदरी होती है। मैं पूछता हू कि अेक माका बच्चा काला और बदसूरत है और दूसरीका गोरा और खूबसूरत है। अगर पहली मासे कहा जाय कि तुम दूसरीके बच्चेसे अपना बच्चा बदल लो तो क्या वह बदलेगी? हरगिज नही बदलेगी, क्योंकि अपने बच्चेमे वह अपना ही रूप देखती है। अिसी तरह हम खादीको छोड़कर विलायती या देशी मिलके कपड़े कैसे पहन सकते है? अगर मुल्क विदेशी कपड़े और दूसरी वस्तुओंका सर्वथा त्याग कर दे तो मैंने जो अेक सालमें स्वराज्य दिलानेकी बात कही है अुसमें सन्देह करनेका कारण नही रह जायगा। दवाका असर परहेज पर निर्भर है।"

मौ० मोहम्मदअली भी बोले, लेकिन वह मुझे याद नही है। बापूजीने लोगोंसे विलायती कपड़े मागे। बातकी बातमे कपड़ोंका ढेर लग गया और अुनकी होली जलाअी गअी। अुस समय बापूजीको मच पर देखकर अैसा लग रहा था कि यह तो कोअी अपने आदमी है और अिनके अधिक नजदीक जाना चाहिये। लेकिन जिस तरह मै बापूजीके पास पहुचा, अुसकी किसी स्पष्ट कल्पना या सभावनाका दर्शन अुस समय मुझे नही हुआ था, सिर्फ मनकी अेक अिच्छामात्र थी।

३

सविनय प्रतिकारका प्रथम पाठ

अपने गावमे मैंने ग्राम काग्रेस कमेटी बना ली थी। वादमे वह सर्किल काग्रेस कमेटी हो गअी थी। आसपासके गावोमे काग्रेसका असर हो गया था। मुझे कअी साथी भी मिल गये थे। यद्यपि हम थे तो अिनेगिने ही, तथापि सब निष्ठावान थे और सत्याग्रहके विश्वासी थे। अेक दिन गावमे कुछ नाचनेवाले आये। मेरे परिवारवालोने अुनका तमाशा करानेका निश्चय किया। मुझे दिनमे ही अिसकी खवर लग गअी थी। मै अिस कार्यक्रमके प्रति अुदासीन रहना चाहता था। लेकिन मेरे घरके सामनेसे तमाशा देखनेवाले आ-जा रहे थे। मेरे कअी साथी मेरे पास आकर बैठे और जब वे चलने लगे तो मै भी अुनके साथ हो लिया। अिससे अुनको आश्चर्य हुआ। लेकिन मैंने सफाअी कर दी कि चल कर देखे तो सही वहा क्या हो रहा है। जब हम वहा पहुचे तो कुछ लोग प्रसन्न हुअे और कुछ चौंके। चौंके अिसलिअे कि आखिर हम लोगोका वहा क्या काम है। मैंने हसकर अपने चाचासे, जिनके यहा यह तमाशा होनेवाला था, पूछा कि तमाशेमे कितनी देर है। वे खुश होकर वोले, 'बेटा, लडके सज रहे है, अभी आते है।' तव तक मेरे मनमे नाच वन्द करानेका विचार नही था। मैंने सहज ही कहा, 'चाचाजी, अिसमे सजनेकी क्या जरूरत है? यो ही भजन होने दो न?' वे वोले, 'बेटा, विना सजे रौनक कैसे आवेगी?' मैंने कहा कि जनाने कपडे पहनाकर रौनक करना ठीक नही है। अिससे वातावरण गन्दा बनता है। अुन्होने मेरी वात नही मानी। मैंने कहा कि यह नही हो सकेगा। वे विगडे जिससे मेरे मनमे अुस नाचको वन्द करवानेके लिअे सत्याग्रहकी भावना जागी। मै वहासे चला आया और अपने सबसे मजबूत साथीको मैंने जगाया। वह वोला, 'क्यो नाहक झझटमे पडते हो, गाववाले हमारी वात नही मानेगे और झगडा वढेगा।' मैंने अुसे अुत्साह दिलाया कि भाअी अभी तो यह अेक छोटासा काम है। यहा सिर्फ दो चार गालियो या दो चार थप्पडो तक ही नौवत आनेवाली है। अितनेमे ही यदि हम हिम्मत हार गये तो अग्रेजोको निकालना कैसे सभव होगा, जिनके पास तोपें और वन्दूकें है और जिनके साथ लडनेमें जानका पूरा खतरा है। अग्रेजोके खिलाफ सत्याग्रह करनेके

लायक हैं या नहीं, जिसकी परीक्षा आज हो जानी चाहिये। पहले हम समझौता करनेका यत्न करेंगे अर्थात् जनाने कपड़े न पहनकर केवल भजन करें तो करने देंगे। नहीं तो आज हमारा पहला सत्याग्रह होगा। योजना बनाओ गओी कि वह साथी पहले जाकर लोगोंको समझावे कि हमारे गांवमें कांग्रेसका काम होता है अिसलिये हमें नाच कराना शोभा नहीं देता। दूसरे, हमारी बहन-बेटियोंके सामने हम गन्दी बातें सुनें तथा गन्दे हावभाव देखें, यह शर्मकी बात है। जितने पर भी न मानें तो हम नाचके स्थानके चारों ओर खड़े होकर 'गांधीजीकी जय', 'भारत माताकी जय' के नारे लगातार लगाते रहें। अैसा करनेमें हमें गालियां मिलें तो सुन लें। किसी पर मार पड़े तो अुसे बचानेका प्रयत्न न करें। मार खाते खाते जब तक गिर न पड़े तब तक हर कोअी जय-जयकार करता रहे। हमारा साथी वहां गया और जब अुनके समझानेका कोअी परिणाम नहीं हुआ तो अुसने हम लोगोंको बुला लिया। हम लोग जय-जयकार करते हुअे वहां पहुंच गये। कअी अुत्साही लड़के भी हममें मिल गये। गांवका मुखिया मेरे चाचाका बेटा था। वह घटनास्थल पर पहुंचा और सब हाल जानकर अुसने कहा कि वह सक्रिय मदद तो नहीं करेगा, लेकिन हमारा विरोध भी नहीं करेगा, क्योंकि हमारा लक्ष्य शुभ है। हमारे वहां पहुंचते ही सन्नाटा छा गया। हमने नाचनेवालोंको घेर लिया और बिना अिधर-अुधर देखे जय-जयकार करने लगे। मेरे चाचाने कहा कि काम तो अिन लोगोंने पीटनेका किया है। परिवारका अेक दूसरा व्यक्ति बोला कि यदि यही बात है तो पीटो। लेकिन अिसमें आगे कोअी कुछ न बोला और धीरे धीरे लोग खिसक गये। कुछ बहनें गालियां देती जा रही थीं कि आये बड़े गांधीवाले। आज तो स्वांग बन्द करा दिया, कलको ब्याह-बरात भी बन्द करा देंगे। अिनका सत्यानाश हो। दूसरे मोहल्ले-वालोंने ताना मारा कि आज अपने मोहल्लेमें तो तमाशा बन्द करा लिया है, कल हमारे मोहल्लेमें बन्द कराने आना। मारते मारते मुंह लाल बना देंगे। हमने दूसरे दिनके लिअे भी वैसा ही समझौतेका और यदि समझौता न हो सके तो सत्याग्रह करनेका कार्यक्रम रख लिया था। लेकिन तमाशा करनेवाले ही राजी न हुअे और गांवसे चले गये। फिर तो आसपासके गांवोंमें भी स्वांग बन्द हो गया।

मेरे अेक दूसरे चाचा तथा गांववालों पर अिस घटनाका अच्छा असर हुआ। वे कहने लगे कि देखो जिन लड़कोंने जब रातको केवल जय बोलकर सारे

गाववालोंको भगा दिया, तो अब अंग्रेजोंको भी भगा देनेमें ये सफल होंगे। हमारे दिलोंमें भी अिस घटनाके बाद निर्भयता तथा आत्म-विश्वास दृढ हो गये।

४

निकट सम्पर्क और सन्देहका अन्त

सन् १९२१ से १९२८ तकका समय जिस तरहसे बीता, अुसका सब वर्णन लिखने बैठूं तो मेरी ही आत्मकथा बन जाये। अिसलिअे अुसको टाल देता हूं। अितना ही कह सकता हूं कि मेरी गति सांप-छछूंदर जैसी थी। अुधर मैं बापूजीकी तरफ खिंचता था और अिधर परिस्थिति मुझे घरमें बांध कर रखना चाहती थी। आन्दोलनमें काम किया, खूब घूमा। बापूजीका 'हिन्दी-नवजीवन' पढता रहा। 'आत्मकथा' भी पढी। लेकिन बापूजीके पास पहुंचा कैसे जाय, अिसका कोअी मार्ग नहीं सूझा।

जहां तक मुझे याद है १९२९ के मार्चकी २९ तारीखको नअी दिल्लीमें बडी धारासभाके अध्यक्ष स्व० विठ्ठलभाअी पटेलके बंगले पर कांग्रेस वर्किंग कमेटीकी मीटिंग थी। मुझे पता चला कि बापूजी वहां आ रहे हैं। मैं अपने अेक चाचा ठाकुर टोडरसिंहजीकी सिफारिश लेकर गांधी आश्रमके व्यवस्थापक श्री विचित्रभाअीके पास गया। अुनसे मैंने कहा कि वे मुझे गांधीजीसे मिला दें। मैंने अुनको पत्र बताया। अुन्होंने मेरे ठहरने आदिकी व्यवस्था कर दी। बापूजीसे मुलाकातकी व्यवस्था तो वे नहीं कर सके, पर स्व० विठ्ठलभाअीकी कोठी पर, जहां बापूजी ठहरे हुअे थे, अुन्होंने मुझे पहुंचा दिया। दूसरे मित्रगण भी मेरे साथ थे। हम स्व० विठ्ठलभाअीके बंगलेके मैदानमें जाकर बैठ गये। वर्किंग कमेटीकी मीटिंग चल रही थी। हमने कअी कागज बापूजीको मुलाकात मांगनेके लिअे भेजे, लेकिन वे अुनके पास तक किसीने जाने नहीं दिये। मैं छटपटा रहा था कि मुलाकात कैसे होगी? तब अेक मोटर-ड्राअिवरने अुर्दूमें पत्र लिखाकर फिर भेजा। वह पत्र मौलाना आजाद साहबने पढकर बापूजीको सुनाया। बापूजीने कहा, अुनसे कहो कि ठहरें, मैं अभी नीचे आता हूं। मैंने जब बापूजीका अुत्तर सुना तो बडा आनंद हुआ।

शामको वर्किंग कमेटीकी मीटिंग खतम हुअी और बापूजी नीचे आये। बापूजीके साथ अुनके पुत्र देवदासभाअी भी थे। मैंने बापूजीके चरणोंमें

प्रणाम किया और पूछा, "मनुष्यको अपनी आध्यात्मिक अुन्नतिके लिअे क्या करना चाहिये?"

बापू बोले, "सच्चा बनना चाहिये। आध्यात्मिक अुन्नतिका यही सर्वश्रेष्ठ मार्ग है।"

दूसरा प्रश्न मुझे सूझ ही नहीं रहा था और बापूके पास अितना समय भी नहीं था। श्री विचित्रभाअीने मुझे कहा था कि तुमको जो कुछ पूछना हो लिखकर ले जाओ, क्योंकि गांधीजीके सामने जाकर लोग हक्काबक्का भूल जाते हैं और कुछ पूछते नहीं बनता। लेकिन मैंने तो सीधे ही प्रश्न पूछना ठीक समझा। सोचा अुस वक्त जो सूझेगा पूछूंगा। यह प्रश्न सारे भावोंका निचोड था। अितने निकटसे बापूका दर्शन, मेरा प्रश्न और अुनका अुत्तर! अुस समयके आनन्दका वर्णन करना मेरी शक्तिके बाहर है। न तो मैं घबराया और न होशहवास ही भूला। बापूकी प्रेमभरी मुस्कराहटने मुझे मोहित कर लिया।

अुस समय बापूका घूमनेका समय था। बापूके साथ मौ० अबुलकलाम आजाद और प० मदनमोहन मालवीयजी थे। बापू घूमने चले, मैं भी पीछे पीछे चला, दो मेरे साथी और थे। जिस प्रकार अेकांतमें बापूजीके साथ घूमनेका जो अवसर मुझे मिला, अुसके लिअे मैं अीश्वरको अनेक धन्यवाद दे रहा था और अपने आपको कृतकृत्य मान रहा था। अुनकी आपसमें क्या बात चल रही थी, यह तो मुझे याद नहीं है। लेकिन बापूकी आवाज सुनकर मुझे खूब आनन्द होता था। बापूके लौटने तक मैं अुनके पीछे ही घूमता रहा। मुझे पता नहीं था कि घूमनेके बाद बापूजी प्रार्थना करते हैं। अिसलिअे अुनके बंगले पर लौटनेके बाद ही मैं वापिस दिल्ली चला गया। बादमें पता चला तो प्रार्थनामें शामिल न होनेका मुझे बहुत दुःख हुआ।

सन् १९२१ से १९२८ तकके समयमें मेरे विचारोंमें अनेक प्रकारके अुतार-चढाव होते रहे। मेरा मन कुछ सन्यास-वृत्तिका होता जा रहा था, और राजनीतिसे मुझे अुदासीनता-सी हो गअी थी। परंतु बापूके अिस छोटेसे दर्शनने जादूका-सा काम किया और मेरा मन फिर कांग्रेस आन्दोलन और बापूकी तरफ जोरसे खिंच गया।

सन् १९२९ में बापूने यू० पी० में खादी-प्रचारके लिअे दौरा किया था। अुसी सिलसिलेमें बापूका खुर्जा आनेका कार्यक्रम भी था। शायद अक्तूबरका महीना था। मैंने भी कुछ साथी कार्यकर्ताओंको अिकट्ठा करके किसानोंकी

ओरसे बापूको अभिनन्दन-पत्र और अेक थैली भेट करनेका प्रबध किया। किसानो-के पाससे अेक अेक पैसा मागकर कुछ रुपये अिकट्ठे किये, अेक अभिनन्दन-पत्र भी लिखा। वह बापूजीको भेट किया। अभिनदन-पत्र अिस प्रकार था

ॐ

। सत्यमेव जयते नानृतम् ।

श्रीयुत पूज्य महात्मा गाधीजीको

श्री कृषक कांग्रेस कमेटी समसपुर, जिला बुलन्दशहरकी तरफसे

श्रीमन्, वन्दे।

आपकी प्रशसाकी गधमे हम कृषक भी महक अुठे हैं। गध वाणीका विषय न होनेसे हम ही क्या सभी आपकी प्रशसा करनेमे असमर्थ हैं। भारत-वर्ष ही नहीं सारी दुनिया, अमेरिका अित्यादि देश भी, आपकी प्रशसाकी गधसे सुगन्धित हैं। जब जब हम आपके अुपकारोको याद करते हैं तब हमको अीश्वरकी करुणाका अनुभव होने लगता है। आपके हृदयमे भगवानके अहिंसा, सत्य, न्याय, शीलादि गुणोका पूर्णतया प्रादुर्भाव हो गया है, अिसलिअे हम आपके आदेशको अीश्वरका ही आदेश समझते हैं। जब भारतके पूर्वज महान पुरुषोंके कीर्तिपुजका अितिहास विलायती सभ्यताके अधकारमे मलिनताको प्राप्त होने लगा, तब आपने अपने चारित्र्यबल और सौजन्यके प्रकाशसे अुस आधुनिक सभ्यताके तमपुजको छिन्नभिन्न कर ऋषि-मुनियोकी कीर्ति-पुज गाथाको अुज्ज्वल बना दिया।

अे सयमके अवतार! जब तेरी अफ्रीका जैसे असभ्य देश-सबधी सत्याग्रहकी घटनाओंका स्मरण होता है तब प्रह्लादका चरित्र आखोंके सामने खिच आता है और विश्वास होता है कि दुष्ट हिरणाकुशके शासनकी नाअी आधुनिक दु शासनको आप छिन्नभिन्न कर देगे। जब आपका यह वाक्य 'जिसका अीश्वरके सिवा और कोअी अवलम्ब नहीं वह जानता नहीं कि ससारमे पराभव भी कोअी चीज है' याद आता है, तो अैसा साहस होता है कि बडेसे बडा तिरस्कार भी सत्याग्रहीको नही झुका सकता। अे प्रेमावतार! तूने अपना तिरस्कार करनेवालोंकी रक्षा की। तेरी दृष्टिमे सब देश अेक समान हैं, अिसलिअे तू दुनियाका प्राण है। ससारमे तुझको ही लोग सबसे बडा महान पुरुष समझते हैं। आध्यात्मिक विषयमे तो आपके वाक्योको पढकर ही हम दक्ष बन जाते हैं। आपके ये वाक्य 'हम स्वाद लेनेको पैदा नही हुअे हैं। हम

अपने बनानेवालेको पहचाननेके लिअे ही जीते हैं। यह शरीर हमको किराये पर मिला है, अिसलिअे किरायेके बदले अुसकी प्रार्थना करनी चाहिये और अन्त समयमें जैसा मिला है वैसा ही मालिकको सौंप देना चाहिये।' जब हम याद करते हैं तो संसारके विषयभोग नीरस प्रतीत होने लगते हैं और हृदयमें अीश्वरप्रेम अुमडने लगता है। जब जब मत-मतान्तरोंकी शंकाओंसे हम दुःखी होते हैं, तब आपके अिस आनन्ददायक वाक्यका स्मरण होता है कि 'राम न रामायणमें है, कृष्ण न गीतामें है, क्राअिस्ट न बाअिबलमें है, खुदा न कुरानमें है, किन्तु ये सब मनुष्यके चरित्रमें है, चरित्र नीतिमें है, नीति सत्यमें है, सत्य है सो ही शिवस्प है।' अिसके स्मरणसे हम अिन मत-मतान्तरोंके झगड़ोंसे अलग रहते हैं। जब हमारी आंखें आधुनिक भौतिक अुन्नतिको देख-कर चकाचौंध हो गअी और हम अपने प्राचीन रीति-रिवाजोंको भूलने लगे, तब आपने ही हमको समझाया कि यह अुन्नति मनुष्यको बेकार और निकम्मा बनाती है, वास्तविक भौतिक अुन्नतिकी अितनी ही आवश्यकता है जिससे हम जिन्दा और नीरोग रह सकें।

आपने संयमको ही हमारा ध्येय बतलाया और यह भी बतलाया कि ज्यों ज्यों हम संयमी बनते हैं, त्यों त्यों अीश्वरके समीप पहुंचते हैं। हम अपनी वेशभूषा, खानपानको भूल चुके थे। परन्तु आपने हमको अज्ञानकी घोर निद्रासे जगाया और चूल्हे, चक्की, चरखेको ही जीवनका मुख्य महा-यज्ञ बतलाया। हम लोगोंने चर्बी लिपडे कपड़ोंको पहनकर अपनेको भुला दिया था और अपने पूर्वजोंको हम असभ्य समझने लगे थे। परन्तु आपने हमको शुद्ध खादी पहनाअी और पूर्वजोंका अुच्चादर्श पुनर्वार जाग्रत कर दिया। आप रातदिन हमारी अुन्नतिके लिअे चिन्तित रहते हैं, क्योंकि आप करुणा-निधि हैं। आपसे हमारे दुःख नहीं देखे जाते। हम लोग परतन्त्रताकी बेड़ीमें जकड़े पड़े हैं। अुस बेड़ीके काटनेमें आप अैसे लगे हैं कि अब कोअी संदेह नहीं कि वह कटनेवाली है। आपकी यह भारतयात्रा भारतका पुनरुत्थान करनेके लिअे ही है। यह हमारा बड़ा भारी सौभाग्य है कि बिना प्रयासके ही आज आपके दर्शन प्राप्त हो रहे हैं। आपके दर्शनोंके आनन्दमें हम सब दुःख भूल गये हैं।

हमारे अन्दर जो छूतछातका मिथ्याभिमान था, अुसको आपने अपने चरित्रबल और पवित्रतासे दूर कर दिया है। क्योंकि चरित्रवान ही सबसे बड़ा और पवित्र मनुष्य है। जो दुश्चरित्र है वही अछूत है, यह शास्त्रका

सिद्दान्त है। आप हम दीनदुखी कृपकोंके प्राण हैं। हम आपके अूपर निछावर हैं। बारडोलीके कृषक आपके अुपदेशामृतका पान करके अेसी बडी सरकारको नीचा दिखा सके, यह आपकी ही असीम कृपा थी। चम्पारनमे आपने कृपकोको महान कष्टसे मुक्त किया। कहा तक आपके गुणगान करे ? रौलेट अेक्ट, जिसको गलेगोट कानून कहते थे, अुसका विरोध आपने ही किया। अिस दीनहीन भारतके लिअे औश्वरने आपको भेजा हे। हमे पूर्ण विश्वास है कि आप अपने सामने ही हमको स्वतत्र कर देगे।

हममे कोओी शक्ति नही कि हम कृतज्ञता प्रकट कर सके। हम आपके अुपकारोको कहा तक याद करे ? आपकी गोदीमे हम सब कृषक विराजमान हैं। आपकी आज्ञानुकूल हम प्राय सभी काग्रेस कमेटीके मेम्बर जेसे हैं। जब हम देहली आपके दर्शनोको गये थे तो आपने यह कहा था कि अै किसानो, सच्चे बनो, यही अुत्तम मार्ग है। सो हमारी रातदिन प्रभुसे प्रार्थना है कि हम महात्माजीके अुपदेशको कभी न भूले और अुसे अपने कार्योमे परिणत करके दिखलावे। अब आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हम अपठितोंके अिस साधारण अभिनन्दन-पत्रको स्वीकार करे।

३–११–’२९ विनीत

कृषक काग्रेस कमेटी, ममसपुर

पैसे तो थोडे ही थे। वे ही पत्रपुष्पके रूपमे हमने बापूजीको भेट किये। खुर्जाकी मीटिंगमे बापूजी सिर्फ हमारे ही अभिनन्दन-पत्रके अुत्तरमें बोले। अुन्होने कहा

“मै सन् १९०८ से अपने आपको किसान मानता हू। जन्मसे मैं किसान नही हू, लेकिन कर्मसे किसान बननेका पूरा पूरा प्रयत्न कर रहा हू। आज किसानोकी जो दुर्दशा हे अुसे देखकर मुझे दर्द होता हे। न अुनको पेटभर खाना मिलता हे, न अुनके शरीर पर कपडा हे। किसान और अुनके बैल हड्डियोके पिंजरमात्र रह गये हे। अुनमे मास और रक्त तो दिखता ही नही हैं। और अुनके कधो पर अितना बोझा है कि जिसको सभालना अुनके लिअे असभव हो रहा हे। शहरोंके धनी लोग और सरकार अुनके कधो पर ही चल रही है। अगर वे अपना कधा हटा लें तो ये दोनो ही गिर जानेवाले हे। किसान अन्न पैदा करता है, सबको खिलाता है, पर खुद भूखा रह जाता है। अुसके घरमे कपास होती है लेकिन कपडेके लिअे वह

दूसरोका मोहताज रहता है। अपने घरमें सूत कातकर अपना कपडा तो वह बना ही सकता है। आज परदेशी सल्तनत हमारे सिर पर बैठी है। अिससे हमारा बहुतसा पैसा विदेश चला जाता है। चरखा हमारा बहुतसा पैसा बचा सकता है।"

अुस समय बापूजीके साथ पू० बा भी थी, लेकिन अुनका दर्शन मै नही कर सका।

दिसबरमें लाहौर काग्रेस हुअी और अुसमे पूर्ण स्वतत्रताका प्रस्ताव पास हुआ। सत्याग्रह शुरु करनेकी रूपरेखा बनानेका काम बापूजीने अपने जिम्मे लिया। म बडी अुत्कठासे 'हिन्दी-नवजीवन' की राह देखता रहता था। मै यह जाननेके लिअे अुत्सुक था कि बापूजी किस तरह लडाअीका कार्यक्रम बनाते है। आखिर अुन्होने नमक-सत्याग्रह करनेका निश्चय किया। बापूजीने आश्रम छोडते समय जो भाषण दिया था अुसमें अुनकी अिस प्रतिज्ञाका मुझ पर बडा असर हुआ कि 'मै स्वराज्य लेकर ही आश्रममे लौटूगा, नही तो मेरी लाश समुद्र पर तैरेगी।' मेरी भी अिच्छा थी कि मै बापूजीकी टोलीमे शामिल होअू। लेकिन बापूने लिख दिया था कि बाहरसे कोअी आदमी यहा आनेका प्रयत्न न करे। मै वहा पहुचनेका रास्ता भी नही जानता था। अिसलिअे ६ अप्रैलको अपने अपने स्थान पर नमक-कानून तोडनेका जो कार्यक्रम था, अुसमे बुलन्दशहर जिलेमे खुर्जाकी पहली टोलीमे मै शामिल हो गया। और मैने भी यह निश्चय किया कि स्वराज्य मिलने तक घरमे नही बैठूगा। नमक-सत्याग्रह आरभ होने पर हमारी खुर्जा तहसीलको प्रथम स्थान मिला। तहसीलके तेरह सत्याग्रहियोमे से पाच हमारे गावके ही थे, जिनके नाम ये है

१ पडित खेतलराम, हमारे पुरोहित।

२ श्री कमलसिंह, मेरे ताअूजात भाअी और बालमित्र।

३ श्री भूलेसिंह, मेरे चाचाका पुत्र जो बडा होकर काग्रेस कमेटीका मत्री व खजाची रहा।

४ प० ढक्कनलाल, गावके पासकी रामगढीके रहनेवाले।

५ मै स्वय।

अिन तेरह सत्याग्रहियोके जत्थेके नायक श्री बशीरभाअी पठान खुर्जाके प्रतिष्ठित पठान खानदानके थे। अुनकी लगन तथा सादा जीवन बडा आदरणीय था। श्री बशीरभाअीके पकडे जानेके बाद जत्थेका नायक मै बना। रोजाना नमक बनाया जाता था और पुलिस देखती रहती थी। कुछ लोग हलचलके

शौकीन थे। अिसलिअे तय किया गया कि तहसीलके सामने नमक वनाया जाय। तहसीलके सामने घासकी गजिया लगी थी। और पुलिस, किसी न किसी गैर-कानूनी अपराधमें हमें पकडनेकी फिक्रमे थी। अिसलिअे मैंने तहसीलके सामने नमक वनानेसे अिनकार कर दिया। अिससे डिक्टेटर घवराये कि अुन्होंने अैलान करा दिया है, अव नमक न वनानेसे लाज जायेगी। मैंने कहा कि यदि आसपास भीड जमा न हो और घासकी गजियोमे आग न लगने देनेका प्रवध कोअी कर ले तो मै नमक वनानेको तैयार हू। डिक्टेटर श्री आनन्दस्वरूपजी विस्मिल राजी हो गये। पुलिसने भी अजीव तैयारी कर रखी थी। जव हमने तहसीलके सामने चूल्हा वनाया तो पुलिसके सिपाही चूल्हेमे पैर रखकर वैठ गये। अिससे मुझे वडा आनन्द हुआ। क्योकि हमारा ही हथियार अुन्होंने अपनाया। लेकिन हमे तो नमक वनाना ही था। हमने दूसरे स्थान पर आग जलाअी और वही चूल्हेका आयोजन करके नमक वनाया। पुलिसने वहा भी अहिंसाका वरताव किया। जव अुन्होंने अुवलती हुअी कढाअी अुलटनेकी कोशिश की तो अुवला हुआ पानी मेरे हाथो पर गिर जानेसे मेरे हाथ जल गये, लेकिन और कोअी दुर्घटना नही हुअी। अिससे अहिंसामें मेरा विश्वास सतेज हुआ।

फिर आन्दोलन कुछ ठडा भी पडा, जिससे मुझे सत्याग्रहकी लडाअीके सफल होनेमे सन्देह हो गया। मै देहातोमें घूम रहा था। अेक रोज अकेला अेक नहरकी शाखाके किनारे दिशा-मैदानको गया और अुसके किनारे वैठकर प्रार्थना करने लगा। मैंने फौजमे रहते हुअे अग्रेजोकी सारी फौजी ताकतको देखा था। मेरे सामने अुनके हथियार, अुनकी फौज, अुनकी किलावन्दीका चित्र नाचने लगा। वडे वडे जमीदार, व्यापारी, अफसर सव अग्रेजोके पक्षमे है। काग्रेसमे वहुत थोडे आदमी है, जिनके पास न खाने-पीनेका ठिकाना है, न लडाअीके कोअी साधन है। तो अैसी सल्तनत पर कैसे वापूजीकी विजय होगी? अिस सदेहने मेरे मनको घेर लिया। परन्तु न मालूम किस शक्तिने मुझे सुझाया

रावन रथी विरथ रघुवीरा। देखि विभीपन भयअु अधीरा॥
अधिक प्रीति मन भा सदेहा। वदि चरन कह सहित सनेहा॥
नाथ न रथ नहि तन पदत्राना। केहि विधि जितव वीर वलवाना॥
सुनहु सखा कह कृपानिधाना। जेहि जय होअि सो स्यदन आना॥
सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य शील दृढ ध्वजा पताका॥

बल विवेक दम परहित घोरे। छमा कृपा समता रजु जोरे॥
ईस भजनु सारथी सुजाना। बिरति चर्म संतोष कृपाना॥
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा। बर बिग्यान कठिन कोदंडा॥
अमल अचल मन त्रोन समाना। सम जम नियम सिलीमुख नाना॥
कवच अभेद बिप्र गुरुपूजा। अेहि सम बिजय अुपाय न दूजा॥
सखा धर्ममय अस रथ जाके। जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके॥
महा अजय संसार रिपु, जीति सकअि सो बीर।
जाके अस रथ होअि दृढ़, सुनहु सखा मतिधीर॥

सचमुच ही मेरी अधीरता विभीषणके जैसी थी और मैंने रामके अुत्तरके सब गुण बापूजीमें देखे। बस, मेरे मनमें निश्चय हो गया कि बापू अिस लड़ाअीमें विजयी होंगे। और बापूके प्रति मेरी निष्ठामें जो थोड़ा अुथलापन था अुसकी गहराअी बहुत बढ़ गअी। मुझे अटल विश्वास हो गया कि बापूका जन्म अिस रावणशाहीका नाश करनेके लिअे ही हुआ है।

५

साबरमती आश्रममें

गांधी-अिरविन-पैक्टके बाद जेलसे छूटने पर मेरे मनमें विचार आया कि अब तो व्यवस्थित रूपसे रचनात्मक काममें जुटनेकी योग्यता प्राप्त करनेके हेतुसे साबरमती आश्रममें पहुंच जाना चाहिये। मैंने आश्रमके मंत्री श्री नारणदास गांधीको* पत्र लिखा और अुन्होंने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली। मैं १९३१ की ५ जुलाअीको साबरमती आश्रम पहुंच गया और खादी विद्यालयमें दाखिल हो गया।

पाखाना-सफाअी

मैं आश्रममें ता० ५ को पहुंचा और ता० ६ को ही मुझे पाखाना-सफाअीमें सम्मिलित होना पड़ा। आश्रममें रहनेवालोंके लिअे, चाहे वे विद्यार्थी

* नारणदास गांधी, बापूजीके भतीजे, साबरमती आश्रमके मंत्री थे और सारे आश्रमवासियोंकी जवाबदारी बापूजीके बाद अुन पर थी। आजकल वे राजकोटमें रहते हैं और सौराष्ट्रके सब रचनात्मक कार्योंके सूत्रधार हैं।

हो या स्थायी सदस्य, सफाओीका काम स्वय सीख लेना अनिवार्य था। श्रद्धालु दर्शकोको भी, जो तीन दिन आश्रममे ठहर सकते थे, अेक वार तो अिस काममे सम्मिलित होनेकी सलाह दी जाती थी। क्योकि अितना कर लेनेके बाद ही अुनका आश्रम देखना सपूर्ण माना जाता था। पहले दिनका अनुभव, जो मैंने लिख रखा है, यहा देता हू। मेरे साथी अेक विहारी भाओी थे, जिनको सफाओीके काममे मुझे सहायता करनी थी, अथवा यो कहे कि जिनसे मुझे यह काम सीखना था। वे कओी दिनोसे सफाओी करते आ रहे थे और सिखानेकी योग्यता रखते थे। बाल्टिया मैलेसे मुह तक भरी हुओी थी। अुन्हे बासोमे लटका कर खेतमे ले जाया गया। वहा मुझे सारी क्रियाअे बडे प्रेमसे समझाओी गओी। बदबू तो खूब आओी। लेकिन कुछ तो अुन भाओीके समझानेका ढग आकर्षक था और कुछ मेरे मनकी पूर्व-तैयारी थी कि यहा भगीका काम स्वय करना ही होगा। अिसलिअे मुझे पहले दिन भी अिस कामसे घृणा नही हुओी और सफाओी पूरी करके जब मैंने साबरमती नदीमे स्नान किया तो बडा ही आनद आया। फिर तो यह काम मुझे प्रिय हो गया। जब जब मेरा नबर आता तभी प्रसन्नता होती। यह विचार भी मनमे आता कि अिस बाहरकी सफाओीसे जब अितना आनन्द होता है तो यदि अन्तरको धोना, पोछना, स्वच्छ करना आ जावे तब तो न मालूम कितना आनन्द हो सकता है। वास्तवमें पाखाना-सफाओी आश्रमके जीवनका अेक अविभाज्य अग थी।

दिनचर्या व भोजन

आश्रममे अैसे ही विद्यार्थी या कार्यकर्ता टिकने पाते थे जिन्हे पाखाना-सफाओीके काममे जरा भी झिझक नही होती थी। शेष स्वयमेव चले जाते थे। पाखाना-सफाओी स्वत किसीका भी पूरे दिनका काम नही था, बल्कि वह शारीरिक श्रमके दैनिक कार्योमें से अेक था। और सब लोगोको बारी बारीसे अिसमे भाग लेना अनिवार्य था। आश्रमके पाखाने भी शहरोके सडास जैसे नही थे। सफाओी करते समय क्वचित् ही मलमूत्रका हाथोको स्पर्श होने पाता था। अिसमे मुख्य बात सिर्फ मनकी सूग निकाल देनेकी थी। और मनमें से यह सूग निकाल देना आश्रममे रहनेकी अेक अनिवार्य शर्त थी। जो खादीका काम सीखने भरके लिअे भी आश्रममें आते थे, अुनके लिअे भी यही नियम था।

आश्रममें भोजनका क्रम अिस प्रकार रहता था

प्रात ६।। बजे — राब व डबल रोटीका नाश्ता।

दोपहरको १०।। बजे — रोटी, दाल, साग और चावल।

सायकाल ५।। बजे — खिचडी, डबल रोटी, साग।

दूध-घीके कूपन खरीदे जा सकते थे और अुनके बदलेमे जितना दूध जिसे आवश्यक हो मिल सकता था। खादी-विद्यार्थियोको १२ रुपये मासिक छात्रवृत्ति मिला करती थी। भोजनखर्च करीब ५ रुपये मासिक आता था। करीब २।। रुपये फुटकर खर्च होते थे। शेष दूध-घीके लिअे बच रहते थे। कोअी विद्यार्थी अस्वस्थ हो गया हो तो विशेष मात्रामे दूध-घीकी व्यवस्था हो जाती थी। कोअी कोअी तो दूध-घीका त्याग करके कुछ पैसे बचाकर अपने माता-पिताकी सहायताके लिअे भेज देते थे।

मेरा और अुन बिहारी भाअीका सहवास बहुत समय तक रहा था। वे बादमे हिमालय चले गये और सुननेमें आया कि वहा जवानीमे ही अुनका शरीर छूट गया।

कुछ परिचय

पुराने आश्रमवासियोमे से कुछका परिचय यहा दिया जाता है।

श्री सुरेंद्रनाथ गुप्ता १९१६ में बापूजीके आश्रममे प्रविष्ट हुअे। तबसे अेकनिष्ठ आश्रमवासी रहे। साबरमती आश्रम छोडनेके बाद वे गुजरातके खेडा जिलेके बोरियावी गावमे ग्रामसेवाका काम करते रहे। आजकल समन्वय आश्रम, बोधगया (बिहार) मे काम करते है। अिनसे मेरा परिचय आश्रममे विशेष कारणसे हुआ। आश्रममें पानी पीनेकी प्रथा अैसी थी कि पात्रको मुहसे अूचा रखकर बिना ओक लगाये सीधा मुहमे पानी गिराते थे। अैसा करनेमें पात्र कभी कभी मुहसे छू भी जाता था। अिसलिअे मै सार्वजनिक बरतनसे पानी पीना पसन्द नही करता था। दूसरे, आश्रममे आम तौर पर गुजराती भाषा बोली जाती थी, जिससे हिन्दीमे बाते करनेकी मेरी भूख पूरी नही होती थी। जब कोअी हिन्दी बोलनेवाला मिलता तो मुझे बडी खुशी होती। बरेलीके श्री शीतलासहायजी अेक बार आश्रममे आये। अुन्हे मेरी अुपरोक्त कठिनाअियोका जब पता चला तो अुन्होने मेरा परिचय श्री सुरेन्द्रजीसे कराया और कहा कि आप अपनी पानीकी प्यास और हिन्दीमें बोलनेकी भूख दोनो अिनके पास आकर मिटा सकते है। तबसे हमारा परिचय दिनोदिन बढ़ता गया।

मीराबहनका थोडा अधिक परिचय यहा देता हू। वे ७ नववर १९२५ को बापूजीके पास आओी। और बडे प्रेम और श्रद्धासे बापूजीको पिता ही नही वरन् अिस जीवनका मार्गदर्शक बनाकर अुनकी सेवामे तल्लीन हो गअी। पूज्य बापूजीने भी अुनकी अिस प्रकार सभाल की, जैसे कोअी अत्यन्त निकटकी अपनी ही पुत्री हो। बापूके साबरमतीके निवासस्थान 'हृदयकुज' के पासवाली नदीतटकी दो कोठरियोमे से अेकमे वे रहती थी। जब वे भोजनके समय अपनी कोठरीमें आती और मै अुनके हाथो परसे दो पक्षियोको, जो अुनके पासवाले नीम पर रहते थे, किशमिश खाते देखता तो मुझे सहसा प्राचीन कालके अुन आश्रमोका स्मरण हो आता, जहा कि मनुष्य अन्य प्राणियोके साथ भयरहित वातावरणमे रहा करते थे। मीराबहनका सेवाग्रामका हाल तो अिस पुस्तकमे आगे खूब आया है।

आश्रममे दोनो समयकी प्रार्थना स्व० पडित नारायण मोरेश्वर खरे कराया करते थे। वे सगीतशास्त्री थे और बडे प्रेम व तल्लीनतासे भजन गाया करते थे। अेक दिन रामायणके पारायणके समय, जो प्रात ५॥ बजेसे आरभ होकर रातके १० बजे समाप्त हुआ, मै भी अुनके साथ शरीक था। बीचमे सिर्फ १ घटा आराम तथा ३५ मिनट फलाहारमे लगे थे। मैंने अिस पारायणके समय अुनकी गहरी भक्ति और कोमल हृदयके भरपूर दर्शन किये। बार बार प्रसग आने पर अेकाध मिनट तक अुनका गला रुध जाता था और आसू बह निकलते थे। अुनके सुपुत्र रामभाअू तथा सुपुत्री मथुरी दोनो सगीतमे प्रवीण निकले। पडितजी पूज्य नाथजीके भक्त थे। हरिपुरा काग्रेसके अवसर पर वे वही अचानक बीमार पड गये और अधिवेशन पूरा होनेके पहले ही अुनका स्वर्गवास हो गया।

पूज्य जमनालालजी बजाजका भी प्रथम परिचय मुझे साबरमती आश्रममे ही ता० ३०–७–'३१ को मिला था। अुन्होने हमे आश्रममे सत्य, अहिसा, त्याग, सेवाभाव आदि सद्वृत्तिया सीखकर जानेकी सलाह दी थी।

पूज्य राजेन्द्रबाबूसे भी प्रथम परिचय यही हुआ था। अुनका निवेदन यह था कि वे अपनेको अुपदेश देनेका अधिकारी नही मानते, बल्कि स्वय हम जैसे बननेकी वृत्ति रखते हैं। अुन्होने यह सलाह दी कि जो कुछ हम यहासे सीख कर जावे, अुसे जीवनमें अुतार कर अुससे जनताको लाभ पहुचावें।

आश्रमका दैनिक कार्य प्रात ४ बजेसे रातके ८ बजे तक घडीकी सुअियोंके साथ चला करता था। अुसे करते हुअे रातको दो घटेकी चौकी देना मुझे अखरता था। मैंने आश्रमके मत्री श्री नारणदास गाधीसे यह प्रश्न किया था कि अस्तेय व्रतका पालन करनेवाले जहा रहते हो वहा चोरीकी आशका क्यो हो? अुन्होंने बडे प्रेमसे मुझे समझाया था कि आश्रमकी सपत्ति किसीकी निजी सपत्ति न होकर सार्वजनिक सपत्ति है। यदि अुसकी रक्षा हम न करें तो अपने कर्तव्यसे गिर जाये। अिस प्रकारकी अनेक चर्चाअे अुनसे हुआ करती थी और वे बडी योग्यता और प्रेमसे हमारी शकाओका निवारण करते थे। वे अपना सारा बचा हुआ समय सदा कताअीमें लगाते थे। और अपने घरमें अपने हाथकते सूतकी खादीका ढेर लगाये रहते थे। अुनकी कताअीका क्रम कभी टूटा नही सुना और आज भी वैसा ही जारी है।

महिलाओमें अुल्लेखनीय परिचय कु० प्रेमाबहन कटकसे हुआ था। वे अुस समय बहनोंके छात्रालयकी व्यवस्थापिका थी और लडकियोको पढाती भी थी। अुनका स्वभाव, रोब, चालढाल सब फौजी अफसरके सदृश थे। अुनकी कठोरताके खिलाफ शिकायतें खूब होती थीं, लेकिन वे बापूजी तथा श्री नारणदासभाअीमें अगाध श्रद्धा रखती थीं, जिसके सहारे अुनका जीवन आज अूचे शिखर पर जा पहुचा है। आजकल वे पूनाके पास सासवड नामक स्थानमे रचनात्मक कार्यका बडा सुन्दर आश्रम चला रही हैं।

आश्रमके अिस छोटे परिवारको मै अिमाम साहबका परिचय दिये बिना समाप्त नही कर सकता। अेक दिन अुनका परिचय अिस प्रकार सहजमे ही हुआ। शामको विद्यालयकी छुट्टी होने पर जब मै बाहर आया तो देखा कि अेक मुसलमान आगन्तुक यह पूछ रहे हैं कि यहा अिमाम साहब नामके जो प्रसिद्ध मुसलमान रहते है अुनका घर कहा है। अुनकी बोलीसे मैंने जाना कि वे अुत्तर प्रदेशके हैं। पूछने पर अुन्होंने अपनेको बुलन्दशहरका वकील बताया और कहा कि मै अिस वक्त नवाब छतारीको गोलमेज कान्फरेन्सके लिअे बम्बअीसे विदा करके लौटा हू और आश्रम देखने यहा चला आया हू। लेकिन अब अिमाम साहबसे मिलनेके लिअे वक्त कम रह गया है, अिसलिअे चला ही जाअूगा। मैंने सोचा कि अपने जिलेका आदमी है अिसकी कुछ सेवा तो कर ही देनी चाहिये। अिसलिअे मै अुन्हे आग्रहपूर्वक हाथ पकडकर अिमाम साहबके बगले पर ले गया। अिमाम साहबने अुनका यथोचित सत्कार किया। मैंने भी अुनके

ये प्रथम दर्शन किये थे। अुनके स्नेही चेहरेको देखकर मेरे मनमे बडा आदरभाव पैदा हुआ। वातो वातोमे खादीका प्रसग छिड गया। वकील साहबने फरमाया कि यो तो खादीकी वात ठीक है, लेकिन हिन्दुओका रुख हमारे साथ अच्छा नही हे। अितना कहना था कि अिमाम साहव विजलीकी तरह कडककर वोले, "खादीमे हिन्दू-मुस्लिमका सवाल कैसे अुठता है? क्या खादी हिन्दुओकी वपौती है? अगर अैसा ही हो तो मै क्या यहा झख मारनेको पडा हू? खादी तो हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, अीसाअी सभीके लिअे अेकसी है। हिन्दू स्त्रिया तो वाहर निकलकर और भी काम कर सकती है, लेकिन मुसलमान पर्दानशीन औरतोके लिअे तो चरखा रोजीका वडा जरिया हे। मुसलमान धुनते है और वुनते भी है। अगर हिसाव निकाला जाय तो खादीसे मुसलमानोको पहुचनेवाला फायदा हिन्दुओसे कम नही पाया जायगा। आप जैसे पढेलिखे लोग यह वात नही समझते और खादीमे भी हिन्दू-मुस्लिम सवाल खडा करते है यह अफसोसकी वात है।" वकील साहवका मुह अुतर गया। वे कुछ भी अुत्तर दिये विना सलाम करके चलते वने। मैने अिमाम साहव जैसे तेजस्वी और समझदार स्पष्टवक्ताके दर्शन करके अपने भाग्यको सराहा और साथ ही खादीका भी महत्त्व समझा।

अिमाम साहव अपने परिवारके साथ जीवनभर सावरमती आश्रममें रहे और वहीं सेवामय जीवन विताते विताते अुनका अवसान हुआ। अुनकी मृत्युके विपयमे वापूजीने यरवडा मदिरसे ता० ३०-५-'३२ के पत्रमे आश्रमवासियोको लिखा था "अिमाम साहवका अकेला ही मुसलमान-कुटुम्ब अनन्य भक्तिसे आश्रममे वसा। अुन्होने अपनी मृत्युसे हमारे और मुसलमानोके वीच न टूटनेवाली गाठ वाध दी है। अिमाम साहव अपने आपको अिस्लामका प्रतिनिधि मानते थे और अुसी रूपमे आश्रममे आये थे।"

अुनकी पुत्री अमीनावहन और जामाता श्री गुलामरसूल कुरेशी (कुरेशीभाअी) से मेरा अव भी घनिष्ठ सवध है। दोनो सावरमती आश्रममे अुसी मकानमे रहते है। जव कभी मै अुधर जा निकलता हू तो वे मुझे अपने पास ही ठहरने, खाने-पीने वगैराका आग्रह करते है। मुझे भी अैसा किये विना सतोप नही होता। अिसलिअे जाते ही कह देता हू कि भोजन करूगा। यदि कभी अुधर जाकर अुनसे मिलना न हो सके तो पता चलने पर वे दोनो दुखी होते है। अमीनावहन जैसी सेवाभावी

वहन मैंने आश्रममे दूसरी नही देखी। पडित तोतारामजी सनाढयने आश्रममे ही रहते रहते अपना शरीर छोडा। और यह लिखते हुअे आनन्द होता है कि अन्तिम दिनोंमे शक्तिके अभावमे जब अुन्हे सेवा तथा देखरेखकी जरूरत हुअी, तब अमीनावहनने ठीक वैसे ही श्रद्धा तथा प्रेमसे अुनकी सेवा की, जैसे अेक पुत्री अपने पिताकी करती है। अिससे मेरे हृदयमे अिस वहनके लिअे गहरा आदर है।

पडित तोतारामजी साबरमती आश्रमकी खेतीके सचालक थे। अुन्होंने देशके लिअे कितना कष्ट सहन किया था, अिसका सही पता अुनकी 'फीजीमे मेरे २१ वर्ष' पुस्तक पढनेसे चल सकता है। अुनके साथ मेरा परिचय तो तब हुआ जब १९३१ मे मैं आश्रममे खादीका विद्यार्थी था। अुसी समय वगालमे तूफानके भारी प्रकोपमे लोग सकटमे पड गये थे। अुनकी मदद करनेके लिअे अेक देशव्यापी अपील निकली। आश्रमके पास अैसी कोअी पूजी तो थी नही जिसमे से दान देनेका अधिकार आश्रमको हो। अिसलिअे यह तय हुआ कि आश्रमवासी अेक रोज मजदूरी करे और जो पैसा प्राप्त हो अुसे अुनकी सहायताके लिअे भेजे। काम खेती और गोशाला विभागमे करना था। दूसरे दिन सब आश्रमवासी काममे लगे और पडितजीने सबको काम बाट दिया। काम ठेकेसे दिया गया था। मुझे अेक कुअेकी टूटी हुअी दीवारके मलवेसे अीट साफ करके अलग चट्टा लगानेका काम मिला था। अुस रोजकी मेरी मज-दूरीके ३ रुपये १० आने हुअे। मैंने अितनी जोरसे काम किया था कि अुसकी थकानसे दूसरे दिन मुझे बुखार आ गया। आश्रमके मत्री श्री नारणदासजी गाधीने अिसके लिअे मुझे मीठा अुलहना भी दिया था। पडित तोतारामजी अुत्तर प्रदेशके फैजाबाद जिलेके थे। अुनकी और मेरी भाषा अेक थी अिसलिअे भी अुनसे परिचय करनेमे मुझे देर न लगी। वे ठेठ देहाती हिन्दी बोलते थे। जब सन् १९३३ के आदोलनके समय बापूजीने सरकारको सौपनेके लिअे आश्रम छोड दिया और सरकारने भी आश्रम पर कब्जा नही किया तब अुसकी रक्षा पडितजीने की थी।

अुनकी पत्नी श्री गगाबहनकी मृत्यु पर बापूजीने लिखा था कि "गगाबहनने आश्रमको अपनी सेवासे शोभायमान किया है। अुनके स्मरणोंको याद करते करते अब भी मैं थका नही हू। वह लगभग निरक्षर होने पर भी ज्ञानी थी। जो बच्चे अुन्हे मिले अुनकी सार-सभाल अुन्होंने अपने बच्चोंकी तरह की। अुन्होंने किसी दिन किसीके साथ तकरार की हो या

283

किसी पर वे नाराज हुअी हों, अिसकी जानकारी मुझे नही है। अुनको न तो जीनेका अुल्लास था, न मरनेका भय था। अुन्होंने हसते हसते मृत्युको गले लगाया। अुन्होंने मरनेकी कला हस्तगत कर ली थी।"

पडित तोतारामजी कुशल किसान तो थे ही, साथ ही बडे सरल, प्रेमी, मिलनसार लेकिन अपनी बात पर डटे रहनेवाले थे। वे कबीरको अपना गुरु मानते थे और अुनके भजन बडी श्रद्धा और प्रेमसे गाया करते थे। पडितजीका कहना था कि दिन कामके लिअे और रात भगवानके भजनके लिअे है। सच-मुच ही वे रातका बहुतसा समय भगवानके भजनमे बिताते थे। अुनका कहना था कि काम पूरा करनेके बाद मेरे चित्त पर दिनके कामका कोअी भार या लगाव नही रहता है। मैं रातको बिलकुल मुक्त रहता हू। जब वे भजन गाते तो आसपासका सारा वातावरण सात्त्विक आनन्दके भावोंसे भर जाता था। अेक भजन 'सखी सैर करू अुस देशकी मोह नदीसे पार बसे' गाते गाते वे आत्मविभोर हो जाते थे। जब मेरे मनमे किसी प्रकारकी बेचैनी होती तो अुनके पास जाकर मनको आराम मिलता। वे कहते, "अरे लगा रहे दिल किनारेसे कभी तो लहर आयेगी। तुम तो क्षत्रिय हो और फौजमें भी तो निशाना लगाना सीखा है। तो सयमकी ढाल लेकर विचारके तीरोंसे अिन ससारके काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर शत्रुओंके सीनेमें अैसे तानके मारो जो आरपार निकल जाय। लला, हिम्मत क्यों हारत हो। बापूजीसे और सीखना ही कहा है। जा डोकराके पास और है ही तो कहा। बस। रामनामकी लूट है लूटी जाय तो लूट, अन्तकाल पछतायगो प्राण जायेगे छूट। बगलमे ठोसा और मजलका भरोसा। जा मन रूपी मक्काकी रोटी खूब मसल डारो और जामे भगवान गुनगानको गुड डारि द्यो। नेक सो ज्ञानको घी छोड द्यो। बस मलीदा बनायके काखमे दबाय ल्यो। जब काम, क्रोध, लोभ, मोहकी भूख सतावे तब नेक सो काढिके खाय ल्यो। जब थको तो सतरूपी वृक्षकी छायामे थोडो सो विश्राम कर ल्यो। रामनामकी कथा रूपी पानी पीते चलो। और तुम्हे का चाहिये ?" जब पडितजी अपने अिन देहाती मत्रोंका अुच्चारण करते करते गद्गद हो जाते तब मैं भी चित्रवत् अुनके अिन अमृतवचनोंका पान करके आत्मविभोर बन जाता था।

बापूजीके सिद्धान्तोंको पडितजीने समझबूझ कर अपने जीवनमें अुतारा था। अुनके जीवनमें लेशमात्र भी आलस्य या अिधर-अुधरकी दिखावटी चमक-दमकका दाग नहीं था। अुनका मन स्फटिक जैसा निर्मल था। आश्रमके

किसी प्रकारके आपसी मनमुटावसे अुनका कोअी सम्बन्ध नहीं रहता था। वे भले और अुनका काम भला। जब मैं बापूजीके साथकी पुण्यस्मृतियोंका स्मरण करता हूं, तो अुसी मालिकामें पंडित तोतारामजीके मेरे अूपर किये हुअे पुत्रवत् स्नेहको कैसे भूल सकता हूं?

पंडितजीने आखिरकी घड़ी तक आश्रमकी अमूल्य सेवा की और अपने क्षण-भंगुर शरीरको भी आश्रमकी ही पवित्र भूमिको अर्पण कर दिया। 'राम ते अधिक राम कर दासा' अिस भावनासे मैं पंडितजीके चरणोंमें अपनी नम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

पू० नाथजीके बोध

साबरमती आश्रममें आध्यात्मिक दृष्टिके लोगोंसे परिचय करनेकी मेरी सहज वृत्ति रहती थी। अैसे परिचयोंमें से प्रमुख परिचय पूज्य केदारनाथजीका हुआ। पूज्य नाथजी आश्रममें कभी कभी आया करते थे। श्री किशोरलालभाअी, रमणीकलालभाअी, सुरेन्द्रजी, गंगाबहन वैद्य, अित्यादि अुनके शिष्य हैं। मेरे आश्रममें रहते हुअे पूज्य नाथजी जब पहली बार आये तब सुरेन्द्रजीने मेरा अुनसे परिचय कराया और अुनके सत्संगके लिअे भी प्रेरित किया। मैं समय मांग कर अुनके पास जाकर अपनी आध्यात्मिक शंकाओंका निवारण करने लगा। अिसकी अति संक्षिप्त झांकी पाठकोंको यहां कराता हूं।

प्रश्न 'तृण सम सिद्धि तीन गुण त्यागी' अिसका आप क्या अर्थ करते हैं?

अुत्तर अिसका अर्थ अैसा नहीं समझना चाहिये कि किसी भी दशामें तीनों गुणोंका नितान्त अभाव हो जाता है। यदि अैसा हो जाय तो जड़ अवस्था प्राप्त हो जाय। अिसलिअे त्रिगुणातीतका अितना ही अर्थ है कि तमोगुण और रजोगुणका अत्यन्त कम होना और सतोगुणकी प्रधानता होना।

पूज्य नाथजीके सामने मैंने अपनी सारी दुर्बलतायें अर्थात् मनकी चंचलता, क्रोध, अभिमान, अपमानकी असहिष्णुता, किसी संस्था या व्यक्तिके अविकारमें न रह सकना, नम्रताकी कमी अित्यादि ब्यौरेवार स्पष्ट रखनेका प्रयत्न किया तथा अुनसे कअी आध्यात्मिक प्रश्न अिस आशयके किये कि अीश्वर-प्राप्ति किस अवस्थाका नाम है, अुसका साधन क्या है, शान्तिमय जीवन जीनेकी कला कैसे हाथ लगे, अित्यादि। अुनके अुत्तरोंका सार यहां मेरी

बुद्धिके अनुसार देता हू। पूज्य नाथजीका ज्ञान तो अथाह है। मेरी अिन पक्तियोसे कोअी वादविवाद अुत्पन्न न करे। केवल सामान्य ज्ञानके हेतुसे ही यहा अुसे पाठकोके समक्ष रखता हू।

अीश्वर कोअी अैसी शक्ति नही है, जिसे जानकर ही मनुष्य पूर्ण हो जाता हो। परन्तु वह अेक प्रकारका ज्ञान है। अीश्वरके साथ तद्रूप हो जानेकी कल्पनासे मानव-समाजका कल्याण होता हो अैसा भी नही है। जो लोग अीश्वरको सर्व-शक्तिमान तथा सर्वव्यापी तो मानते हे, लेकिन पाप करनेसे नही चूकते, अैसे लोगोका कल्याण कैसे हो सकेगा? अीश्वरकी कल्पना और अुसकी प्राप्तिके नाम पर बहुतसा दम्भ और स्वार्थ चलता है। अीश्वर जगतको चलानेवाला परम तत्त्व है। अुसकी प्राप्तिकी या अुसमे तद्रूप होनेकी आवश्यकता ही क्या हे? अीश्वरमे मिलकर जन्म-मरणसे मुक्त हो जाना, अुसके स्वरूप-चिन्तनमे ही मग्न रहना, ये दोनो केवल कल्पनाके आधार पर हे। जो वस्तु या तत्त्व प्रत्यक्ष अनुभव या ज्ञानमे न आ सके अुसकी कल्पना करना, अुसके लिअे प्रयत्न करना व्यर्थ शक्तिका व्यय करना है। जो ज्ञान पुस्तकोमे अीश्वरका प्रतिपादन करता है वह कल्पनासे लिखा गया है। अीश्वर वह तत्त्व है जिससे जगतको चेतना मिलती है। अुसका भले-बुरेसे कोअी सम्बन्ध नही हे। जगतका कार्य व्यवस्थित चले अिस तरहका हमारा जीवन होना चाहिये। जगतका कार्य तभी व्यवस्थित चल सकता है जब प्रत्येक मनुष्य अपना अपना कार्य ठीक रीतिसे करता रहे। काम, क्रोध, मोह, लोभ, द्वेष आदि, जो मनुष्यके प्रकृति धर्म हे, मर्यादामे रहे। अुनका समूल नष्ट होना असभव है। अुनमे शुद्धि लानेका प्रयास करना चाहिये और अुन्हे सात्त्विक बनानेका भी प्रयत्न करना चाहिये। जैसे क्रोध दूसरेकी रक्षाके लिअे किया जाय तो सात्त्विक हुआ। कोअी भी गुण जब केवल स्वार्थके लिअे होता है अथवा मर्यादासे अधिक होता है तब हानि करता है। वस्तुका मूल्य अुसके अुपयोगमे है। जिस अन्नजलसे शरीर पुष्ट होता है अुसीके अमर्यादित सेवनसे मृत्यु तक हो जाती है। विवेकसे काम लेना चाहिये। अपने लिअे कमसे कम कष्ट अुठाओ और दूसरोको देना पडे तो कमसे कम कष्ट दो। दूसरोंके लिअे अधिकसे अधिक परिश्रम करो। अपने प्रेमका वृत्त सदा बढाते रहो। किसीके साथ हुअे प्रेमको कम न होने दो, अुसे बढाते ही रहो। जैसे हम अपने शरीरकी चिन्ता रखते हे वैसे ही कुटुम्बकी, ग्रामकी, देशकी, मानव-जातिकी, प्राणीमात्रकी, जड़-चेतन सपूर्ण जगतकी यथार्थ चिन्ता

करना, अुसके साथ मेल साधना तथा अुसका रक्षण करना हम सीख जावें तो आज जगतमे अव्यवस्थाके कारण जो दु:ख व्याप्त है वे टल जावे। दिनमे अेक या दो बार ही नही बल्कि प्रतिक्षण अीश्वरको सामने रखकर विचारपूर्वक बरताव करना चाहिये। यदि कोअी गलती हो जाय तो तुरन्त स्वीकार कर लेना चाहिये। और अैसा प्रयत्न करना चाहिये जिससे कभी अैसी भूल न होने पावे जिसके लिअे पीछेसे पश्चात्ताप हो। जीविकाका साधन शुद्ध, स्वाश्रयी और जगतके लिअे कल्याणकारी हो। हम अपने अुद्योग द्वारा जो अुत्पन्न करे अुससे जगतका पोषण व श्रेय होना चाहिये। जैसे अन्न, वस्त्र, अीख, गोपालन अित्यादि। किसी प्रकारके मादक द्रव्य जैसे तम्बाकू, अफीम, शराब, अित्यादि अुत्पन्न न करे।

ज्यो ज्यो सद्‌गुणोकी वृद्धि होगी, त्यो त्यो दुर्गुण मिटते जायगे। अिसलिअे सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अपरिग्रह, प्रामाणिकता, दया, करुणा, मैत्री, सरलता आदि सात्त्विक गुणोकी वृद्धि करनी चाहिये।

गीताके निष्काम कर्म पर पूज्य नाथजीने विशेष भार दिया। अपने कार्यसे जो संतोष मिल जाय वही सच्चा सुख है। अिसकी तुलनामें आत्मानन्द, परमानन्द वगैरा सब कोरी कल्पनाअे हैं। अपनेमे आकर्षण शक्ति पैदा करनेकी आवश्यकता है। आपने नेपोलियन बोनापार्टका छूटती तोपके पीछे गहरी नीद लेनेका अुदाहरण देकर मनको अेकाग्र करने पर जोर दिया। और कहा, समाजके सघर्षमे रहकर अपनी मनोवृत्तिया अकुशमे रहे तब समझना चाहिये कि हमारा कुछ विकास हुआ है। अेकान्तमे शान्त रहना कोअी पुरुषार्थ नही है। लेकिन समाजमे मर्यादाओमे रहना चाहिये। जो कार्य अगीकार किये हो अुनको ठीक तरहसे पूरा करना चाहिये।

दूसरेकी बातका अच्छेसे अच्छा अर्थ लेना चाहिये। थोडीसी बात पर नाराज होकर किसीसे मिलनेवाले लाभसे वचित हो जाना भूल है। गलतफहमी हो तो बात करके अुसे दूर कर लेना चाहिये।

सुबह शाम स्वस्थ चित्तसे बैठकर जिस तत्त्वसे हमे चेतना मिलती है अुस अीश्वर-तत्त्वका विचार करना चाहिये। अुसी तत्त्वसे मुझे शक्ति मिले, मेरी शुद्धता बढे, मेरे कुसस्कारोका नाश हो, अैसे शुभ सकल्प करने चाहिये। अपनी मनोवृत्तिका निरीक्षण करना चाहिये। और जो कमी ध्यानमे आवे अुसको दूर करनेका निश्चय करना चाहिये। अिस प्रकारकी प्रार्थनाकी परम आवश्यकता है।

सन् १९०२ से अेक प्रकारकी निराशा छाअी हुअी थी तब मेरे मनमे (पूज्य नाथजीके मनमे) अैसा विचार आया कि अैसी शक्ति प्राप्त की जाय जिससे राष्ट्रका कल्याण हो, मानव-समाज सुखी और व्यवस्थित हो। अिस अुद्देश्यसे घर छोडकर मै साधनामे जा लगा। हिमालयमे तथा अन्य स्थानोमे कुछ ध्यान-धारणा तथा वेदान्तका अभ्यास किया। परन्तु अुससे कुछ विशेष लाभ नही हुआ। कअी साधुओके पास अभ्यास किया। फिर जब प्राप्त किये हुअे ज्ञान तथा अभ्यासकी नीव पर स्वतत्र विचार करना शुरू किया तो मुझे समाधान हुआ। मैने जो समझा अुसका दूसरोके साथ विचार किया। लोगोको मेरा विचार पसद आया। अब जिन लोगोके साथ सबध आ गया है अुनके आध्यात्मिक समाधान तथा सामाजिक कार्यके लिअे अिधर-अुधर जाता हू। किसी खास प्रकारका अुद्देश्य नही है।

*　　　　　　*　　　　　　*

फिर तो पूज्य नाथजीके साथ मेरा सबध अितना गाढ हो गया कि बापूजी मुझे नाथजीका आदमी समझने लगे। अब जब भी मुझे समय मिलता है मै अुनके पास जाकर दस बारह दिन रह आता हू। मुझे बापूजीके पास टिकाये रखनेमे पूज्य नाथजीका बहुत हाथ रहा है। जब कभी मै बापूजीसे अपना चले जानेका अिरादा प्रगट करता तो वे यही कहते, जाओ नाथके पास। और मै चला भी जाता। थोडे ही दिनोमे नाथजी मुझे समझा-बुझाकर बापूजीके पास भेज देते और कहते कि तुम्हारे लिअे बापूजीके पाससे अधिक अच्छा स्थान और नही है। और अुधर बापूजीके समक्ष मेरी यह वकालत करते कि अिसका रोष क्षणिक होता है और आपके पास ही रहनेसे अिसकी शक्तिका सही अुपयोग हो सकेगा। पूज्य नाथजीका स्वभाव बडा ही प्रेमल है। अुनके अतरमे भक्तिका झरना सतत बहता रहता है। प्रातःकालमे जब वे तुकारामके अभगोमे मग्न होते है और ज्ञानेश्वरीकी ओवियोकी झडी लगाते है, अुस समय महात्मा तुलसीदासजीकी यह चौपाअी याद आ जाती है

सत सगति मुद मगल मूला। सोअी फल सिधि सब साधन फूला।।

वे बहुत कम बोलते है और बहुत कम लिखते है। लेकिन जो कुछ वह बोलते और लिखते है वह 'कहहिं सत्य प्रिय वचन विचारी' अर्थात् सत्य और प्रिय तथा विवेकयुक्त बोलते और लिखते है। अुनके अिन्ही विचारोमें

से 'विवेक और भावना'* नामक पुस्तककी रचना हुआी है, जो आध्यात्मिक भावकों और विचारकोंके लिअे बड़ी ही मनन करने योग्य है। अुनका सहज झुकाव निवृत्ति-मार्गकी ओर है। लेकिन साथियोंकी गुत्थियां सुलझाने, रोगियोंकी सेवा करने और आजकल व्यवहार-शुद्धिकी बड़ी प्रवृत्तिकी जिम्मेवारी अुन्होंने अपने सिर पर ले रखी है। पूज्य किशोरलालभाअी जैसे बुद्धिशाली अपने वैराग्यके हथियार जमीन पर रखकर अन्तिम श्वास तक सेवामय प्रवृत्तिमें डूबे रहे, यह पूज्य नाथजीका ही प्रभाव था।

बापूजीके साथ खादी-विद्यार्थियोंके प्रश्नोत्तर

अुस समय बापूजी आश्रममें नहीं रहते थे। बारडोली या बाहर रहते थे। जब कभी अहमदाबाद आते थे तो गूजरात विद्यापीठमें ठहरते थे। आश्रममें बीमारोंको देखने मात्रके लिअे आ जाते थे। अेक दफा आये और हम खादीके विद्यार्थियोंको मंत्रीजीके आग्रहसे समय दिया। बापूजीने कहा कि कुछ पूछना हो तो प्रश्न पूछो। श्री अब्बासभाअी[1]ने प्रश्न पूछा "आप आसमानी और सुलतानीकी बात बार बार किया करते हैं। आसमानीका अर्थ क्या है?"

बापूजीने कहा, "अंतरात्माकी आवाज ही आसमानी है। ज्यों-ज्यों तुम बाहरकी आवाजसे मनको हटाते जाओगे, त्यों-त्यों तुम्हें आत्माकी आवाज सुनाअी पड़ेगी। समझ लो कि सारंगीकी आवाज मधुर होने पर भी ढोलकी खराब आवाजमें नहीं सुन पड़ती। अैसे ही अंतरकी आवाज सच्ची और मधुर होने पर भी सांसारिक विषयोंकी ढोलरूपी आवाजमें नहीं सुन पड़ती। बस यही आसमानीका अर्थ है। विषयोंसे मनको हटाते जाओगे तो आसमानी सुननेकी शक्ति पैदा हो जायगी। तुम अपनी निर्दोषतासे दूसरोंके दोषोंको दूर कर सकते हो।"

अेक भाअीने प्रश्न पूछा, "क्या आप नाटक पसंद करते हैं?"

बापूजीने कहा, "यदि भगवद्बुद्धिसे किया जाय तो बच्चोंके खेलके बतौर करनेमें मैं कोअी हानि नहीं समझता।"

---

* नवजीवन प्रकाशन मन्दिरसे प्रकाशित हिन्दी पुस्तक। कीमत ४-०-०; डाकखर्च १-४-०।

१ श्री अब्बासभाअी सौराष्ट्रके थे। आश्रममें आश्रमवासीके रूपमें रहकर खादी-विद्यालयमें खादी-शिक्षकका कार्य करते थे।

अुसी दिन आश्रममे अेक भाअीने साप मार दिया था।[1] बापूजीसे पूछा गया कि क्या आश्रममे अैसा कर सकते है? बापूजीने कहा, "हरगिज नही। परतु मै रामदास[2]को दोषी नही कह सकता। क्योकि मेरे मनमें सापके लिअे अितनी दया नही है। सापके काटनेसे बच्चेकी मृत्यु हो जाने पर मुझे जितना दु ख होता अुतना सापके मरनेसे नही हुआ। यदि मुझे सापके मरनेका भी अुतना ही दु ख होता जितना बच्चेके मरनेसे होता, तो मै रामदाससे कह देता कि तुम आश्रमसे भाग जाओ। परतु मै भी अभी सापसे डरता हू, फिर तुमको निर्भय कैसे कर सकता हू? हा, अैसा बनना जरूर चाहता हू। वैसे तो हम और साप सब ससाररूपी बडे सापके मुखमें खडे है, जिसको काल या मृत्यु कहते है। अैसी अवस्थामे हम किसीको क्यो मारे? मै सापको दुष्ट नही कह सकता, क्योकि अुसका तो स्वभाव ही अैसा है। हा, मनुष्य दुष्टता करता है तो अपने शुद्ध स्वभावको छोड देता है। तुम अहिसा और सत्यको समझो। जाओ भागो।"

विद्यार्थियोके सामने प्रवचन करते हुअे बापूजीने कहा

"यह आश्रम ब्रह्मचर्याश्रम है। ब्रह्मचर्यका अर्थ है सब अिन्द्रियोको वशमे करके ब्रह्ममे लगाना। यहा पर जवान लडके-लडकिया, स्त्री-पुरुप सब रहते है। अिस विषयमे मुझसे कअी मित्रोने कहा था कि अैसा कैसे हो सकता है कि स्त्री-पुरुप अेक जगह रहकर ब्रह्मचर्यका पालन कर सकेगे। परतु मैने तो अिस जोखिमको अुठानेका साहस किया। सफलता भी मिली है। मैने अिसका प्रयोग सबसे पहले दक्षिण अफ्रीकामे किया था। लेकिन वहा अितनी

---

१ आश्रम पहले १९१५ मे साबरमती नदीके पश्चिमी तट पर कोचरब नामके गावके समीप बना था और बादमे साबरमती सेन्ट्रल जेलके समीपकी भूमि पर बनाया गया, जो अब तक विद्यमान है और हरिजन आश्रमके नामसे प्रसिद्ध है। पहले वह स्थान निपट जगलमे था। अब तो वहा भी काफी बस्ती हो गअी है। वहा साप अक्सर निकला करते थे। सामान्य नियम यह था कि साप पकडनेके लिअे लाठीके अेक सिरे पर अेक छेद करके अुसमें रस्सी डालकर अेक फास बना ली जाती थी। अुससे सापको बिना मारे पकड लिया जाता था और आश्रमसे दूर चन्द्रभागा नदीके विस्तारमें छोड दिया जाता था। बहुधा अैसा ही होता था। सापके मारे जानेकी यही अेक अनूठी घटना थी।

२ पूर्व खानदेशका अेक खादी-विद्यार्थी।

सफलता नही मिली थी जितनी यहा मिली है। स्त्रियोंके छात्रालयमें कोअी पुरुष नही जा सकता। बीमार अवस्थामें सेवाके लिअे यदि अुसके सबधी जाना चाहे तो जा सकते है। अिस नियमका सब लोग स्वय पालन करें और जो अैसा न कर सके वे घर चले जायें, तो अुनके लिअे और आश्रमके लिअे अच्छा होगा। अगर कोअी दोष हो तो सत्यतासे बता दो।"

अुस समय मैंने भी बापूजीसे कुछ पूछा था। आश्रममे मेरा मन नही लग रहा था और कुछ घरकी चिन्ता भी थी। मैंने यह सब हालत बापूजीके सामने रखी। बापूजीने कहा कि "घरका मोह छोडो और निश्चिन्ततासे यहाके काममें अेकरूप हो जाओ, तो मुझे निश्चय है कि तुम्हे अवश्य शान्ति मिलेगी। यहाकी हवामें कोअी अैसी चीज है जो शान्ति देती है, अैसा मेरा खुदका अनुभव है। अब तो मैंने आश्रम छोड दिया है। लेकिन बाहर घूमते हुअे मुझे जब कभी अशान्ति होती थी तो शान्तिके लिअे यहा दौड आता था और मुझे शाति मिलती थी।"

१९३२ का आदोलन और जेलयात्रा

अूपर जो लिखा गया है वह मेरे साबरमती आश्रमके ६ मासके जीवनका अत्यत सक्षिप्त-सा परिचय है। अितनेमें १९३२ का आन्दोलन छिड गया। अिस बीचमें मैं कातना और धुनना सीख चुका था और मैंने बुनाअीका अभ्यास शुरू किया था।

आन्दोलनके प्रारभमे ही बापूजी जेल चले गये। आश्रमसे भी प्राय सभी खादी-विद्यार्थी आन्दोलनमे भाग लेने चले गये। मैं भी गुजरातके प्रसिद्ध सत्याग्रह केन्द्र कराडीकी टोलीके साथ हो लिया। सक्षेपमे अितना ही लिखता हू कि वहा जाकर मैं प्रथम नायक बना और लगभग ४०० भाअी-बहनोंके जुलूसको लेकर निकला। पुलिसकी अच्छी तरह मार खाअी, परन्तु अिस बार पकडा नही गया। जब कुछ स्वस्थ हुआ तब दुबारा वही सत्याग्रह किया और अढाअी वर्षकी सजा लेकर वीसापुर जेलमे पहुच गया।

बापूजीके जेलसे लिखे गये बोधपत्र

अब तक बापूजीको न तो मैंने कोअी पत्र ही लिखा था और न अुनसे मेरा व्यक्तिगत परिचय ही था। सामान्य परिचय जरूर था। वीसापुर जेलसे मैंने बापूजीको प्रथम पत्र लिखा। अेक तो गुम हो गया। अुसकी नकल मेरे पास थी अिसलिअे दुबारा लिखा। अुनका अुत्तर आया

सेंट्रल जेल,
यरवडा, पूना

भाअी वलवतसिंह,

तुम्हारा खत मिला है।

१ गुरुमे स्थितप्रज्ञके गुण होने चाहिये। अैसा सर्वगुण-सपन्न कोअी मनुष्य मुझे नही मिला है। थोडे-बहुत अशमे अैसे गुण तो कअियोंमें प्रत्येक देशमे मिले हैं।

२ सुख-दु खमे, मानापमानमें, सम रहनेका तात्पर्य यह है कि अपमान होनेसे खिन्न नही वनना, मान मिलनेसे फूल नही जाना। अपमानका अथवा दु खका अिलाज न करना अैसा कभी नही है।

३ भक्तके गुण प्रयत्नसाध्य है, प्रयत्न कैसे किया जाय यह भी अुसी अध्यायमें वताया गया है। लेकिन अुससे भिन्न प्रयत्नसे भी अैसे गुण प्राप्त हो सके तो रुकावट नही है।

४ निद्रा प्रयत्नसे निर्दोप हो सकती है। निर्दोष निद्रा अुसका नाम है जिसमे जागनेके पश्चात् निद्राके सिवाय और किसी वस्तुका ज्ञान नही रहता है और सुखका अनुभव होता है। यद्यपि गीतादिका पाठ किया जाता है तो भी अनजानपनमें अनेक विचार आते जाते हैं। जव आत्मा गीतामय अथवा कहो भगवानमय हो जाता है तव शुद्ध निद्राका सभव होता है। अिसलिअे आज जो प्रयत्न गीतामय होनेका चलता है अुसीको श्रद्धापूर्वक कायम रखा जाय।

५ रामायण पर भी लिखनेका विचार तो रहता ही है, किन्तु समयाभावमे रह गया है। यो तो अव कोअी आवश्यकता भी नही रही है। जो अनासक्तियोगका अभ्यास अच्छी तरह करेगा वह रामायणका अभ्यास भी अपने आप घटा लेगा।

६ रामायणमें यदि अितिहास है तो वह गौण वस्तु है, अध्यात्म प्रधान वस्तु है। अितिहासके निमित्त धर्मका वोध दिया गया है। अिस कारण रामको आत्मा और रावणको अीश्वर-विमुख शक्ति समझकर सारी रामायण पढना। समझो राम कृष्ण है, अुनका दल पाडवसेना है, रावण दुर्योधन है। महाभारत और रामायणमें अेक ही दृष्टि है।

गुरुमुखी ग्रंथोका अभ्यास कर रहे हो सो भी अच्छा है। गीता कंठ करनेकी प्रतिज्ञाका पालन किया जाय।

भाअी फूलचंदके पत्रका अुत्तर दिया गया है। आशा है यह पत्र मिल जायगा। हम सब अच्छे है।

५–२–'३३

सबको
बापूके आशीर्वाद

१९३२ के आन्दोलनमें बम्बअी प्रेसीडेंसीमें वीसापुर कैम्प जेल खुला था। अुसमें करीब २००० राजनैतिक कैदी थे। बापूजी अुस समय यरवडा जेलमे थे। हम लोग वीसापुर कैम्प जेलमें थे। यरवडा कैम्प जेलमें भी बहुतसे साथी थे। सब साथियोंके साथ बापूजीका पत्रो द्वारा लगातार संबध रहता था। वे कितनी मधुरतासे हमारी खोज-खबर रखते थे, अिसका आभास नीचे दिये गये अुनके पत्रसे मिलेगा। फूलचंदजीको बापूजीने लिखा था.

भाअीश्री फूलचंद,

आपका पत्र मिलनेसे हम सबको बहुत आनन्द हुआ। कैदी है अिस-लिअे जितनी पली पानी पीने दें अुतना ही पीयें। अैसा भी समय था जब कैदीको न पत्र लिखने देते, न पढने देते, न पूरा खाना खाने देते थे, चौबीसो घंटे बेडिया पहिनाये रखते और घास पर सुलाते थे। अिसलिअे हम तो जो कुछ भी मिले अुसीके लिअे अीश्वरका अनुग्रह मानें। मान भंग हो तब मर मिटें, देहको कष्ट मिले अुसे सह लें।

आप सब वहा सुखी हैं, यह जानकर हमें आनन्द हुआ है। अन्तमें तो सुख-दुःख मानसिक स्थिति है। आप और मामा नियमोका पालन करते हैं, कराते हैं, स्वच्छता रखाते है, यह सब शोभा देता है।

मैं अुम्मीद रखता हू कि वहा हरअेक भाअी समयका अच्छासे अच्छा अुपयोग करते होंगे। अैसा अेकान्त और अैसी फुर्सत बार-बार नही मिलेगी। पढनेकी सुविधा हो तो पढना, विचार करना तो है ही। और भी अनेक प्रवृत्तिया हैं। अुनमें से कोअी न कोअी ले लेनी चाहिये। अेक गंभीर भूल हम सब करते हैं। वह यह है कि सरकारी समय और वस्तु कौन जाने अपनी नही है अैसा समझकर हम अुन्हें अुडाते हैं। थोडासा विचार करनेसे मालूम होगा कि सरकारी वस्तु और समय प्रजाके ही हैं। अभी वे सरकारके कब्जेमें है, अिसलिअे यदि हम अुन्हे अुडावें तो

प्रजाका ही धन और समय अुडाया कहा जायगा। अिसलिअे हमारे पास जो कुछ आवे अुसका हम सदुपयोग करे। जेलोमे हम जो कुछ भी अुत्पन्न करे वह प्रजाके धनमे वृद्धि करनेके बराबर ही है। सरकार विदेशी है अिससे अिस विचारश्रेणीमे कुछ अन्तर नही पडता। अब अिससे आगे जाअू तो राज्यप्रकरण आता है और अुसमे हम कैदीकी भाति ही वर्तन कर सकते है। अिसलिअे यह बात मै यही पूरी करता हू।

जाननेवालोमे वहा कौन कौन है यह लिखना। अथवा जिसका पत्र लिखनेका समय आया हो वह लिखे। दीवान मास्तर वही है? आश्रमके माधवलाल वहा है? हम तीनो जन तो यहा मौज अुडा रहे है अैसा कह सकते है। खाने-पीनेमे हम सयम रखे। वही अकुश सोने-बैठनेमे भी। कातना धुनना ठीक चल रहा है। पढना तो चलता ही है। अखबार भी ठीक ठीक मिलते है। पुस्तके तो रोजाना किसी न किसीके पाससे आती ही है। प्रार्थना नियमित चलती है। यही हमारा कार्यक्रम है। सबको हमारा यथायोग्य।

बापू

बापूजीके अन्य पत्रोमे से नीचे लिखे अुद्धरण सर्वसामान्यके लिअे लाभकारी होनेकी दृष्टिसे यहा देता हू

आश्रमकी प्रार्थनाके सबधमें

"प्रार्थनामे साकार मूर्तिका निषेध नही किया है। लेकिन निराकारको प्रथम स्थान दिया है। सम्भव है अैसा मिश्रण करना किसीको ठीक न लगे। मुझे निराकार ज्यादा जचता है। पूजामे परिस्थिति या स्थानविशेषका असर साकार पूजामे होता माना गया है। होना नही चाहिये, क्योकि आखिरकार अुसके पार जाना होता है। अनुभवके विषयमे अैसा नही है। अेक अुदाहरण शरीर तथा आत्माका ले। देह तथा आत्मा अेक-दूसरेके अत्यन्त निकट होनेसे देहसे अलग आत्माका भास नही होता। शरीरको भेदकर जिस ऋषिने आत्माका अनुभव किया और सर्व प्रथम यह आचार किया कि 'नेति नेति' अर्थात् यह शरीर आत्मा नही है, अुस ऋषिसे अब तक कोअी आगे नही जाने पाया है।"

विचार और प्रवृत्ति

"मैंने गहराअीसे विचार करके यह निश्चय किया कि जो विचार अमलकी कसौटी पर कसे न जा सके वे निरर्थक तथा भारस्वरूप गिने जावे। दूसरे शब्दोमे कहा जाय तो यह कि विचारके साथ प्रवृत्ति जरूर हो, लेकिन केवल पारमार्थिक तथा निष्काम, अन्य नही। यह बात अीशोपनिषद्‌में चमत्कारिक रीतिसे कही गअी है। विद्या-अविद्या, संभूति-असभूतिका वर्णन किया है। अिनके अर्थके विषयमे बहुत मतभेद है। सुरेन्द्र (श्री सुरेन्द्रजी) से यह समझना।"

जेलमें अभ्यास

"वल्लभभाअीकी लगनका मै कहा तक बखान करू? सस्कृतकी सात-वलेकरकी पाठमाला तो चल ही रही थी। अिसमे गीताके ३० श्लोक कण्ठ करनेका क्रम और जुड गया। कातना भी नियमित चलता है। ४० अकका सूत वे कात रहे है। अिन सबमे विशेषता यह है कि ज्यो ही जरासे खाली हुअे कि सस्कृत अुठाअी मानो कोअी विद्यार्थी परीक्षाकी तैयारी कर रहा हो। महादेवभाअी ८० अकका सूत कात रहे है। मेरा भी परसो तक ४० अक निकल रहा था। परतु फिर बाअी कोहनीको आराम देनेके लिअे गाडीव चक्र छोडकर मगन चक्र अपनाया है और अुस पर ४० अक कातना सभव नही है।"

अीश्वरके विषयमें

"जो सेवा करे या जो सेवा ले, दोनोको ही मै अीश्वर मानता हू। लेकिन ये दोनो अीश्वर काल्पनिक है। जो सच्चा अीश्वर है वह कल्पनासे परे है और वह न सेवा करता है, न लेता है। अीश्वर नही है यह कहना गलत है। यदि हम है तो अीश्वर है। यदि अीश्वर नही है तो हम फिर क्या है? अीश्वर हमारे अन्तरमे व्याप्त है, अिसलिअे हमे प्रार्थना करनी चाहिये। प्रार्थना अर्थात् स्मरण। ज्यो ही हमने स्मरण किया त्यो ही काल्पनिक अीश्वर पैदा हुआ। आस्तिकता अन्तमे बुद्धिका विषय न होकर श्रद्धाका है।"

निष्काम कर्म तथा अन्तरशुद्धि

"कोअी यह माने कि अन्तरशुद्धि बाह्य कर्म करते करते नही साधी जा सकती तो यह भ्रम है। अिससे ठीक अुलटी बात सच है कि बाह्य कर्म

अतरशुद्धि अर्थात् प्रतिक्षण अीश्वर-परायण बुद्धि जाग्रत रखे बिना निष्काम हो ही नही सकता। दोनो सहचर है। कर्म अर्थात् गतिका नियम जड-चेतन सभीको लागू है। मनुष्य निष्काम भावसे असके वश रहे यही अुसका ज्ञान और विशेषता है। भगवान बुद्धकी मै टीका नही कर सकता। मै अुनका पुजारी हू। मेरी मान्यता यह है कि बौद्ध साधु और अुनके सघ अिस नियमका अुल्लघन करनेसे ही अर्थात् कर्मोका त्याग करनेके कारण ही जडवत् हो गये, जैसे कि वे आजकल भी लका, ब्रह्मा तथा तिब्बतमे देखे जाते है।"

जेलमें मिलनेके विषयमें

"यह शरीर मिट्टीका पुतला है। अिससे मिलना निरर्थक है। अिसके अन्दर जीव रम रहा है अुससे मिलनेकी अिच्छा सबसे बडा मोह है, जिसे दूर करनेमे कअी जन्म भी कम पडेंगे। सच्चा मिलन तो मनका मनसे और हृदयका हृदयसे होता है और ये तो हजारो मीलके फासले पर होने पर भी अेक क्षणमे मिल लेनेकी शक्ति रखते है। परतु यदि मन नही मिलते हो तो मिट्टीके पुतलोका तो आमने सामने तो क्या अक भर करके मिलना भी निरर्थक होता है।"

अनशनकी योग्यताके विषयमें

"हृदयमे पूर्ण सत्य तथा पूर्ण अहिसा हो, अन्तर्प्रेरणा मिली हो, किसीके प्रति द्वेष हृदयमे न हो, हेतु स्वार्थी न होकर पारमार्थिक हो। अन्तर्नाद सुननेके कान बिना सयमके नही अुघडते, अिसलिअे अभ्यस्त तथा चुस्त सयमी हो।"

भिन्न भिन्न धर्मोंके विषयमें

"मै हिन्दूधर्मको सत्यके सबसे निकट मानता हू। यदि मै अैसा न मानता होअू तो मै सत्यका पुजारी होनेसे जिस धर्मको सत्यके अधिक निकट समझू अुसीमे चला गया होअू। यह मान्यता मोहजन्य भी हो सकती है, लेकिन अैसा मोह क्षन्तव्य है। अन्य धर्मावलम्बियोके लिअे अुनके अपने अपने धर्म सत्यके सबसे नजदीक होगे। अुनके वैसा माननेसे मुझे कोअी द्वेष नही है। सब धर्म मुझे समान प्रिय है। सर्वधर्म-समभावका मेरा विचार मौलिक है और अिसीसे मेरे लिअे यह सभव हुआ है कि स्वय चुस्त हिन्दू रहते हुअे भी मै अन्य धर्मोकी भी पूजा कर सकता हू और अुनमे जो श्रेष्ठ हो अुसे नि सकोच ले सकता हू। और वैसा करता भी हू।"

अनासक्तिके विषयमें

"अनासक्तिका अर्थ जडता नही है। निर्दयता भी नही है। चूकि सेवा तो करनी ही होती है, अिसलिअे दयाकी भावना तो और भी तीव्र हो जाती है। कार्यदक्षता तथा अेकाग्रता भी वढती है। मेरी भावना जगतमात्रकी सेवा करनेकी है। अिसमे कुटुव भी आ ही आ जाता है अर्थात् कौटुम्बिक सेवा रह जाती हो सो भी नही। अिसलिअे मेरे अनासक्तिपूर्वक सेवाकार्य अपना लेनेसे अपना कुछ भी नही खोया और मुझे वहुत कुछ मिला हे।"

*　　　*　　　*

जेलमें वापूजीका अुपवास

वापूजीने २–५–'३३ से यरवडा जेलमे २१ दिनका अुपवास आरभ किया। श्री सुरेंद्रजी हमारे साथ वीसापुर जेलमे थे। अुनके नाम वापूजीने हम सवके लिअे पत्र लिखा। मूल पत्र गुजरातीमे था। यहा अुमका अनुवाद दिया जाता है।

यरवडा मदिर,
६–५–'३३

चि० सुरेंद्र,

रामदास कहता था कि जव अुसने तुमसे मेरा सदेश कहा तव तुम्हारी आखोमे आसू आ गये थे। मै अैसा मानता हू कि तुम्हारी आखोमे आसू तो हर्पके ही होगे, दु खके तो कदापि नही। यह अुपवास किये विना कोअी चारा ही न था। और यह समय अुसके लिअे योग्य मुहूर्त था। यह मुझे विलकुल स्पष्ट लग रहा है। अस्पृश्यता जैसे भयानक राक्षसका नाश मुझे अन्य किसी प्रकारसे अशक्य लगता है। रावणके तो केवल दस सिर थे। अिस राक्षसके हजार मस्तक है। यह मस्तक कैसे है यह तुम्हे समझानेकी जरूरत नही। अिस राक्षसका मूलसे नाश करना हो तो वर्तमान साधनोसे नही हो सकेगा। अिसके लिअे प्राचीन परतु विस्मृतप्राय अमोघ सावनकी जरूरत हे। यह वात मुझे अुतनी ही सीधी मालूम हो गअी है, जितना गणितके किसी प्रश्नका अुत्तर। करोड रुपये अिकट्ठे कर ले तो भी क्या सवर्णोका हृदय पलटेगा? कुदन जैसे सेवकोके विना हजारो सव भी किस कामके? जिस आश्रमके द्वारा मुझे यह काम सिद्ध कराना है, अुसी आश्रममे दरार पडी हुअी कैसे

देखू ? हरिजन आजकल दिङ्मूढ हो गये है, वे भयभीत है। जिन्होने भय छोड दिया है वे अुद्दड वन गये है। अुनके क्रोधका रूप भीषण हो जाय अिसमे आश्चर्य ही क्या ?

अिन सब अनिष्टोका सामना कर सकनेके लिअे हम अपनी सारी आध्यात्मिक पूजी खर्च कर दे। अिसके अतिरिक्त कोअी चारा नही है। अीश्वर करे मेरे अकेलेके अितने ही यज्ञसे काम चल जाय तो मेरे हर्षकी सीमा न रहे। परतु मै यह नही मानता कि मेरे अदर अितनी अधिक पवित्रता है। अैसे सैकडो, हजारो अुपवास जब हम करेगे तब ही यह हजारो वर्षोका प्राचीन पाप धुलेगा। तुमसे और तुम्हारे ही जैसे दूसरोसे अिस यज्ञमे बडे भागकी आशा रखता हू। परतु मेरे अिस अुपवासके दरमियान कोअी कुछ न करे, शान्त रहे और मन, वचन, कर्मसे जितनी शुद्धता साध्य हो अुतनी साधे। यह पत्र महादेवने लिखा है। वह रोजाना अिसी प्रकार लिखता रहेगा और जब तक शक्य होगा मेरे दस्तखत लेता रहेगा। सरकारकी आज्ञा मिल गअी है कि मै रोजाना तुमको अिस प्रकारसे पत्र लिख सकूगा और तुम भी मुझे लिख सकोगे।

सबको
बापूका आशीर्वाद

बापूका यह पत्र हमको ८ तारीखको मिला। अुपवासकी खबर तो पहले ही मिल गअी थी और जेलमें काफी गभीर वातावरण हो गया था। सब लोगोने २४ घटेका अुपवास और प्रार्थना की थी। हम सबकी तरफसे श्री सुरेद्रजीने बापूजीको पत्र लिखा.

वीसापुर कैम्प जेल,
८-५-'३३

परम पूज्य बापूजी,

आपका कृपापत्र आज मिला। सबने पढा, खूब प्रेरणा मिली। यह गभीर प्रसग होते हुअे भी आनद हुआ। रामदासभाअीने जब आपका रहस्यपूर्ण सदेश सुनाया तब हृदय भर आया। मेरे आनदाश्रुओको किसीने देखा न होगा, पर मुझे कबूल करना चाहिये कि वे दु:खसे सर्वथा मुक्त न थे। गत सात दिनमें खूब आत्मनिरीक्षण किया है। आपके अुपवासका समाचार मिला। अुसकी महत्ता, व्यापकता और आवश्यकता मै समझ सकता

हू और मै मानता हू कि यह अुपवास आपने मेरे लिअे, मेरे समान सब साथियोंके लिअे किया है। आपके अिस दिव्य सूर्यके प्रचड, सौम्य शीतल प्रकाशमे मै अपने अदरकी सभी गुप्त-प्रगट त्रुटियोको देखता हू। मुझमे हरिजनोके लिअे वह अुत्कटता नही, वह समर्पण नही, वह कुशलता नही, जैसी कि आपके सेवकमे होनी चाहिये। जैसा आदमी अेक क्षेत्रमें होता है अुससे भिन्न दूसरे क्षेत्रमें कैसे हो सकता है? मै चमार बना। आपके चमारमे जो समर्पण, कुशलता, अुत्कटता होनी चाहिये वह मुझमे नही। अैसी अनेक बाते यहा लिख सकता हू। आप मुझे मुझसे अधिक जानते है। आज सात दिनके मथनके बाद प्रात कालमे अुठते ही मै प्रफुल्लित और शान्त था। खड्डा फाअिल[1] मे आनेके बाद आपका पत्र मिला। आपकी आशा मै पूर्ण कर सकू अिससे विशेष मुझे कोअी प्रसन्नता नही है। जिस बलिदानकी आप मुझसे आशा रखते है, वह मै आपके आशीर्वादसे अर्पण कर सकू अैसी प्रभुसे प्रार्थना है। आपसे पू० नाथजी मिल गये। अुनसे मिलनेकी अिच्छा है। मेरा आश्रमके पडितजीके नाम लिखा पत्र आपको मिल गया? श्री फूलचदभाअीका ४–५–'३३ का यहासे लिखा पत्र आपको मिला होगा। वे अब जल्दी छूटकर नही आयेगे, परतु १७ तारीखको आपके पास आयेगे और दर्शन करके वापिस लौटेगे। आज यहा १२ बजे सबने अपने अपने स्थान पर प्रार्थना की है और आत्म-सतोषके लिअे २४ घटेका अुपवास किया है। हम बीसापुर मदिरवासी आपको आध्यात्मिक खुराक किस प्रकार भेज सकते है, अिस बारेमें मैने ये सूचनाये की है

१ जेलमे आदर्श सत्याग्रहीका-सा जीवन व्यतीत करना।

२ सयमी और प्रार्थनामय जीवन पर विशेष भार दिया जाय।

३ धार्मिक साहित्यके अतिरिक्त आपके ही साहित्यका वाचन, श्रवण, मनन और चर्चा करे।

४ प्रत्येक व्यक्ति अपने गत सामाजिक जीवनका निरीक्षण करे और भविष्यके जीवनके लिअे शुद्धतर सकल्प करे।

ये सूचनाअे केवल दिशासूचक है। बाकी प्रत्येक व्यक्ति अुन पर अपनी रीतिसे विचार करेगा।

---

१ बीसापुर कैम्प जेलमे मलमूत्र गाडनेके लिअे खड्डे खोदनेवाली टोली।

श्री गोकुलभाओी भट्ट, श्री अेस० के० पाटील, श्री फूलचदभाओी, श्री रमणीकलालभाओी, श्री मोहनलाल भट्ट, श्री दरबारी साधु, श्री गोडसेजी, श्री दीवाण साहिब और श्री बलवतसिहजी वगैरा सब आश्रमवासी और सब अन्य भाअियोकी ओरसे आपको सादर प्रणाम। हम सब प्रभुसे प्रार्थना करते है कि जैसे भगवान कृष्ण कालीमर्दन करके हसते हुअे बाहर निकल आये, वैसे ही आप भी निर्विघ्न बाहर निकल आवे और आत्मशुद्धिके यज्ञमे हमको लबे समय तक मार्गसूचन करते रहे।

आपका कृपापात्र
सुरेद्र

अेक दो दिनमे ही बापूजीके अुपवासके सम्बन्धमे पूज्य नाथजीका मराठीमे लिखा पत्र मिला। यहा अुसका अनुवाद दिया जाता है।

पूना
८–५–'३३

श्री सुरेन्द्रजी,

सप्रेम आशीर्वाद। मै परसो यहा आया। पूज्य बापूजीसे मुलाकात हो गअी। यद्यपि मेरा अुनके साथ सभाषण नही हुआ तथापि अुनकी लिखी हुअी बाते तथा और लोगोकी बातचीत सुनी। अुनका आज तकका जीवन, अुनका ध्येय, अुस ध्येयको प्राप्त करनेके लिअे अुनका साधन-मार्ग, आजकी अुनकी मानसिक स्थिति अित्यादि विषयोकी जो कल्पना मुझे हुअी तथा अुस विषयमे मै जितना चितन कर सका हू, अुस परसे मुझे अैसा लगता है कि आज बापूजी जो कर रहे है वह अुचित ही कर रहे है। मुझे यह भी लगता है कि अुनके साधन-मार्गमे अिस अिक्कीस दिनके अुपवासके अतिरिक्त और कोअी अुपाय नही है। पिछले अुपवासके समय मैने अिस प्रकारसे अुनकी विचारशैलीका चिन्तन नही किया था। अिससे अुनका अुपवास करना मेरी समझमे नही बैठा था। अुनका निश्चय सुनकर आप सब लोगोके दिल अस्वस्थ हो गये होगे। कारावासके बधनोंके कारण तो आप लोगोका और भी ज्यादा अस्वस्थ बन जाना सभव है। लेकिन जब आप सब लोगोने अपनी खुदकी तथा औरोकी चित्त-शुद्धिका यह महान कार्य आरभ किया है, तो अुनके अिस कामसे आप लोगोको अस्वस्थ नही बन जाना चाहिये।

पूज्य वापूजीका स्वास्थ्य अच्छा है। अुनमें खूब अुत्साह है। अिससे लगता है कि वे अिक्कीस दिन पूरे कर सकेंगे। अुन्होंने आप सब लोगोंको अितना तो जरूर ज्ञान दिया है जिससे चिन्ताकी वात होते हुअे भी चिन्ता करना आप अुचित न मानें। अुपदेशक अुपदेश करता है तब श्रोता लोग सुनते रहते हैं, लेकिन ज्यो ही अुपदेशक अुन्ही अुपदेशोंके अनुसार व्यवहार शुरू कर दे त्यो ही यदि श्रोताओंको दुःख होने लगे तो यही मानना होगा कि श्रोताओंने अुपदेशको समझा नही। श्रोता और वक्ताकी अपेक्षा आप लोगो तथा पूज्य वापूजीके वीचका सबध तो अत्यन्त निकटका हे तथा हार्दिक है। हमी लोगोने वुद्धिपूर्वक समझ कर जब अेक कामको अुठा लिया तो अुसे करते हुअे कभी मनको विचलित नहीं होने देना चाहिये, यह तो आप लोग जानते ही हैं। न जानते हो तो अब जान लें। अिसके सिवा और कोअी चारा नही है। पूज्य वापूजी जब आज व्रत कर रहे हैं तब यह आवश्यक है कि आप लोग अपने मनोको शान्त रखकर अुनके कार्यमें मानसिक सहानुभूति पहुचावे। मनुष्य कैसी भी असह्य परिस्थितिमें पडा हो, अितना तो वह जरूर कर सकता है।

आज यह पत्र मैं लिखनेवाला नहीं था, लेकिन कल जब मैं काकाके यहा गया तो वहा अेक सज्जनने आपको पत्र लिखनेकी सूचना की। अिस-लिअे लिखा है। श्री दरवारीजी, वलवन्तसिंह, गोकुलभाअी, गोडसे, सब परिचित मित्रोंको नमस्कार। श्री रमणीकलालभाअीको तीन चार दिन पहले पत्र भेजा था। मुझे नही लगता कि वापूजीके वारेमें अुनको लिखकर समझानेकी जरूरत है। वे खूब समझदार हैं और गभीर हैं। अुनको यह पत्र दिखाना और आशीर्वाद कहना।

शुभचिन्तक
नाथ

जेलसे रिहाअी

अितनेमें ही वापूको छोड दिया गया। लेकिन अिस पत्रव्यवहारका परिणाम यह हुआ कि जेल अधिकारियोंको शक हो गया कि हम लोग भी अुपवास करनेवाले हैं। अिसलिअे हम आश्रमके खास खास दस आदमियोंको वीसापुरसे वदलकर यरवडामें अेकात कोठरीमें ले जाकर रख दिया गया।

अेक रोज वारह वजे हमारी वैरकके किवाड वद हो गये और वार्डरने धीरेसे आकर हमको कहा कि वापूजी जेलमें आ गये। सब लोगोंने दूसरे दिन

बापूजीकी ४ बजेकी प्रार्थना भी सुनी। लेकिन बापूजीने फिर अुपवास शुरू किया और सरकारने अुन्हे फिर छोड दिया। अुसके वाद बापूजी हरिजन कार्यमे ही लग गये।

मै १२ मार्च १९३४ मे अढाअी सालकी सजा पूरी करके यरवडा जेलसे छूटा। बापूजीने सविनय सत्याग्रह स्थगित कर दिया था। अिस विषयमे मैंने बापूजीको पत्र लिखा कि मै तो दुबारा जेल जानेकी तैयारी कर रहा था और आपने सत्याग्रह स्थगित कर दिया। अैसा क्यो किया गया ? बापूजी अुडीसामे हरिजन-यात्रा कर रहे थे। पुरीसे अुनका जवाब आया

भाअी वलवतसिह,

तुम्हारा खत मिला। तुमको आहिस्ते आहिस्ते मेरे निर्णयकी योग्यता प्रतीत हो जायगी। तुम्हारे अैसे सरल सविनय भग करनेवाले काफी थे। साथियोकी त्रुटियोसे भिन्न भी आध्यात्मिक कारण निर्णयके लिअे थे। अनुभव नित्य वता रहा है कि निर्णय वहुत ही योग्य था। अब तुम्हारे सिर पर ज्यादा जिम्मेवारी आयी है। तुम्हारी रचनात्मक शक्तिकी, तुम्हारी श्रद्धाकी और तुम्हारी दृढताकी अच्छी परीक्षा होगी। नारणदास कहे वही करो। रचनात्मक कार्य करते हुअे कोअी कुछ बाधा डाले तो अुसका अुत्तर देना। फिर भी जेल जाना पडे तो सहन करना। अनिवार्य कारण पैदा होनेसे सविनय भग योग्य और कर्तव्य भी हो सकता है। मेरे जेल जानेके बाद तो वाहरवाले अपने मतके अनुसार करेंगे। अिसमे भी नारणदास कहे अैसा ही करना। अितना याद रखो कि जेल जानेका कोअी स्वतत्र धर्म नही है और अुसके लिअे योग्यता प्राप्त करनी पडती है। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। वजनका पता नही है। मेरी पैदल यात्राकी कथा तो पुरानी हुअी।

पुरी, ६–५–'३४ वापूके आशीर्वाद

वापूजी मुझे 'भाअी' सवोधन करके पत्र लिखते थे। मैने अिसके खिलाफ शिकायत की कि आप अैसा कैसे लिसते हे। क्योकि जिनको वे चिरजीव लिखते थे अुनसे मुझे और्ष्या होती थी। अिस वारेमे बापूजीका जवाव आया -

भाअी वलवतसिह,

भाअी अथवा चिरजीव अथवा और कोअी विशेपणसे कुछ फर्क नही पडता जव तक भाव अेक है। मुझे जिसका ठीक परिचय नही है, जिसकी

अुम्र अित्यादि नही जानता हू अुसको प्राय भाअी लिखा करता हू। तुमको सुरेंद्र अपने साथ रखे तो मुझको अच्छा लगेगा। नारणदास राजकोट है। वह कहे अैसा करो।

४–६–'३४ वापूके आशीर्वाद

अिसके वाद मै जवरदस्ती वापूजीका 'चिरजीव' वन वैठा और फिर कभी वापूजीने मुझे 'भाअी' नही लिखा।

समाजवादियोंके साथ प्रश्नोत्तर

अिसके पश्चात् मै २९–६–'३४ को सावरमतीमे[1] वापूजीसे मिला। वापूजीने मुझे राजकोट नारणदासभाअीके साथ काम करनेकी सलाह दी। लेकिन वहा मुझे अच्छा न लगा और मै अपने घर वापिस आ गया। १ जनवरी १९३५ को वापूजी हरिजन-आश्रमकी नीव डालने दिल्ली आये थे। मै वापूजीसे मिलने गया और जव तक वे दिल्ली ठहरें, तव तक अुनके साथ दिल्ली ठहरनेकी अिच्छा प्रकट की। वापूजीने अनुमति दे दी और मै वहा ठहर गया। यहा पर वापूजीको और निकटसे देखा। अुनके पास अनेक प्रकारके लोग आते थे, चर्चा करते थे और मै सुनता था। अेक रोज समाजवादी पार्टीके लोग वापूके पास आये और चर्चा करने लगे कि किसानो पर वहुत कर्ज है अुससे अुन्हे कैसे मुक्त किया जाय। अुन्होने यह भी पूछा "खाडके लिअे गन्ना वेचनेमे अधिक पैसा मिलता है, गुडमे कम। तव किसान क्या करे? स्वराज्यमे पूजीवाद रहेगा या नही? आपके ग्रामोद्योगमे राजनीति है या नही?"

वापूने कहा "किसानोको कर्जसे मुक्त तो आज नही कर सकता हू। अगर आज स्वराज्य भी हो जाय तो मै अैसी घोपणा नही कर सकता कि किसानो पर जो कर्ज है वह कम किया जाय। लेकिन मै तो किसानोको आलस्यसे व फिजूलखर्चीसे वचानेका प्रयत्न कर रहा हू। किसानो पर कर्ज क्यो होता है? कोअी कहता है, मैने शादी की थी, कोअी कहता है, मैने पिताका श्राद्ध किया था। मै कहता हू, लाओ मै तुम्हारा पडित वन जाऊ, श्राद्ध और शादी दोनो करवा दू। अुसमे पैसेकी क्या जरूरत है?

---

१ १९३४ मे वापूजी हरिजन-यात्रा कर रहे थे और अुस दिन सावरमती आश्रममे आये थे।

"किसानोको गुड बनाकर अधिक पैसे लेने चाहिये, क्योकि लोगोको समझना चाहिये कि खाडसे गुड अच्छा है। खाडमे से सब तत्त्व चले जाते है और गुडमे वे सब रहते है।

"स्वराज्यमे भी कुछ तो व्यक्तिगत सपत्ति रहेगी ही। अैसा कोअी देश नही है जहा अैसा न हुआ हो।"

बीचमे अेक सज्जनने कहा कि रूसमें अैसा नही है।

बापूने कहा, "क्या तुम रूस गये हो?"

अुसने कहा, "हा जी।"

बापूने हसकर कहा, "तब तो मै हारा।"

खूब हसी हुअी। बापूने पूछा, "क्या अेक भी समाजवादी अैसा है जिसके पास व्यक्तिगत सपत्ति कुछ भी न हो?"

सत्यवती[1] बहनने कहा, "हा, मै अैसी हू।"

बापूने कहा, "यह शरीर तो तुम्हारी सपत्ति है ही।"

सत्यवती, "ना जी, शरीर भी समाजका है।"

बापू गभीर हो गये और बोले, "देखो सभलकर बात करो। अगर कोअी लडका तुम्हारी तरफ बुरी निगाहसे देखे तो तुम पिस्तौल लेकर खडी हो जाओगी न?"

सब लोग खूब हसे और सत्यवती बहन झेप गअी।

चौथे प्रश्नके अुत्तरमे बापूने कहा, "ग्रामोद्योगमे राजनैतिक भावना लेकर कोअी कार्यकर्ता नही आयेगा। लेकिन अुसका परिणाम तो वही आयेगा जो काग्रेस चाहती है।

* * *

अेक रोज अेक भाअीने बापूजीसे तत्त्वज्ञानके बारेमे चर्चा करते हुअे कुछ पूछा। बापूजीने कहा, "यह काम तो अीश्वरका है। अिसका ठेका तुम क्यो लेते हो? तुम करोडोमे से अेक क्यो बनते हो? करोडोमे ही रहो। तत्त्वज्ञान अनुभवगम्य है और खुदके अनुभवसे आनेवाली अवस्था है। तुम तो सेवा करो। लोगोको अच्छा गुड, अच्छा आटा, अच्छा तेल, अच्छा चमडा, अच्छा चावल और अच्छा दूध पिलाओ। अगर अुसमे कुछ पाप हो तो मेरे अूपर छोड दो और पुण्य हो तो तुम लो।"

---

१ स्वामी श्रद्धानदजीकी पौत्री और दिल्लीकी अेक प्रमुख कार्यकर्त्री।

ये मेरे अेक मित्र थे। अिनके लिअे मैंने वापूजीसे समय मागा था। वापूजीने मेरी तरफ गभीरतासे देखकर कहा, "मेरे पास अैसी वातोंके लिअे समय कहा है?"

६
वर्धाको प्रस्थान

खुर्जामे अुस समय श्री रामस्वरूपजी गुप्ता खादीकार्य चला रहे थे। अुनकी अिच्छा मुझे अपने काममें ले लेनेकी थी। मैं वापूजीकी अनुमतिसे ही अपना काम निश्चित करना चाहता था। अत हम दोनो अुनके पास गये। सारी वाते सुनकर वापूजीने कहा, मुझे लगता है कि तुम मेरे साथ वर्धा चलो। अिसीमे तुम्हारा हित है। मेरी मानसिक तैयारी वापूजीके साथ जानेकी नही थी और मनमे था कि पूज्य वापूजी यहा रहनेके लिअे आशीर्वाद दे देंगे। लेकिन अीश्वरको कुछ और ही मजूर था। मेरी अितनी हिम्मत नही थी कि वापूजीके निर्णयके वाद कह सकू कि मेरी वर्धा चलनेकी अिच्छा नही है। अिसलिअे मुझे अुनके साथ जाना मजूर करना ही पडा। गुप्ताजीको वापूजीके निर्णयसे निराशा तो हुअी, लेकिन क्या करते? मैं अेक रोजके लिअे अपने घर जाकर सामान ले आया और वापूजीके साथ हो लिया। २८ जनवरी, १९३५ को वापूजी वर्धाके लिअे निकले और मैं भी अुनके साथ गया। अुस समय मेरे मनकी स्थिति अेक कैदी जैसी ही थी। जब आज वापूजीके अुस रोजके निर्णयका विचार करता हू, तो लगता है कि वापूजीमे कोअी अैसी अजीव शक्ति थी जिससे वे मनुष्यके दोपोमे से भी अुसके थोडेसे गुणोको परख कर और अुसे अपने निकट रखकर दोपोका निवारण और गुणोका विकास कर लेते थे। कितनी दूरदृष्टि, कितना स्नेह, कितनी अुदारता, कितनी क्षमा और माकी तरह खुद कष्ट सहन करनेकी कितनी शक्ति अुनमे भरी थी।

वर्धा जाकर वापूने मगनवाडीमे अपना डेरा जमाया और वहाकी भोजनादिकी सारी व्यवस्था, जो ग्रामोद्योग सघके हाथमें थी, अपने हाथमें ले ली। वहाका रसोअीघर नौकरोंसे चलता था। वापूजीने कहा कि अव तो आश्रमके ढगका अपने सहयोगसे चलना चाहिये। अुसकी जिम्मेदारी हममें से कोअी ले ले। श्री महादेवभाअीके साथ विचार करके वापूजीने वह जिम्मेवारी मुझे देनेका निश्चय किया। मैंने कहा कि भोजनालयके लिये

बाजारसे सामान खरीदना मेरे स्वभावके अनुकूल नही है। बापू गभीरतासे बोले

"अैसी बात क्यो करते हो? जो काम मिल जाय अुसीको कर्तव्यप्राप्त समझकर करना चाहिये। अिसीको भगवानने गीतामे 'योग कर्मसु कौशलम्' कहा है। किसी कामकी प्राप्तिकी लालसा भी न हो। मैं तुमको यही सिखा देना चाहता हू कि किसी भी काममे हमको सकोच न होना चाहिये। कार्य तो बाहरकी चीज है और अीश्वर अतरकी चीज है। बाहरी पूजा तो भक्त कर सकता है और दभी भी। परन्तु अन्तरकी पूजा तो भक्त ही कर सकता है। बस, अगर हम अतरके पुजारी बन जाय तो हमारा काम निबट जाता है।"

बापूके ये अुद्‌गार प्रेम और सहृदयतासे सने हुअे थे। मुझे यह सुनकर खूब आनद हुआ और मैंने अपनी बातको वापिस खीच लिया। लेकिन बापूजीने बाजारसे सामान खरीदनेका काम मुझे न देकर श्री ब्रजकृष्णजी चादीवाला[1] को दिया। बापूजीने आगे कहा, "यह ग्राम-व्यवसाय मेरे जीवनका आखिरी कार्य है। अिसको सुशोभित करना मेरा धर्म है। जो लोग मेरे पास रहना चाहते है, वे आश्रम-जीवन बिताये और अिस काममे मेरी मदद करे।"

श्री सत्यदेवजी शास्त्री[2] से निष्काम कर्मके बारेमे बात करते हुअे बापूजीने कहा कि "कर्तव्यप्राप्त कर्म अपनेको निमित्त मात्र समझकर करना चाहिये। जगतमे अनेक शक्तिया अपना काम कर रही है। हम तो अुन शक्तियोमे से क्षुद्रसे क्षुद्र शक्ति रखते है। यह अहभाव रखना तो मूर्खता है कि मैं करता हू।" बापूजीने यक्ष और पाडवोका दृष्टात दिया।

मैं रसोअीकाममें कडाअीसे नियमोका पालन करता था। अिसलिअे भोजनालयमे मेरा रहना कुछ आदमियोको अखरता था। जब मैं भोजनालयके अिस कामसे अूबने लगा, तब मैंने अपनी मन स्थिति बापूजीके सामने रखी। बापूजीने कहा

"सच्ची पाठशाला तो पाकशाला ही है। साबरमती आश्रमके आरभमें पाकशालाका काम मेरे, काकासाहबके तथा विनोबाके हाथमें रहा। यह काम

१ दिल्लीके अेक प्रसिद्ध कार्यकर्ता।

२ साबरमती आश्रममें बापूके पास आये थे। अुस समय महिलाश्रममें शिक्षक थे।

कठिन तो है ही। परन्तु अिसमे लोगोकी मनोवृत्ति पहचाननेका अच्छा अवसर मिलता है। मानापमान सहन करना ही तो वडीमे वडी साधना है। मेरा धर्म है कि तुमको हारने न दू। अगर तुम भागना चाहो तो भागनेके लिअे स्वतत्र हो, परन्तु तुम्हारा भागना मुझे अच्छा न लगेगा। और आखिर तो जहा जाओगे वहा भी मनुष्य ही रहते होगे और अुनसे भी सघर्ष होगा तो क्या करोगे ? मेरा मार्ग तो लोगोके वीचमे रहकर सेवा करनेका है। पहाडोमे, जगलमे भाग जानेका मेरा मार्ग नही है। और वह मुझे पसद भी नही है, क्योकि अुसम दभ भी हो सकता है। यह जगत हिंसामय है। अिसमे अहिंसामय वनकर रहना ही पुरुषार्थ है। तुम नाथके और सुरेन्द्रके पुजारी हो, यह समझकर ही मैने तुमको अितनी जिम्मेदारीका काम सौपा है। अिसीमे अीश्वरका दर्शन करना और हरअेक कामको सफाअी और सूक्ष्मतासे करना वहुत वडी साधना है। जव तक मेरे मनमे न आ जाय कि अव तुमको किसी गावमे जाकर सेवाकार्य करना चाहिये या तुम्हारे मनमे निश्चयपूर्वक न आ जाय तव तक यहासे तुम्हारा हटना मुझे अच्छा न लगेगा। मानापमानका सहन करना तो वडा तप है। तव ही हम गीताके वारहवे अध्यायको अपने जीवनमे अुतार सकते है। किसी वकरेको न मारना ही अहिंसा नही है। सवसे प्रेम करना ही अहिंसा है। तुम्हारे कामसे मै खुश हू। तुम्हारा सव काम मेरी नजरमें है। तुम प्रसन्नतापूर्वक रहो और अपना काम करो।”

७

मगनवाड़ीके प्रयोग और पाठ

कार्यारंभ

सन् १९३४मे बापूजीके मनमे जब ग्रामोद्योग सघकी स्थापनाका विचार आया तो प्रश्न अुठा कि अुसका मुख्य केन्द्र कहा रखा जाय। जमनालालजीके मनमे वहुत दिनोसे चल रहा था कि किसी तरह बापूजीको वर्धामे बसाया जाय। वस, अिस अवसरका लाभ लेकर अुन्होने तुरन्त हाथ फैला दिया और कहा कि अुसके लिअे वर्धा सबसे अच्छी जगह है, क्योकि वह हिन्दुस्तानके मध्यमे है और ग्रामोद्योग सघके लिअे मै अपना बगीचा तथा मकान और सब प्रकारकी सुविधा देनेको तैयार हू। बापूजीने अुसे स्वीकार किया और जमनालालजीने अपना सुन्दर बगीचा और मकान ग्रामोद्योग सघको समर्पण किया। असका नामकरण मगनलालभाअी गाधीके नामसे मगनवाडी किया। अिसलिअे मगनवाडी बापूजीका मुख्य क्षेत्र बना और ग्रामोद्योग सघको व्यवस्थित और लोकप्रिय बनानेकी दृष्टिसे बापूने अपना डेरा मगनवाडीमे डाला। बापू मगनवाडीमे करीब डेढ साल रहे। अितने समयमे ग्रामोद्योगोके पुनरुद्धार, ग्राम-सफाअी, भोजनके प्रयोग, रचनात्मक कार्यकर्ताओके साथ हुअी चर्चाअे — अनेक अैसे प्रसग है कि बापूके मगनवाडी निवासका अेक स्वतत्र वडा ग्रथ बन सकता है। अिन प्रसगोको अच्छी तरह तो महादेवभाअी[1] ही लिख सकते थे। शायद अुनकी डायरीमें से कुछ मिलें भी। कुमारप्पाजी[2] कुछ लिख सकते है। मेरा तो सिर्फ भोजनालयके कारण या घरेलू कारणोसे बापूजीसे जो थोडा-बहुत सबध आता था अुसके बारेमे ही कुछ अुदाहरण यहा दूगा।

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है बापूजीने कार्यारभ वहाके रसोअीघरका चार्ज अपने हाथमे लेकर किया। अुन्होने लोगोको हाथ-पिसा आटा, हाथ-कुटा चावल, घानीका तेल अित्यादि खानेका और अपने हाथसे ही रसोअी

---

१ श्री महादेव देसाअी, बापूजीके सेक्रेटरी।

२. श्री जे० सी० कुमारप्पा, प्रसिद्ध अर्थशास्त्री। अुस समय ग्रामोद्योग सघके मत्री।

बनानेका पाठ देना आरंभ किया। अिस प्रकारका रसोअीघर चलानेका मेरे जीवनमें यह पहला प्रसंग था। विविध प्रकारके लोग आते थे, समय-बेसमय भी आते थे। अुन सबका आतिथ्य करना और अुन सबको संतोष देना बड़ा कठिन काम था। मगनवाड़ीमें भिन्न भिन्न रुचिके लोग थे। आटा सब लोगोंको बारी बारीसे पीसना पड़ता था। खाना बनाने और बरतन मलनेकी भी बारी थी, लेकिन अुसमें बहुत बाधाअें आती थीं।

बापूने तेलकी घानी भी वहीं शुरू कर दी थी, जिसकी व्यवस्था श्री छोटेलालजी[1] ने की थी। बादमें अुसका चार्ज अप्रकाशबाबूको दिया गया था, जो 'ट्रिब्यून' के अुपसंपादक थे लेकिन अुसे छोड़कर सत्संगके लिअे बापूके पास आ गये थे। लोगोंको रहनेके लिअे जगहकी भी तंगी थी। पश्चिमके दरवाजेके अुत्तरके कमरेमें सब लोग रहते थे। और अुसका नाम धर्मशाला हो गया था। कुछ दिन काकासाहब कालेलकर भी अुसमें रहे थे। भसालीभाअी[2] का कर्मयोग वहींसे शुरू हुआ था। जब वे भटकते भटकते बापूके पास आये तब अुनकी शारीरिक अवस्था बहुत खराब थी। पैर सूजे हुअे थे। दांत बिलकुल निकम्मे हो गये थे, क्योंकि वे केवल कच्चा आटा ही घोलकर पीते थे। बापूने अुनको धूपमें सिकी हुअी रोटी खाने और चरखा कातनेको राजी कर लिया और वहीं रहनेके लिअे कहा। वे रह गये किन्तु अुस समय वे बापूसे ही बात करते थे और बाकी समय मौन रखते थे।

छोटे छोटे कामोंमें भी बापू बहुत बारीकीसे ध्यान देते थे। मीराबहन बापूकी व्यक्तिगत सेवा करती थीं। रसोअीघरमें नित नये अैसे प्रश्न आते थे, जिनके लिअे मुझे बापूके पास जाना पड़ता था। मेरे खिलाफ शिकायतें भी बापूके पास जाया करती थीं। भोजनका क्रम यह था

---

१ १९१७ में साबरमती आश्रमके अेक प्रमुख आश्रमवासी। अिनका विस्तृत परिचय 'सेवाग्राम आश्रमके अुद्योग' नामक प्रकरणमें आयेगा।

२ श्री जयकृष्ण भसाली। साबरमती आश्रमसे बापूजीके साथी, जिन्होंने १२ बरसका मौन लिया था। अुन्होंने कअी लंबे लंबे अुपवास व भोजनके विचित्र विचित्र प्रयोग किये हैं। सन् '४२ के आन्दोलनमें अिन्होंने सबसे लम्बा अुपवास किया था, जो ६३ दिन तक चला था। अिसका वर्णन 'अगस्त आन्दोलन और आश्रमवासी' प्रकरणमें आयेगा।

नाश्तेमे दलिया और १० तोला दूध।
दोपहरको २० तोला दही या छाछ और रोटी तथा साग।
शामको २० तोला दूध और खिचडी या चावलके साथ साग।

* * *

अब मै यहा कुछ अैसे प्रसग देता हू, जिनसे मुझे बापूके हृदयके विविध पहलुओका ज्ञान हुआ, जीवनमे मैने बहुत बहुत सीखा और अुनके प्रकाशमे अपने जीवनको गढनेका प्रयत्न किया।

१

पहला पाठ

अेक रोजकी बात है। दलिया खतम हो गया था। श्री तुलसीमेहरजी नेपालसे कुछ खानेकी चीजे लाये थे। अुन्होने कहा कि सवेरे नाश्तेमे सब लोगोको बाट देना। दलिया नही था और ये चीजे मिल गअी, अिस कारण मैने दूसरे दिन नाश्तेमे लोगोको दूध तथा मेहरजीकी लाअी हुअी दूसरी चीजे दी। शामको घूमते समय बहनोने बापूके सामने बात निकाली कि आज सुबह नाश्तेमे दलिया नही बना था। बापू चौके कि यह कैसे हो सकता है?

शामकी प्रार्थनाके बाद मेरी पेशी हुअी। बापूने पूछा, क्यो बलवतसिह, आज दलिया क्यो नही बना था? मैने सब परिस्थिति और कारण बताया। अिस पर बापूजीने लम्बा भाषण सुनाया। कहा, "देखो मैने ग्रामोद्योग सघका रसोअीघर जिस तरहसे चलता था वह बद कर दिया है और सबको खाना खिलानेकी जिम्मेदारी अपने सिर पर ली है। अुनको मैने बता दिया है कि मै तुमको क्या क्या खिलाअूगा, और वह सब तुम्हारे मारफत करवाना चाहता हू। मैने अुन्हे खिलानेका जो वचन दिया है अुसमे अगर अुनकी अनुमति लिये बिना कुछ परिवर्तन करू तो मेरे लिअे यह अुचित नही है। तुलसीमेहरकी चीजे खानेके समय या अूपरसे दे सकते थे, लेकिन दलिया तो लोगोको देना ही चाहिये था। दलियाके बदलेमे दूसरी चीजें देकर हम दलिया न बनानेका बचाव नही कर सकते। जो लोग दलिया ही पसद करते है और दूसरी चीज नही लेते, अुनके लिअे तुम्हारे पास क्या जवाब

है? अगर दला हुआ दलिया नही था तो मुझे तो कहना था। मै खुद दलनेमे मदद करता।"

शिकायत करनेवाली बहनो पर मुझे गुस्सा आया। पर बापूका कहना ठीक लगा। मैंने अपनी भूल कबूल की और कहा कि आगे जब कभी अैसा प्रसग आयेगा तब आपकी मदद जरूर लूगा। आगे अैसी भूल नही होगी।

लोग ठीक समय पर अपने हिस्सेका आटा नही पीस पाते थे। अेक रोज आटा खतम हो गया तो मै सीधा बापूके पास गया कि आज आटा नही है और कोअी पीसनेवाला भी नहीं है। मै चाहता तो खुद पीस सकता था और कोशिश करके किसी दूसरेकी मदद भी ले सकता था। लेकिन मेरे मनमे तो अुस रोज बापूजीने कहा था अुसकी थोडी चिढ थी। अिसलिअे मै अुनकी परीक्षा लेना चाहता था। बापूने कहा, चलो मै चलता हू पीसनेके लिअे। बापू आये और मेरे साथ चक्की पर बैठ गये। बस, हमारी चक्की चलने लगी।

बापू मेरे साथ चक्की पीस रहे थे, अिसलिअे अेक तरफ तो खुशी हो रही थी कि मै बापूको चक्की पर कैसे घसीट लाया और आज बापू मेरे साथ चक्की पीस रहे है। परन्तु दूसरी तरफ मेरे मनमे दया और शर्म आ रही थी कि यह तो मै भी कर सकता हू। बापूजीको क्यो कष्ट दू? अुस समय श्री काले, जो अेक लाखके अिनामवाले चरखेका प्रयोग कर रहे थे, वही थे। वे अेक कैमरा लेकर बापूजीका फोटो लेने लगे। मै नही जानता वह चित्र कही आया या नही, या आया तो कैसा आया। लेकिन मेरे मनमें अुसे प्राप्त करनेकी अिच्छा बनी रही है।

सचमुच ही मेरे लिअे बापूका वह बडा भारी पाठ था। मैंने अपने आपको धन्य माना कि जगतके अेक महापुरुष अिस तरह मेरे साथ चक्की पीस सकते है। बापूजीकी कर्तव्यनिष्ठा और छोटे कामको भी वे कितना महत्त्व देते है अिसका ज्ञान मुझे अिस बातसे हुआ। थोडी देरमे मै हारा और मैंने बापूजीसे कहा कि आप जाअिये मै खुद ही पीस लूगा। बापूजीके पास कामका तो पहाड पडा था। बोले, हा मेरे पास तो बहुत काम पडा है। और वे चले गये। अुस रोजसे मैंने अिस बातकी सावधानी रखी कि अिस प्रकारका प्रसग कभी न आवे। लेकिन अैसे प्रसग और भी आये, जब बापूजीने कामकी भीडमे भी मुझसे और दूसरोसे अनेक काम करवाये।

२

भगवान कृष्णका स्मरण

अेक दिन बापूजीने अेक योजना निकाली कि सबके जूठे बरतन बारी बारीसे दो-तीन आदमी मलें और रसोअीघरके पकानेके बरतन दो आदमी बारी बारीसे अलग मलें। अिससे लोगोंमें आपसमें प्रेमभाव बढ़ेगा, अेक-दूसरेके बरतन मलनेमें जो घृणा है वह मिट जायगी और सबका समय भी बचेगा। अुन्होंने अिसका महत्त्व मुझे समझाया। लेकिन अुनकी यह बात मेरे गले न अुतरी। मैंने कहा कि सबके जूठे बरतन अेकसाथ मलनेमें काफी अव्यवस्था होनेका डर है। बापूने कहा कि अव्यवस्थामें व्यवस्था लाना ही हमारा काम है। चलो, पहली बारी मेरी और बाकी। बस, बाको लेकर बापूजी बरतन मलनेकी जगह जाकर बैठ गये। और सबसे कह दिया कि थाली यहां रख दो और हाथ धोकर चले जाओ। पहले तो लोग घबराये, लेकिन बापूका रुख देखकर सब बरतन रखकर चले गये। बस, बापू और बा दोनों बरतन मलनेके लिअे जुट गये। मैं रसोअीघरके चार्जमें था। मुझे वे ना नहीं कह सकते थे। अिसलिअे मैं भी अुनकी मददमें जुट गया।

जब बापू और बा सबके जूठे बरतन साफ कर रहे थे, तब मेरे मनमें भगवान कृष्णकी याद आ रही थी और मैं सोच रहा था कि युधिष्ठिरके यज्ञमें भगवान कृष्णने जूठन अुठानेका काम क्यों लिया होगा। मनमें आनंद और शर्मका द्वन्द्व चल रहा था। लेकिन बापूजी और बाको हम कामसे कैसे विरक्त करें, अिसका रास्ता नहीं सूझ रहा था। साथ ही साथ यह भाव भी पक्का हो रहा था कि जब बापू और बा अिस तरहका काम कर सकते हैं, तो हमारे मनमें किसी भी कामके लिअे छोटे-बड़ेका भेद नहीं रहना चाहिये। बीच बीचमें बा और बापूका मनोरंजन भी चल रहा था। दोनोंमें होड़ लग रही थी कि देखें कौन अच्छा साफ करता है? बापूजी बरतन साफ करते और कहते, "क्यों बलवंतसिंह, कैसा साफ हुआ है? तुम क्यों हिम्मत हारते हो? आदमी निश्चय करे तो दुनियामें कौनसा अैसा काम है जो वह नहीं कर सकता। आखिर हमारे घरोंमें क्या होता है? स्त्रियां ही घरके सब जूठे बरतन साफ करती हैं। यह हमारा बड़ा कुटुम्ब है। और हमें स्त्री-पुरुषका भेद मिटाना है, अिसीलिअे तो मैंने रसोअी-घरका चार्ज किसी बहनको न देकर तुमको दिया है। साबरमतीमें भी मैंने

रसोअीका चार्ज विनोवाको दिया था। मैं मानता हू कि स्त्री पुरुषके कामोंके विषयमें जो भेद है वह हमारे आश्रममें तो रहना ही नहीं चाहिये। और खास तौर पर रसोअीघर तो पुरुषोंको ही चलाना चाहिये। मैंने अपने जीवनमें अिस प्रकारके अनेक प्रयोग किये है। और मैं अिस नतीजे पर पहुचा हू कि सामूहिक रसोअीघर चलानेमें जो कुटुम्ब-भावना वढती है, वह अन्य प्रकारसे नहीं वढती। जो रसोअीघर चलाता है अुसकी जिम्मेदारी वहुत वडी होती है। सव चीजोंको व्यवस्थित और स्वच्छ रखना और जितने भोजन करनेवाले है अुनको भगवान समझकर प्रेमसे खिलाना यह आध्यात्मिक प्रगतिकी वडी साधना है। तुम अिसमें पास होगे तो मैं समझूगा कि तुम सेवा कर सकते हो।"

मेरे मनमें अेक तरफ तो यह चल रहा था कि जल्दीसे जल्दी वापूजी वरतन छोडकर यहासे चले जाय और दूसरी तरफ यह चल रहा था कि वापूजी जितनी देर यहा रहेंगे अुतना ही अच्छा है। क्योंकि मुझे दोनों प्रकारके पाठ मिल रहे थे। अगर मैं चित्रकार होता तो अुस दिनका चित्र वनाकर लोगोंके सामने रखता। वापूका अिस प्रकारका चित्र मैंने अेक भी नहीं देखा है और शायद किसीके पास होगा भी नहीं।

यह लिखते समय मेरे मनमें जो भाव अुठ रहे है, अुनको कलमवद्ध करना भी मेरे सामर्थ्यसे वाहरकी वात है। वापू कहा और हम कहा ? हमको अुन्होंने कितने कितने कष्ट सहन करके कैसे कैसे सुन्दर पाठ पढाये। लेकिन हम पूरी तरहसे अुनके पाठोंको हजम नहीं कर सके। अव मनमें आता है कि दो-चार सालके लिअे वापूजी फिर आ जाय तो अुनसे खूव सीखें। पर 'अव पछताये होत क्या जव चिडिया चुग गअी खेत'। गया समय हाथ नहीं आता। मेरे मनमे अैसा थोडे ही था कि कभी वापूजी हमसे अलग होनेवाले है। लेकिन जो दुनियाका नियम है, वही हम पर भी लागू हुआ।

३

पहले खुद फिर दूसरे

तेलघानी वापूजीके कमरेके पीछे ही चलती थी और तिल आदिकी सफाअी वापूजीके सामनेके वरामदेमे होती थी। तिलकी सफाअीका काम वा और दूसरी वहनें करती थी। अेक रोज पूज्य वाने मुझसे कहा, वलवत

देखो यह तिल बहुत बारीक है और अिसमे बारीक कचरा है। मेरी आखसे नही दीखता है। तुम अेक बाअीसे सफाअी करा दो न। मैंने बडे अुत्साह और आनन्दके साथ हा कहा।

अुस समय अेक बोरेकी सफाअी करनेके लिअे मजदूरनी दो या चार आने पैसे लेती थी। मैंने तुरन्त ही अेक बाअीको तिल साफ करनेके लिअे लगा दिया और मनमे खुश होने लगा कि मैंने बाकी मदद की। मुझे पता नही था कि थोडी देरमे ही बा और मेरे दोनोके अूपर बापूका हटर पडनेवाला है।

बापू किसी कामसे या स्नानके लिअे कमरेसे बाहर निकले। मजदूर बाअीको तिल साफ करते हुअे देखकर बोले, "अिस बहनको किसने लगाया?" अब बिल्लीके गलेमे घटी बाधनेका सवाल खडा हो गया। जवाब कौन दे?

मैंने डरते डरते धीरेसे कहा, "बापूजी, मैंने लगाया है।"

बापू बोले, "क्यो? मैंने तो यह काम बाको और दूसरी बहनोको सौपा है न? तब तुम अिसके बीचमे क्यो पडे?"

मैंने शरमाते हुअे कहा कि तिल बहुत बारीक है और अुनमे बारीक कचरा है। यह साफ करनेमे बाको नही दीखता है। फिर अिसकी सफाअीके पैसे भी ज्यादा नही लगेगे।

बापू गभीर हो गये और बोले, "ठीक है, तो दूसरा सब काम छोड कर मै पहले तिल साफ करूगा।" वे सूप लेकर तिल साफ करने बैठ गये। यह देखकर मुझे तो पसीना आ गया।

पासवाले कमरेमे बा हमारा सवाद सुन रही थी। शायद अुनके मनमे भी मेरे अूपर दया और बापूके अूपर कुछ गुस्सा आ रहा होगा। वे थोडी देरमे बाहर आअी और दुखी मनसे बापूके हाथसे सूप छीनकर बोली, "आप अपना काम करे। हम साफ कर लेगे।" बापू चले गये और बा तिल साफ करने लगी। अुस समय मुझे भी यह सोचकर बापूके अूपर बडा गुस्सा आया कि छोटीसी बातके लिअे बापू बाको कितना कष्ट देते है। लेकिन जिसको मै छोटी समझता था, वह बापूके लिअे बडी बात थी। वे तो गृह-अुद्योग और ग्रामोद्योगके लिअे ही वहा बैठे थे। अगर अुसको सबसे पहले बासे न कराते या खुद न करते तो दूसरोसे कहनेके लिअे बल कहासे लाते?

४

किफायतशारीका अनोखा नमूना

अेक बार बजाजवाडी, वर्धामें कांग्रेस वर्किंग कमेटीकी बैठक थी। बापूजीने भोजनके लिअे सबको निमन्त्रण दिया। मुझे बुलाकर कहा कि देखो आज अितने मेहमान आनेवाले हैं। अुनके भोजनका प्रबंध करना है।

मैंने कहा, "मेरे पास अितनी थाली-कटोरी नहीं है।" वे बोले, "बड़के पत्ते तोड़ लाओ और अुनकी पत्तलें बना लो। कटोरियोंके स्थान पर मिट्टीके सकोरे अिस्तेमाल करो। आखिर देहातके लोग क्या करते हैं? जब अुनके यहां मेहमान आते हैं तो क्या वे नये बरतन खरीदते हैं? हम भी तो यहां गरीबीका व्रत लेकर ही बैठे हैं न। हम तवंगर तो हैं नहीं जो नये नये बरतन खरीदते रहें। और देखो जो मिट्टीके सकोरे हैं वे भी खानेके बाद फेंक देनेके लिअे नहीं हैं। अुन सबको धोकर, साफ करके फिर अग्निमें शुद्ध करके रख देना।"

पत्तलकी बात तो मेरी समझमें आ गयी, लेकिन मिट्टीके सकोरोंको काममें लेकर और अग्निमें शुद्ध करके फिर काममें लेनेकी बात मेरे मनको नहीं पटी। क्योंकि अुत्तरप्रदेशमें तो यह रिवाज है कि मिट्टीका बरतन काममें लिया और फेंक दिया। और यही संस्कार मेरे चित्त पर जमा हुआ था। अिसलिअे अुसे फिर काममें लानेसे घृणा थी। अिस पर बापूजीने अेक लंबा भाषण सुनाया।

बापूजीने कहा, "देखो कुम्हार अुस पर कितनी मेहनत करता है। अुसे बनाता है, तपाता है, अुस पर रंग करता है। और हम अेक ही बार अिस्तेमाल करके अुसे फेंक दें यह तो हिंसा है। सामानकी बरबादी तो है ही।" मुझे अब ठीक याद नहीं है लेकिन पेरिन बहन या गोसी बहनका नाम लेकर बापूने कहा कि अुन्होंने मुझे बताया है कि अिस तरहसे मिट्टीके बरतनका अुपयोग हो सकता है और वे करती भी हैं। तो हम भी क्यों न करें?

बापूजीकी बात पूरी तरह तो मुझे नहीं जंची, लेकिन मैंने प्रयोग करना कबूल किया। सकोरे दिल्लीसे हमारे साथ आये थे। जब सब लोग खाने बैठे तो मैंने सूचना की कि मिट्टीके बरतन कोअी फेंक न दे। धोकर अेक तरफ रख दें। अुनका फिर अिस्तेमाल किया जायगा। अिस पर राजेन्द्रबाबू चाक

कर बोले, "अुन्हे फिर अिस्तेमाल किया जायगा?" बापू अुनके पास ही बैठे थे। अुन्होने कहा, "हा, अिनको फिरसे अग्निमे तपाकर शुद्ध किया जायगा और तब अिनका अुपयोग करनेमे कोअी हर्ज नही है।" बापूकी यह बात अुनको अटपटी लगी, लेकिन वे कुछ बोल नही सके। मैंने सब बरतन अिकट्ठे किये और फिरसे अुन्हे अग्निमे तपाकर अुनका अुपयोग किया। अनुभव यह आया कि जिन बरतनोमे दूध या दहीका अुपयोग किया गया था, अुनकी शकल भद्दी हो गयी थी। क्योकि अुनमे चिकनाअीका शोषण हो गया था, और अिस कारण अुन पर रोगन-सा फिर गया था। पानीके बरतनोमे कुछ फर्क नही हुआ और वे बिलकुल कोरेकी तरह निकले। तबसे मिट्टीके बरतनोका अक्सर मै पानीके लिअे ही अुपयोग करता था। और वे शुद्ध कर लिये जाते थे। सकोरो-पत्तलोका सिलसिला मगनवाडीमे अक्सर चलता था।

५

जीवनका कार्य और आशीर्वाद

मै प्रारभमे अेक बात कहना भूल गया। जब हम वर्धा पहुचे तब पहले तो बापूजीने मेरे साथ घूम कर मगनवाडीकी सारी जमीन मुझे बतायी और कहा कि बिना बैलके हाथ-पैरसे तुम काम कर सको अुतनी जमीन ले लो और अुसमे हाथसे खोदकर सागभाजी पैदा करो। तुम तो किसान हो न? और सब किसानोके पास बैल भी कहा होते है? हम तो गरीब किसान है। अिसलिअे हमारे पास कुछ भी न हो तो भी हम अपनी सागभाजी कैसे पैदा कर सकते है, यह हमे सीख लेना चाहिये।

मगनवाडीके कुअेके पास ही जमीनका अेक छोटा सा टुकडा खाली पडा था। अुसे मैने और बापू दोनोने पसन्द किया और मै फावडा लेकर अुसमे जुट गया। आज सोचता हू तो ध्यानमे आता है कि बापूने अुस जमीनके टुकडेमे कार्यारभ करानेके साथ साथ मेरे जीवनका कार्य और अपना आशीर्वाद दोनो ही मुझे दे दिये थे। महान पुरुषोकी दृष्टि कितनी दीर्घ होती है, अिसकी कल्पना अुस समय तो नही हुअी थी किन्तु आज हो रही है। लोग किसी बडे कामका श्रीगणेश करनेके लिअे और आशीर्वाद लेनेके लिअे किसी बडे आदमीको बडे प्रयत्नसे बुलाते है। लेकिन मेरे कामका श्रीगणेश बापूने खुद आग्रहपूर्वक प्रेमभरे आशीर्वाद देकर कर दिया। बापूकी छोटी छोटी चीजोमे कितना रहस्य भरा था, यह अुस समय ध्यानमें

नही आता था। अब जब अुनका स्मरण आता है तो अेक अेक चीज स्मृतिपट पर चलचित्रकी तरह आकर सामने नाचने लगती हैं। अिसमे आनद व दु:ख दोनो होते हैं। आनद अिस बातका कि भगवानने हमको अैसा सुअवसर दिया कि बापूजीके अितने निकट रहकर हमें सब सीखनेको मिला और दु:ख अिस बातका कि तब हमने अुस बातको आजकी तरह क्यो नही समझा। सचमुच भगवान मनुष्यके जीवनमें कैसे कैसे खेल खेलता है, लेकिन हम अुनका रहस्य नही समझ पाते।

मैं अुस टुकडेमें रोज खोदता, क्यारी बनाता, खाद डालता और कुछ न कुछ भाजी लगाता। जब अुग जाती तो बापूको दिखाने लाता। बापू देखते और आनदसे मुक्तहास्य हसते। कहते, "मेरे खाने लायक कब होगी?" मैं अुतावला हो जाता और रातदिन चिन्ता करता कि जल्दी बढ जाय तो बापूको खिलाअू। जब थोडी बढ जाती, मैं थोडेसे पत्ते लेकर जाता और धोकर बापूजीके सामने रख देता। अुस समय बापूजीको और मुझे जो आनद होता था अुसकी तुलना मा और बच्चेके पारस्परिक भावसे ही की जा सकती है। नि:सन्देह अुस समय हमारी दोनोकी मानसिक अवस्था अैसी ही थी।

६

भानूबापा

बापूजीके आसपास शिवजीकी बरात तो थी ही, लेकिन अुसमे भानूबापामें तो सचमुच शिवजीके ही मुख्य गुण थे। वे कच्छके थे। बापूजीके प्रति अुनकी अगाध श्रद्धा थी। अुम्रमे ६० से अूपर थे। बापूजीके पास आये और बोले, "मुझे तो आपके पास सेवा करना है। जिस कामको कोअी न करे अैसे फालतू कामको मैं करूगा और सबके बाद जो बच जायगा अुससे ही अपना गुजर कर लूगा।" अुनके पास कुछ पैसा था। वह भी अुन्होने बापूजीको देनेको कहा। अुसका क्या हुआ मुझे पता नही चला। बापूजीने कहा, "आप मगनवाडीमें चलनेवाले कामोमे से अपनी अनुकूलताका काम पसद कर लें।" अुन्होने सफाअीका काम पसद किया। सुबह झाडू और बाल्टी लेकर निकलते और मगनवाडीके कोने कोनेमे फिर जाते। जहा भी कचरा और गदगी पाते वहींसे अपनी बाल्टीमे डालकर अुचित स्थान पर पहुचा देते। जब सब लोग भोजन करके चले जाते तो मेरे पास आकर कहते, "भाअी

जो कुछ बचा हो मुझे दे दो।" मै अुनका ध्यान तो रखता ही था। लेकिन मगनवाडीमे मेहमानोकी अितनी अनिश्चितता रहती थी कि कब कितने मेहमान आ जावेगे अिसका कोअी ठिकाना नही था। अिसलिअे कभी कभी मै कठिनाअीमे पड जाता था। लेकिन वे तो अवधूत ठहरे। कहते, अरे किसीका जूठा तो बचा होगा? और जूठन डालनेकी बाल्टीसे जूठन निकाल कर ले जाते। मुझे अिससे दु:ख और घृणा भी होती। कपडा मात्र लंगोटी रखते थे। ओढने-बिछानेके बिस्तरका तो सवाल ही नही था। चटाअीका ही कोअी टूटा टुकडा लेकर अुसी पर कहीं पडे रहते। और सारी मगनवाडीका समाचार बापूजीको सुना आते। अुनके भोजनकी अिस अव्यवस्थासे मुझे बुरा लगता। मैने बापूजीसे कहा। बापूजी बोले, "भानूबापा तो अवधूत है। अुसकी सादाअी और असंग्रहको तो मुझे अीर्पा होती है। लेकिन अुसके भोजनकी अव्यवस्था मुझे पसंद नही है। मैने अुसे समझाया भी। लेकिन वह बेचारा भी क्या करे? अपनी आदतसे लाचार है। अुसकी कितनी सेवा और त्याग है! अगर व्यवस्था भी अुसके जीवनमे आ जाय तो सोनेका आदमी है।"

७

त्यागका पाठ

अुसी समय हरिलाल गांधी भी बापूजीके पास आ गये थे। कहते थे कि मेरी भूल मेरी समझमे आ गयी है और अब मै बापूजीके पास ही रहूंगा। बापू तो महान पुरुष थे। मै और हरिलालभाअी अेक ही कमरेमे रहते थे। पहलेसे अुस कमरेमे मै रहता था, अिसलिअे मै अुस पर अपना ज्यादा हक समझता था। हरिलालभाअीने चाहा कि वह कमरा अुनके लिअे खाली कर दिया जाय और मै कही दूसरी जगह चला जाअू। मैने कहा कि यह नही हो सकता। यह शिकायत बापूजीके पास गयी। अुस समय बापूका अेक महीनेका मौन चल रहा था। बापूने मुझे बुलाया और पूछा, "तुम्हारा और हरिलालका क्या झगडा है?" मैने सब बताया। बापूने लिखा

"तुम अुसको कमरा दे दो, क्योंकि तुम तो पेडके नीचे भी रह सकते हो। तुम मुझे छोडकर भागनेवाले नहीं हो, लेकिन हरिलाल तो मुझसे दूर दूर भागता है। अब अुसके दिलमे राम बैठा है और मेरे पास आया है, तो छोटी छोटी बातोके लिअे मै अुसको तंग करना नही चाहता हूं। अगर वह टिक जाय तो बहुत बडी बात होगी। सबसे बडा सन्तोष तो बाको

होगा। वाकी यह वडी शिकायत है कि मै हरिलाल पर ध्यान नही देता। लेकिन मै अपने ढगसे ही ध्यान दे सकता हू। मेरे मनमे मेरे और परायेका भेद ही नही है। जो मेरे रास्तेसे चलता है वह मेरा हे। दूसरे रास्तोसे चलनेवालोका मै द्वेप नही करूगा, लेकिन अुनकी मदद भी नही करूगा। अिसलिअे तुमसे मै त्यागकी आशा रख सकता हू। हरिलालसे नही।"

मै वापूकी वात समझ गया और वह कमरा हरिलालभाअीके लिअे मैने खाली कर दिया। अुस दिनसे मै सचमुच ही पेडके नीचे रहने लगा। वापूजीने मुझे पेडके नीचे रहनेको क्यो कहा, अुसका मर्म मै पेडके नीचे रहकर समझा। वास्तवमे जिस चीजकी योग्यता मुझमे नही थी अुसकी आशा और शुभ सकल्प करके वापूजीने मुझे किस तरह पोपण दिया है, अिस वातका जव मै विचार करता हू तो मेरा हृदय गद्‌गद हो जाता है और मेरा मस्तक वापूजीके चरणोमे झुक जाता हे।

वापूजीने मुझे जापानी साधु श्री केशवभाअी[1] और श्री राजकिशोरी[2] वहनको हिंदी पढानेका काम सौपा। केशवभाअी टूटीफूटी अग्रेजी तो जानते थे, लेकिन वैसे जापानीके अलावा और कुछ नही जानते थे। मै भी हिंदी और गुजरातीके अलावा और कुछ नही जानता था। अिसलिअे अुसी पेडके नीचे अिशारोसे काम लेकर हमारी हिन्दी पाठशाला शुरू हुअी।

८

काम करो तो खाना मिलेगा

अेक रोज अेक नौजवानने मुझसे आकर कहा कि "मुझे दो तीन रोज ठहरकर यहा सव देखना है। वापूजीसे मिलना है। मेरे पास खाने-पीनेके लिअे कुछ भी नही है। यही भोजन करूगा।" मैने जाकर वापूजीसे कहा। वापूजीने अुनको वुलाया और पूछा कि वे कहाके रहनेवाले है और अिस समय कहासे आ रहे है। अुन्होने कहा, "मै वलिया जिलेका रहनेवाला हू और कराची काग्रेस देखने गया था। मेरे पास पैसा नही था अिसलिअे कभी गाडीमे विना टिकट, कभी पैदल मागते-खाते गया और अैसे ही आया।" वापूजीने गभीरतासे कहा, "तुम्हारे जैसे नौजवानको यह शोभा नही देता।

---

१ अेक जापानी साधु जो वापूजीके परम भक्त थे।

२ श्री चन्द्र त्यागी मेरठ जिलेके निवासी थे और सावरमती आश्रममे वहुत दिनोसे रहते थे। राजकिशोरीवहन अुनकी पुत्रवधू थी।

अगर पैसा पास नही था तो काग्रेस देखनेकी क्या जरूरत थी? अुससे लाभ भी क्या हुआ? बिना मजदूरी किये खाना और बिना टिकट गाडीमे सफर करना चोरी और पाप है। यहा विना मजदूरी किये खाना नही मिल सकता।" अुनका नाम अवधेश था। देखनेमे अुत्साही और तेजस्वी मालूम होते थे। वहाकी काग्रेसके कोअी कार्यकर्ता थे। अुन्होने कहा, "अच्छा मुझे काम दीजिये। मै काम करनेके लिअे तैयार हू।" बापूजीने मुझसे कहा, "अुनको कोअी काम दो। जो आदमी हृष्टपुष्ट है और काम मागने आता है अुसको काम मिलना ही चाहिये। और अुसके बदलेमे खाना मिलना चाहिये। यह काम सल्तनत और समाज दोनोका है। लेकिन सल्तनत तो आज पराअी है। समाजका ध्यान भी अिस तरफ नही है। लेकिन मेरे पास जो आदमी आकर काम मागता है अुसे मै ना नही कह सकता। हमारे पास अैसे काम पैदा करनेकी शक्ति होनी चाहिये कि हम लोगोको ना न कह सके।" बापूने अुनसे कहा, "अच्छा अवधेश तुम यहा पर काम करो। मै तुमको खाना दूगा और आठ आने रोजके हिसाबसे अूपर मजदूरी दूगा। जब तुम्हारे किरायेका पैसा हो जाय तो टिकट लेकर घर चले जाना।" अवधेशजीने बडी खुशीसे कबूल किया।

मैने अुनको रसोअीघरमे काम दे दिया। वे भाअी बडे मेहनती और श्रद्धालु थे। मेरा खयाल है करीब डेढ महीना अुन्होने खूब काम किया और टिकटके लायक पैसा हो जाने पर अपने घर चले गये।

९

रसोअीघर और सफाअी

बापूजी रसोअीघरके छोटेसे छोटे काममे खूब रस लेते थे। कभी कभी तो घटी चक्की दुरुस्त करनेमे चले जाते थे। चावल और अनाजकी सफाअी अुनके ही कमरेमे होती थी। वे सब लोगोको अिकट्ठे करके काम करने और ग्रामोद्योगकी चीजे खानेका महत्त्व समझाते थे। रसोअीघरमे जाकर सब चीजोकी सफाअी और व्यवस्था देखते थे।

अेक रोज हम लोग बिना धुले आलू काट रहे थे। अितनेमे बापू आ गये। बोले, "बलवन्त, बिना धोये आलू काटना तुम कैसे सहन कर सकते हो? अुसमें चारो तरफ मिट्टी लग जाती है। पहले अुसको खूब रगडकर धोना

चाहिये और फिर काटना चाहिये।" मेरा तो अिसकी तरफ बिलकुल ही खयाल न था। मैं शरमाया और आगेसे धोकर ही काटनेका निश्चय किया।

अेक रोज बापू रसोअीघरमें आये और बड़े ध्यानसे चारों ओर देखने लगे। रसोअीघरके अेक अंधेरे कोनेकी छतमें मकड़ीका जाला लगा था। बापूने अुसे देख लिया। अुसकी तरफ अिशारा करके मुझसे कहने लगे, देखो वह क्या है? रसोअीघरमें जाला हमारे लिअे शर्मकी बात है। मैं तो शर्मसे गड़-सा गया। मेरे मनमें कभी आया ही नहीं था कि अुस ओरसे रसोअी-घरकी छत भी साफ करना चाहिये। और यह भी नहीं समझता था कि बापू अैसी वैसी चीजोंको भी देखेंगे। मैं हैरान था कि बापू अितने विविध कामोंका भार अुठाते हुअे भी अिन चीजोंमें अैसी बारीकीसे अितना समय कैसे दे सकते हैं।

भोजनके अनेक प्रयोग चलते थे। बनानेका समय कैसे बचाया जा सकता है, चूल्हा अैसा हो जिसमें लकड़ी कम जले और धुआं न हो, क्या चीज बनानेमें समय कम लगेगा और पोषण भी पूरा मिलेगा — अिन प्रश्नों पर विचार होता था। भसालीभाअी नीम खाते थे और अुसकी बड़ी तारीफ करते थे। अिसलिअे बापूजीने खुद भी नीम खाना शुरू किया और दूसरोंको भी खिलाते थे। अिमलीका प्रयोग भी चलता था। बापूके पास दो-चार बीमार तो बने ही रहते थे, जिनका अिलाज बापू खुद करते थे। अुस समय चार मुख्य रोगी थे। मदालसा बहन, भाअू पानसे, हरजीवन कोटक और सुमंगल प्रकाश। भाअू पानसेके पेटदर्दका कारण ढूंढनेके विचित्र प्रयोगका वर्णन मैं आगे करूंगा।

पू० बा रसोअीघरके बारेमें बापूजीसे भी अधिक व्यवस्था और सफाअी पसंद करती थीं। जब रसोअीघरमें आ जाती तो दोष बतानेकी झड़ी लगा देतीं। यह ठीक नहीं है, वह ठीक नहीं है, यह गन्दा है, वह गन्दा है। अपने हाथसे भी काम करने लगतीं। यह मुझे अच्छा नहीं लगता था। अैसा लगता था कि बा मेरी आलोचना कर रही हैं। अेक रोज मैंने बापूजीके पास जाकर शिकायत की। बापूजी खूब हंसे और बोले, "बाकी वाणी जितनी सख्त है हृदय अुतना ही कोमल है। तुम जानते नहीं हो। अव्यवस्था और गंदगी बासे बिलकुल सहन नहीं होती। तुमको तो बाके कहनेसे अुपदेश लेना चाहिये और अपने कामको स्वच्छ व व्यवस्थित करना चाहिये, जिससे बाको कहनेका अवसर न मिले। 'निंदक बाबा वीर हमारा' कबीरका

यह भजन जानते हो? आलोचना तो हमारे दोष बताकर हमे निर्दोष बनानेमे सहायक होती है।" अिस पर बापूजीने बाके और अपने पिछले जीवनकी लम्बी कथा सुना डाली।

बाके कहनेसे मुझे जितना दुःख हुआ था अुससे अधिक बापूकी सान्त्वनासे आनन्द हुआ। गुस्सेमे रोया-सा मुह लेकर बापूके पास गया था और हसता हुआ लौटकर बडे अुत्साहसे अपने काममे लग गया।

१०

विचित्र प्रयोग

अेक रोज भाअू पानसेने जाकर बापूसे कहा कि मेरे पेटमे दर्द है। बापू विचारमे पड गये कि दर्द क्यो हुआ? अुनसे पूछा कि तुमने क्या क्या खाया है? अुन्होने भोजनमे खाअी चीजे बताते हुअे गन्नेका नाम भी लिया। बापूने कहा, "बस गन्नेसे ही दर्द हुआ है।" मै पासमे ही खडा था। मुझे बडा आश्चर्य हुआ। मै बोला, "बापू, गन्नेसे दर्द कैसे हो सकता है?" बापूने कहा कि गन्ना चूसते समय अुसके छोटे छोटे रेशे भीतर चले जाते है और वे कमजोर आतोमे पहुचकर चुभते है।" बापूजीकी यह बात मुझे अेक बच्चेकी-सी लगी और बिलकुल नही पटी। मैने आश्चर्यसे कहा, 'भला गन्ना चूसते समय गन्नेके रेशे कैसे अन्दर जा सकते है?" बापूने दृढतासे कहा, "जा सकते है। अिसकी परीक्षा करके मै तुम्हे अभी बता देता हू।"

भाअूको अेनीमा दिया और मलको कपडेसे छनवाया। फिर मीराबहनको बुलाया और बोले, "देखो, मेरी तो नाक नही है, पर तुम सूघकर देखो अिसमे कैसी बदबू आती है?" मीराबहनकी नाक बहुत तेज मानी जाती थी। जब यह सारी क्रिया चल रही थी और बापूजी मीराबहनको सूघनेके लिअे कह रहे थे, तब मै मन ही मन हस रहा था कि आखिर बापू यह क्या कर रहे है। बापूकी अिस बारीकीका महत्त्व मै बादमे समझा और अिस घटनाको कभी नही भूला।

मीराबहनने मलको सूघकर क्या राय दी, यह मुझे याद नही है। बापूने मीराबहनसे कहा कि अिस मलको धूपमे सुखाओ और मक्खिया अुडाती रहो। जब मल सूख गया तो बापूने मुझे बुलाया और कहा, "तुम कहते हो कि गन्ना चूसते समय गन्नेके रेशे पेटमे नही जा सकते। अब देखो।"

मैंने देखा तो सचमुच ही अुसमे गन्नेके रेशे थे। मेरे लिअे यह नया दृष्टान्त था। मै खुद भी गन्ना चूमता था पर खयाल नही था कि पेटमे रेशे चले जाते है। अब ध्यान दिया तो मालूम हुआ कि अच्छे नरम गन्नेके कुछ रेशे चले ही जाते है।

११

बापूके मनकी वेदना

अिसी समय बापूजीने कार्यकर्ताओमे ग्रामसफाअी और सेवकोके ग्राममें रहनेके बारेमे कहना शुरु किया।

बापूजी खुद भी पासके सिन्दी गावमे सुबह सफाअीके लिअे जाया करते थे। दूसरे लोग और मेहमान भी बापूजीके साथ जाते थे। वहासे मैलेकी बाल्टिया भरकर लाते थे और अुसका मगनवाडीमे खाद बनाया जाता था। सिन्दी जाते और आते समय अनेक प्रकारकी चर्चाये चलती थी।

अुस समयके बहुतसे प्रसग मेरी डायरीमे अधूरे-से दर्ज है। आज जब सोचता हू तो मन मसोस कर रह जाता हू कि मैंने पूरे-पूरे प्रसग क्यो नही लिख लिये। लेकिन अुस समय मैं न तो आजके जैसा लिखना ही जानता था और न मुझे अितनी समझ ही थी। तो भी मुझे आश्चर्य होता है कि मैंने जितना लिख लिया वह भी कैसे लिख लिया। साबरमतीमे जब मै लोगोसे कोचरब आश्रमके बारेमे सुनता था कि बापूजीने आश्रम कैसे शुरू किया और कैसे सब कामोमे सबके साथ भाग लिया, तो मेरे मनमे मलाल हुआ करता था कि मै अुस समय क्यो नही रहा। लेकिन अीश्वरकी कृपासे मगनवाडीमे भी वही सब चल रहा था। दिनमे अेक बार तो मुझे बापूकी सलाह लेना और बापूजीको रसोअीघरका सब हाल बताना ही पडता था। अनेक बार अैसे भी प्रसग आते थे कि दिनमे कअी बार बापूजीसे पूछना पडता या बापूजीको रसोअीघरमे आना पडता। अेक रोज मैंने बापूजीसे कहा कि मेरी अिच्छा है कि मै किसी गावमे जाकर बैठू और वहा काम करू। बापूजीने कहा, "मै भी तुमसे यही आशा करता हू और तुमको ग्राममे भेजनेका ही मेरा विचार है। तुम्हारी शक्तिका अच्छा अुपयोग ग्राममे ही हो सकता है। साबरमतीमे भी मैंने लोगोको अिसी दृष्टिसे जमा किया था। परतु आज तो मै देखता हू कि आश्रमका प्रयत्न निष्फल ही गया। आज कोअी भी आश्रम-वासी गावमे जानेको राजी नही है, सिवा दो-चारके। सो भी मै कहू तो।

अिसलिअे अब तो मैं अपने पास अैसे ही आदमियोको जमा करना चाहता हू जो बादमे ग्रामोमे जाकर बस जाये । तुम्हारे लिअे जब मेरे मनमे आ जायगा तो तुम्हे गावमे भेज दूगा। गावका चुनाव भी तुम ही करोगे।"

१२

सहशिक्षा और बापू

अिन दिनो शामकी प्रार्थना बापूजी महिलाश्रमकी लडकियोके आग्रह पर महिलाश्रममे ही करते थे। मगनवाडीसे महिलाश्रम काफी लबा पडता था। अुस समय लोग भी काफी थे। महिलाश्रमकी लडकिया बापूजीको लेने बजाजवाडी तक आ जाती थी और वहासे बापूजीके साथ महिलाश्रम लौट जाती थी। बीचमे अनेक प्रकारकी चर्चाये होती थी। अेक रोज किसी लडकीने पूछा कि लडके और लडकिया अेकसाथ पढ सकते है?

बापूजीने कहा — नही।

लडकीने पूछा — क्यो?

बापूजीने कहा — अब तक जो परिणाम आये है अुनसे मैं अिस नतीजे पर पहुचा हू कि जो स्वभावसिद्ध वस्तु है अुसे सघर्षमे रखना अुचित नही है। बडे बडे विचारक अिसी निर्णय पर पहुचे है कि अिससे लाभके बदले हानि ही अधिक होती है।

लडकी — तब आप अेक ही सस्थामे लडको और लडकियोके अेकसाथ रहनेका समर्थन क्यो करते है?

बापूजी — यह कोअी नुरी बात नही है। अेक ही छप्परके नीचे हम सब रहे।

लडकी — तब साथ पढनेमे ही क्या हर्ज है?

बापूजी — तो साथ कसरत करनेमे क्या हर्ज हे?

खूब हसी हुअी। अिसी प्रकारकी बहुतसी चर्चा हुअी। बापूजीने कहा अेक रोज मैं आठ आनेकी शर्तमे घरकी सब रोटी खा गया था। बापूजी और हम सब लोग खूब हसे।

१३

फूलसे कोमल बापू

बापूजी जहा भी रहते थे वहा पर आश्रमके सब नियमोका पालन करानेका पूरा पूरा प्रयत्न करते थे। अस्वाद-व्रतका तो दिनमें तीन बार

अनुभव करनेका प्रसग आ जाया करता था। लेकिन जो लोग बापूजीको निकटसे नही समझते थे अुन लोगोको अुनकी कअी बातोसे बडी दुविधा खडी हो जाती थी।

श्री ब्रजकृष्ण चादीवाला कुछ अस्वस्थ थे और दिल्लीमे अुनका अिलाज चल रहा था। मुझे ठीक याद नही कि बापूजीने अुन्हे बुलाया था या वे खुद बापूजीके पास आना चाहते थे। लेकिन अैसा कुछ याद पडता है कि बापूजीने अुनको लिखा था कि तुम्हारा जैसा अिलाज दिल्लीमे चलता है वैसे अिलाजकी व्यवस्था यहा कर दी जायगी। वे आ गये। बापूजीने अुनसे सारी बाते पूछी। अुन्होने बताया कि मुझे रोज अितनी मलाअी खानेकी डॉक्टर या वैद्यकी सलाह है। बापूजीने कहा, "तो बस यहा अुसका प्रबध हो जायगा। तुम अेक कढाअी लाकर बलवन्तको दे दो। वह अुसमे दूध गरम करके मलाअी तैयार कर देगा।" लेकिन ब्रजकृष्णजी बिचारे सकोचके मारे कढाअी नही लाये, क्योकि आश्रममे मलाअी अित्यादि खाना अुन्हे ठीक नही लगा।

अैसे ही अेक दिन निकल गया। बापूजीने मुझसे पूछा — क्यो ब्रज-कृष्णके लिअे मलाअी तैयार की?

मैने कहा — बापू, अभी तक कढाअी नही आयी।

बापू — अच्छा, ब्रजकृष्णको बुलाओ।

मैने अुन्हे बुलाया।

बापूने कहा, "क्यो ब्रजकृष्ण अभी तक कढाअी क्यो नही लाये? और तुम्हारे लिअे मलाअी क्यो नही बनी?

अुन्होने कहा, "नही बापू, आश्रममे अितनी खटपट करनेमे सकोच होता है।"

बापूने कहा, "यह तुम्हारी मूर्खता है। शरीरके लिअे जो आवश्यक है वह अुसको देना धर्म है। जाओ, अभी जाओ शहरमे और कढाअी लेकर आओ।"

वे बिचारे गये और कढाअी ले आये। अितनेमे शाम हो गअी। बापूजीने मुझसे कहा कि सवेरे ब्रजकृष्णको अितनी, शायद २० तोला, मलाअी मिलनी ही चाहिये।

मैने कढाअीमे दूध चढा दिया और धीमी आचसे मलाअी बनाना शुरू किया। मेरा खयाल है रातमे तीन चार दफा जागकर मैने मलाअी अुतारी और सुबह तक जितनी मात्रा जरूरी थी अुतनी तैयार हो गअी। यह देखकर

वापूजीको बहुत आनन्द हुआ और व्रजकृष्णजीको खाना खानेके लिअे कहा। फिर तो यह सिलसिला चलता रहा। अुस रातको करीव करीब मुझे सारी रात जागना पडा था। लेकिन वापूकी अिच्छाके अनुसार मलाअी तैयार कर देनेका मनमे अितना अुत्साह था कि अितने जागरणसे भी थकानका अनुभव नही हुआ। वापूमे जहा सयमके वारेमे पत्थरसे अधिक कठोरता थी, वहा साथियोके स्वास्थ्यके प्रति फूलसे अधिक कोमलता और अुदारता थी।

सत हृदय नवनीत समाना, कहा कविन पर कहि नहि जाना।
निज परिताप द्रवहि नवनीता, पर दुख द्रवहि सुसत पुनीता।
कुलिस हु चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि।
चित्त खगेस राम कर समुझि परहि कहु काहि।

तुलसीदासजीके अिन वचनोकी वापू साक्षात् मूर्ति थे। मैंने कअी वार अिन दोनो चीजोको अपने वारेमे भी अनुभव किया।

१४

तुर्की महिलाका स्वागत

मगनवाडीमे टर्कीकी अेक वहन खालिदेखानूम आनेवाली थी। वापूजीने अुनके लिअे जो तैयारिया और सफाअी आदिका प्रवन्ध किया था, वह देखने लायक था। वे कहा वैठेगी, कहा सोयेगी, कहा स्नान करेगी, तथा कमोड आदिकी सारी व्यवस्था वापूजीने अपनी आखोके सामने कराअी थी। वे वहन आअी। वापूजीने अुनका प्यारसे वैसा ही स्वागत किया जैसा कि कोअी मा वेटीके आने पर किया करती है। अुनकी छोटीसे छोटी वातके लिअे वापूजी ध्यान रखते थे। अपने पास विठाकर अुन्हे खिलाते और वीच वीचमे पूछते जाते कि कैसा लगता है। नीमकी पत्तीकी चटनी, अिमलीकी लुगदी, कच्चा माग, न मालूम छोटी छोटी कितनी वानगिया वापूजी अुनके सामने परोसते। नीमकी चटनी भले ही कडवी हो, लेकिन अुसमे वापूके प्रेमका पुट लगा रहता था। अिसलिअे वह वहन अुसे वडे स्वादसे खाती। अुनकी वापूजीके साथ काफी चर्चाये होती। मै अग्रेजी नही जानता था अिसलिअे समझमे तो नही आती। लेकिन अुनकी आवाज अितनी नम्र और अितनी मधुर थी कि वे जव वोलती तव अैसा लगता था मानो अुनके मुहसे फूल वरस रहे हो।

हमारे परिवारमे वे अितनी घुलमिल गअी थी कि जव १०–१५ रोजके वाद जाने लगी तो अुनको और हमको अुस विछोहका अनुभव कष्टदायी मालूम हुआ। वापूजीके प्रति अुनकी श्रद्धा और भक्ति अद्‌भुत थी। आज भी वे तुर्किस्तानमे वापूजीकी दृष्टिसे काम कर रही है। आश्रममे वे अपनी मधुर स्मृतिया छोड गअी। आज भी अुनकी यादसे चित्तमे प्रसन्नताका अनुभव होता है।

१५

अपनेको सवसे वुरा समझो

रसोअीघरकी खटपट और लोगोकी छोटी छोटी शिकायतोसे मै अितना तग आ गया था कि मनमे अनेक वार मगनवाडी छोडकर जगलमे भाग जानेका विचार आता था। अेक रोज वापूजीके पास जाकर मैने कहा, "मेरा यहासे जगलमे भाग जानेका विचार होता है। लेकिन आपके पास रहनेका लोभ भी नही छूटता। अव आपके आखिरी दिन है और सारे जीवनके अनुभवका आखिरी निचोड आपसे मिलता है। मुझे यह लाभ सहज प्राप्त हुआ है। अिसे कैसे छोडू?"

वस वापूने समझाना शुरू किया "तुम मेरे पास मौन धारण करके रहो। जडभरत जैसे वन जाओ। जगतमे अपने आपको सवसे वुरा समझो। मेरा मार्ग जगलमे भाग जानेका नही है। अुसको मै अुचित नही मानता हू। आज सच्चे सन्यासी तो गृहस्थोकी तरह घरोमे रहते है और सवकी सेवा करते है। अगर मुझे छोडकर भाग ही जाओगे तो मुझे वुरा नही लगेगा। लेकिन यह तुम्हारी कमजोरी होगी। आनन्दसे रहो। तुम्हारा सव भार तो मैने अुठाया हे न?" वापूके प्रेमभरे वचन सुनकर मै सव दुख भूल गया।

१६

गावमे हम शिक्षक वनकर न जाय

अेक रोज मैने कहा, "वापूजी, अच्छा तो यह है कि ग्रामसेवक ग्राममे रहकर अपनी आवश्यकताके लिअे कमा ले और वादमे कुछ सेवा कर दे। क्योकि सस्था जमाना और अुसके लिअे अुन लोगोसे पैसा मागना, जो अुन्ही साधनोसे पैसा कमाते है जिनका कि हम विरोध करते है, ठीक नही है। दूसरे, ग्रामवासी गावमे वसनेवाले सेवकको भाररूप समझते है। फिर

अिसमे यह भी डर है कि बुद्ध भगवानके भिक्षुओकी तरह ग्रामसेवकोका समुदाय भी कही जनताके लिअे भाररूप न हो जाय।"

बापू बोले, "यह बात तो नया अवतार धरनेकी कही। सेवक अपने लिअे कमा लेना चाहे यह तो अुसका अभिमान है। अगर सच्ची सेवा करनेकी भावना सेवकमे होगी तो निर्वाहके लिअे ग्रामवाले अुसे दे देगे। हा, परिवारके लिअे नही मिलेगा। बुद्धके सेवको और आजके सेवकोमे अतर है। वे लोगोको ज्ञान देनेको जाते थे, जब कि हम अुनकी सेवा करनेकी दृष्टिसे जाते है। अगर ग्राममे हम अुनके शिक्षक बनकर जायेगे और अुनसे कहेगे कि हमारे लिअे यह लाओ, वह लाओ, तो ग्रामके लोग हमसे अवश्य अूब जायेगे। सेवक नम्र बनकर सेवा करता रहे और अपने निर्वाहके लिअे अुसी ग्राममे से माग ले तो अुसको अवश्य मिल जायगा।"

१७

कुछ महत्त्वके प्रश्नोत्तर

बापूका अेक मासका मौन होनेवाला था। मैंने कहा, "बापू, मेरे पाच मिनट आपके पास धरोहर है।" बापूने कहा, "अच्छा, गगाबहनके बाद आ जाना।"

मै भोजनालयकी चौखट पर बैठ गया। बापूजीके आवाज देते ही हाजिर हो गया। मै प्रश्न पूछता था, बापूजी अुत्तर देते थे।

प्रश्न — आपने लोक और परलोक दोनोका समन्वय किया है। स्त्री, पुरुष, लडके, लडकी, अपने, पराये सबको आप अच्छी तरह सभाल सकते है। बडीसे बडी कठिनाअी आने पर भी आप प्रसन्नचित्त रहते है। क्या जीवन्मुक्ति और अीश्वर-प्राप्ति आपकी कल्पनामे अिससे भी आगेकी चीज है?

अुत्तर — हा, मुझमे जो प्रसन्नता रहती है अुसे देखकर बहुतसे लोग चकित हो जाते है। परतु यह मै भी नही जानता कि यह प्रसन्नता कैसे प्राप्त हुअी, रहनी अवश्य है। जीवन्मुक्ति और अीश्वर-प्राप्तिकी कल्पना तो मेरी बहुत आगे बढी हुअी है। जीवन्मुक्तमे रागद्वेषकी गध भी न होनी चाहिये। मै देखता हू कि मेरे अन्दर काफी राग है और जहा राग है वहा द्वेष तो है ही। और जब तक रागद्वेष है तब तक मै अैसा दावा नही कर सकता कि जो कुछ प्राप्त करना था मैंने प्राप्त कर लिया या मै

जीवन्मुक्त हू। हा, मेरा प्रयत्न अवश्य है। कोअी भी मानव अैसा दावा नही कर सकता और अगर करता है तो यह अुसका अभिमान है।

प्रश्न — मनुष्य जितना अुन्नत हो सकता है अुतनी अुन्नति तो आपने कर ली है न?

अुत्तर — यह भी कैसे कहा जा सकता है? कोअी मनुष्य अिससे भी आगे जा सकता है।

प्रश्न — क्या जीवन्मुक्तिके निकट पहुचकर भी मनुष्यके पतनकी सभावना रहती है?

अुत्तर — पूरी पूरी। (वापूने चटाअीके किनारे पर हाथ रखकर कहा) देखो, अिस किनारेसे जो तिलभर अिधर है वह अिधर ही है। अुसका दूसरे किनारे तक लौट आना पूरी तरह सभव है। किनारेसे जो तिलभर भी पार गया सो गया।

प्रश्न — आपकी अीश्वरके वारेमे क्या कल्पना है? हमारे शास्त्रोमें अवतारवाद और अव्यक्त दोनो प्रकारसे अीश्वरका वर्णन है। आपने लिखा है कि सत्य ही अीश्वर है। अिन तीनो वातोमें से कौनसी किस प्रकार अेक-दूसरेके साथ सवध रखती है?

अुत्तर — तीनो ही सही हैं। हम सव अीश्वरके ही अवतार हैं। जैसा कि गीताके ग्यारहवे अध्यायमें विराट् पुरुषका वर्णन है। और अीश्वर अव्यक्त है यह वात भी सत्य है। क्योकि अुसको पूरी तरह जाना नही जा सकता। अव्यक्त तत्त्व अितना सूक्ष्म है कि शरीरधारी अुसे पूरी तरहसे शरीर रहते हुअे प्राप्त नही कर सकता। अीश्वर सूक्ष्मसे सूक्ष्म तत्त्व है। जो सत्य है वह है ही, अितना ही कह सकते हैं। और जो है वही अीश्वर है।

मैं जव कुछ और आगे वढने लगा तव वापूने कहा — अरे, भीष्म पितामहकी तरह मै मरता थोडे ही हू, जो सारा तत्त्वज्ञान आज ही पूछने लग गये।

मैं — अेक मासके लिअे तो आप मर ही रहे है न?

वापूजी — (हसकर) अरे, तो फिर अेक मासके वाद जिन्दा होनेवाला तो हू। वस, अव भागो। देखो दूसरे लोग गाली देते होगे कि अिसने क्या तत्त्वज्ञान छेड दिया है। तुम्हारा अीश्वर तो रसोडेमे है। मै तो टट्टीमें भी जाते समय अीश्वरका ही दर्शन करता हू।

मैं — हा, जब जब मैं हारता हू और भोजनालयके कामको झझट समझता हू, तब तब मैं हिन्दू धर्मके अुस अुच्चादर्शका स्मरण करके मनको समझा लेता हू, जिसके अनुसार प्राचीन कालमे लोग ऋपियोके आश्रमोमे बारह बारह वर्ष तक धैर्यपूर्वक गाय चराने, लकडी बीनने और गोबर पाथनेका काम करते रहते थे। अुसके बाद कही वे अुपदेशके अधिकारी समझे जाते थे। मेरा तो आप जैसे महापुरुषसे सहजमे ही अितना घनिष्ठ सबध हो गया है।

बापूजी — हा, अैसा ही समझना चाहिये। मनको खूब प्रसन्न रखो और अपने काममे ही अीश्वरका दर्शन करो। यही सच्ची साधना है।

बस मैंने बापूके चरणोमे प्रणाम किया, बापूका प्रेमभरा थप्पड मिला और मै भाग गया।

१८

मौनका महत्त्व

बापूका मौन आरभ हो गया। और २९ दिन बाद खुला। अुस समय बापूजीने प्रवचन दिया

"आज मेरे मौनको २९ दिन हो गये। अिसलिअे आवाज तो कुछ बैठ-सी गअी है। आशा है आज सारे दिनमे खुल जायगी। सब लोग कुछ सुननेकी अिच्छासे यहा आ गये है। यह मौन मैंने आध्यात्मिक हेतुसे नही लिया था, कामके कारणसे ही लिया था। मुझे सतोष है कि अिन दिनोमे मैंने अपना काम बहुत कुछ निबटा लिया। डाकका काम मै रोज निबटा लेता था। मौन कामके लिअे लिया था तो भी अुसका जो कुछ आध्यात्मिक लाभ होनेवाला था वह तो हो ही गया। अितने दिनके अनुभवसे मुझे मौनकी महत्ता मालूम हो गअी। जो सत्यका पालन करना चाहता है अुसके लिअे मौन साधनामे सहायक अेक अमोघ अस्त्र है। मौनसे सत्यकी बहुत रक्षा होती है। मौनका अर्थ है चेष्टामात्रका न होना। मौनमे अिशारा या लिखना भी नही होना चाहिये। सत्यके अुपासकको बोलकर अपना काम करने या विचार बतानेकी आवश्यकता नही है। अुसका तो आचरण ही दुनियाको अुपदेश-रूप होना चाहिये। जैसे जो अच्छी पूनी बनाता है वह किसी अुपदेशके बिना ही अपने कार्यकी छाप दूसरो पर डाल देता है। अितने दिनोमे मुझे कोअी दिन याद नही आता है, जब कि मेरी बोलनेकी अिच्छा हुअी हो। ज्यो ज्यो मौन छूटनेकी अवधि निकट आती जाती थी, त्यो त्यो मुझे भार-सा लगता

जाता था। मेरी बोलनेकी अिच्छा नही होती थी। मौनमे सबसे बडा लाभ तो यह है कि वह क्रोधको जीतनेका बडा अच्छा अुपाय है। मुझे भी गुस्सा तो आता है, मगर मैं अुसे पी जाता हू। यो तो क्रोध चेहरेसे भी प्रतीत हो जाता है। परतु अुसका परिणाम बहुत कम होता है। क्योकि मौनके कारण बहुत कुछ नही कर सकता और लिखते लिखते तो क्रोध शात हो जाता है। अिसलिअे मैं अिसका यह सार खीच लेता हू कि सत्यके अुपासकके लिअे मौन बहुत ही आवश्यक होता है।"

१९

सब मिट्टीके ही पुतले हैं

भोजन परोसनेमे दो अन्य भाअी मेरी मदद करते थे। वे मुझसे पंक्तिमें बैठकर भोजन करनेका अर्थात् परोसते समय अपनी थाली भी रखनेका आग्रह करते थे। दो चार बार मैंने अुनकी बात सुनी-अनसुनी कर दी। लेकिन अुनका आग्रह बढता ही गया। तब मैंने अुनको स्पष्ट कह दिया कि भोजनालयकी जवाबदारी जब तक मेरी है, तब तक मैं पंक्तिमे बैठ नही सकता। क्योकि यदि किसी दिन भोजन खतम हो गया और अेकाध व्यक्ति भूखा रह गया तो मैं अुसे क्या खिलाअुगा। यदि भूखे रह जानेका प्रसग आवे तो मुझे ही भूखा रहना चाहिये। मैंने सबके साथ खा लिया हो और बादमे किसीको भूखा रहना पडे तो यह मेरे लिअे शर्मकी बात होगी। अिन भाअियोंके मनमे सन्देह था कि मै पीछेसे कुछ अच्छा अच्छा खाता होअूगा। यह बात मेरे कान पर आअी अिससे मुझे दुःख हुआ। और मैंने बापूजीसे कहा कि मैं तो समझता था कि आपके पास सब देवता बसते होगे। अिसी आशासे आपके पास सत्सगके लिअे आया था। लेकिन मैं देखता हू कि यहा भी वैसे ही लोग हैं जैसे ससारमे अन्यत्र है। अुन भाअियोको बुलाकर बापूजीने पूछा तो अुन्होने अिनकार कर दिया। लेकिन यह सब अेक आश्रम-वासी श्री भगवानजी भाअीने सुना था। अुन्होने बापूजीके सामने मेरी बातकी पुष्टि की।

अिस प्रसग पर बापूजीने कहा, "देखो मेरे पास आखिर तो सब मिट्टीके ही पुतले हैं। मैं खुद भी मिट्टीका पुतला हू। मनुष्यमे जो कम-जोरिया हो सकती है, वह सब अिन लोगोमे भी हैं। अिनमें से निकलनेका प्रयत्न करनेके लिअे ही तो हम सब अिकट्ठे हुअे हैं। दूसरेके गुण और

अपने दोष देखनेसे आदमी अूचा चढता है। जो दूसरेके दोष देखता है अुसका अर्थ यह होता है कि वह अपनेमे अुससे ज्यादा गुण देखता है। यह दृष्टि खतरनाक है। मै किसीको वुलाने तो जाता नही हू। जो सहज रूपसे मेरे पास आ जाते है और मुझे रखने जैसे लगते है अुनको रख लेता हू। मै विश्वामित्र तो नही हू कि रोज नयी नयी सृष्टि करता रहू। अिसलिअे मेरा तो अैसा ही चलता है। तुम सबके गुण और अपने दोष देखनेका निश्चय करो तो मेरे पास रहकर कुछ पा सकोगे। नही तो मेरा और तुम्हारा समय व्यर्थ जायगा। तुम्हारे मनमे जो आता है वह मुझे कह देते हो यह मुझे प्रिय लगता है। क्योकि अिस परसे मै तुम्हे कुछ कह सकता हू। सबके साथ प्रेम करना सीखो और प्रफुल्लित चित्तसे रहो। हारनेकी बात नही है। जाओ, भाग जाओ।"

मै वापूजीके पाससे चला तो आया, लेकिन मगनवाडीके रसोअीघरकी व्यवस्था करनेमे शुरूसे ही अैसी खटपटोके कारण मेरा मन अूब गया था। मेरे मनमे यह विचार धीरे धीरे घर करने लगा था कि मै यहासे और कही चला जाअू। अिस अतिम प्रसगने मेरे अिस विचारको विलकुल पक्का कर दिया और मगनवाडी छोडकर चले जानेकी मेरी पूरी पूरी मानसिक तैयारी हो गअी।

८

विनोबाजीके निकट परिचयमें

वापूजीको छोडकर चले जानेकी मेरी तैयारी पूरी हो चुकी थी। वापूजीने भी आज्ञा दे दी थी। लेकिन जानेके पहले विनोवाके आश्रमका अनुभव लेनेकी अिच्छा थी। मैने वापूजीसे कहा तो वे वोले, 'हा, विनोवाके आश्रमका अनुभव तो लेना ही चाहिये। अुनके पास वहुत कुछ सीखा जा सकेगा।'

वापूजीने विनोवाजीसे वात करके यह व्यवस्था कर दी कि जव तक मै अुनके पास रहना चाहू तव तक रह सकू। विनोवासे मेरा परिचय भी करा दिया। ता० २६-४-'३५ को मै मगनवाडीसे नालवाडी चला गया। वीच वीचमें वापूजीसे मिलता रहता था और नालवाडीके अपने अनुभव सुना

आता था। जब कभी मैं वहाके जीवनकी तारीफ करता तो बापूजीका मुख आशा और खुशीसे खिल अुठता था। अुन्हे लगता होगा कि मैं अुनके फदेमे तो छटक रहा हू, लेकिन यदि विनोवाके फदेमें फस जाअू तो अच्छा हो। अन्तमें जीत बापूजीकी हुअी। यह हो सकता है कि विनोवाजीके सहवास और अुनके प्रवचनोंने मेरे भ्रमकी रस्सीके बलोको कुछ ढीला कर दिया हो। नालवाडीके थोडेसे अनुभव पाठकोंके लाभके लिअे मैं यहा अुद्धृत करता हू।

नालवाडीमे अुस समय ८–१० सेवक थे और विनोवाजी भी अुन दिनो वही रहते थे। अुन्ही दिनो अुनका ८ घटे सूत कातनेका प्रयोग भी चलता था। नालवाडी आश्रमका कार्यक्रम और दिनचर्या व्यवस्थित और मगनवाडीसे कुछ कठोर थी। प्रात ४ बजेसे रात्रिके साढे आठ बजे तकका समय कार्यक्रमसे ठसाठस भरा रहता था। चक्की पीसना, पानी भरना, पाखाना-सफाअी, भोजन बनाना, आदि सब काम आश्रमवासी ही करते थे। अेक विचित्र नियम यह था कि अगर कोअी सेवक किसी काम पर निश्चित समय पर न पहुचे तो अुसे कुछ न कहकर आश्रमका व्यवस्थापक अुस दिन प्रायश्चित्तके रूपमे अुपवास कर लेता था। श्री वल्लभभाअी (वल्लभस्वामी) आश्रमके व्यवस्थापक थे। मुझे अिस नियमका ज्ञान न था। अेक दिन न मालूम किस कारणसे मैं किसी काम पर समय पर नही पहुच सका। दोपहरको वल्लभस्वामीने भोजन नही किया। मेरे यह पूछने पर कि वल्लभ-स्वामीने आज भोजन क्यो नही किया, जाननेवाले मित्र मेरी ओर देखकर हसने लगे। जब मैंने हसनेका कारण पूछा तो वे लोग और भी हसे। लेकिन मेरी समझमे कोअी बात नही आयी। जब मैंने जाननेका बहुत आग्रह किया तो अेक भाअीने मेरा ही कारण बताया। यह जानकर मुझे दु ख और आश्चर्य दोनो हुअे। दु ख अिसलिअे हुआ कि मेरे कारण व्यवस्थापकको अुपवास करना पडा और आश्चर्य अिसलिअे हुआ कि ये लोग कैसे विचित्र है कि मुझे नियम बताये बिना ही अुपवास तक कर लेते है। मैंने अुस दिन शामको भोजन नही किया। यद्यपि अुनका यह नियम मुझे अब तक समझमे नही आया है, तो भी अुस दिनके बाद मैं हर काम पर समयसे पहले ही अुपस्थित हो जाता था। काम करनेका तो मुझे अभ्यास था ही। दैवयोगसे अुन दिनो विनोवाजी प्रात और सायप्रार्थनाके बाद रोज ही कुछ न कुछ बोलते थे। और दैवयोगसे अुन्ही प्रवचनोमे से बहुत थोडा मेरी डायरीमे दिनाक-

वार लिखा मिला है। अुसकी बानगी पाठकोके लिअे यहा अुद्धृत करता हू। अैसे तो विनोबाजी सदा बोला ही करते है। लेकिन तब आसपासके मुट्ठीभर लोग ही अुन्हे जानते थे और तब वे मजदूरकी तरह ८ घटे शरीर-श्रमका काम भी करते थे। विचार तब भी अुनके वैसे ही थे जैसे आज है।

२९–४–'३५

सुबहकी प्रार्थनाके बाद विनोबाजीने प्रवचन करते हुअे कहा भोजन स्वच्छ तथा प्रेमपूर्वक बनाना चाहिये। भोजन बनानेवालेकी भावना अैसी होनी चाहिये कि आज मेरे घर भगवान आनेवाले है और अुनकी सेवाके लिअे मुझे आजका ही अवसर मिला है। यदि भोजन करनेवालोके प्रति अिस प्रकार भगवद्‌बुद्धि होगी तो भोजन अपने आप ही स्वच्छ और प्रेमपूर्वक बनेगा। अिस प्रकार भोजन बनानेकी व्यवस्थामे अेक रुपयेसे अधिक खर्च नही आना चाहिये। कपडेकी भी हमको कमसे कम आवश्यकता होनी चाहिये। जूता होना आवश्यक है।

३०–४–'३५

आज अेक बीमारको देखने गया था अिसलिअे देरसे आ सका। अुसे बीमारीकी हालतमे ही अुसके मित्रोने अकेला रेलमे बिठाकर भेज दिया। अुसको निमोनिया है। आजकी समाज-रचना अितनी बिगड गअी है कि लोग अेक-दूसरेकी चिन्ता नही करते। अिस समाज-रचनाको सुधारनेके विषयमे मैने खूब विचार किया है। आज तक मै निष्काम प्रेममे ही पला हू। अिसलिअे मेरे लिअे यह कहना कठिन है कि समाज निष्ठुर है। परन्तु अुसमे जडता अवश्य है। यदि कोअी प्रयोग करना चाहे तो अपनी चिन्ता छोडकर दूसरोकी चिन्ता करके देख ले कि क्या परिणाम आता है। मुझे कैसे सुख मिले, मुझे कैसे प्रतिष्ठा मिले, मै किस प्रकार विद्या प्राप्त करू, अित्यादि चिन्तायें छोडकर दूसरोकी चिन्ता करके देखो। अुसमे कैसा आनन्द आता है। जो अपनी चिन्ता छोडकर दूसरोकी चिन्ता करने लगता है, अुसकी भगवानको चिन्ता करनी पडती है। पुस्तकोमे भी खर्च न होना चाहिये। जिसको जैसी पुस्तक चाहिये वह वैसी लिखकर अपने पास रख ले। मेरा प्रयत्न ब्रह्मचर्य-पालनका है। यदि अिस जन्ममे सफलता न मिली तो चाहे १० जन्म भी क्यो न लेने पडे मै धीरज नही छोडूगा। यह बोलते हुअे विनोबाजी आत्म-विभोर हो गये और हम लोग भी शून्यवत् होकर अुनके अुन अुद्‌गारोका

पान करते करते अघा नहीं रहे थे। फिर आगे बोलते हुअे अुन्होंने कहा जो अपनी चिन्ता करने लगता है, मैं अुसकी चिन्तासे मुक्त हो जाता हूं। मैं ही सब लाभ क्यों प्राप्त कर लूं? जो दूसरोंके पास है वह भी तो मेरा ही है। अगर अेक जेबमें पैसे थोड़े हुअे और दूसरी जेबमें अधिक हुअे तो क्या हम घबराते हैं? दोनों जेबें हमारी ही तो हैं। जो ज्ञान दूसरोंके पास है वह हमारे पास भी होना ही चाहिये, यह हमारी संकुचित वृत्ति है। अपने शरीरकी चिन्ता बहुत लोग किया करते हैं। यदि वजन कम हो गया तो घबरा जाते हैं। वजन जाता कहां है? अगर मैंने आम और केले अधिक खा लिये तो बाहरका वजन मेरे अूपर लद गया, यदि कम खाये तो अितना भार कम अुठाना पड़ा। अेक मित्रने मुझसे कहा कि जवानीमें पैसे कमाकर बुढ़ापेके लिअे रख लेना चाहिये। मैंने अुससे तो कुछ न कहा। परन्तु कौन कहेगा कि यह विचार योग्य है? जो जवानीमें सेवा करेगा अुसकी सेवा बुढ़ापेमें समाजरूपी परमेश्वर करेगा। अगर किसीको विश्वास न हो तो करके देख लो। सेवामय जीवन बितानेमें जो आनंद है वह अपने लिअे चिन्ता करनेमें नहीं है। माता अपने बच्चे पर प्रेम करती है। परन्तु वह प्रेम निष्काम नहीं होता। अिसलिअे अुसका अुदाहरण यहां नहीं देता हूं। अेक मित्रने मुझसे कहा कि दूसरोंकी चिन्ता करना भी तो अेक प्रकारका मोह ही है। परन्तु अैसा नहीं है। मोह तो अपने शरीरके आसपास अपना डेरा डाले बैठा है। अगर अपने शरीरके आसपासके बन्धन तोड़ दिये जायं तो बाहर और बन्धन हैं ही नहीं। जिसकी शरीर पर आस्था है वह तो गड्ढेके किनारे पर ही खड़ा है। अेक कदम आगे बढ़ते ही अुसका जीवन समाप्त समझिये। तुलसीदासजीने अपने अनुभवसे कितना सुन्दर लिखा है

'परहित बस जिनके मन माहीं,
तिन कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं।'

यह बोलते बोलते विनोबाजीका हृदय भर आया और वाणी रुक गयी। हम सबके हृदय भी गद्‌गद हो गये। कितना पावन था वह दिन!

शामके भोजनके बाद मैं कन्या-आश्रममें बापूजीसे मिलने गया। बापूजी दूरसे देखकर ही हंसे और अुन्होंने पूछा, क्यों वहां कैसा लगता है? मैंने कहा, अच्छा लगता है। बापूजीने कहा, हां अच्छा तो लगना ही चाहिये। गुड़ तो मीठा ही लगता है, लेकिन रोगीको तो गुड़ भी कड़ुआ लगने लगता है न? अुसको तो मिर्च मीठी लगती है। ये लड़कियां भी तो मन

ही मन कहती होगी कि बापू हमको अुबली भाजी खिलाते हैं। मिर्चका साग देखकर अिनकी जीभ कैसे पानी डालती होगी? यह कहते हुअे लडकियोकी ओर देखकर वे खूब हसे और आगे बोले कि यह तो मैंने मजाक किया। लेकिन सच बात तो यह है कि मनका रोग शरीरके रोगसे भी भयानक होता है। शरीरके रोगका अिलाज करना आसान है। यदि कोअी रोगी दवा न भी खाय तो आजकल अिजेक्शनसे भी काम चल जाता है। लेकिन मनके रोगीकी दवा कैसे हो? अुसकी दवा तो अुसीके पास होती है। दूसरे लोग केवल थोडा सहारा लगा सकते हैं। मुझे आशा है कि विनोबाके साथ तुम्हे कुछ सहारा जरूर मिलेगा। अुनसे तो मैं भी बहुतसी बाते सीखता रहता हू। तुम दत्तात्रेयकी बात जानते हो? अुन्होने कुत्तेको भी अपना गुरु माना था। वहा क्या कार्यक्रम रहता है? काममे तो तुम किसीसे हारनेवाले हो नही। लेकिन किसीके साथ झगडा नही करना और तबीयत अच्छी रखना। जब जब वहासे छुट्टी मिले तब मेरे पास आनेकी छूट है।

मैंने प्रणाम किया और बापूजीकी अेक थप्पडकी प्रसादी लेकर चला आया। मनमे सोचता जाता था कि कही सचमुच ही मेरी हालत अुस रोगीके जैसी न हो, जिसे दूध कडुआ लगता है और खट्टी छाछ भाती है। मैंने बापूजीकी आखोमे मेरे लिअे ममता देखी। लेकिन न मालूम मेरा मन क्यो अुचट गया है। देखे अीश्वर कहा ले जाता है।

दैवयोगसे विनोबाजीने भी अपने प्रवचनमे बीमारकी ही बात की थी।

३–५–’३५

प्रातःकालकी प्रार्थनाके बाद विनोबाजीने अपने प्रवचनमे कहा हम सूत भगवद्‌बुद्धिसे ही कातते हैं। अिसलिअे अिसके साधन भी अत्यन्त व्यवस्थित होने चाहिये। हमारी धुनकी और तात सितारकी तरह मधुर आवाज देनेवाली हो। तकलीकी गति बढानेके लिअे जो सुधार करने हो अुनकी शोध होनी चाहिये। धुनते और कातते समय हमारा आसन योगियोका-सा होना चाहिये। पूनिया अितनी बढिया होनी चाहिये कि कातनेमे बिलकुल श्रम न पडे। हमे आध्यात्मिक साधना और दैनिक कर्मयोगका समन्वय कर लेना चाहिये। जगतमे केवल कर्म और केवल साधना करनेवाले बहुत हैं। लेकिन दोनोमे मेल साधनेका रास्ता हमे बापूजीने दिखाया है। यही वह मार्ग है जिस पर सब चल सकते हैं। यह आश्रम अैसी ही साधनाका अेक केन्द्रमात्र है और कुछ नही।

सायंप्रार्थनाके प्रवचनमें विनोबाजी अिस प्रकार बोले : जगतमें सेवा करनेके दो मार्ग हैं। स्वाभाविक रूपसे जो सेवाकार्य सम्मुख अुपस्थित हो जाय अुसे करना, यह अेक मार्ग है। और दूसरा है संस्था खोलकर लोगोंको अेकत्रित करके अुनकी सेवा करना। दोनों मार्ग श्रेष्ठ हैं, दोनों ही सुरक्षित हैं। लेकिन दोनोंमें धोखा हो सकता है। पिता अपनी संतानकी जवाबदारी जैसे संभालता है अुससे भी अधिक जवाबदारी संस्थाके संचालककी होती है। माता-पिता तो अिस बातसे संतोष मान लेते हैं कि अुनकी संतान शक्तिशाली और सुखसे अपना जीवन व्यतीत करनेवाली हो जावे। परन्तु संस्थाके संचालक पर यह दुहरी जवाबदारी आती है कि वैसी शक्ति किस प्रकार प्राप्त हो और प्राप्त होने पर वह अीश्वरार्पण कैसे हो। मैं दिनभर अिसी विचारमें रहता हूं कि किस सेवककी कितनी प्रगति होती है। मेरा स्वभाव ही अैसा है कि जिस कामकी जिम्मेदारी मैं ले लेता हूं अुसके सिवा दूसरे कामोंके लिअे मेरे पास समय ही नहीं बचता। 'गीताअी' लिखते समय मुझे दूसरा विचार ही नहीं आता था। अब अिस संस्थाकी जवाबदारी मैंने ली है तो पूरी शक्तिसे अुसे निभानेका प्रयत्न करना मेरा धर्म है। मुझमें चारसे अधिक सेवक संभालनेकी शक्ति नहीं है। अधिक संख्या देखकर मेरा जी घबरा अुठता है। यहां जितने आदमी हैं अुन्हें प्रतिदिन आत्मनिरीक्षण करना चाहिये और यह देखते रहना चाहिये कि रोज कितनी प्रगति होती है। अेक-दूसरेके साथ प्रेम रखना और अेक-दूसरेकी प्रगतिमें सहायता करना सबका धर्म है। शक्ति प्राप्त करना और अुसे अीश्वरार्पण करना यह मूलमंत्र है। जितने दोष स्वार्थमें हो सकते हैं — जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर आदि — ठीक अिसी प्रकार परमार्थमें भी हो सकते हैं, यदि परमार्थ अीश्वरार्पण बुद्धिसे न किया जाय। बस यही सीखना है। सब लोग अिस पर विचार करें।

४–५–'३५

मनुष्य तीन प्रकारकी खुराक सृष्टिमें लेता है : जीवसृष्टि, वनस्पति और खनिज। जीवसृष्टिमें दूध, वनस्पतिमें फलसाग तथा खनिजमें नमक आदि आते हैं। परन्तु अीश्वर तत्त्व तो सर्वत्र भरा हुआ है यह बात स्पष्ट है। जिसमें अीश्वर प्रत्यक्ष दीखता है, अैसी ही जीवसृष्टि है। मुझे तो कभी कभी पत्थरमें भी अीश्वरका दर्शन होता है। जब पहाड़ों पर चला जाता हूं तो वहां मुझे स्पष्ट शिवरूपका भास होता है। अिसलिअे खुराकके विषयमें

भी मनुष्यके सामने अहिंसाका प्रश्न आकर खडा रहता है। मनुष्यका शरीर केवल खनिज पर तो निभ नही सकता। परन्तु वनस्पति पर तो जरूर निभ सकता है। दूधकी कल्पना मास छुडानेके लिअे ही हुअी है। अिसलिअे मनुष्यको जहा तक सभव हो खुराकके बारेमे अहिसक बननेका प्रयत्न करना चाहिये। नमक शरीरके लिअे आवश्यक नही है। यह प्रयोग करके देखने जैसी बात है। यदि अिसे छोडा जा सके तो अपने अस्वाद-व्रतको बहुत बल मिलेगा।

* * *

सच्चा अर्थशास्त्र यह है कि हरअेक कामकी समान मजदूरी दी जाय।

* * *

शामको मैं बापूजीसे कन्या-आश्रममे मिलने गया। बापूजीने दूरसे ही देखकर पूछा, कैसा चलता है? मैंने प्रणाम किया और कहा, ठीक चल रहा है। बापूजीने पूछा, तीन चार दिन क्यो नही आये? मैंने कहा, यो ही छोटे मोटे काममे लग जाता था। बापूजीने कहा, हा काम छोडकर मेरे पास आना ठीक नही है। विनोबासे कुछ चर्चा होती है? मैंने कहा, आज-कल अुनके प्रवचन बडे अच्छे होते हैं। अुस दिन आपके पाससे गया तो अुन्होंने भी करीब करीब वही बात कही जो आपने कही थी। बापूजीने कहा, ठीक है। विनोबा जब बोलता है तब अपने आपको भूल जाता है और श्रोताओंके साथ अेकरूप हो जाता है। तभी तो अुसके आसपास अितने सेवक पडे हैं। मैंने अनुभवसे देखा है कि विनोबा जैसा बोलता है वैसा आचरण करनेमे अपनी सारी शक्ति लगा देता है। हम जैसा बोलते है वैसा ही आचरण करे तो सारा प्रश्न ही निबट जाय। मै बापूजीको प्रणाम करके लौट आया।

६–५–'३५

पहले जमानेमे अेक भक्तिपक्ष और अेक सेवापक्ष अिस प्रकार दो पक्ष थे। सेवापक्षमे हिंसा करना भी शामिल था। अेककी सेवाके लिअे दूसरेको मारने तककी नौबत आ जाती थी। अीश्वर-प्राप्ति करनेवाले अिस झझटमे अलग रहते थे। परन्तु आज हमारा जो प्रयोग चल रहा है, वह भक्ति और सेवाका अेकीकरण करनेका प्रयोग है। अिसमे वीरत्व और साधुत्व दोनोका समावेश हो जाता है। अनुभवमे जो कार्यरूपमे आ सके वही शास्त्र है। आजका शास्त्र यही है कि भूखोको रोटी कैसे मिले, अिसका विचार और

अुपाय करना। खादीका अर्थशास्त्र अिसी विचारमे से निकला है। वापूजी अिसीको दरिद्रनारायणकी सेवा कहते हैं।

८-५-'३५

प्रश्न ब्रह्मचर्यके पालनके लिअे क्या क्या सावन चाहिये?

अुत्तर, मक्षेपमे कहू। खुली जगहमे शारीरिक श्रम करना, खुली जगहमे ही सोना, सात्त्विक भोजन, अीश्वरका सतत चितन, सत्सग और जितनी देर स्त्रीका साथ मिले अुतनी देर अुसके लिअे पूज्यभाव रखना। स्त्री है ही पूजने योग्य। लोगोने वुरी कल्पना करके अुसको भयानक स्वरूप दे दिया है। परन्तु वह वास्तवमे अितना भयानक हैं नही। कुछ हद तक तो है, नही तो पुरुपार्थ ही क्यो?

प्रश्न लडको तथा लडकियोको अेकसाथ शिक्षण देना आपके विचारसे कैसा है?

अुत्तर अिस समय अैमी परिस्थिति है कि मैं कहूगा कि अलग रखना चाहिये। परन्तु अेक जगह रखनेमें अेक-दूमरेको लाभ ही होगा। माथमे अेक जाग्रत और योग्य व्यवस्थापक होना चाहिये।

प्रश्न क्या ध्यानयोग द्वारा मनुष्यकी पूर्णता हो सकती है? अिस विपयमे आपका क्या अनुभव हैं?

अुत्तर पूर्णता तो नही हो सकती। परन्तु अेक अगका विकास हो सकता है। मनुष्यके पास तीन शक्तिया हैं कर्म करनेकी, वोलनेकी और विचार करनेकी। ध्यानसे विचारका विकास होता है। परन्तु कर्म तथा वाचा अधूरे रहते हैं।

प्रश्न तव पूर्णता किस प्रकारमे प्राप्त होती है?

अुत्तर चित्तशुद्धि, योग्य कर्म तथा शुद्ध भापणसे। जव चित्त शुद्ध हो जाता है तव ध्यानमे योगसिद्धि हुअी समझनी चाहिये। क्योकि चित्तशुद्ध मनुष्य जिस कामको करेगा अुसीसे ध्यानयोग सिद्ध हो सकेगा। नम्रतापूर्ण सरल चित्तसे प्रभुकी भक्ति, सवके साथ प्रेमभाव रखना यही अुत्तम मार्ग है।

सायकालकी प्रार्थनाके वाद विनोवाजीका प्रवचन

आज हिन्दुस्तानमे या सारे जगतमे जो मस्थाये है वे सव वन्द कर देने योग्य हैं। कुटुव-सस्था सगुण है। अन्य मस्थाये निर्गुण। जिस सस्थामे सगुणता नही हैं वह निकम्मी है। सगुणता अर्थात् आपसमें प्रेम, अेक-दूसरेकी

आत्माको पहचानना। अवगुण देखने हो तो अपने ही अवगुण देखो, दूसरेके अवगुण न देखो। सूर्य भगवान कभी अन्धकारके दर्शन नही करते। आजकलके स्कूल-कॉलिज सभी निर्गुण है। मै नही जानता कि कोअी भी प्रोफेसर किसी विद्यार्थीके जीवनके साथ परिचय करता हो। मुझे याद नही आता कि किसी शिक्षकका अच्छा असर मेरे मन पर हो। माताका अच्छा असर है, दादाका भी है। वापूका है, मित्रोका है, विद्यार्थियोका है, ज्ञानदेवका है। पर किसी शिक्षकका नही है। अिस प्रकारकी निर्जीव सस्थाये वन्द कर दी जानी चाहिये। मै जव घर छोडकर अेक दिन निकल पडा अुस दिनकी मुझे याद है। अुस दिन अैसा अनुभव हुआ जैसे वाघके मुखमे से शिकार निकल कर भागा हो और आनन्दका अनुभव करता हो। लेकिन कुटुम्ब-सस्था फिर भी अच्छी है। वहा सव आपसमे प्रेमसे रहते है और अेक-दूसरेको आत्म-विकासमे मदद करते है। रेल्वे स्टेशनके मुसाफिरोकी भाति नही कि थोडी देर पास पास वैठे और फिर भिन्न दिशाओमें चले गये।

* * * *

अभिमान ९ प्रकारके होते है। १ सत्ताका, २ सपत्तिका, ३ वलका, ४ रूपका, ५ कुलका, ६ विद्वत्ताका, ७ अनुभवका, ८ कर्तृत्वका, ९ चरित्रका। परन्तु यह मानना कि मुझे अभिमान नही है, अिसके वरावर भयानक अभिमान दूसरा नही।

शामको भोजनके वाद मै कन्या-आश्रममे वापूजीसे मिलने गया और अपनी दो कल्पनाये अुनके सामने रखी। अेक खेती करनेकी और दूसरी खादीकी। वापूजीने खेतीकी कल्पना पसद की और कहा "दोनो ही काम पवित्र और अुपयोगी है। मुझे तो अेकमे अेक अधिक प्रिय है। लेकिन गीतामाता कहती है कि 'स्वधर्ममे मरना भी अच्छा है, और परधर्म अच्छा हो तो भी खतरनाक है। अिसका कारण यह है कि मनुष्य अपने स्वाभाविक कर्मको जितनी खूवीसे कर सकता है अुतनी खूवीसे दूसरा काम नही कर सकता। तुम्हारा स्वधर्म खेती है। खेतीके साथ गाय तो आ ही जाती है। क्योकि गायके विना खेती हो ही नही सकती। आजकल लोग खेती मशीनसे करनेकी वात करते है, लेकिन हमको तो घी, दूध, खादके लिअे गोवर और चमडा भी चाहिये। हाडमासका अुत्तम खाद भी चाहिये। क्या मशीन ये सव देगी? अिसलिअे मै कहता हू कि हिन्दुस्तानको मशीन नही, गाय चाहिये। तुमको मै और क्या कहू, तुम तो जन्मसे ही किसान हो। आज किसान गायको

छोडकर भैंसके पीछे भाग रहा है। गुजरातमे तो भैंसे तेजीसे बढ रही हैं और अुनके पाडोकी हिंसा होती है। कही कही किसान खेतीमे पाडोका अुपयोग करते हैं। लेकिन मोटे तौर पर यही कहा जायगा कि पाडे अपने भाग्य पर ही छोड दिये जाते हैं। जिस प्रकार गाय या बैलका अुपयोग सर्वत्र होता है, वैसा पाडेका नही होता। अिसलिअे मैं फिर कहता हू कि तुम्हारे लिअे गोपालनके साथ खेती अुत्तम मार्ग होगा।" मैंने अनुभव किया कि महापुरुष कितने दूरदर्शी होते हैं। मैंने खादीका काम सीखा। बापूजीने मुझे सावलीमे खादीके काममे लगानेकी कोशिश की। लेकिन अन्तमे पानी अपने ठिकाने ही आकर रुका।

११-५-'३५

प्रेमके विषयमे बोलते हुअे विनोबाजीने कहा कि हम लोगोमे प्रेमकी कमी है। अेक-दूसरेके साथ अेकरूपताका अनुभव होना चाहिये। जब तक हम यह मानते हैं कि हम तो काफी प्रेम करते हैं तब तक हमारा प्रेम कम है यह बात साफ है। जब हमको यह प्रतीत हो कि हमें जितना प्रेम करना चाहिये अुतना नही करते, तब ही कुछ प्रेम समझा जाय। पूर्ण प्रेम तो शरीरके रहते हुअे हो ही नही सकता। पूर्ण प्रेम अर्थात् विश्वप्रेम, ओीश्वर-प्रेम। जब प्रेम पूर्णताको प्राप्त होगा तब यह शरीररूपी जेलखाना क्षणभर भी नही ठहर सकेगा। आत्मारूपी प्रेम तुरत ही सारे विश्वमे मिल जायगा। जब तक शरीर है और जब तक अहंभाव है, तब तक प्रेम पूर्ण नही हो सकता। प्रेमका अुदाहरण देनेके लिअे हम राम-लक्ष्मणका नाम लेते हैं। आश्रमका अुदाहरण क्यो नही लेते? अहंकार सेवा करनेमे भी हो सकता है और सेवा लेनेमे भी। मैं सेवा करता हू यह विचार तथा मैं बडा हू, मेरी सेवा होनी चाहिये, यह विचार दोनों ही दोषपूर्ण हैं।

* * *

आश्रममे बाहरसे आनेवालोकी कभी अुपेक्षा न होने पावे।

* * *

पानीके विषयमे बोलते हुअे कहा कि जब कोअी मुझे पानी पिलाता है तब मैं पानीमे भगवानका स्वरूप देखता हू। गीतामे कहा गया है, पानियोमे मैं रस हू।

१२–५–'३५

आज वुद्धसेनने मौन रखा है। यह मुझे अच्छा लगता है। मौन रखनेसे वहुतसी शक्ति खर्च होनेसे वच जाती है। मनकी वासनाओंसे लड़नेका अवसर मिलता है। वासना प्रतिक्षण चोरकी भाति हमारे अन्दर प्रवेश करना चाहती है। अिसलिअे जो सदा जाग्रत रहता है अुसीके घरमे वासनाका प्रवेश नही हो सकता। वहुतसे लोग कहते है, मनमे वासनाका अुद्भव हो तो अुसका भोग करना चाहिये। लेकिन मै कहता हू, यह रास्ता गलत है। अुसका अर्थ तो यही होगा कि वासनाओके सामने कायरोकी भाति हथियार डाल दे। यदि मनुष्य शरीरसे वचा रहे तो मन भी सुधर जायगा। शर्त अितनी ही है कि जो विषय-विचार मनमे आये अुसे पोषण न मिले।

* * *

पूनीका दान अुत्तम है। मुझे जो पूनी मिलती है अुसमे मै भगवानका दर्शन करता हू।

* * *

मद्रासमे कोअी अेक कुटुम्व जलकर मर गया था। अुसके विषयमे विनोवाजीने कहा कि अिस प्रकार मर जाना हमारी गरीवीका चिह्न तो है ही। लेकिन अिसका अेक ओर भी कारण है। मजदूरीमे अत्यन्त असमानता। कॉलेजोमे प्रिन्सिपाल और प्रोफेसर १ घटा प्रतिदिन और वर्षमे ६ मास काम करके मासिक १२०० या १००० या ६०० या ५०० रुपये लेते है, परन्तु वे पढाते क्या है? थोडीसी मेहनत करके मै वही अुनसे भी अच्छा पढा सकूगा। अुनको अितने पैसे लेनेका क्या हक है? और पढानेकी कीमत लेना तो स्वय अपना अपमान करना है। सवको मेहनत करके खानेका हक है, नही तो चोरी हे। अेक सन्यासी अपवाद माना गया हे। लेकिन वैसा सन्यासी मैने अव तक कही नही देखा हे। अुसकी तो हम कल्पना ही कर सकते है। हमे पहले अेक-दूसरेके कधेसे अुतर जाना चाहिये। पीछे सेवाका नाम ले सकते है। नही तो सेव्य कहेगा कि भाअीसाहव पहले हमारे कधेसे नीचे अुतरो, फिर हमारी सेवा करना। हम अपने मनमे यह सोचे कि हम तो ज्ञानका अुपदेश देते है तो यह दम्भ होगा। ज्ञानका मूल्य पैसा नहीं, प्रेम हे। यदि हम आश्रमवाले अपना वोझ दूसरो परसे अुतार ले, तो अुतने पापसे वच जावेगे।

१३–५–'३५

प्रतिदिन माता जैसे वच्चेको जगाती है, वैसे ही प्रभु हमको जगाता है कि अुठो, मेरा स्मरण करो और अपने काममे लग जाओ।

*　　　*　　　*

जैसे अपने लिअे धन कमाना स्वार्थ साधना है, वैसे ही केवल अपने ही लिअे पढना भी स्वार्थ है। हमारे पास जो ज्ञान हो वह अपने साथीको देना धर्म है।

*　　　*　　　*

सेवामे जो ज्ञान प्राप्त होता है, वह दूसरे प्रकारसे नही हो सकता।

१६–५–'३५

कर्तव्यत्रयी — १ सत्यनिष्ठा, २ धर्माचरणका प्रयत्न, ३ हरिस्मरण-रूप स्वाध्याय। सन्तकी अपेक्षा सत्य श्रेष्ठ है। सत्यके अशमात्रसे सत निर्माण होते है। ज्ञानी जो कर्म करता है वह तो करता ही है, लेकिन जो नही करता वह भी करता है। परन्तु कर्म-सन्यस्त पुरुष जो नही करता वह तो नही ही करता और जो कुछ वह करता है वह भी नही करता तव कर्म-सन्यासी होता है।

*　　　*　　　*

मेरा नालवाडी रहनेका समय पूरा हो चुका था और दूसरे दिन मैं मगनवाडी वापूजीके पास लौट जानेवाला था। अिसलिअे गामकी प्रार्थनाके वाद विनोवाजीसे मिलकर मैंने चर्चा की कि नालवाडीसे मैंने क्या सीखा और यहाका मेरे दिल पर क्या असर पडा। अिससे अुनको भी वहुत आनन्द हुआ और मुझे भी परम सतोष मिला। विनोवाजीमे मैंने अेक प्रखर विचारक, अुत्कट साधक, अूचे दर्जेके वैराग्यनिष्ठ, अद्भुत श्रमशील तथा साथियोंको अूचा अुठानेका सतत प्रयत्न करने और तीव्र अिच्छा रखनेवाले पुरुषके दर्शन किये। मुझे लगा कि वापूजीके वाद अगर कोअी कुछ प्रकाश दे सकता है तो वह यही शख्स हो सकता है। मैंने अपने दिलकी सव वाते अुनके साथ करके रातको ही अुनसे विदा ले ली थी।

१७–५–'३५

प्रातःकालकी प्रार्थनाके वाद प्रवचन करते हुअे विनोवाजीने कहा: वलवतसिंहजीने रातको वाते की अुनसे मुझे वडा सतोष हुआ। मेरा और अुनका सवध जीवनभरके लिअे वध गया है। अुनकी वाते मुझे वडी ही

प्रिय लगी है। अुन्होंने यहांसे बहुत कुछ लाभ अुठाया है और सबके साथ अच्छा परिचय कर लिया है। यह बात बहुत महत्त्व रखती है। मेरा परिचय अिसी प्रकारसे होता है और वह सदाके लिअे कायम हो जाता है। मैं चाहता हूं कि आश्रमका अिस प्रकारका लाभ अधिकसे अधिक लोग अुठा सकें। आश्रमके सब लोगोंको अपनी अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिये।

* * *

मैंने नालवाडीसे विदा ली और बापूजीके पास मगनवाडी आ गया। मैं तो बापूजीको भी छोडकर जानेकी पूरी योजना बना चुका था, तब विनोबाजीके साथ सबंध बांधे रहनेका तो सवाल ही नहीं था। लेकिन सत्पुरुषोंके मुखसे जो वचन सहज ही हृदयकी गहराअीसे निकल जाते हैं, अुनके आगे-पीछेकी स्पष्ट कल्पना वे खुद भी नहीं कर सकते तो दूसरा कोअी कैसे कर सकता है। सत्पुरुषोंके आशीर्वाद और अुनके वचनों पर हमारी जो निष्ठा है, अुसके पीछे कोअी अव्यक्त शक्ति काम करती है, यह अनुभवसे सिद्ध हो चुका है। विनोबाजीके अिस वचनको कहे हुअे अेक जमाना गुजर गया है। लेकिन सचमुच ही मेरा और अुनका संबंध दिनोंदिन बढता ही जा रहा है और जीवनभरके लिअे बंध गया है। बापूजीके बाद जब आश्रमका मार्गदर्शक नियत करनेकी बात अुठी, तो मैंने ही विनोबाजीके नामकी सूचना की। आज यहां (सीकरमें) भी मैं अुन्हींके आदेशानुसार गोसेवाका पवित्र काम कर रहा हूं। अुनके साथ मेरे बहुतसे विचारोंकी पटरी नहीं बैठती और अुनको भी मैं बापूजीकी तरह ही खूब कडी बातें सुना देता हूं, तो भी अुनकी परिधिसे बाहर निकलनेकी शक्ति मुझमें नहीं है। 'मिलि न जाअी नहिं गुदरत बनअी' — ठीक यह दशा आज मेरे मनकी विनोबाजीके संबंधमें है। मैं गोसेवासे अपने मनको हटाकर अुनके भूदानमें मदद नहीं कर सकता हूं। वे दुनियाके सारे प्रश्नोंका हल भूदानमें मानते हैं, अुनसे भी अधिक मैं अुन्हीं प्रश्नोंका हल गोसेवामें मानता हूं। यों तो दोनों काम अेक ही सिक्केकी दो बाजू हैं। अुनका अेक ओरको मगज फिरा है, तो मेरा दूसरी ओरको। लेकिन हैं दोनों बापूजीके पागलखानेके ही दो सदस्य। बापूजीमें यह खूबी थी कि वे अेकसाथ अनेक पागलोंको 'नट मरकट अिव सबहिं नचावत' की तरह अेक ही डोरीमें बांधकर विविध प्रकारके नाच नचा सकते थे। और अुस जालको वे अपने पीछे भी छोडकर गये हैं, जिसमें बंधे हुअे हम सब अुनकी ओर मुंह करके विविध प्रकारके नाच नाच रहे हैं और भ्रममें अुनमें अपनेपनका भास भी करने लगते हैं।

अुसी दिन विनोवाजी कही वाहर चले गये थे। जव मैंने वापूजीको आकर प्रणाम किया तो अुन्होने हसकर कहा, "विनोवाको भगाकर भाग आये?" मैने कहा, "जी हा।" वापूजीने पूछा, "विनोवासे खूब सीखकर आये हो न?" मैं सकोचमे पड गया। क्योकि विनोवाजीने जो कुछ कहा और मैंने सुना, अुसे अगर सीखा हुआ माना जाय तो मेरा वापूजीको छोडकर जानेका सवाल खतम हो जाना चाहिये था। लेकिन वह तो ज्योका त्यो खडा था। मैंने वापूजीको अेक लम्वा पत्र लिखा कि मै जानता हू कि आपको मेरे जानेसे दु ख होगा, लेकिन अव तो मुझे जाना ही है। क्या करू? मेरे भाग्यमे आपका सत्सग नही वदा है। अिसलिअे दु ख तो मुझे भी हो रहा है।

अेक रोज मैने वापूजीसे पूछा, "आदर्श गावकी आपकी कल्पना क्या है?" वापूजीने कहा, "आदर्श गावमे सव धर्मोके लोग परस्पर प्रेमसे रहते हो, कोअी अछूत न समझा जाता हो, कुअे-मदिर पर सवका समान अधिकार हो। सव खादी पहनते हो। ग्रामकी सफाअी आदर्श हो। हर प्रकारसे गाव स्वावलम्वी हो।"

प्रश्न—ग्रामसेवकको ग्राममे होनेवाले भोजोमे, जो शादी या मृत्युके समय होते है, शामिल होना चाहिये या नही?

अुत्तर—हरगिज नही। धार्मिक क्रियाओके सिवा ग्रामसेवक किसीमे हिस्सा नही लेगा। धार्मिक क्रियाओमे खर्चकी तो आवश्यकता होती ही नही।

प्रश्न—ग्रामसेवक काग्रेसकी किसी समितिका सदस्य वन सकता है या नही?

अुत्तर—न वनना अच्छा है। क्योकि अुसमे से रागद्वेष पैदा होता है और कार्यमे विघ्न पडना सभव है।

प्रश्न—क्या मैं कोअी सस्था वनाकर काम करू?

अुत्तर—अभी नही। विना सस्थाके सस्था जैसा कार्य करना। अगर सस्था वननेवाली होगी तो अपने आप वन जायगी। सेवा करना अपना धर्म है।

अतमे वापूजीने कहा कि "अव जो विचार किया है अुसके अनुसार तुमको किसी गावमे स्थिर हो जाना चाहिये। मेरा आशीर्वाद तो है ही। ग्रामवासियोकी सेवा मनसे, वचनसे और कर्मसे करो। अेकादश व्रतोका पालन तो करना ही है। मेरे पास जव आना जरूरी लगे तव आनेकी अिजाजत है। लेकिन अितना समझ लो कि हमारा अेक भी पैसा रेलभाडेमे व्यर्थ खर्च

न हो। जब तुमको स्थिरचित्तता प्राप्त हो जाय और असा लगे कि बापू ठीक कहते थे, तो यह आश्रम तो तुम्हारा घर है। जब चाहो यहा आ सकते हो। यहामे जो भी पाया है वह व्यर्थ नही जा सकता। भगवानका वचन है कि किया हुआ शुभ कर्म कभी व्यर्थ नही जाता। अिसका अर्थ अगले जन्मका भी हो सकता है। लेकिन अिस जन्ममे जब विचारका नया जन्म हो तो किया हुआ या समझा हुआ शुभ कर्म या शुभ विचार काम आता है। वह नष्ट नही हो जाता तो यहासे सीखा हुआ तुम्हारे काम क्यो न आयेगा? लेकिन अिसके लिअे समय चाहिये। मेरा और तुम्हारा जो सम्बन्ध बन गया है वह टूट कैसे सकता है? तुम शान्त चित्तसे जाओ और जहा भी काम करो वहाके सब हाल लिखते रहो।"

९

कुछ और संस्मरण

१

भाखरीका किस्सा

खूब प्रयत्न करने पर भी और बापूजीकी खूब प्रेमवर्षा होते हुअे भी मेरा मन मगनवाडीसे अूब गया था और मैं वहासे भागना चाहता था। घर जानेका निश्चय हो चुका था। दूसरे दिन जानेकी तैयारी थी। अमतुस्सलाम बहनने रसोअीघरका चार्ज ले लिया था। मैंने अमतुस्सलाम बहनसे रास्तेके लिअे भाखरी बनानेकी बात की। मैं तेल नही खाता था अिसलिअे मोवनमे घी डालनेको कहा। अुन दिनो नाश्तेमे आम मिलते थे अिसलिअे भाखरीके साथ आम रखनेको भी कहा। अमतुलबहनने मुझसे पूछा कि भाखरी कितनी चाहिये। मैंने कहा कि चौबीस घटेका रास्ता है। दो समय खानेका चाहिये। अुन्होने चौबीस घटेका अर्थ किया चौबीस भाखरी और बापूजीसे जाकर कहा कि बलवतसिंह २४ भाखरी चाहता है, घीका मोवन और साथमे आम भी मागता है। यह सुनकर बापूको धक्का-सा लगा। मुझे बुलाया और बोले, "तुम रास्तेके लिअे २४ भाखरी मागते हो? घीका मोवन भी चाहिये और साथमें आम भी चाहिये?" मैंने हसकर कहा, "बापू, २४ भाखरीकी बात तो मैंने नही की। हा, घीके मोवन और आमकी बात जरूर की थी। क्योंकि

मै तेल नही खाता और आम तो नाश्तेमे मिलता ही हे। स्टेशनसे मै कुछ खरीदता नही हू। जेलमें छूटते समय कैदीको जो भत्ता मिलता है अुससे ज्यादा मैने कुछ नही मागा।"

वापूने कहा — अितनेकी भी क्या जरूरत है? तुम तो नीमके पत्ते खाकर रह सकते हो। अेक दो दिन भूखे रहनेमे क्या है? मे यहा किसीको खाना नही देता हू। और अेण्ड्रूज साहव वगैराके कअी दृष्टात मेरे सामने वापूने रख दिये।

मैने कहा — मै तो लोगोको सायके लिअे भी खाना देता था। और मुझे अपनी भूल नही लगती हे।

वापूने कहा — ठीक हे, अव तो मेरे पास समय नही है और मै कल गुजरात जा रहा हू। तुम भी कल मत जाओ। वहासे लौटने पर वात करेगे।

वापूजी करीव दस दिन गुजरातमे रहे। अिस वीच तीन चार पत्र वापूजीके आये और मेरे गये। वापूने लिखा

चि० वलवतसिह,

तुम्हारी २१ तारीखकी अव्यवस्था देखकर मै परेशान हुआ। लेकिन अच्छा हुआ कि मैने तुम्हारी अितनी निर्वलता जान ली। अव तुम्हे स्थिरचित्त होकर अपनेको समझ लेना चाहिये। किशोरलाल और काकासाहवसे वात करो।

वोरसद, २३–५–'३५ वापूके आशीर्वाद

मुझे अिस सारे प्रकरणसे दुख हो रहा था, यद्यपि अपनी कोअी गलती अिसमे मै नही मानता था। मैने वापूको यह वात लिखी। वापूजीका अुत्तर आया

चि० वलवतसिह,

तुमको जव दोपदर्शन नही हुआ है, तो क्लेश क्यो? भले ही कोअी महात्मा भी हमारा दोष वतावे। लेकिन जव तक हमको प्रतीति न हो तव तक न शोक होना चाहिये, न प्रायश्चित्त। मैने तुममे असत्य नही पाया है, लेकिन विवेकशून्यता पायी है। जव तुम्हे आश्रमके पैसेसे जाना था तो जानेका कारण ही नही था। दिल्लीसे आना भी अुचित था या नही, यह सोचनेकी वात हे। अैसे ही रोटी व आमकी वात है। लेकिन अिन सव वातोमे दुख माननेकी वात नही हे। सिर्फ समझनेकी वात है,

मन पर अंकुश रखनेकी बात है। अधिक मिलने पर। अुम्मीद है कि ७ दिन जो मिल गये हैं अुनका पूरा सदुपयोग किया होगा।

तुम्हारा कागज वापिस करता हूं।

२७-५-'३५ बापूके आशीर्वाद

२

बापू बापू ही थे

बापूजीको लगता था कि मैंने रास्तेके लिअे खाना क्यों मागा। और मुझे लगता था कि जेलके कैदीको भी रास्तेका जो भत्ता दिया जाता है वह मुझे देनेसे बापूजीने अिनकार क्यों किया? जब बापू गुजरातसे वापिस आये तो अिस विषय पर हमारी घंटों चर्चा हुअी। लेकिन न तो बापूने ही मुझे क्षमा किया और न मैंने ही अपनी भूल कबूल की। बापूने निर्णय दिया कि अब तुम घर नहीं जा सकते। मैंने अपना निर्णय बताया कि आपके पास मैं नहीं रह सकता।

बापूने कहा—अच्छा, मेरे पास नहीं तो मेरे आसपास रहो, किशोरलालके पास रहो, विनोबाके पास रहो और बीच-बीचमें मुझे मिलते रहो।

मैंने कहा—सत्संगके लिअे मुझे किसीके पास नहीं रहना है। हां, कुछ काम सीखना हो तो अलग बात है।

बापूने कहा—क्या सीखना चाहते हो?

मैंने कहा—मेरा बुनाअी काम अधूरा है। मैं बुनाअी सीखना चाहता हूं।

बापू बोले—अच्छा तो विनोबाके पास नालवाडीमें बुनाअीका काम भी चलता है और मेरे पास भी रहोगे। विनोबासे मैं बात कर लूंगा। मैं मानता हूं वहां तुम्हारा मन लग जायगा। विनोबा तो बडा संत पुरुष है।

बापूजीने विनोबासे बात की, अुन्होंने कबूल किया और नालवाडीमें मेरे रहने और बुनाअी सीखनेकी व्यवस्था कर दी। अिस प्रसंगको याद करके मेरे हृदयकी क्या गति हो सकती है यह पाठक समझ सकते हैं। कोअी अुपद्रवी लडका मूर्खताभरे गुस्सेसे माको छोडकर भागता हो और मा अुसके पीछे पीछे दौडती हो, यही मेरी और बापूकी स्थिति थी। माका तो बच्चेके साथ कुछ निजी स्वार्थ भी होता है, लेकिन बापूका तो मेरे प्रति शुद्ध वात्सल्य और प्रेमके सिवा दूसरा भाव नहीं हो सकता था। बापूके पाससे भागनेकी मेरी आकुलता और बापूका मेरे प्रति अगाध प्रेम और मुझे अपने पास रखनेकी छटपटाहट—अिसकी तुलना मैं किसके साथ करूं? भगवान

कृष्णने गीतामे कहा है कि 'प्राप्य पुण्यकृतान् लोकानुषित्वा शाश्वती समा। शुचीना श्रीमता गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते।' मै नही जानता कि मैने पिछले जन्मने कुछ पुण्य किये थे या नही। लेकिन मेरा तो अिसी शरीरसे श्रेष्ठ पिताके घर जन्म हो गया। यह मै प्रत्यक्ष अनुभव करता हू। अिससे अधिक तो मै क्या कहू? लेकिन माको प्रसवके समय जो पीडा होती है, अुससे कम पीडा मुझे अपने पास पकड रखनेमे वापूजीको नही हुअी। मै वापूजीको अपनी माता कहू, पिता कहू, गुरु कहू — ये सब विशेषण मुझे फीके-से लगते है। अितना ही कह सकता हू कि वापू वापू ही थे। अुनके जैसा प्रेम और अुदारता किसी भी शरीरधारीमे मुझे नही मिली। मुझे अिस पितृ-ऋणसे अुऋण होनेकी भगवान शक्ति दे यही प्रार्थना है।

मुझे मगनवाडीमे भागते समय किसीने शुभ हेतुसे रोकनेका प्रयत्न नही किया था। लेकिन मेरे खिलाफ अमतुलवहनने शिकायत की और मै रुक गया। मै अुनका मजाक किया करता हू कि देखो तुमने मेरी रोटीके वारेमे वापूजीने शिकायत की थी। वे भी हसकर कहती है, अजी अुसका तो आभार मानना चाहिये। अुसीके कारण तो आप वापूजीके पास ठहर गये, नही तो आप तो भाग रहे थे।

यह वात तो विल्कुल सच्ची है कि यदि वे मेरी रोटीकी शिकायत न करती तो न मालूम आज मै कहा होता? अीश्वर अपना काम अजीव ढगसे करता है। क्योकि अुस समय कोअी मुझे समझानेकी कोशिश भी करता तो मेरा मन किसी भी वातको समझनेके लिअे तैयार नही था। अिसके लिअे सिर्फ यही अेक रास्ता था जिसके कारण मुझे अुस वक्त लाचारीसे रुकना पडा। मेरा दिल अमतुलवहनको तो आज भी धन्यवाद नही देता। लेकिन अुस अीश्वरको मै जरूर धन्यवाद देता हू जिसने अैसे अजीव ढगसे मुझे वापूजीके पाससे नही भागने दिया। फिर तो अैसे अनेक प्रसग आये और गये। लेकिन ज्यो ज्यो मै वापूजीके नजदीक पहुचता गया, त्यो त्यो मै आश्रमके जीवनका महत्त्व समझता गया और अुत्तरोत्तर वह मेरा घर जैसा वनता गया।

३

वापूकी नम्रता

वापूके साथ या वापूके आसपास रहनेका मेरा अेक सालका करार हुआ था। अिसीलिअे नालवाडीको पसन्द किया गया था। लेकिन नालवाडीमे

बुनाअीका काम व्यवस्थित नही चलता था, अिसलिअे किसीने मुझे सावली जानेकी बात सुझायी। तीसरे दिन मै बापूजीसे मिलने महिलाश्रम गया। बापूजीने हसकर कहा, "क्यो, दिन गिनते हो? तीन दिन तो कम हो गये न?"

मैने कहा, "अपील करने आया हू।"

बापू — अच्छा करो।

मैने बताया कि नालवाडीमे बुनाअीका काम व्यवस्थित नही है। मुझे सावली भेज दीजिये। बापूजीने कहा, "ठीक है। जाजूजीसे बात करूगा।" जाजूजी साथमे ही घूम रहे थे। बापूजीने अुनके साथ बात की और मै दूसरे ही दिन सावलीके लिअे चल दिया और वहा जाकर अपने काममे लग गया। यो बापूके साथ पत्रव्यवहार तो चलता ही रहा।

अेक रोज बापूका चमत्कारी पत्र मिला

चि० बलवन्तसिह,

चार दिन हुअे जेठालाल अनन्तपुर गये। अुनको रास्तेमे घीके मोवनकी भाखरी चाहिये थी। स्टेशनसे कुछ लेते नही है। अमतुस्सलामने मुझे पूछा। मैने कहा, हा भाखरी बना दो। तुम्हारा किस्सा याद आया। तुमको मैने डाटा था। स्मरणने मुझे दुःख दिया। मै जानता हू तुम्हारा तो भला ही हुआ। लेकिन मेरा दोष मिथ्या नही हो सकता। मेरा हेतु निर्मल था, लेकिन यह बात मुझे मुक्त नही कर सकती। क्षमा करना। अैसा अपूर्ण बापू है। बाकी तो किशोरलालभाअीने लिखा है न?

१५-८-'३५ बापूके आशीर्वाद

बापूके आशीर्वादका यह पत्र पाकर मेरे दिलकी प्रसन्नताका पार न रहा। अब तक अपने हठका जो अभिमान था कि मेरी बात सही है वह बापूकी नम्रताकी बाढमे सब बह गया। मैने बापूको अिसके जवाबमे अेक लबा पत्र लिखा। अुसमे यह भी लिखा

"मै जानता हू कि आपका मेरे अूपर कितना प्रेम है। आप मुझसे अितने त्यागकी आशा रखते है कि मुझे रास्तेके लिअे अपने खाने वगैराकी चिन्ता भी न हो। मै अितना भी सग्रह करके क्यो चलू? मै आपकी अिस आशाको पूरी नही कर सका और अपने हठके कारण अपनी बातको सही

समझता रहा अिसका मुझे दुःख है। आपने क्षमा माग कर तो मुझे और भी शर्ममे डाल दिया है और प्रेमकी रस्सीसे मजबूत बाध लिया है। अिसका असर मेरे चित्त पर गहरा पडा है। मैने सागभाजीकी शोध कर ली है।"

वापूका अुत्तर आया

चि० वलवन्तसिह,

अीश्वरभाअीका खत अुसे दे दो, कान्तिका कान्तिको। तुम्हारे खत मिले है, हिसाव पढ लिया। पैसे तो है ना? चाहिये तव लिखो। हिसाव अच्छा है। भाजी अित्यादिकी शोध की सो अच्छा किया। मैने माफी माग ली वह तो आत्म-कल्याणके लिअे। अुसका असर तुम्हारे पर, गहरा पडा यह समझकर मुझे आनन्द होता है। तुममे काम करनेकी शक्ति तो काफी है ही। सावलीमे तुमको स्थिरचित्तता प्राप्त हो जायगी।

वर्धा, ३०–८–'३५ वापूके आशीर्वाद

४

लोगोका भ्रम दूर करनेका अुपाय

सावलीमे अेक विशेप दिन देवीके सामने वकरेकी वलि चढानेका काम सामूहिक रूपसे होता था। सव लोग गावमे अेक अेक वकरा लेकर जाते थे और देवीके निमित्तसे वही पर अुसे काटकर और अुसका मास वनाकर खाते थे। अिसका सव वर्णन मैने वापूजीको लिखा था। वडा भयानक दृश्य था। पेड पेड पर वकरे टगे थे। दूसरी घटना थी अेक वहनकी। अुस वहनने कुछ चुरा लिया था और लोग अुसको सता रहे थे। भाजीके कुछ वीज भी भेजनेको लिखा था। अुसके जवावमे वापूने लिखा

चि० वलवन्तसिह,

देवीके सामने वकरोके भोगका वयान दुःखद है। हम अिस सदियोकी भ्रमणाको क्षणमे दूर नही कर सकते। लोग समझ सके अैसी सेवा जव तक हमने नही की है, तव तक हमारी वात सुननेके लिअे अुनके हृदय तैयार नही होगे। वुद्धिका विकास अिससे भी कठिन है। और अहिंसक प्रवृत्तिमात्र कम हृदयस्पर्शी है। हृदयस्पर्श निःस्वार्थ सेवासे वहुत जल्दी हो सकता है। अिसलिअे आज तो हमें अिन देवियोको वकरोका भोग चढानेवालोमे सेवाकार्य करना है। और मौका मिलनेसे अुनका भ्रम

दूर करायेगे। याद रखो कि जो दृश्य तुमने अनपढ लोगोमे देखा वही दृश्य पढे हुअे लोगोमे कलकत्तेमे देखा जाता है और वहा वहुत पैमानेमे।

दूसरी घटना भी अुसी प्रकार समझो, अगरचे अितनी दु खद, अितनी असह्य नही है। अुसमे भी अिलाज वही है। मुझे पता नही कि कृष्णदास वीज अित्यादि ले गया है कि नही। तुम्हारा खत अुसके जानेके वाद मेरे हाथमे आया।

* * *

मगनवाडी, वर्धा
ता० १७–९–'३५

वापूके आशीर्वाद

१०

स्नेहनिधि बड़े भाओी पू० किशोरलालभाओी

सावलीमे रहते समय मेरा पूज्य वापूजीके साथका पत्रव्यवहार पूज्य किशोरलालभाओी ही किया करते थे और मै भी अुनको बहुतसे पत्र लिखा करता था। यहा पू० किशोरलालभाओीका अत्यत अल्पसा परिचय कराये विना तथा अुनके कुछ वहुमूल्य पत्रोंको प्रकाशमे लाये विना आगे वढना अशक्य-सा लगता है।

वापूजी तो वापू थे ही, लेकिन पू० किशोरलालभाओीने आश्रम-जीवनमे वडे भाओीका स्थान ले लिया था। जिस प्रकार मैने वापूजीको सताया और वापूजीने मेरा दुलार रखा, अुसी प्रकार वडे भाओीका जो फर्ज होता है अुसे किशोरलालभाओीने अतकी घडी तक निभाया और मेरी भी अुनके प्रति वैसी ही श्रद्धा वनी रही जैसी कि छोटे भाओीकी वडे भाओीके प्रति रहती है। मैने अुनको वहुत नजदीकसे देखा। अुनकी-सी सहनशीलता, अुनका-सा धीरज, अुनका-सा प्रेमी स्वभाव और शारीरिक पीडा होते हुअे भी अितनी प्रसन्नचित्तता मैने अपने जीवनमे अन्य किसीमे नही देखी। जव १९३४ मे पू० नायजीने मेरा परिचय किशोरलालभाओीसे कराया था, तव कहा था कि देखो वहा किशोरलालभाओी रहते हैं। तुम वीच वीचमे अुनसे मिलते रहना। लेकिन अेक वातका ध्यान रखना। अुनकी तवीयत कमजोर है और अुनका स्वभाव अैसा हैं कि कोओी अुनके पास चला जाय तो अुसके साथ वाते करनेमें वे अपने स्वास्थ्यको भूल जाते हैं

और जव तक मिलनेवाला चला न जाय तव तक वाते करते ही रहते है। मैने पू० नाथजीकी अिस सूचनाका हमेशा ध्यान रखा। लेकिन कुछ समय वाद मे अुनके साथ अितना घुलमिल गया कि वे मेरे और वापूजीके वीचमे पडते ही थे। यहा तक कि मैने भी अुनको वीचमे डालनेका अपना अधिकार-सा मान रखा था। मै अुनके साथ मजाक तक करनेमे नही चूकता था और अुनका भी स्वभाव अैसा ही था। अेक वार अुन्होने मेरे खराव अक्षर सुधारनेकी सूचना वडे मनोरजक ढगमे की, तो मैने लिखा कि आपकी तरह मै सफेदको काला करना भले न जानता होअू, लेकिन सूखी ओर खाली जमीनको हरीभरी करनेमे मेरा कुदाल काफी सुन्दर रेखाये खीचना जानता है। आपकी काली रेखाओके विना मेरा काम चल जाता है, लेकिन मेरी रेखाओंके विना आप भूखे ही रह जायेगे।

विवेक और स्नेहके वे भडार थे। वे खूव कठोर सत्य कह सकते थे, लेकिन 'कहहि सत्य प्रिय वचन विचारी'—अुनका वचन सत्य, प्रिय और विचारयुक्त होता था। किसी साथीको कितना भी कठोर सत्य स्पष्ट कहनेकी अुनमे हिम्मत थी। अुनको जो लगता था अुसे मनमे न रखकर सामनेवालेको वे सुना देते, लेकिन अुसके प्रति स्नेहमे जरा भी फर्क नही आने देते थे। जिन्हे अुनका परिचय हुआ था वे सव अैसा अनुभव करते थे। वे जितने विचारक और गभीर थे, अुतने ही विनोदी भी थे। अगर मै अुनके साथके मधुर सस्मरण लिखने वैठू तो जैसी पू० नरहरिभाओीने वहुत मेहनतके वाद 'श्रेयार्थीकी साधना' लिखी है, वैसी अेक-दो पुस्तके सहजमे लिख सकता हू। लेकिन अुनका और मेरा सवव अितना घनिष्ठ था कि अुनकी मृत्यु पर सिवा पू० गोमती-वहनको अेक तार देनेके मेरी कलम ही अुनके वारेमे नही अुठी। तारमे मैने लिखा था 'पूज्य गोमतीवहन, भाओीके स्वर्गवासके समाचार सुने। अन्त समयमे अुनके दर्शन और सेवासे वचित रहा, अिसका मुझे दुख रह गया। भाओी तो जीवन्मुक्त थे। हसते-हसते गये होगे।—वलवतसिह।' अिससे भी वडे दुखकी वात यह थी कि वेचारी गोमतीवहन भी अतिम क्षणोमे अुनकी सेवा और दर्शनसे वचित रह गओी। वे किसी कामसे अन्दर गओी अितनेमे ही किशोरलालभाओीके प्राणपखेरू अुड गये।

वापूजीके वाद वे हमारी ढाल थे। वे भी अुठ गये तो रोनेसे क्या लाभ? लेकिन जव मै वापूजीके साथके सस्मरण लिखने वैठ गया और कलमने अिजनकी तरह अपनी पटरी पकड ली, तो सवसे वडे जकशन स्टेशन पर

किशोरलालभाओीके मधुर सस्मरण रूपी थोडासा पानी लिये बिना अिजन आगे कैसे चल सकता है?-अुनके साथ मेरा जो पत्रव्यवहार हुआ और जो चर्चाअे हुअी, अगर अुन सबका सग्रह मैंने सभालकर रखा होता तो अितनी पूजी बन जाती कि अुससे मै अनेक गरीब लोगोका भला कर सकता था। लेकिन थोडेसे कण कजूसकी तरह मैंने अपनी गुदडीमे छिपाकर रख ही छोडे थे। अगर मै आज भी अुन्हे छिपे ही रखकर चला जाअू तो कजूसीकी हद हो जायगी और कितने ही गरीब लोग भूखे रहकर मुझे गालिया देंगे। सबसे अधिक गाली तो पू० गोमतीबहन ही देंगी, जिनसे भी छिपाकर रखनेका मैंने अतिलोभ किया है। जहा बापूजीके परिवारमे मेरे जैसे क्षणभरमे आपेसे बाहर हो जानेवाले लोग थे, वहा किशोरलालभाअी जैसे हिमालयकी तरह अचल और शीतल रक्षक भी थे।

'सम सीतल नहि त्यागहि नीती।
सरल सुभाअु सब ही सन प्रीती॥'

शभुके सघमे जहा वीरभद्र थे वहा गणेशजी भी तो जरूरी थे। अुनका स्वभाव जहा आकाशकी तरह खुला था, वहा अपनी व्यक्तिगत सुविधा और सेवा लेनेमे सकोची भी था। मर्यादाका पालन वे कडाअीसे करते थे। अेक बार जमनालालजीने अुनके सामने गोमतीबहनको अिलाजके लिअे वियेना भेजनेकी बात निकाली, तो अुन्होने कहा कि जो सुविधा मै अपने व्यक्तिगत जीवनमे प्राप्त नही कर सकता, अुसका लाभ सार्वजनिक जीवनमे अुठानेका मुझे क्या अधिकार है? जमनालालजीका अुनके प्रति अगाध स्नेह था। वे अपनी बात कितने प्रेम और आग्रहके साथ रखनेकी योग्यता रखते थे, अिसका सबको अनुभव है। वियेना जानेकी बात मेरे सामने ही चल रही थी और मै दोनोके मुहकी तरफ देख रहा था। मुझे लगता था कि ये अगर कबूल कर ले तो कितना अच्छा हो। किशोरलालभाअी बोले, "देखो अगर मै वकालत करता तो अितना पैसा नही कमा सकता था कि गोमतीको वियेना ले जाकर अिलाज करा सका होता। तो आज मै कैसे भेज सकता हू? आपका प्रेम और भावना मै जानता हू। लेकिन मुझे अपनी मर्यादाका भी तो भान है। आप किस किसको वियेना भेजेंगे?" बिचारे जमनालालजी चुप हो गये।

अुनका धीरज और सहनशीलता तो गजबकी थी। यो तो वे हमेशा बीमार ही रहते थे, लेकिन अुनकी बीमारीका अेक दृश्य मै कभी नही भूल

सकूगा। १९३८की वात है। हरिपुरामे काग्रेस थी। अुसमे मै भी गया था। वापूजीके कैम्पमे ही ठहरा था। किशोरलालभाअीको वुखार चढा। वुखार १०४ डिग्री था। अुधर गोमतीवहनको भी वुखार चढ गया। अव कौन किसकी सेवा करे? दोनोके सेवक और डॉक्टर तो वापूजी ही थे। वे दोनोकी सभाल करते थे। दोनोकी खाटे अेक ही तनूमे थी। दोनो अेक-दूसरेकी तरफ देखकर हसते थे। मुझे लगता था कि दोनो जानेकी तैयारी कर रहे है तो भी कितने प्रसन्न है। हरिपुराकी हवा अितनी खराव हो गयी थी कि वहा पर १०-१५ लोग मर चुके थे। सावरमती आश्रमके पडित श्री नारायण मोरेश्वर खरे वही चल वसे थे। वापूजीको डर हो गया था कि कही अिनको भी न खो दे। अिसलिअे दोनोको वारडोली भेज दिया। अच्छे हो जाने पर मैने अेक रोज किशोरलालभाअीसे पूछा कि आप वीमारीमे भी अितने कैसे हस लेते है? वे वोले, "देखो, जहा चमडा कमाया जाता है वहा अगर तुम जाते हो तो कैसा लगता है? तुम नाक वन्द क्यो करते हो? लेकिन चमडा कमानेवालेसे पूछो। वह क्या कहता है? अिस प्रकार वीमारी तो मेरी साथिन है। अेक रोज थोडी अधिक हुअी तो क्या, और थोडी कम हुअी तो क्या?" यह थी अुनकी सहनशीलता और धीरजकी पराकाष्ठा।

अुनके शरीरमे कितनी पीडा होती रहती थी, अिसका पता अुनके ही पत्रसे चलता है। मैने अुनको लिखा था कि आपको शारीरिक सेवा लेनेमे सकोच नही करना चाहिये। तव अुन्होने लिखा, "देखो मेरे शरीरको जितना दवानेकी जरूरत है अुतना दवानेवाला मुझे कोअी नही मिला, और न मिलनेकी आशा है। तो फिर थोडासा अुपकार लेकर ही मै क्या करू?" यह अुनका अतिम पत्र था। जव अुनका स्वर्गवास हुआ तव मै राजस्थानके वासवाडा जिलेके अकाल-पीडित क्षेत्रोमे घूम रहा था और यह सोच रहा था कि वहुतसे समाचार अेकसाथ ही अुन्हे लिखूगा। अितनेमे अेकाअेक मुझे अुनके चले जानेका समाचार मिला और मेरे दिलमें यह दर्द रह गया कि मैने अुनको पत्र लिखनेमे देर कर दी।

अेक वार मै कुछ नाराज-सा हो गया तो वे वोले, "देखो, अपने सुरेन्द्र और तुमको मै अिसीलिअे कुछ सुना देता हू कि तुम लोग मेरी वात सुनते हो।" अुस दिन मुझे पता चला कि अुनके दिलमे मेरे प्रति कितना स्नेह भरा था।

अब मैं अुनके कुछ कीमती पत्रोके नमूने पूर्वापर सदर्भके साथ यहा पेश करता हू।

१

सावलीसे मैंने बापूजी और किशोरलालभाअीको पत्र लिखे। अक्षर तो खराब थे ही। सावलीमे दूध और घी मिलनेमे कठिनाअी थी। सागभाजी भी नही मिलती थी। दातुनके लिअे नीमके वृक्ष भी नजर नही आते थे। वहाका पानी भी खराब था। मैंने ५ रुपये मासिकमे गुजारा चलानेका भी लिखा था। अिस पर अुनका विवेचनापूर्ण पत्र आया।

वर्धा, ८–७–'३५

भाअी श्री बलवन्तसिंहजी,

मेरा पहला पत्र मिला था न?

पू० बापूका कलका पत्र मिला होगा। साथ मेरी चिट्ठी भी। पू० बापू आपका सब पत्र ठीक निकाल न सके थे। अिससे अुन्होंने वह मेरे पास फिरसे सुना। बाद अपने पत्रकी पूर्तिमे यह पत्र लिखनेकी आज्ञा दी है।

अिधर-अुधर तलाश करनेसे दूधकी व्यवस्था हो जाना सभव है। कुछ श्रम ले करके अुसको प्राप्त करनेका प्रयत्न करे। पर्याप्त दूध मिल जाय, तो अुसका दही बनाके अुसमे से मक्खन आप ही तैयार कर सकेंगे। मक्खनका घी बनानेकी आवश्यकता नहीं है। ज्यादा दिन मक्खन रह नही सकता अिससे हम अुसका घीमे परिवर्तन करते हैं। परन्तु ताजे मक्खनकी अपेक्षा घीके गुण कम ही हैं। मक्खनमे जो प्राणतत्त्व रहते हैं, वे घीमे नही पाये जाते। अैसा भी हो सकता है कि रोज तो दूध खाये और हफ्तेमे अेक या दो दिन दूधकी छाछ कर डाले और मक्खन तैयार करे। थोडासा ज्यादा दूध मिल जाय तो अुस दिन मक्खन निकालके केवल छाछका ही अुपयोग करे। और अिस सब झझटमे से बच सकते हैं, यदि काफी दूध मिला लें और अलग मक्खनकी अिच्छा ही न रखे। दूधमे वह प्राप्त हो ही जायगा।

अिन दिनोंमे घासके बीचमे अनेक प्रकारकी भाजिया अपने आप पैदा होती हैं। अुसमे खाने लायक अनेक पत्तिया रहती हैं। अुनमें ढूढा जाय तो आपको अवश्य भाजी प्राप्त होगी। देहातियोने अब तक भाजीकी आवश्यकता ही कम समझी है। वे मानते हैं कि भाजीकी आवश्यकता धनिकोको ही रहती है। वह आवश्यक आहार नही है। अिसके सिवा जहा

पर जो भाजी बेची जाती हो अुसीको वे भाजी समझते है। अपने आप जगलमे अुगती हो अुसे नही जानते। आप खोजेगे तो जरूर मिलेगी।

नीमके वृक्ष वहा नही पाये जाते, यह जानकर कुछ आश्चर्य होता है। सामान्यत हिन्दुस्तानमे सब जगह नीम होता है।

पानी चाहे कितना गदा हो, अुसे २०–२५ मिनट अुबालकर, छानकर अुपयोगमे लाया जाय तो अुसमे जन्तु नही रहने पाते। बरसात आता हो तब अेक बरतनके अूपर शीशीमे तेल भरनेके लिअे जैसा नलीदार फूल होता है वैसा फूल रखकर बरसातमे खुलेमे छोड दी जाय तो पीनेके लिअे स्वच्छ पानी मिल जाना सभव है। लाल दवाअीका अेकाध कण पानीमे छोड दिया जाय तो वह पानी जन्तुहीन हो जायगा। और निर्मलीका अेक छोटासा टुकडा पानीमे थोडी देर हिलाया जाय तो सब मैल जल्दी नीचे बैठ जायगा। फिर अूपरसे पानी दूसरे बरतनमे निकाल लिया जाय।

अिनमे से कअी सूचनाये मेरी है। कुछ पू० बापूजीकी है। अिन्हे पढकर कदाचित् आप यह महसूस करे कि अितना सब मै करू कौनसे समय? परन्तु सभव है धीरे धीरे यह सब व्यवस्था हो सकती है।

पू० बापूजीने लिखाया है कि स्वास्थ्यको बिगाडकर पाच रुपयेकी मर्यादामे रहनेका आग्रह न रखे।

आप प्रसन्न होगे।

आपका
किशोरलाल

२

मैने अपने जीवनमे पहली बार साबलीके साप्ताहिक बाजारमे जितने अर्धनग्न स्त्री-पुरुषोको देखा अुतनोको अेक ही जगह पर अितनी सख्यामे पहले कभी नही देखा था। वहाकी गरीबी, अपनी कठिनाअिया और सतोषका समाचार मैने किशोरलालभाअीको लिखा था। अुनका अुत्तर आया.

वर्धा, २१–७–'३५

प्रिय श्री बलवन्तसिंहजी,

आपका पत्र परसो मिला। भाअी दौलत आज साबली जा रहे है। अिससे अुनके साथ ही पत्र भेज रहा हू। पू० बापूजीको आपका पत्र पढकर सुनाया। वे कदाचित् आज ही अुत्तर न दे सकेगे।

आपका काम ठीक चल रहा है, और आपको वहा सतोष है, यह जानकर खुशी हुआी। यहाकी अपेक्षा वहा जीवनकी कठिनाअिया ज्यादा है। परन्तु मानसिक अुत्साहके कारण वे आपत्तिरूप नही मालूम होगी।

वहाकी गरीवीका वर्णन पढकर दुःख होता है। आजकल पू० वापूजी भी अिसीका विचार करते है। शीघ्र ही वहाकी कार्यप्रणालीमे परिवर्तन होनेका सभव है। जिसको अत्यधिक लिखना पडता है अेव जिसको क्वचित् ही लिखना पडता है — अिन दोनोके हस्ताक्षर खराव हुआ करते है। पहले मनुष्यका दिमाग अितना जोरसे चलता रहता है कि हाथको बहुत वेगसे चलाना पडता है। अिससे अुसके हस्ताक्षर विगडते है। दूसरेको अक्षर लिखनेकी आदत न होनेके कारण आकृति विगड जाती है। स्याहीसे रोज थोडा थोडा लिखनेका अभ्यास करनेसे अक्षर सुधर सकते है। अभ्यास करनेमे अितनी सावधानिया रखनी चाहिये (१) लकीरोवाले कागज पर ही लिखना। (२) छापे हुअे नमूनेके अनुसार ठीक आकृति निकालनेका प्रयत्न करना। (३) लपेटवाले अक्षर, अेक-दूसरेसे जोडे हुअे अक्षरोको कलम अुठाये विना लिखनेका आग्रह न रखना। हाथको मुहावरा हो जाने पर लपेट अपने आप मिल जाती है। (४) लपेट सीखनेमे सुन्दर अक्षर लिखनेवालोके हस्ताक्षरो पर ध्यान देना चाहिये। (५) आपको कदाचित् मालूम न होगा कि हस्ताक्षर और चरित्रका सवध है। हस्ताक्षर परसे मनुष्यके चरित्र और स्वभावको पहचाना जा सकता है। अिससे हमारे मन और वुद्धिकी व्यवस्था और अव्यवस्था हमारे हस्ताक्षरोमे भिन्न भिन्न तरहसे अुठती है।

श्री सुरेन्द्रजी, पूज्य नाथजी और श्री गगावहनके पत्र २–३ दिनमे ही आये है। मव आपको याद करते है और खवर पूछते है। सुरेन्द्रजी आचार्य या पडितजी वननेके रास्ते पर है।

मै अभी तक वहुत परेशान नही हू। गोमती भी माधारण ठीक है। जल्दीके मवव आज न लिखेगी। आपको प्रणाम लिखाती है।

आपका
किशोरलाल

३

मैने अपने पत्रमे कअी वातें लिखी थी, जिनका अुत्तर अुन्होने प्रथम दिया था। मुझे वापूजीका पत्र मिलनेमे देर हुआी थी। अवकी वार मैने

अक्षर सुधार कर लिखनेकी कोशिश की थी। खराव अक्षरोका कारण भी वताया था। दूसरे, मैंने लिखा था कि

अिन्द्रियाणा हि चरता यन्मनोऽनुविधीयते।
तदस्य हरति प्रज्ञा वायुर्नावमिवाम्भसि ॥ *

गीताके अिस श्लोकसे मेरा अनुभव अुलटा है। अशुभसे शुभकी तरफ खीचनेवाली शक्ति अधिक वलवान है। तीसरे, जिस वुनकरके घरमे वुनाअी सीखता था अुसके घरकी मोरी गदी थी। स्त्रिया खुलेमे वैठकर स्नान करती थी। मैंने सफाअी की और घासफूसका स्नानघर वना दिया था। चौथे, मावलीमे कुष्ठरोग वहुत ही फैला हुआ था। अुसका वर्णन लिखा था और वचनेका अुपाय पूछा था। पाचवे, मुझे वहाके देहातियोका सहज और स्वाभाविक जीवन प्रिय लगता था। छठे, मावलीके खादी-अुत्पत्ति केन्द्रके कुअेंके पास मैंने जो भाजी अुगाअी, वह वापूजीके पास भेजी थी। अिसके अुत्तरमे किशोरलालभाअीने लिखा

वर्धा, १०-८-'३५

भाअी श्री वलवन्तसिहजी,

सप्रेम प्रणाम। आपका ता० ५ का पत्र मिला। पू० वापूजीका अेक भी पत्र आपको आज तक नही मिला, यह आश्चर्यकी वात है। पू० वापूजीने मेरे सामने ही आपको अेक विस्तृत पत्र लिखा था अैसा मुझे और अुन्हे दोनोको याद आता है। हा, अभी थोडे दिनोमे आपको अुन्होने पत्र नही लिखा है। मेरे खयालसे तो आपका जो पिछला पत्र था वह अुन्हीके पत्रके अुत्तरमे था। खैर। यह पत्र अुनका और मेरा दोनोका आप समझियेगा।

अिस समयके आपके हस्ताक्षर पढनेमे कुछ भी तकलीफ नही हुअी। पू० वापूजीने स्वय ही सव पत्र पढ लिया। लिखनेका कम मुहावरा होनेसे अक्षरोमे सुरूपता और लिखनेकी गतिमे शीघ्रता कम रहती है, यह वात ठीक है। परन्तु सुरूपता और सुवाच्यता ये भिन्न गुण है। अिसमे सुरूप न हो तो भी सुवाच्य अक्षर निकाले जा सकते है, यदि अक्षरोकी आकृतिका अच्छा परिचय हो।

---

* विषयोमे भटकनेवाली अिन्द्रियोके पीछे जिसका मन दौडता है, अुसका मन वायु जैसे नौकाको जलमे खीच ले जाता है वैसे ही अुसकी वुद्धिको जहा चाहे वहा खीच ले जाता है। 283

लिखनेमे शीघ्रता अभ्याससे ही आती है, तो भी शीघ्रलेखनसे अक्षर वहुत विगड भी जाते हैं। अिससे सुवाच्य अक्षर लिखते लिखते जितनी शीघ्रता प्राप्त हो अुतनीसे ही सतोप रखना चाहिये।

परन्तु आप लिखते हैं कि दिमाग जोरसे चलता है और हाथ पीछे रह जाता है। यद्यपि अनेक लोग अिस प्रकार अपना अनुभव वतलाते हैं, पू० वापूजी मानते हैं कि अिसमे दोप हाथका नही है, दिमागका ही है। दूसरेको लिखाते समय यदि वह धीरे धीरे काम कर सकता है, विचारको स्थगित रख सकता है, और लिखनेवालेकी गतिके साथ चल सकता है, तो अपने हाथके साथ भी चलनेका अुसको सुलभ होना चाहिये। अिस पर हम प्रयत्न नही करते, अिमीसे यह भ्रान्ति अुत्पन्न होती है कि अपना हाथ अपने दिमागसे कुछ पीछे ही रह जाता है। और यही कारण है कि विचारोमे अव्यवस्था अुत्पन्न होती है। अच्छे लेखकोमे भी यह दोप प्राय दिखाअी देता है, और यही कारण है कि अुन्हे अपने लेखोमे वारवार सशोधन करना पडता है।

अशुभकी अपेक्षा शुभकी तरफ खीचनेवाली शक्ति अधिक वलवान है, यह आपका अनुभव वहुत हर्षप्रद है। यह अनुभवजन्य श्रद्धा ही आपका शुभ करती रहेगी। विना कोअी वडे अुदात्त और वलवान सकल्पके यह अनुभव होना दुष्कर है। आप भाग्यशाली हैं। सामान्य जनताका अनुभव वही रहता है जो कि गीतामे लिखा है। और यह भी तो गीतामे ही लिखा है न

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्य सम्यक् व्यवसितो हि स ॥
शीघ्र भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्ति निगच्छति।
कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्त प्रणश्यति ॥*

---

* भारी दुराचारी भी यदि अनन्य भावसे मुझे भजे तो अुसे साधु हुआ ही मानना चाहिये। क्योकि अव अुसका सकल्प अच्छा है। अुसकी अनन्य भक्ति दुराचारको शान्त कर देती है।

वह तुरन्त धर्मात्मा हो जाता है। और निरन्तर शातिको पाता है। हे कौन्तेय, तू निश्चयपूर्वक जान कि मेरे भक्तका कभी नाश नही होता।

पू० बापूजी आपके पत्रसे बहुत प्रसन्न हुओ। आपके पत्रका कुछ अंश मैं कदाचित् 'हरिजनसेवक' मे दूगा।

आपने जिस तरह अपने गुरुकी फीस देनेका मार्ग निकाला है, वह अनुकरणीय है। गुरुके घरका पानी भरना और लकडी फाडना अितना तो पुराने जमानेमे भी कहा था। आपने अुसकी मोरी साफ करना वगैरा सेवा ठीक ही की है। आपको धन्यवाद है।

और मान्त्रिकके ढोंगको भी आपने अच्छी तरहसे सिद्ध कर दिया।

महारोगका प्रश्न बडा विकट है। चारो ओर वह महत्त्वका बन गया है। अुसको केवल खानगी सस्थाये तय नही कर सकती। न केवल सरकारी सस्थाये ही कर सकती है। दोनोका और साथमे जनताका सहयोग होना आवश्यक है।

फिलहाल तो पू० बापूजीकी ओरसे अितनी ही सूचना दे सकता हू

(१) महारोगियोको दूसरोके ससर्गमे न आनेके लिअे सतत समझाते रहना चाहिये। कुछ बुरा भी मान ले तो भी सकोच छोडकर अुन्हे दूर रहनेका अभ्यास करा देना चाहिये।

(२) लोगोको भी समझाना चाहिये कि वे खुदको और अपने बच्चोको अुनके सस्पर्शसे बचाकर रखे।

(३) सयोग अुनके और समाजके लिअे हानिकारक है, यह अुन्हे बार-बार समझाया जाय। यद्यपि यह बात समझानेसे ही अमलमे लाओी जा सके अितनी आसान नही है। वीर्यको दग्धबीज करनेका अेक आपरेशन होता है। परन्तु अिससे केवल सततिकी अुत्पत्ति अटकाओी जा सकती है। दूसरे व्यक्तिको रोगी होनेसे बचाया नही जा सकता। और फिर अैसा मनुष्य प्राय अधिक कामातुर बनता है, अिससे अनेक स्त्रियोको अुससे धोखा होनेका डर रहता है। अिससे अिस अुपाय पर विचार नही बैठता। यदि वैसे मनुष्य अपनी खुशीसे नपुसक बने तो अलग बात है। परन्तु अैसा करनेके लिअे तैयार हो अैसा व्यक्ति मिलना कठिन है।

(४) नीमके तेलकी मालिश अिन रोगियोके लिअे अच्छी है, अैसा वैद्यक ग्रन्थोमे कहा जाता है। पू० बापूजीको अिस विषयमे कोओी साध्य कारण तो मालूम नही है। परन्तु अिसमे कोओी दोष नही हो सकता अितना जरूर है।

(५) चोल मोगरेके तेलके अिंजेक्शन यह आयुर्वेदिक अुपाय है। अिसकी प्रशंसा बहुत सुनी गअी है। युरोपीय डॉक्टर अिसीको आज अच्छेसे अच्छा अुपाय बता रहे हैं। अिससे रोग बिलकुल अच्छा हो जाता है, यह तो नहीं कहा जा सकता। लेकिन रुक जाता है। और जिसने यह अुपाय लिया है अुसके द्वारा चेप फैलनेका संभव कम होता है। अितने वे जन्तु निर्बल हो जाते हैं। प्रारंभिक दशामें रोग-निवारण होना भी संभव है। ये अिंजेक्शन सरकारी अस्पतालोंमें कहीं कहीं दिये जाते हैं। वर्धा जिलेमें अिसके लिअे कुछ प्रबन्ध है। वहांके सरकारी दवाखानेमें तपास करनी चाहिये। अिसके अतिरिक्त पू० बापूजीने डॉ० महोदयको अिस रोगका विशेष अध्ययन करनेके लिअे प्रेरणा की है। अुनके द्वारा स्थानिक कार्यकरोंको अिसकी जानकारी देनेका प्रबन्ध होनेकी आशा है।

(६) कार्यकरोंको अपने शरीरको संसर्गसे अवश्य बचा लेना चाहिये। अिसके लिअे बापूजीने निम्न अुपाय बताये हैं

(क) महारोगियोंके स्पर्शसे बचे रहें।

(ख) स्नानके पानीमें 'कान्डीका फुलअिन' नामक औषधि आती है अुसके कुछ चम्मच डाल दिये जायें। गुलाब जैसा पानीका रंग हो अुतना डालना आवश्यक है। अुस पानीसे स्नान किया जाय।

(ग) सूतको गंधकके धुअेंसे शुद्ध करके फिर छुआ जाय। अेक चलनीमें सूत रखकर अुसको अेक बरतन पर रख देना चाहिये और अूपरसे ढांक देना चाहिये। बरतनके अंदर थोडासा गंधक जलाना चाहिये और अुसका धुआं अच्छी तरहसे सूतमें फैलने देना चाहिये। वह सूत फिर जन्तुहीन हो जायगा। अिसके अतिरिक्त कार्बोलिक अेसिड अथवा मरक्युरिक परक्लोराअिड नामकी दवाओंकी पिचकारीसे फुकारनेसे भी जंतु मारे जा सकते हैं।

(घ) और अंतमें हमारा रक्त शुद्ध रखनेकी हर तरहसे कोशिश रखनी चाहिये। शुद्ध रक्तमें जन्तुनाश करनेकी शक्ति रहती है।

आश्रमकी अपेक्षा वहांका वायुमंडल आपको अधिक सात्त्विक और शुद्ध मालूम हुआ, अिसमें आश्चर्य नहीं है। वहां जो अच्छी या बुरी बातें हैं वे स्वाभाविक हैं। अच्छी बातको विशेष अच्छी बनानेका कृत्रिम अुपाय नहीं किया जाता, न बुरी बातको ढांकनेका। सत्य बोलनेवाला स्वभावसे सत्य बोलता है। असत्य बोलता हो तो बिना संकोच असत्य बोलता है। आश्रममें अच्छी बातें भी हों तो वे प्रयत्नपूर्वक हैं। बुरी बातें न हों तो भी प्रयत्नसे

है। यह जो निष्कपट — नैसर्गिक — जीवन है वह आपको आनद दे रहा है। जव तक यही आपका अभिप्राय रहे तव तक अुसमे से आपको लाभ ही मिलता रहेगा।

आपकी भाजी तो लूणीकी ही जात है। पू० वापूजीने अुसका भोजन किया।

पू० नाथजीकी तवीयत अभी अच्छी नही है। पैरका दर्द कष्ट दे रहा है। मैंने यहा आनेके लिअे प्रार्थना की है, परन्तु वे अिच्छा नही वता रहे हैं।

सुरेन्द्रजीका वोरियावीमे ठीक चल रहा है। अुन्हे सतोष है। गगावहन भी अपने कार्यसे सतुष्ट हैं। रमणीकलालभाओीको अभी पूर्ण स्वास्थ्य नही प्राप्त हुआ है पर तो भी पहलेसे कुछ ठीक है।

गोकुलभाओी आपको हरअेक पत्रमे याद किया करते है।

अव और कामके कारण यहा पर ही वद करता हू। कुछ रह गया हो तो फिर दूसरे समय लिखूगा।

आपका सप्रेम
किशोरलाल

पुन — आपने जिम पुस्तकके विषयमे लिखा है वह अव तक नही मिली है। शायद श्री दातार देना भूल गये हो या लाना भूल गये हो। गाधी-सेवा-सघका वार्षिक अधिवेशन आगामी मार्चमे सावलीमे ही रखनेका अिरादा है। तव आपका केन्द्र सव लोग अच्छी तरह देख सकेगे।

४

सावलीमे अेक त्योहारके अवसर पर सव लोग अपने वकरे देवके सामने खडे करके अुसकी पूजा करते, अुसका वध करते और जगलमें करीव करीव सारा गाव मासाहारका वनभोजन करता था। अिसका रोमाचकारी वर्णन मैंने पू० वापूजी और किशोरलालभाओीको लिखा था। और भी प्रश्न पूछे थे। अुनके जवावमे अुन्होने पत्र लिखा। वापूजीने भी लिखा था, जो पृष्ठ ९३ पर दिया गया है। किशोरलालभाओीका पत्र अिस प्रकार है:

वर्धा, २१–९–'३५

प्रिय श्री वलवतसिहजी,

सप्रेम वन्दे। आपके सव पत्र वरावर मिले। मुझे अभी विलकुल आराम तो नही हुआ है, लेकिन पहलेसे कुछ ठीक है। अभी थोडा थोडा ज्वर, थोडी खासी आदिकी शिकायत है। २–४ रोजमे आराम हो जानेकी आशा है।

वकरोकी हिसाका प्रश्न यो भी जटिल तो है ही, परतु कदाचित् हमारी अुस प्रश्नके प्रति देखनेकी दृष्टिमे भी कुछ दोप होना सभव है।

जो मासाहार नही करते परतु देव-देवीको भोग चढानेमे मानते है और कुछ कामना सफल होने पर अमुक प्रकारका भोग देनेकी प्रतिज्ञा करते है, वे मानिये कि देवके लिअे मिष्टान्न ले आवे तो आप अुन्हे मना करेगे? क्योकि हमारे वैष्णव-मदिरोमे भक्त लोग वडे दिनो (त्यौहार)के रोज भाति भातिके मेवा, मिठाअी, मिष्टान्नके भोग वनाकर ठाकुरजीके सामने रखते है। देव वकरा, हेला (भैसा) आदि नही चाहता तो क्या मिष्टान्नोको भी चाहता है? हजारो लोगोको खानेको अेक समयका भी अन्न नही मिलता, तब मदिरोमे कितना नैवेद्यके नाम पर व्यय किया जाता है? दोनोमे से कौन ठीक करता है, यह कहना मुश्किल है।

वात तो यह है कि यदि देवको कुछ भोग चढानेमे हमको श्रद्धा हो, तो वही पदार्थ हम ला सकते है, जिसका आहार हमें विशेप प्रिय हे। जो त्यौहार पर मिष्टान्न खाता है, वह मिष्टान्न वनाकर देवके आगे रखता हे। जो मासाहार करता है वह मास लाता है।

अिससे मुझे तो यह लगता है कि यदि हम मासाहार छुडा नही सकते, तो हम प्राणि-वलिदान भी वन्द नही करा सकते ।

हा, यह हो सकता है कि हम लोगोको कहे कि मासाहार अच्छी वात नही है, फिर भी यदि आप मासाहार नही छोड सकते तो कमसे कम त्यौहारके पवित्र दिनको वह नही करना चाहिये। अैसे दिन निरामिप भोजनके व्रतके लिअे रखने चाहिये। सभव है कि जिस पदार्थको वे स्वय चख नही सकेगे अुसका नैवेद्य भी न हो। यह भी होना सभव है कि भोग तो दिया जाय, और दूसरे दिन अुसे प्रसाद मानकर खाया जाय। अर्थात् वासी वनाकर खाया जाय, जो विशेप वुरा हे।

साराश, मास-भोजन और मास-वलिदान दोनोको अेक-दूसरेसे अलग नही कर सकेगे।

वडे राजा-महाराजा सहज दावतके लिअे कितने ही प्राणियोका कत्ल कर डालते है। ये लोग वर्पमें दो चार रोज दावत करते है। देवको वीचमे से हटा दे और अुनी दिन दावतके लिअे अितने प्राणियोकी हिसा यदि करे, तो आपको क्यो आपत्ति नही मालूम होती? आप यही क्यो नही समझ लेते

कि देव तो नाममात्र है, वास्तवमे यह अनका दावतका दिन होता हे। यह बात अेक विचारके लिअे रखता हू। सिद्धान्तके स्वरूपमे नही।

चोरीके मामलेमे आप जिस तरह पडे वह ठीक न हुआ। मुझे डर है कि कबूली करानेमे आपने अुस बाअीको खतरेमे डाल दिया हे। पुलिस आपकी ही गवाही पर अुस बाअीका चालान कर दे यह सभव हे। आपको पुलिसको यह कहना चाहिये था कि बाअीको मारना-छोडना बेकानून हे। यह नही कर सकते। यदि अुस बाअीको अब छोड दे तब तो ठीक है, नही तो आपको भी अुसके पीछे खराब होना होगा। खैर, जो हुआ सो हुआ।

पू० नाथजीका पोस्टकार्ड परसो आया था। अुनके पैरको अभी ठीक आराम नही हुआ हे। आज अुन्हे मैने पत्र लिखा है। आपका पत्र भी भेज दिया हे।

पू० नाथजीके पास आजकल मै नही जा सकता हू।

सौ० गोमती आपको प्रणाम लिखाती हे।

आपका
किशोरलाल

५

मावली गावमे तालाब पर स्नान करती अेक बहनकी दूसरी बहनने सोनेकी कुछ चीज चुरा ली थी। लोग अुसे सता रहे थे। मै बीचमे पडा और अुसे समझाकर चीज वापिस करा दी। अिस पर किशोरलालभाअीने लिखा था — 'बाअीमे (आपने) चोरी कबूल कराअी। अगर पुलिस अुसको फसानेमे आपकी ही गवाही दे तो?' लेकिन अैसा कुछ नही हुआ। यह भी मैने अुनको लिख दिया था। मासाहारका प्रश्न तो चल ही रहा था। अिस पर अुनका अुत्तर आया

वर्धा, १२-१०-'३५

प्रिय श्री बलवतसिहजी,

आपके सब पत्र मिले है। परतु बहुत दिनसे आपको अुत्तर भेज नही सका। मेरी तबीयत अब पहलेसे अच्छी तो हे, फिर भी दमेकी शिकायत अभी बन्द नही हुअी।

अुस चोरीके विषयमे पडनेमे कुछ खतरा नही हुआ, यह जानकर खुश हुआ। शुभ निष्ठासे किये हुअे कामका फल शुभ हुआ यह ठीक ही हे।

जो लोग स्वय मासाहारी न होते हुअे भी मासका बलिदान चढाते है वे कम है। अुन लोगोने कुछ ही समयसे मासाहार छोडा हुआ रहता है। अुनकी २–३ पीढीके पूर्वज मासाहारी रहे होगे। अिन लोगोसे मासका बलिदान छुडानेमे कामयाबी प्राप्त होती है। मै मानता हू कि मासका बलिदान छुडानेके पहले मासाहार छूटनेकी आवश्यकता है। और मासाहार छुडानेकी हम चेष्टा न करे तो बलिदान छुडानेमे विशेष सफलता न मिलेगी।

आप अपना बगीचा खूब अच्छा बना ले। हम आवेगे तब हमको शाकभाजी खिलायेगे न?

बम्बअीमे गगाबहनके भतीजे श्री बचुभाअी बहुत बीमार हो गये थे। आपरेशन करना पडा था और स्थिति काफी गभीर थी। दूसरे पुरुषका रक्त भी भरना पडा। समाचार है कि अब भयमुक्त है, अैसा डॉक्टर मानते है। गगाबहन बम्बअी गअी है। पू० नाथजी भी जाया करते है।

श्री सुरेन्द्रजीका आपके नामका पत्र बहुत दिन पर आया था। साथमे भेज रहा हू।

साथका पत्र भाअी दौलतको दीजियेगा।

गोमतीका प्रणाम स्वीकार करे। बहुत करके यह महीना खतम होते ही मै अेक-डेढ महीनेके दौरे पर जाअूगा। पढरपुर और भावनगर ये दो निश्चित है। बीचका समय जहा जा सकू वहा ही सही।

आपका
किशोरलाल

६

मेरा बुनाअीका काम पूरा हो चुका था। बुखारके कारण कमजोरी थी। मै सावलीके बारेमे अपने पत्रोमे सतोष प्रगट किया करता था। अुस परसे बापूजीको लगा कि सावली मुझे प्रिय है, अिसलिअे अगर सावलीमे ही रहनेकी मेरी व्यवस्था हो जाय तो मुझे पसद आयेगी। अिसलिअे अुन्होने अिस प्रकारका प्रबध करनेका विचार किया और मुझे भी लिखा कि तुमको सावलीमे शाति मिले तो वहा रहनेका प्रबध किया जा सकता है। अिसका अर्थ मैने यह किया कि बापूजीके मनमे मेरे प्रति असतोष है और वे मुझे अपनेसे दूर रखना चाहते है। बापूजीके आसपास १ साल रहनेकी बात भी पूरी होने जा रही थी। अिस परसे मैने बापूजीको लबा पत्र लिखा था। अुसका जवाब किशोरलालभाअीने लिखा

वर्धा, १-४-'३६

प्रिय श्री बलवन्तसिंहजी,

आपका पत्र कल मिला। आज श्री रामदासभाओीका पत्र भी मिला है। मेरे पहले पत्रसे आपको बहुत शोक हुआ यह जानकर कष्ट हुआ। मैं मानता था कि पू० बापूजीके पत्रसे आपका समाधान हुआ होगा और आप सावलीका काम पूरा करके आपकी अनुकूलतासे वहासे निकलेंगे। पर श्री रामदासभाओीके पत्रसे मालूम होता है कि पू० बापूजीके पत्रसे आपका असतोष हटा नही है और अुस पत्रके पीछे पू० बापूजीका या मेरा आपके विषयमें कुछ असतोषका भाव है अैसा आप मानते है।

अिस विचारमें भूल है। पू० बापूजीने जो कुछ लिखा है और मैंने भी जो कुछ लिखा था अुसके पीछे आपके विषयमें किसी प्रकारका असतोष, अविश्वास या प्रेमकी न्यूनता नही है। बल्कि आपकी कठिनाअियां और विचार-पद्धतिको मान्य करके ही पू० बापूजीने सावली छोडनेकी बात मजूर की है। आपने तो मुझे लिखा था न कि मैं पू० बापूजीसे आपकी ओरसे वकालत करू? मैंने जोरसे आपकी वकालत तो न की, पर सिद्धान्त रूपसे पू० बापूजीने आपको सावलीमें रहनेकी जो सूचना की थी अुसका विरोध किया था। अिसमें मैंने यह मान लिया था कि पू० बापूजी अपनी ही ओरसे आपको सावलीमें रखना चाहते थे। पर पू० बापूजीकी मान्यता थी कि आपको सावलीमें समाधान और सतोष प्राप्त हुआ है, अिससे यदि सावलीमें रहनेके लिअे प्रबंध हो जाय तो आपको बहुत हर्ष होगा। अिसमें अुन्होंने अुस तरहकी सूचनायें दी। आपकी तबीयत वहा नादुरुस्त हुअी है सही, पर पू० बापूजीका अुस विषयमें अितना ही खयाल पहुंचा था कि वह अेक प्रासगिक बीमारी है। कुछ दिनमें ठीक हो जायगी। आपको वहाका जलवायु अनुकूल नही है, अितना पू० बापूजीके खयालमें नही आया था। मैंने जो पू० बापूजीके पास दृष्टि रखी थी वह केवल स्वधर्माचरणके विचारसे। मेरा अुनसे यह निवेदन हुआ कि सावलीका जलवायु अनुकूल भी हो फिर भी आपका अपने प्रान्तमें काम करना विशेष रूपमें स्वधर्म है और आपका पहलेसे अैसा विचार भी था। तब आपको सावली रहनेकी सूचना करना अयोग्य है। पू० बापूजीने अिस बातको मान लिया है।

सक्षेपमें आप बिलकुल अैसा न समझें कि आपको सावली छोडनेकी अिजाजत देनेमें किसी प्रकारका पू० बापूजीके मनमें असतोष है। मैं तो अुसको

कर्तव्य-सा ही मानता था और मैंने आपसे वैसा कहा भी था। पू० बापूजीको आपसे संतोष है अिसीलिअे अुन्होंने लिखा है कि मेरा आशीर्वाद लेकर जाओ। पू० बापूजीके पत्रसे पता लगता है कि आपको साबलीमें ही रहना चाहिये अैसा अुनका स्वतंत्र अभिप्राय न था, बल्कि आपको प्रिय मालूम होगी अैसे खयालसे ही वह सूचना की थी। आपका अपने गांवके पासमें ही काम करना अुनको बिलकुल पसंद और प्रिय है।

आशा है अितनेसे आपका समाधान होगा। आप सावलीके कामसे अपनी अनुकूलतासे निवृत्त होकर यहां पर आअियेगा। यहांसे पू० नाथजीके पास जाअियेगा। या पू० बापूजी यहां आवें तब तक वहीं ठहरियेगा और फिर अुनका आशीर्वाद प्राप्त कर बम्बअीमें पू० नाथजीसे मिलकर अुनका आशीर्वाद प्राप्त कर अपने गांवकी ओर जाअियेगा। मनमें से संदेहका भाव निकाल दीजियेगा। आपके पत्र तो पू० बापूजीके पास रह गये हैं। पू० बापूजी कांग्रेस तक यहां न आवेंगे और यहां भी थोड़े ही दिन ठहरकर पंचगनी जायेंगे।

आपके पत्रसे हमें कोअी आघात नहीं पहुंचा। पू० बापूजीको अितनी-सी बात पर आघात पहुंच ही नहीं सकता। आपने अैसी कोअी बुरी बात तो कही ही न थी, न दुराग्रह भी बताया था। केवल अत्यंत संकोचपूर्वक, नम्रतासे अपनी कठिनाअियां बताअी थीं। क्या बापू जैसे अुदार पुरुषको अितनेसे ही आघात लग जाय अैसा हो सकता है? आप तनिक भी अिसका विषाद न रखें, और अिसे मनमें से निकाल ही दें।

गोमतीका प्रणाम स्वीकारियेगा। आपका अुस पर पत्र है, पर पत्रका अुत्तर देना तो अुसके लिअे आसान बात नहीं है। वह तो कहेगी बातें हो जायगी, फिर सब ठीक हो जायगा।

पू० नाथजीको भी आज पत्र दिया है। आपकी ओरसे लिखा है।

आपका
किशोरलाल

७

बापूजीको कष्ट देनेके कारण मुझे भी कष्ट और ग्लानि होती थी। अिसलिअे मैं अपने पत्रोंमें पश्चात्तापसे अपने आपके लिअे कुपात्र आदि विशेषण लिखता था। मैं अपने प्रान्तमें जाना चाहता था, यह तो पुरानी बात थी।

बापूजीने तो पहले भी कहा था और अब भी लिखा, लेकिन मुझे सतोप नही हो रहा था। अपने मनका सारा हाल मैने अुनको लिखा था। अुमके अुत्तरमे किशोरलालभाओीने लिखा

वर्धा, ७-४-'३६

प्रिय श्री बलवन्तसिहजी,

आपका पत्र मिला। पू० बापूजीको अुनका पत्र अभी नही भेजता। वे काग्रेसके कार्यमे बहुत निमग्न होगे, अिससे अुन पर अधिक भार डालना योग्य नही है। और आपको जल्दी भी नही है। आप शान्त भी हुअे है।

शात हुअे है यह जानकर सतोष हुआ। पर अभी आपकी अुलझन सुलझ गअी हो अैसा मालूम नही होता है। पिछले पत्रके बाद आपको कोअी प्रश्न नही अुठना चाहिये था। साबलीकी आबोहवा आपको अनुकूल नही होती है, यह आपने जो बताया है वह केवल कल्पना ही है, अैसा किसीका अभिप्राय नही है। अिस कारण आपको वहा रहनेमे क्या तकलीफ है, अिसका यदि आपने जिक्र किया तो अुसमे आपकी कोअी भूल नही है। वह स्पष्ट रूपसे बता देना योग्य ही था।

पर अिसके अलावा आपका जो मूल सकल्प अपने प्रान्तमे अपने वतनके पास ही कार्यमे लग जानेका था अुसे मै तो स्वधर्माचरण ही मानता हू। पू० बापूजी भी वैसा ही मानते है। तब आपकी वहा जानेकी अिच्छा होना धर्मानुकूल है। वहा जानेके लिअे पू० बापूजीकी सम्मति ही है। जब सम्मति है तब अुनका आशीर्वाद भी है, और अपने समीपसे दूर करनेका भाव नही हो सकता है। आपमे किसी प्रकारका असतोष पू० बापूजीके दिलमे मैने नही पाया है, न मेरे मनमे भी कभी आया है।

मै जो आपको लिखता हू वह आपको दोप देनेके लिअे नही लिखता हू। आपके गुण और श्रद्धाको अधिक बलवान करनेके लिअे लिखता हू। आप अपने पत्रोमे सदैव आत्मनिदा किया करते है। खुदके लिअे कुपुत्र, कुपात्र आदि तिरस्कारके शब्द लगाया करते है। यह नही होना चाहिये। अुसकी जरूरत ही नही है। अिस आत्मनिदासे हमारा पुरुपार्थ कम हो जाता है। किसी विपयका अपनी बुद्धिसे निश्चय करनेकी ताकत ही चली जाती है। हरअेक विपयमे दूसरेकी तरफसे आज्ञा, सूचना, मार्गदर्शनकी अपेक्षा की जाती है। सदैव परावलबी, पराश्रयी रह जाते है। प्राय हमारे धर्मगुरु भी शिष्यमे

अिसी वृत्तिका पोषण करते है। अपने शिष्य अपने ही पर हमेशा निर्भर रहें, अपनेको बिना पूछे कुछ भी न करे अैसी वे अिच्छा रखते हैं। पू० बापूजी या पू० नाथजीका यह अभिप्राय नही है। अिसीसे तो वे किसीको अपना शिष्य नही बताते हैं। अुनको साथी कहा करते है। शिष्य हरअेक बात गुरुको पूछ कर ही करे, यह अुनकी अिच्छा नही है। पर समझने योग्य हो वह समझ लिया, पूछने योग्य पूछ लिया, सलाह ले ली — फिर अुस पर विचार करके अपने आप निर्णय कर ले, अैसा गुरु-शिष्य सबध होना चाहिये। गीतामे भी तो श्रीकृष्ण द्वारा अुपदेश दिलाकर आखिरमे यही कहा है कि 'अिस प्रकार मैंने तुझे गुप्तसे गुप्त सब ज्ञान दिया। अब तू अिस पर गौर कर और फिर जैसा ठीक जचे वह कर।' आज्ञा देनेके प्रसग हमेशा नही होते है। जहा आज्ञा देनेसे शिष्यके द्वारा कोअी महत्त्वका कार्य होना, अथवा शिष्यका किसी बडी आपत्तिसे रक्षण होना या किन्ही दूसरे लोगोके साथ अपनी आपत्ति निवारण होना सभव हो वहा आज्ञा भी दी जा सकती है। वरना मौके पर धर्म अथवा व्यवहारकी सामान्य राय देकर शिष्यको स्वतत्रता देना यही गुरुका धर्म होता है। अैसा विवेक न करे तो गुरु और शिष्य दोनोके लिअे बडी आफत हो जाती है। आपमे आत्मविश्वास बढानेके लिअे और विचार करनेके लिअे यह लिखता हू। आप अिस पर दुःख न माने। अपनी अयोग्यता न माने। आत्मनिंदा न करे।

श्री रामदासभाअीकी तबीयत खराब हो गअी, यह सुनकर रज होता है। अुपचार करते ही होगे। अुन्हे अभिवादन।

आपका
किशोरलाल

* * *

बापूजीके आसपास मेरे रहनेका करीब करीब अेक वर्ष पूरा हो चुका था। और अब मुझे कहा जाना चाहिये यह प्रश्न मेरे सामने था। लेकिन मेरे मनकी गति बडी विचित्र थी। बापूजीको छोडना मनको चुभता था और रहनेकी अिच्छा भी नही होती थी, क्योकि अुनके काममे मेरे मनको शाति नही मिलती थी। अिसलिअे कहा जाना यही चर्चा बापूजीके साथ चलती थी। मैंने देखा कि बापूजी मुझे छोडना नही चाहते। अूपरसे तो मुझे कहते थे कि जहा जाना चाहो जा सकते हो, लेकिन मेरे जानेसे अुनके मनमें पीडाका अनुभव

हो रहा हे अैसा मुझे लगता था। अिस पीडाको न तो बापूजी ही प्रगट कर सकते थे और न मैं ही अपनी दुविधा अुनके सामने रख सकता था। बापूजी मुझे विचार करनेके लिअे कहते थे और मैं अुनको कोअी निश्चित जवाब नही दे सकता था। किशोरलालभाअीके साथ बात करनेके लिअे कहते थे। मैंने अुनके साथ बात की। मेरी बातोंसे अुनके दिल पर अैसा असर हो गया कि बापूजी तो मुझे खुशीसे अिजाजत देते हैं। लेकिन अब मेरे सामने यहासे गया तो कल रोटी कहा मिलेगी अैसा प्रश्न होनेसे मैं अिधर अुधरकी बहानेबाजी करता हू। जब अुन्होने मुझे यह बताया तो अुनकी बातसे मुझे धक्का-सा लगा और मैं अुनके पाससे चुपचाप चला आया।

"क्यो किशोरलालके साथ मिलकर क्या फैसला किया?" बापूने पूछा।

मैंने कहा, मैं आपसे अेक प्रश्नका अुत्तर चाहता हू, जिसके बाद मेरा फैसला हो जायगा। मैंने किशोरलालभाअीका शक अुनको बताया और कहा कि अगर आपके दिलके किसी कोनेमें अैसा थोडा भी शक हो कि मेरे सामने रोटीका सवाल है तो मेरा फैसला है कि अिसी वक्त चला जाअूगा। मैं तो सिर्फ अिसलिअे हिचक रहा हू कि मै देख रहा हू कि आप मुझे प्रसन्नतापूर्वक अिजाजत नही दे रहे हैं और आपको अप्रसन्न करके जाना मुझे जन्मभर दु:ख देगा। अिसलिअे आपको छोडकर जानेकी मेरी हिम्मत नही होती। मेरा हित किसमे हे अिसे आप भलीभाति समझते हैं और अुसी दृष्टिसे आप विचार करते हैं। आपके अिस प्रेमके कारण ही मैं दुविधामे पडा हू। अगर मेरे मन पर यह असर हो जाय कि आपके मनमे भी किशोरलालभाअी जैसा विचार आया है तो मैं आपके पास अेक रोज भी नही रह सकूगा।

बापू खूब जोरसे हसे और बोले

"हा, मुझे भी किशोरलालभाअीने कहा है। लेकिन तुम्हारे बारेमें मेरे मनमे अैसा लेशमात्र भी शक नही है। मैं तो यही देख रहा हू कि अभी तक तुम्हारा चित्त स्थिर नही है और तुम यहासे जाओगे तो दो महीने भी शातिसे नही रहोगे। या तो नायके पास भागोगे या मेरे पास। अिसलिअे मैं चाहता हू कि तुम स्थिरचित्त होनेके बाद मेरे पाससे कही जाओ तो मुझे

निश्चिन्तता रहेगी। जितना तुमको मैं पहचानता हू अुतना किशोरलाल नही पहचानता।"

जिस प्रकारका मेरे दिलमे शक था वही बापूजीके दिलसे निकला। मैं खुद अपनी अस्थिरता समझ रहा था, और अिसीसे बापू परेशान है यह भी समझ रहा था। बापूका अितना प्रेम देखकर भला मैं अुनको छोडनेकी हिम्मत कैसे कर सकता था? तो भी मूढताने मुझे अितना घेर रखा था कि मैं कोअी साफ निर्णय नही कर सकता था। बापूने कहा, "सोचो और विचार निश्चित करके मुझे बताओ।"

पू० किशोरलालभाअीकी रोटी न मिल सकनेकी बात मुझे अितनी चुभी कि मैंने अुनको अेक भिनभिनाता लबा पत्र लिखा जिसमे कहा कि मुझे अब तक पता नही था कि अर्थ आप जैसे साधु पुरुषको भी अितना नीचे ले जा सकता है। अुसके अुत्तरमे अुन्होने लिखा

दिनाक, १६-५-'३६

प्रिय श्री बलवन्तसिहजी,

आपका पत्र कल शामको मिला। मेरे शब्दोसे आपको बडा दुःख हुआ है। अिस दोषके लिअे क्षमा कीजियेगा। मेरे मनमे जो विचार आ गये वे रख दिये। ये विचार मनमे आने पर भी आपको कह न देता तो और भी अधिक दोष हो जाता। अैसे विचार करनेमे आपके प्रति अन्याय हुआ हो यह सभव है। मुझमे है अुससे अधिक साधुताका आप मुझमे आरोपण न करे। अैसा करनेसे ही आपने मेरे अभिप्रायको ज्यादा महत्त्व दिया, और दुखित हो गये। खैर। अब शान्त हो जाअियेगा। पू० बापूजीकी आज्ञाको अुठाते रहनेमे सतोष रखियेगा। जैसा वे चाहे वैसा ही करते रहियेगा। श्री मीराबहनको प्रणाम। गोमतीने आपको प्रणाम लिखाया है। दोनो कुशलसे प्रवास कर रहे है। आज श्री मथुरादास भाअीके मधुवनी आश्रमकी ओर जा रहे है।

आपका
किशोरलाल

पू० किशोरलालभाअी स्पष्टवक्ता थे और कठोर सत्य कहनेकी क्षमता रखते थे। लेकिन अुनका हृदय स्फटिक जैसा निर्मल था। सरलता और नम्रताकी वे मूर्त्ति थे। जिसे वे कठोर सत्य कहकर तिलमिला देते थे, अुसके प्रति अुनकी

सहानुभूति और स्नेहमे जरा भी अन्तर नही पडता था। मेरा और अुनका मनध सगे भाअीमे भी अधिक घनिष्ठ था, क्योंकि वे नाथजी और वापूजी दोनोका प्रतिनिधित्व मेरे प्रति निभानेमे कुछ भी अुठा नही रखते थे। और अुसे अन्त समय तक अुन्होंने पूरी तरह निभाया।

११

सेवाग्राम आश्रमकी नींव

अिन्ही दिनो (सन् १९३६) यह तय हुआ कि वापूजी मगनवाडीसे जाकर सेगाव रहेगे और मीरावहन पासके ही दूसरे गाव 'वरोडामे अपनी कुटिया बनाकर रहेगी।

मीरावहन वापूको सेगावमे वसानेकी व्यवस्था करने लगी। वापूजी सेगावको देखना चाहते थे। ३० अप्रैलको वहा जानेवाले थे। रातको मगनवाडीकी छत पर मैं सो रहा था। मुझसे श्री अमृतलालजी नाणावटीने आकर कहा, आप वापूसे वात करना चाहते थे, अिसलिअे कल वहुत अच्छा मौका है। वापूजी कल सुवह पाच वजे सेगाव जा रहे है। अिसलिअे रास्तेमे आपसे सब वात हो जायगी। अिस कार्यक्रमका मुझे बिलकुल पता नही था। वस, मैं वापूजीके साथ हो लिया। वापूजी जब वर्धासे गुजर रहे थे तो जमनालालजीके पुरोहित प० रोडमलजी मिले। वे पहले जमनालालजीकी मगनवाडीकी खेती सभालते थे और वादमे सेगावमे जाकर अुन्होंने अपना काम जमाया था। वापू अुन्हे देखकर हसे और वोले, "आज सेगाव जा रहा हू।"

रोडमलजीने कहा, "मगनवाडी तो छीन ली, अव सेगाव भी ले लीजिये।"

वापूने कहा, "मेरा और काम ही क्या है?"

अुस समय जमनालालजीके मुनीम श्री चिरजीलालजी वडजाते वापूके साथ थे। और लोग भी थे। गाडीका साधारण रास्ता था सो भी हम भूल गये थे। साथमे वैलगाडी थी, लेकिन वापू पैदल ही गये।

मीरावहनने वापूजीके लिये कुअेके पास अमरूदके वगीचेमे वासकी चटाअीकी अेक झोपडी, चलता-फिरता अेक पाखाना, और चार खभोंके आसपास वासकी चटाअी लपेटकर स्नानघर वनाया था। अेक वकरी

भी रखी थी। मीराबहनकी अेक गाय और अेक घोडा भी था। घोडेका नाम सजीला था। अेक बिल्ली और अेक कुत्तेका बच्चा भी अुन्होंने पाल रखा था। बापूके लिअे अेक पेडके नीचे चटाअी बिछा दी। अुस पर अुनका सब सामान रख दिया। बापूने स्नान किया, सब देखा और अपने काममे लग गये। गामकी प्रार्थना वस्तीमें हुअी। श्री जमनालालजी भी पहुच गये थे। बापूने हिन्दीमे भाषण दिया। अुसका मराठीमे अनुवाद करके लोगोको सुनाया गया। अनुवाद करनेवाले कौन थे यह मुझे पता नही था। लेकिन सीकरमे पूज्य जाजूजीने बताया था कि अनुवाद अुन्होंने किया था। बापूजीने अपने भाषणमे कहा कि "मै आपके गावमे आ गया हू, आप लोगोकी सेवाकी दृष्टिसे। मीराबहन, जो आप लोगोके बीचमे रहती है, यहा हमेशाके लिअे बस जानेका अिरादा लेकर आअी थी। मगर मैं देखता हू कि अुनकी वह मशा पूरी नही हो रही है। कमी अुनमे अिच्छाशक्तिकी नही है, पर शायद अुनका शरीर अशक्त है। यह तो आप जानते हैं कि हम दोनो अितने समयसे अेक सामान्य सेवाके बधनसे बधे हुअे हैं। अिसलिअे मैंने सोचा कि जो काम मीराबहन न कर सकी, अुसे पूरा करना मेरा धर्म हो जाता है।

"परतु बचपनसे ही मेरा यह सिद्धान्त रहा है कि मुझे अुन लोगो पर अपना भार नही डालना चाहिये, जो अपने बीचमे मेरा आना अविश्वास, सन्देह या भयकी दृष्टिसे देखते हैं। अिस भयके पीछे यह कारण है कि अस्पृश्यता-निवारणको मैंने अपने जीवनका अेक ध्येय बना लिया है। मीराबहनसे तो आपको यह मालूम हो ही गया होगा कि मैंने अपने दिलसे अस्पृश्यता सपूर्णतया दूर कर दी है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, महार, चमार सभीको मैं समान दृष्टिसे देखता हू। और जन्मके आधार पर माने जानेवाले अिन तमाम अूच-नीचके भेदोको मैं पाप समझता हू। पर मैं आपको यह बता दू कि अपने अिन विश्वासोको मैं आप पर लादना नही चाहता। मैं तो दलीलें देकर, समझा-बुझाकर और सबसे बढ कर अपने अुदाहरणके द्वारा आप लोगोके हृदयसे अस्पृश्यता या अूच-नीचका भाव दूर करनेका प्रयत्न करूगा।

"आपकी सडको और बस्तियोकी चारो तरफसे सफाअी करना, गावमे कोअी बीमारी हो तो यथाशक्ति लोगोको सहायता पहुचानेकी कोशिश करना और गावके नष्टप्राय गृह-अुद्योगो या दस्तकारियोके पुनरुद्धारके काममे

सहायता देकर आप लोगोंको स्वावलवी वननेकी शिक्षा देना — अिस तरह मैं आपकी सेवा करनेका नम्र प्रयत्न करूगा। आप मुझे अिसमे अपना सहयोग देगे तो मुझे प्रसन्नता होगी।"

सभाके वाद सेगावके दो सज्जनोंने वापूजीके अिस निश्चयका हार्दिक स्वागत किया और सहयोगका वचन दिया। परन्तु वूढे पटेल श्री काशीरावने खडे होकर कहा, "महात्माजी, आप यहा आये है अिसमे हमे आनद होता है। आपकी सव वाते हमे कवूल है, लेकिन हरिजनोंके साथ मिलनेकी आपकी वात हमको कवूल नही है।" वापूजी खूव हसे और वोले, "धीरे धीरे आपको सव वात समझमे आ जायगी।" लेकिन वादमे काशीराव पटेल वापूके भक्त वन गये। यह थी वापूजीकी लोगोंका हृदय-परिवर्तन करनेकी खूवी।

अुसी दिन गावमे अेक फौजदारीका केस हो गया था। किसीने अेक आदमीका सिर फोड दिया था। जव प्रार्थना हो रही थी, तभी लोग खूनसे लथपथ अुस आदमीको वापूके पास लाये। वे लोग मामला पुलिसके हाथोंमे सौपना चाहते थे। प्रार्थना पूरी होनेके वाद वापूजीने अुन्हे समझाया कि यह मामला पुलिसके हाथमे देनेसे दोनों पक्ष हैरान होंगे। जिसने अिस भाअीका सिर फोडा अुसने वडी भूल की। लेकिन आपको अुसे माफ कर देना चाहिये। अपने गावके झगडे आप आपसमे शातिसे निवटा लिया करेंगे तो ही गावमे प्रेम और मेल रहेगा और गाव अच्छा अुठेगा। लोग वापूकी वात समझ गये और शान्त हो गये। अिस प्रकार पहले ही दिन वापूजीको नोटिस मिल गया कि गावमे कैसी-कैसी समस्याओंका सामना करना पडेगा और गावके प्रश्नोंको किस प्रकार शाति और समझौतेकी भावनासे निवटाकर गावके लोगोंमे प्रेम और हेलमेल वढाना चाहिये।

अुस रोज मैंने सेगावसे लौटकर महिलाश्रममे अपने मित्र सत्यदेवजीके यहा भोजन किया और सो गया। सुवह फिर सेगाव गया। वापूजीके साथ काफी चर्चा हुअी। जव शामको चलने लगा तो वापूजीने पूछा, "कहा जाते हो?"

मैंने कहा — महिलाश्रम।

वापू — वहा क्या करोगे?

मैं — भोजन करूगा और वही सोअूगा। कल सुवह फिर आ जाअूगा।

बापूने कहा — क्यो, क्या सिर्फ भोजन करनेके लिअे जाते हो?

मैंने कहा — हा जी, आपने तो यहा किसीको भोजन न देनेका निश्चय किया है न?

बापूजीने अैसा कहा था कि वे सेवाग्राममे अकेले ही रहेगे। ज्यादासे ज्यादा बा अुनके साथ जा सकती है और लीलावती बहन। और कोअी आयेगा तो वे अुसे खाना भी नही देगे। अिसलिअे मैं खाना महिलाश्रममे खाता था और बात करने बापूजीके पास आ जाता था।

मीराबहनके पास सेगावका अेक गोविन्द नामका लडका था, जिसे वह बापूजीकी सेवाके लिअे तैयार कर रही थी। क्योकि मीराबहनको तो वहा रहनेकी अिजाजत नही थी। अुन्हे पासके ही वरोडा गावमे जाना था। बापूजी जब गये तब दूसरा अेक लडका दशरथ बापूजीके पास आया और कहने लगा, "मुझे तकली सीखनी है।" बापूजीने मुझसे कहा "अच्छा तुमको रोटी यही मिल जायेगी। मीराबहनके पास थोडा आटा होगा। तुम यहा रहकर अिन दोनो लडकोको धुनना और कातना सिखा दो।"

मुझे तो अितना ही चाहिये था। अुन दोनोको धुनना और कातना सिखाना और अुसके बदलेमे रोटी। दूसरे दिन भाअी मुन्नालालजी बजाजवाडीमे बापूजीके पास आ गये थे। अुन्होने मीराबहनके लेख 'हरिजन' मे पढे थे और वे मीराबहनके साथ सत्सगके लिअे सेगाव रहना चाहते थे। बापूके साथ अुनका परिचय पुराना था। जब अुन्होने सेवाग्राममे रहनेकी बात की तो बापूने अुनसे कहा कि अगर मीराबहन स्वीकार करे तो मुझे कोअी हर्ज नही है। मीराबहनने अुनकी बात कबूल की और वे सेगावमे रहने लगे। अिस प्रकार सेवाग्राममे हम दोनोका प्रथम प्रवेश हुआ।

अभी बापूजी दोचार दिन रहकर सिर्फ सेगाव देखने गये थे। जिस स्थान पर अभी आश्रम है वहा जमनालालजीका बडा खेत था और वहा पर अुनकी खेती चलती थी। अुसमे से अेक अेकड जमीन अुन्होने आश्रमके लिअे दी थी। मिट्टीकी दीवारका जो आदि-निवास है अुसकी नीव बापूजीका निवास-स्थान बनानेके लिअे खुदी थी। मीराबहनने बा और बापूके लिअे रस्सीकी दो खाटे बनाकर तैयार करा रखी थी। खुदी हुअी बुनियादके बीचमे बापूजीकी खाट बिछाअी गअी और बुनियाद पर तख्ता रखकर आने-जानेका मार्ग बनाया गया। बापूजी दिनमे बगीचेमे काम करने और रातको वहा सोते थे। गामकी प्रार्थना सेगावमे होती थी और प्रातःकालकी वही पर। अुसी समय पू० काका-

साहब और नाणावटीजी भी अेक रोज बापूजीसे मिलने आ गये थे और वही सोये थे। मेरे बापूजीके पास रहने न रहनेका कोअी निश्चित निर्णय नही हुआ था। लेकिन बापूजीने कहा कि अभी तो मै नन्दी हिल जाता हू, तब तक तुम मीराबहनके साथ रहकर मकान और रास्ता बनवानेमे मदद करो। वहासे लौटकर आने पर विचार करेगे। तुमको भी तब तक विचार करनेका मौका मिलेगा। अिस प्रकार अेक महीना मीराबहनके काममे मदद करनेका निश्चित हुआ। ५ और ६ मअीको पवनारमे खादीयात्रा थी। बापूजी सेगावसे सीधे पैदल ही पवनार आये और खादीयात्रामे अपना भाषण देकर वर्धा चले गये। वहासे अुस दिन या दूसरे दिन नन्दी हिल चले गये। पू० बा भी अुस समय बापूजीके साथ थी।

मेरा सामान मगनवाडीमे था। अुसे लेकर मैं निश्चित रूपसे सेगाव रहनेके लिअे चला आया।

सेगावका मकान और रास्ता बनाना था। क्योंकि वर्धासे टेकरी तक तो गाडीका रास्ता था, किन्तु अुनको आश्रमके साथ मिलानेका कोअी रास्ता नही था। बीचमे लोगोके खेत पडते थे अिसलिअे सीधा रास्ता तो नही बन सका। परतु जहा जमनालालजीके अधिकारकी बंजर भूमि थी वहासे रास्ता बनाया, जो आज भी टूटी-फूटी हालतमे बगीचे और गोशालाके दक्षिणमे घूमकर आता है। मकानका काम मुझे और रास्तेका काम श्री मुन्नालालजीको सौपा गया। हम दो सिपाही और मीराबहन हमारी जनरल। अिस तरह हमारी फौज तैयार हुअी। अेक महीनेमे बापूजीके आनेसे पहले रास्ता और मकान तैयार करना था। अुस समय वहा मजदूर तो काफी मिलते थे, लेकिन चूकि मकानकी दीवार मिट्टीकी थी अिसलिअे अुसके सूखने पर धीरे धीरे काम चलता था। दिन निकलनेसे पहले ही स्त्री और पुरुष मजदूरोकी जरूरतसे ज्यादा भीड हो जाती थी।

अधिकाश लोगोको बडी कठिनाअीसे और दुःखसे वापस करना पडता था। अुस समय अेक पुरुषकी मजदूरी ढाअी या तीन आने और अेक स्त्रीकी मजदूरी पाच या छ पैसे थी। सुबहसे शाम तक हम काम करते रहते और रातको आठ बजेके बाद हमारा भोजन होता। सचमुच ही वे दिन हमारे अुत्साह और आनन्दके दिन थे। जब आधी-तूफान व वर्षा आती तो मीराबहनकी गाय और घोडेको जमनालालजीके बैलोके साथ और बापूजीकी बकरीको किसी अेक कोनेमे बाधते और हम तीनोकी खाटे अुस कोठरीमे रहती, जो आज कुअेके

पास अुत्तर-दक्षिणमे बनी हुअी तीन चार कोठरियोमे से अुत्तरकी अन्तिम कोठरी है। जब हम तीनो अुस कोठरीमे पहुच जाते तो अैसे आनन्दका अनुभव करते मानो किसी राजाके महलमे पहुच गये हो। आज अुस बेचारीको कोअी पूछता नही। यो ही टूटी-फूटी हालतमे पडी है। समयकी बलिहारी है!

अुसी समय मेरा मीराबहनसे निकट सबध आया। हम तीनो सगे भाअी-बहनकी तरह काममे जुटे रहते थे। कभी कभी हमारी आपसमे चकमक भी झड जाती थी। परतु अधिकतर दिन कामके आनन्दमे और रात नींदके आनन्दमे बीतती थी।

अुसी समय मीराबहनको दौड-धूपमे बुखार आ गया। बापूजीने अुन्हे वर्धा जानेकी सलाह दी थी, मगर अुन्होने सेगाव नही छोडा और हमारी सेवासे ही सतोष माना। अिसका बहुतसा स्पष्टीकरण मीराबहनके पत्रोसे हो जाता है। बरसात सिर पर झूल रही थी और कभी कभी पानीके झोके भी आ जाते थे। अेक रोज तो बापूके स्नानघरका बना-बनाया काफी हिस्सा पानीसे गिर गया। अगर अुस समयका पूरा वर्णन लिखने बैठू तो अेक स्वतत्र पुस्तक बन सकती है। अैसे अुत्साह और आनन्दके दिनोका फिर अनुभव नही हुआ। पू० बापूजीने लिखा

चि० बलवन्तसिंह,

मीराबहनने खबर दी है कि सेगाव पहुच गये हो। अच्छा हुआ। अब मीराबहनकी सेवा करो और प्रफुल्लित रहो। मेरी आशा है कि कही जानेकी अिच्छा मेरे आने तक नही होगी। गोविन्द और दशरथको अच्छी तरह प्यार करो। शरीर अच्छा रखो।

नन्दीदुर्ग, १४–५–'३६　　　　　　　　बापूके आशीर्वाद

बाकी पत्र तो मीराबहनके नाम आते थे। अुनमे ही जो कुछ सूचना हमारे लिअे होती थी बापूजी लिखते थे। अुनमे से अेक महत्त्वपूर्ण पत्र जनताके लिअे बोधप्रद होनेसे यहा देता हू, जिसकी नकल मेरे पास है। अिसके लिअे मीराबहनकी अिजाजत नही ले सका हू। लेकिन मुझे विश्वास है कि मीराबहन आपत्ति तो कर ही नही सकती। बापूजीने अुन्हे लिखा

चि० मीरा,

आशा है नन्दीसे भेजे मेरे पत्र तुम्हे मिल गये होगे। हा डॉ० अन्सारीकी मृत्यु मेरे लिअे अेक भारी व्यक्तिगत हानि है। जन्म और

मृत्यु दोनों ही महान रहस्य हैं। यदि मृत्यु दूसरे जीवनकी पूर्वस्थिति नहीं है, तो बीचका समय अेक निर्दय अुपहास है। हमें यह कला सीखनी चाहिये कि मृत्यु किसीकी और कभी भी हो, अुस पर हम हरगिज रंज न करें। मेरे खयालसे अैसा तभी होगा जब हम सचमुच अपनी मृत्युके प्रति अुदासीन होना सीखेंगे। यह अुदासीनता तब आयेगी, जब हमें सचमुच हर क्षण यह भान होगा कि हमें जो काम सौंपा गया है अुसे हम कर रहे हैं। लेकिन यह कार्य हमें कैसे मालूम होगा? वह ओीश्वरकी अिच्छा जाननेसे होगा। ओीश्वरकी अिच्छाका पता कैसे चलेगा? वह प्रार्थना और सदाचरणसे चलेगा। असलमें प्रार्थनाका अर्थ ही सदाचरण होना चाहिये। हम रामायणसे पहले हर रोज प्रार्थनामें अेक गुजराती भजन गाते हैं, जिसकी टेक यह है 'हरिने भजता हजी कोओीनी लाज जती नथी जाणी रे' प्रार्थनाका अर्थ ओीश्वरके साथ अेक होना चाहिये।

खुशी है कि मकान बनानेमें प्रगति हो रही है। कमसे कम फिलहाल वरोडाकी जमीन और मकान बनानेके लिअे ३०० रुपये काफी होने चाहिये। मैं चाहता हूं कि तुम बाडको तंग कर लो। अुसके लिअे मजदूरी देनेकी आवश्यकता न होनी चाहिये। तुम्हारी देखरेखमें बलवन्तसिंह और मुन्नालालको बाड लगा लेना चाहिये। सामान पर तो लगभग कुछ भी खर्च न होना चाहिये। बाड और थोडीसी छाया ही मुख्य चीज है।

सस्नेह

बापू

हमारा मकानोंका काम चल रहा था। जिसको आदि-निवास कहते हैं वह मकान बन गया था। अुसके पश्चिममें दो छोटी कोठरियां थीं, जिनमें से अेकमें शौचालय और अेकमें स्नानघर था। मकानके ठीक पश्चिममें अेक छोटीसी गोशाला बनाओी, जो कोने और बडी कतारके बीचमें नीचा-सा मकान है। प्रार्थना-भूमि तैयार की, जो आज भी वैसी ही है और वहीं प्रार्थना होती है। वर्षाका मौसम आ रहा था। हम लोग मकान पर छत डालनेकी बहुत जल्दी कर रहे थे।

ज्यों ज्यों बापूजीके आनेकी तारीख नजदीक आती जाती थी, त्यों त्यों हमारे कामकी तेजी और घबराहट बढती जाती थी। कहीं अैसा न हो कि मकान तैयार न हो और बापू आ जायं। १५ जूनको बापूजी नन्दी हिलसे मगनवाडी आ गये और हमको खबर दी कि मैं कल सेगांव

पहुच रहा हू, रेलवेकी चौकी पर रास्ता बतानेके लिअे अेक आदमीको भेज देना। मकानके नीचेकी जमीन गीली थी। हमने अुसे रातभर लोहेके तसलोमे आग जलाकर सुखानेकी कोशिश की। अुसी रातको १० बजेसे भयानक तूफान और बरसात शुरू हुअी और लगातार गिरती रही। हमने सोचा कि अैसे तूफानमे वापूजी नही आ सकते। अिसलिअे हमने चौकी पर आदमी नही भेजा। अुधर वर्षामे दस पाच मिनटके लिअे पानी थम गया। वापूजीने कनुभाअीसे कहा, "देखो निकल सकते है क्या?" कनुभाअीने कहा, "हा, अब तो पानी बद है।" लेकिन बापू मगनवाडीसे निकले त्यो ही पानी फिर शुरू हो गया। वापूने कहा, "कुछ भी हो अब वापिस नही लौटेंगे।" अिधर हम तीनो मकानके किवाड बन्द करके अन्दर बैठे थे। हमारे मनमे खयाल भी न था कि वापूजी आ सकते है। थोडा किवाड खोला और रास्ते पर हमारी नजर पडी तो हममे से शायद मीराबहन ही चिल्ला अुठी, "अरे, वापूजी आ गये!"

मै छाता लेकर दौडा। वापूजी बोले, "अरे, अब तेरा छाता क्या करेगा?" वापूजी पानी आर कीचडसे लथपथ हो गये थे। अुनके साथ श्री कमलनयन बजाज और मुनीम श्री चिरजीलालजी बडजाते भी थे। अुनके पास बरसाती कोट थे, परतु वापूजी तो अपनी लगोटीमे ही थे। हमने आदमी नही भेजा अिसलिअे दु ख हुआ। लेकिन हमको क्या पता था कि अिस तूफानमे भी वे आ सकते है। वापूजीने कपडे बदले और हमने अुनको कम्बल वगैरा ओढा दिये। अुनको खूब ठड लग रही थी।

वापूजीने कहा, "यो तो मैने दक्षिण अफ्रीकामे बहुतसी मुसीवते अुठाअी है, मगर अितने भयकर तूफानमे अितना लबा रास्ता तय करनेका मेरे जीवनमे यह पहला मौका है।" मानो गावमे रहनेकी कठिनाअियोका प्रथम दर्शन भगवानने वापूको करा दिया। गावमे रहनेसे किन किन मुसीवतोका सामना करना पडेगा, जिसकी कल्पना अुस तूफानने पहले ही दिन वापूजीको करा दी। अुस दिनका चित्र आज भी जैसाका तैसा मेरी आखोके सामने नाच रहा है। वापूजीको हमने कहा लिटाया था, कैसे कम्बल ओढाया था, वे कैसे काप रहे थे और हमको भी अुन्हे देखकर कितनी मानसिक ठड सता रही थी, यह सब आज भी वैसा ही ताजा है। अगर मै चित्रकार होता तो आज साराका सारा चित्र खीचकर पाठकोको बता सकता था।

अिस तरह स्थायी रूपसे वापूजीके सेवाग्राम-निवासका श्रीगणेश हुआ।

१२

कार्यका आरंभ और विस्तार

बापूजीका फैसला

जैसा कि अूपर लिखा जा चुका है, बापूजीकी व्यक्तिगत सेवाके लिअे मीराबहनने गोविन्द नामक अेक हरिजन लडकेको तैयार किया था। बापूजीको कब खाना देना, कब क्या करना, आदि सब बातें अुसे समझा दी गअी थीं। मेरे जिम्मे सहज ही मीराबहनकी गाय और बापूजीकी बकरीकी सेवाका काम आया। पाखाना-सफाअी, बापूजीके कमोड वगैराकी सफाअी मैं ही करता था। क्योंकि यह तय था कि मीराबहन बापूजीके आते ही वरोडाकी झोंपडीमें चली जायेंगी। तदनुसार वे वहां चली गअीं और हमने बापूजीका सब चार्ज संभाल लिया। अभी तक मेरे सेवाग्राम रहने न रहनेका कोअी निश्चय नहीं हुआ था। ता० १८ को बापू आगेके कामके बारेमें सोचने बैठे। मुझसे कहा : "मैं तुमसे खुश हूं। मीराबहनको तुमने काफी संतोष दिया है। अिसलिअे मैं तुमको कहता हूं कि तुम्हारी जहां भी जानेकी अिच्छा हो जा सकते हो।" मेरी जानेकी तैयारी तो थी ही, लेकिन अपनी जिम्मेवारी पर मैं जाना नहीं चाहता था। अुसका अर्थ यह होता कि मैं खुद ही बापूको छोडकर चला गया। अिसलिअे मैं चाहता था कि बापू अपनी तरफसे मुझे कहें कि तुम फलां जगह जाओ तो अच्छा हो। अिससे मुझे अेक प्रकारका अुत्साह रहता। मैं यह भी देख रहा था कि बापूजी मुझे दिलसे छोडना नहीं चाहते थे। अिसलिअे मैंने कहा कि मैं अपने लिअे कुछ भी निर्णय नहीं करता हूं। सब आपके अूपर छोडता हूं। मेरे लिअे जो ठीक हो आप ही करें।

बापूजी गंभीर हो गये और बोले — अैसी बात है?

मैंने कहा — हां, जी।

बापू — देखो, खूब सोच लो।

मैंने कहा — खूब सोच लिया है।

बापू — अगर मैं तुमको काश्मीर या कन्याकुमारी भेजूं तो जाओगे?

मैंने कहा — हां, जी।

बापू — और मैं यहां रहनेके लिअे कहूं तो?

मैंने कहा — यहा रहूगा।

वापूने कहा — तो मैंने फैसला कर दिया। तुमको यही रहना है।

मैंने कहा — ठीक है।

वापूने कहा — अव हमको आगेके कामके वारेमे सोच लेना चाहिये। अगर हम अिसी अेक अेकड जमीनमे घिरे पडे रहे तो हमारा यहा आना व्यर्थ होगा। हमको तो देहातकी सेवा करना है। वह हम कैसे कर सकते हैं यह सोचो। अुसके लिअे जो साधन-सपत्ति चाहिये वह मैं जुटा दूगा। हम देहातके जीवनमे कैसे प्रवेश कर सकते है और अुनकी आमदनी वढानेमे क्या मदद कर सकते हैं? सफाअी और आरोग्यके लिअे क्या करना होगा? ये सव सोचनेकी वाते हैं।

वापूजीने अुस मकानके अेक कोनेमे अपना डेरा जमाया। पूर्व-दक्षिणके कोनेमे वापूजी रहते थे। अिस समय वा वापूजीके साथ नही थी। वापूजीने तय किया कि सुवह रोज अेक घटा वे सेगावके रोगियोको दिया करेगे। हमने गावमे खवर कर दी। सवेरे रोगी आते और वापूजी अुन्हे देखते। वापूजीके दवाखानेमे तीन चीजे मुख्य थी। सोडा-वाअी-कार्व, केस्टर ऑअिल और अेनीमा। और समझानेके लिअे अुनकी वाणी तो थी ही। रोगी आते, वापू अुनको देखते, हाल पूछते, और किमीको केस्टर ऑअिल, किसीको नीवूके साथ सोडा और जिसका पेट वहुत खराव हो अुसे अेनीमा देते थे। किसीसे कहते, भाजी खाओ, किमीसे कहते, छाछ पीओ, किमीको मिट्टीका प्रयोग वताते, तो किमीको टव-वाथका।

प्रार्थना

वापूने सोचा था कि मीरावहनके लिअे अेक गाय रखेगे और अपने लिअे वकरी। हम लोग गावमे से कुछ दूध लेते थे। अुस समय सारे सेगावमें मिर्फ ३ सेर गायका दूध होता था। ग्रामकी प्रार्थना हम सेगावमे करते थे। लोग आते थे। वापूजीसे कुछ कहते थे। सुवहकी प्रार्थना आश्रममें होती थी। अेक प्रसग अैसा भी याद है जव कि प्रार्थनामे मैं और वापूजी मिर्फ दो ही आदमी थे। श्लोक वापूजीने वोले थे और भजन 'प्रभु मोरे अवगुण चित न धरो' मैंने गाया था। गाते गाते मेरा गला रुध गया था, मानो मैं वापूजीसे क्षमा माग रहा था। वापूजी रोज सुवह घूमते समय ग्रामसेवा पर चर्चा करते थे और हमारे मनमे जो प्रश्न हो अुनका अुत्तर देते थे।

रोज सुवह वापू मीरावहनकी झोपडी तक जाते, अुनकी खैर-खवर पूछते और अुन्हे दूव पहुचाते थे।

प्रार्थना वापूजी ही कराते थे, क्योकि हममे वापूजीका ही स्वर अच्छा था। हम अुनका साथ देते थे। गीता भी वापूजी ही वोलते थे। वादमें भाअी मुन्नालालजीने वडी मेहनतसे गीता वोलनेका अभ्यास कर लिया था। अुनकी जहा भूल होती वापूजी नोट कर लेते और वादमे वताते थे। वादमे कनुभाअी गावीने भी गीताका अभ्यास कर लिया। वर्धाके अेक सस्कृतके पडित अिनको सिखानेके लिअे सुवह पैदल चलकर आते थे और जो सीखना चाहे अुसका पाठ शुद्ध कराते थे। मुझे तो समय ही नही मिलता था। लेकिन मुन्नालालभाअीने अुनका वहुत लाभ अुठाया और अुनका पाठ काफी शुद्ध हो गया था। वोलनेकी गति भी सवा घटेमे सारे गीता-पारायणकी हो गअी थी। अुनकी आवाज मेरे कानोको सहन नही होती थी। मैने वापूजीको अपनी कठिनाअी वताअी। वापूजीने गीता वोलनेके समय मुझे प्रार्थनासे अुठकर चले जानेकी अिजाजत दे दी। अत गीता प्रारम्भ होने पर मै प्रार्थनासे अुठकर चला जाता था। मुन्नालालजीने गीताका अितना अभ्यास किया कि अुससे अुनके कठमे भी काफी सुवार हो गया और मुझे भी वह अच्छा लगने लगा।

खुलेमें सोनेके लाभ

मै वापूजीका पीर तो नही, लेकिन ववरची-भिश्ती-खर जरूर था। भोजन वनाना, पाखाना-सफाअी करना, गोसेवा करना, दूसरी सफाअी करना, रातको सोते समय वापूजीके पैरोकी मालिश भी करना। वापूजी तो खुले आकाशके नीचे सोते थे। जव रातको पानी आता तो अुनका विस्तर भी भीतर करता और वरामदेमे टट्टे लगाता। अनेक वार अदर वाहर जानेका कार्यक्रम रातमे तीन चार वार तक भी चलता। क्योकि वापूजी कहते कि खुलेमे दो तीन घटेकी नीद छतके नीचे ली गअी रात भरकी नीदकी पूर्ति कर देती है। दूसरी वात यह कि खुलेमे थोडी जगहमे वहुत आदमी सोये तो कुछ भी नुकसान नही होता। छतके नीचे अधिक आदमी सोनेसे वहाकी हवा खराव होती है। जव मैने गोशालामे अपने लिअे कमरा वनानेकी वात की, तो वापूजीने कहा, "वरसातमे वचनेके लिअे अूपर छत भले वनाओ, लेकिन आसपासकी दीवारोकी क्या जरूरत है? खुली छतके नीचे जितने आदमी सो सकते है अुतनी जगहमे दीवारोके अन्दर नही सो सकते है। क्योकि खुलेमे सोनेसे हमारे अदरसे जो गदी हवा निकलती है वह खुले आकाशमे चली जाती है और हमको ताजी

हवा मिलती रहती है। सबसे बडा लाभ तो खुलेमे हमको आकाश-दर्शनका मिलता है। वह मन और तन दोनोके लिअे लाभकारी है। जिनको ब्रह्मचर्यका पालन करना है अुनको तो खुलेमे ही सोना चाहिये। बरसातसे बचनेके सिवा हमको छतकी जरूरत ही नही है।"

बापूजीकी बात तो मुझे ठीक लगी, लेकिन मैंने कमरेको बिलकुल खुला नही रखा। कमरेमे दोनो तरफ दरवाजे बनाये, जिसमे अिधरकी हवा अुधर निकल सके। अिससे भी मुझे तो बहुत ही लाभ हुआ। अब कही भी बन्द मकानमे सोनेका प्रसग आता है तो मेरा दम घुटने लगता है और गदी हवामे नाक फटने लगती है।

बापूकी अुदारता और कजूसी

बापूजी खुलेमे प्रार्थना-भूमि पर सोते और अुनके आसपास दूसरे लोग सोते थे। जब लोगोकी सख्या बढी तो प्रार्थना-भूमि रेलका मुसाफिरखाना बन गअी। कोअी बापूजीके अिधर, कोअी अुधर, कोअी पैरोके पास। अितने नजदीक सोते कि वह तो मुझे भी अखरता। बापूजीकी कुटीमे भी यही हाल रहता। जो आता अुसीको कहते, तुम भी यही पडे रहो। दूसरे मकानमे दूसरेके पास जगह भी हो तो बापूजी अुसकी सुविधाका ध्यान रखते, लेकिन अपनी कुटियामे असुविधा होने पर भी आनेवालोको टिका लेते थे। लोगोको भी अुनके पास रहने और सोनेमे अडचन महसूस होनेकी अपेक्षा आनन्द ही अधिक होता था।

आजकलके बडे लोग? जिनके पास कोअी डिग्री हो, किसी बडे पद पर हो, पास अधिक पैसा हो, अजी कोअी बडे महात्मा भी हो, अुनके लिअे आरामका अलग, कामका अलग, दूसरोंसे मिलनेका अलग और खानेका अलग कमरा चाहिये! लेकिन बापूजीका बिस्तर जितनी जगहमे आता था वही पर अुनका सब काम बडी आसानीसे हो जाता था। नया मकान बनाने या पुराने मकानमे कुछ सुधार करनेकी अिजाजत वे बडी अडचनके बाद कठिनाअीसे ही देते थे। आश्रमके मकान बापूजीकी कजूसी और सादगीकी गवाही दे रहे हैं। अुनकी मरम्मत करने और दीमकसे मुकाबला करनेमे हमको किन किन मुसीबतोका सामना करना पडा है, यह तो हम ही जानते हैं। मै गायका नाम लेकर तो जोरसे भी कुछ करा लेता था, लेकिन अपने लिअे कुछ सुविधा मागनेकी हिम्मत नही थी। बापूजी कहते थे, हम गरीबोंके प्रतिनिधि है। हमको जो पैसा मिलता है वह हमारी सुविधाके लिअे नही,

गरीबोंकी सेवाके लिअे मिलता है। सेवक सेव्यसे अधिक सुविधा पानेका विचार कैसे कर सकता है? मुझे लोग मेरे विश्वास पर पैसे देते हैं। अुनका हिसाब भी कोओी मुझसे नहीं मांगता है। कोओी भले न मांगे लेकिन भगवान तो मांगेगा। अगर हम पैसा अपनी सुख-सुविधामें अुड़ाने लगेंगे तो लोग भी हिसाब मांगेंगे। मांगनेका अुन्हें अधिकार भी है। अिसलिअे संयमसे खर्च करनेमें ही हमारी शोभा है।

संसारीका टूकड़ा नौ गज लम्बे दांत,
भजन करे तो अूबरे नहिं तो काढ़े आंत।

कबीरके अिस वचनका दृष्टांत बापूजी अनेक बार देते थे। अगर हमसे छोटीसी पेन्सिल गुम हो जाय या अेक पैसा भी व्यर्थ खो जाय तो बापूजीको जवाब देना बिल्लीके गलेमें घंटी बांधनेसे भी कठिन पड़ता था। अिसलिअे बापूजीके पास रहनेका जितना लोभ होता था, अुतना अिन सकड़ी गलियोंमें से गुजरते समय कहीं फंस न जाय अिसका डर भी बना रहता था। अिसलिअे बापूजीको कभी किसीसे यह कहनेका प्रसंग भी नहीं आता था कि तुम यहां रहने लायक नहीं हो, चले जाओ। लोग अपने आप ही अपना माप समझ लेते थे। जो सकड़ी गलीमें से गुजरनेके लिअे अपने शरीरको पतला करनेकी या अुसमें अुलझ गया तो मरनेकी भी तैयारी रख सकता था, वही अुनके पास टिक पाता था।

कबिरा भाटी प्रेमकी बहुतक बैठे आय,
सिर सोंपै सो पीवअी और पै पियो न जाय।

यह कसौटी थी बापूजीके पास रहनेकी।

साथियोंकी भूलोंके लिअे क्षमावृत्ति

अेक रोज बापूजीके पास ही भाअी मुन्नालाल प्रार्थना-भूमि पर सो रहे थे। ३ बजे पेशाबके लिअे अुठे। नींदमें वहीं नजदीकमें पेशाबके लिअे बैठ गये। दैवयोगसे बापूजी देख रहे थे। जब वे वापिस आये तो बापूजीने पूछा, मुन्नालाल, वहां क्या कर रहे थे? बस मुन्नालालजीके तो देवता कूच कर गये। जड़वत् बनकर चुप रहे। थोड़ी देरमें अपनी भूलका भान हुआ तो बोले, "बापूजी, भूल हो गअी। मैं आधी नींदमें था। आगेसे अैसी भूल नहीं होगी।" बस बापूजीको अितना ही चाहिये था। मुन्नालालजीको कायमका पाठ मिल गया। अुनके ही हाथसे अेक रोज दूसरी अेक बड़ी भयानक भूल हो

गअी। अेक रोज सुबह ४ की घटीके बाद बापूजी अुठे। दूसरे लोग भी अुठे। जो बहन बापूजीकी सेवामे थी वह बापूजीका पेशावपॉट खाली करने और खुद भी निबटने गअी। और मुन्नालालभाअीसे कह गअी कि बापूजीको मजनकी शीशी दे देना। बापूजी सोते समय अपने पास दतमजन, पुटाश परमेगनेट, चाकू या ब्लेड, थूकदानी, पेशाबका बरतन, मुह साफ करनेका बरतन अित्यादि जरूरी चीजे रखकर सोते थे। मुन्नालालभाअीको अधेरेमे पता न चला। जब बापूजीने मजन मागा तो अुनके हाथमे लाल दवाकी शीशी दे दी। बापूजीने अुसे खोलकर जब मजन करनेके लिअे अुसे मुहमे डाला तो अुनको अटपटा लगा। अुन्होने पूछा, "मुन्नालाल, तुमने मुझे कौनसी शीशी दी है?" मुन्नालालभाअीने विश्वासके साथ कहा, "बापूजी, मजनकी ही शीशी दी है।" थोडी देरमे बापूजीके मुहने जवाब दिया ओर लाल दवा थूक दी। अिससे बापूजीकी जीभ और होठ भी जल गये। जिससे पोछा वह कपडा भी खराब हो गया। जब मुन्नालालजीने यह दृश्य देखा तो अुनमे काटे तो खून नही रहा। अुनके होश अुड गये। अगर यह दवा बापूजीके पेटमे चली जाती तो? परिणामका विचार करके शर्मसे अुनका सिर जमीनमे गड गया। अीश्वरकृपासे दवा बापूजीके पेटमे नही गअी थी, क्योकि मजन खानेकी चीज तो थी नही। तो भी दवा पेटमे जा सकती थी। अगर अुतनी चली जाती जितनी बापूजीने मुहमे डाली थी, तो बापूजीकी मृत्यु तक हो सकती थी। लेकिन 'जाको राखे साअिया मारि सके नहिं कोय' के न्यायसे बापूजीको कुछ भी नही हुआ। हा, जले मुहके निशान तीन चार रोज तक बने रहे।

बापूजीसे अिसका कारण पूछा गया तो सहज भावसे अुन्होने कारण बताया। लेकिन मुन्नालालजीके खिलाफ नाराजीका अेक भी शब्द अुनके मुहसे नही निकला। अिन दोनो घटनाओका मुझे तो आज तक पता ही नही था। जब मैने मुन्नालालभाअीसे पुस्तकके लिअे कुछ जानकारी मागी, तो अुन्होने ये घटनाये लिख भेजी। यो तो मेरा और अुनका अेकसाथ ही सेवाग्राममे प्रवेश हुआ। अुनके अनुभवोकी भी अेक स्वतत्र पुस्तक बन सकती है। क्योकि अुनका भी बापूजीके साथ वैसा ही निकट सबध रहा है जैसा मेरा। वे तो बापूजीकी रिजर्व फौजके सिपाही थे। जहा कोअी जानेवाला न मिले वहा बापूजी अुन्हे भेजते थे। जब बापूजी प्रवासमे जाते तो स्टेशन तक अुनका सामान पहुचाना और वापिस आने पर लाना, यह काम तो अुनके लिअे ही रिजर्व था। कभी कभी मै भी थोडी मदद कर देता था।

नुकसान सहनेकी अद्‌भुत शक्ति

अेक दिनकी बात है। सेवाग्रामके नाले पर बडे बडे ड्रमोका पुल बनाया गया था। अिसमे म्युनिसिपैलिटीके ओवरसियरकी सलाह थी। जब पानी आया तो ड्रमोके मुहमे कचरा भरकर पानी रुक गया। बस, गावमे पानी घुसने लगा और लोगोके घर गिरनेका खतरा पैदा हो गया। शामके भोजनका समय था। मै कही अिधर-अुधर था। मुन्नालालजी भोजन कर रहे थे। जब गावके लोगोने अिस खतरेकी सूचना आश्रममे दी तो बापूजीने कहा, "मुन्नालाल, जाकर देखो क्या हो सकता है।" मुन्नालालजी गये और जाकर देखा तो अुनको लगा कि पुलको तोडकर पानी निकाल देना ही अेक-मात्र अुपाय है। अुन्होने गावके लोगोकी मददसे पुल तोड दिया और पानी निकाल दिया। जब अिसकी सूचना बापूजीको दी तो अुनको खुशी हुअी। बापूजीने पुल तोड देनेके नुकसानकी तरफ ध्यान नही दिया। लेकिन मुन्नालालजी और गावके लोगोको तुरत मिलनेवाली सकटमुक्तिका अुन्हे आनन्द हुआ। बापूजीके स्वभावमे जहा हद दर्जेकी कजूसी थी, वहा अुदारता और नुकसान सहनेकी शक्ति भी अद्‌भुत थी।

मच्छरदानीका किस्सा

अेक समय मलेरिया हो जानेके कारण बापूजीको मच्छरदानी लगानेकी सलाह डॉक्टरोने दी। अुस समय तख्त भी नही था। बापूजी बरामदेमे सोनेको तैयार न थे, वर्ना बरामदेके खम्भोसे मच्छरदानीकी डोरी बाधी जा सकती थी। मुझे बुलाकर बोले, देखो प्रार्थनाकी जगह मच्छरदानी लगानेकी तजवीज कर दो। मुझे मच्छरोसे तो बचना है लेकिन मच्छरदानीके सिवा अुसके लिअे कुछ खर्च नही करना है। गरीब लोग क्या कर सकते है? वही हमको करना चाहिये न? मैने कहा, ठीक है, कर दूगा। मै विचारमे पड गया। यदि प्रार्थनाकी जगह पर चार खम्भे गाडू तो अेक तो प्रार्थनाके स्थान पर बीचमे गडे खम्भे विचित्र लगेगे। अुनको रोज गाडना और रोज अुखाडना भी अच्छा न होगा। कही बापूजी खम्भोकी कीमत और गाडने-अुखाडनेकी मजदूरीका हिसाब पूछ बैठे तो मुझे अेक नया बुखार चढ जायगा। अिससे बचनेका कोअी दूसरा रास्ता खोजना ही होगा। तुरन्त मेरे ध्यानमे जगली लोगोके तम्बू आ गये। दो बासके टुकडे लिये। अुनको मच्छरदानीके दो सिरो पर बाधकर अुनमे रस्सी बाधी और दोनो तरफ तान कर दो बडे कीले जमीनमे

गाड दिये। मच्छरदानी तम्बूनुमा थी सो ठीकसे तन गअी। यह क्रिया मैंने शामकी प्रार्थनाके बाद बापूजीके सोनेके पहले कर दी। मनमें अुसका ढाचा पहले ही बना लिया था। अेक बार तानकर भी देख लिया था। बापूजीने देखी तो बोले, बस यही मैं चाहता था। अब जो चाहेगा वही मच्छरदानी चाहे जहा लगाकर सो सकता है।

कैसा समभाव!

गोविन्द बापूजीका खाना तैयार करता था। अेक रोज अुसने कहा, मुझे वर्धा जाना है।

बापूने पूछा — क्यो?

गोविन्द — हजामत बनवानेके लिअे।

बापू — तो क्या गावमे नाअी नही है?

गोविन्द — हरिजन नाअी नही है और सवर्ण नाअी हमारी हजामत बनाते नही हैं।

बापू — तुम्हारी हजामत नही बनाते तो मैं कैसे बनवा सकता हू?

अुस रोजसे सेगावके नाअीसे बापूजीने हजामत बनवाना बन्द किया और खुद अपनी हजामत बनाने लगे। जब सिरके बाल बढते थे तो मैं या मुन्नालालजी काट देते थे।

तुकडोजी महाराज

अेक रोज नागपुरसे श्री बाबूराव हरकरे आये और बापूजीसे कहने लगे कि तुकडोजी महाराज बडे ही साधु पुरुष हैं। अुनके विचार राष्ट्रीय है और अुनके भजनोका प्रभाव ग्रामीण जनता पर बडा अच्छा पडता है। मैं चाहता हू कि वे थोडे दिन आपके पास रह जाय तो अुनके विचार और भी परिपक्व हो जायेंगे और देहातमे वे अेक बडा लाभकारी काम कर सकेंगे। बापूजीने अिस विचारको पसन्द किया और अुनको रखनेकी मजूरी दे दी। अेक मास तक रहनेकी बात तय हुअी थी। ता० १४–७–'३६ को श्री तुकडोजी महाराज आश्रममे आ गये।

बापूजीने अुनके रहनेकी व्यवस्था आदि-निवासमे अपने पास ही कर ली। हमारे पास दूसरा और मकान भी कहा था? अिसलिअे जो भी मेहमान आते अुनको अुसी मकानमें स्थान देना पडता। तुकडोजी महाराजके साथ नारायण नामका अेक सेवक भी था। अुसको भी अुसी मकानमें स्थान मिला।

महाराजको सूत कातना तो आता था, लेकिन रुअी धुनना और पूनी बनाना नही आता था। अुन्होने ये क्रियाअे भी सीखनेकी अिच्छा प्रकट की, तो बापूजीने मुझे बुलाकर कहा, "देखो महाराजको धुनना व पूनी बनाना सीखना है। अिसलिअे अुनके साथ बात करके समय तय कर लो। अगर वे धुनना सीख जावेगे तो अेक बडा काम हो जावेगा। अुनका शिष्यमडल विशाल है। वे दूसरोको भी अिसका महत्त्व समझा सकेगे और सिखा भी सकेगे।" अगस्तका महीना था। पानीकी झडी लगी थी। अैसे मौसममे धुनकी चलाना कठिन था। लेकिन बापूजीके फरमानको टाला नही जा सकता था। वे किसी कामके लिअे नकार तो सुनना ही नही चाहते थे। अिसलिअे मैने राजीसे या बेमनसे कहा, जी हा, सिखा दूगा। मुझे यह लोभ भी हुआ कि अगर अितना बडा सन्त चेला बननेको मिले तो कौन अैसा मूर्ख होगा कि अवसर चूक जाय। अब जब कोअी महाराजकी तारीफ करता है तो मै मजाकमे कह देता हू कि वे तो मेरे शिष्य है, क्योकि मैने अुनको तथा अुनके शिष्य नारायणको धुनना सिखाया है। अगस्तकी गीली हवामें रुअी तातसे चिपकनेकी कोशिश करती, लेकिन मै बहुत सावधानीसे धुनकी चलाता। अिससे मेरी धुननेकी कला बढ गअी। करीब दस बारह दिनमे महाराजको भी अच्छा धुनना और पूनी बनाना आ गया। मेरी शिक्षा अैसी फली कि अपने आश्रममें पहुच कर महाराजने अपने भक्त कार्यकर्ताओका अेक शिविर चलाया, जिसमे पचास विद्यार्थियोने अेक मास तक भजन-कीर्तनके साथ साथ धुनना, पूनी बनाना और सूत कातना सीखा। अिस शिविरके लिअे महाराजने मुझे ही वहा बुलाया था। लेकिन मै बीचमे ही बीमार हो गया और विवश होकर वापस लौट आया। तो भी शिविरका काम निश्चित समय पर पूरा हुआ।

श्री तुकडोजी महाराजके कीर्तनमे भक्तिभावसे भगवानका हृदयस्पर्शी गुणगान होता था, जिससे श्रोतागण मत्रमुग्ध हो जाते थे। सेवाग्रामके सैकडो आदमी प्रतिदिन प्रार्थनामे अुनका कीर्तन सुननेके लिअे आया करते थे। प्रार्थनाके बाद वे खडे होकर अपने गुरुदेवकी रोज नियमपूर्वक आरती अुतारते थे। बापूजीका अितनी देर तक अेक आसनसे खडे रहना हम लोगोको अखरता था, लेकिन बापूजी तो स्वय बडे नियम-पालक थे। अिसलिअे सीधे ध्यानमग्न खडे रहते थे। बीचमे दो-तीन दिनके लिअे महाराज किसी गावको चले गये तो सब सूना-सूना लगने लगा था। कुल मिलाकर अुनका यह क्रम

अेक मास तक चला और ता० १३–८–'३६ को वे बापूजीसे आशीर्वाद और विदा लेकर अपने आश्रम मोझरी चले गये। बापूजीको अुनका नीचे लिखा भजन बहुत प्रिय था। वे कहते थे कि यह भजन तो मेरी ही जीवनकथाका द्योतक है।

किस्मतसे राम मिला जिसको, अुसने यह तीन जगा पाअी।
पहले तो धन सुत दार गया, अरु शाल दुशाला छूट पडा।
सब मजिल हाथी घोडोसे, नही पास रहा साधन कोअी।
दूजेसे जग अपमान हुआ, अरु आदर तो सब जाय भगा।
नही कीमत जात बिरादरमे, साथी न रहा कुछ समझाअी।
तीजेसे आफत तन भोगी, दिन रात रहा जैसे रोगी।
नैनोंसे सुख नही देखा, सब अुमरी दुखमे जा खोअी।
ये तीनहुसे कगाल हुआ, पर याद अुसीकी करता था।
बिन नाम प्रभुके झूठ सभी, यह भाव हमेशा नैन रही।
ये तीन जगह जिसको न मिली, अुसको न कभी दीदार हुआ।
कअी जन्म जरा भरते भरते, तुकड्याको गुरुपद यह छाअी।

अेक दिन बापूजी महाराजसे कुछ बाते कर रहे थे कि बीचमें बापूजीने अेक दृष्टान्त सुनाया। अेक गरीब और धनिकका घर पास पास था। अेक दिन गरीबके घरमे चोर आ घुसे। जब गरीब जागा तो अुसने देखा कि चोर अुसके घरमे कुछ ढूढ रहे है। अुसने सोचा कि ये बेचारे व्यर्थ ही परेशान होगे, क्योंकि अिनको यहा कुछ मिलनेवाला नही है। वह अुठा और बडी शाति व धीरजसे अुसने चोरोंसे कहा कि आप अधिक परेशान न हो। जो कुछ मेरे पास है वह आपको दिये देता हू। यह कह कर अुसने चिथडोमे से निकाल कर अेक दम पाच रुपयोकी पोटली अुनके हवाले कर दी। चोरोंको बडा विस्मय हुआ। लेकिन लोभसे अुनकी आखे बन्द थी, अिसलिअे अुन्होंने अधिक धन पानेके लालचसे पडोसी धनिकके घर पर हमला बोल दिया। वह धनिक जाग रहा था और अुसने सारी चर्चा सुनी थी। वह आश्चर्य कर रहा था कि देखो चोर अुस गरीबके घरमे खाली हाथ ही जानेवाले थे, लेकिन अुसने अपने ही हाथमे अपनी सचित रकम चोरोंके हवाले कर दी। तो मै भी अपनी पूजी चोरोंके सुपुर्द क्यो न कर दू? अितनेमे ही चोरोंने अुसके घरका दरवाजा खटखटाया। धनिकने तुरत दरवाजा खोल दिया और चोरोंसे कहा कि आअिये आपको जो चाहिये सो मै दूगा। चोर घरमें घुस गये लेकिन

अुनके हृदयमे यह मन्थन चलने लगा कि यह क्या हो रहा है। अुस धनिकने अपना सारा धन चोरोंके सामने लाकर रख दिया। बस चोरोंके मनमे राम जगा और अुन्होने अुस धनिक और गरीवका सारा धन वही छोड दिया और भविष्यमे चोरी न करनेकी प्रतिज्ञा करके वे साधु हो गये। मै हिंसाके मुखमे अहिसाको अिसी तरह झोक देना चाहता हू। आखिर कभी तो हिंसाकी भूख शान्त होगी ही। अगर दुनियाको शान्तिसे जीना है तो मेरे ज्ञानमे दूसरा रास्ता नही है। आप अपनी सीधीसादी भाषामे अपने मधुर भजनोके द्वारा देहातकी जनता तक अहिंसाके अिस सदेशको पहुचा सके तो मेरा बहुत बडा काम हो।

महाराजने कहा, आपकी बात तो ठीक है। मेरी श्रद्धा भी अहिंसा पर दिनोदिन बढती जा रही है। आपके आशीर्वादसे वह दृढ बनेगी और मै अपनी सारी शक्ति लगाकर आपका सदेश लोगो तक पहुचानेका प्रयत्न करूगा।

जब मै १८ सालके बाद मोझरी गया तो मैने देखा कि श्री बाबूरावजीका तुकडोजी महाराजको बापूजीके पास लानेका प्रयत्न सफल हुआ। महाराजने बापूजीकी कल्पनाको मूर्तरूप देनेका पूरा पूरा प्रयत्न किया है। अिसका दर्शन अुनके गुरुसेवा मडलके सगठन और अुसके सेवाकार्यसे होता है। आज मोझरीमे सुन्दर खेती और गोशाला चलती है। विद्यार्थियोका छात्रावास चलता है। प्रसूति-गृह, अस्पताल, नअी तालीमका विद्यालय, हाअीस्कूल, कताअी, बुनाअी, तेलघानी, पुस्तकालय, प्रार्थना-भवन आदि सारी प्रवृत्तिया देखकर मुझे बडा आनन्द हुआ। आज तो महाराजका स्थान अखिल भारतीय हो गया है। साधु-समाजके अध्यक्षका सम्माननीय पद अुन्हे प्राप्त हुआ है। अुनके विचारोमे क्रान्तिकारी प्रगति तथा गभीरता देखकर मेरे सामने अुस दिनका चित्र स्पष्ट हो आया जिस दिन बापूजीने अुनसे कहा था कि 'आप मेरी बात समझ ले और अपनी सीधीसादी भाषामे अपने मधुर भजनो द्वारा जनता तक अहिसाके अिस सन्देशको पहुचा सके तो मेरा बहुत बडा काम हो।' मै देख रहा हू कि तुकडोजी महाराज गुरु-दक्षिणा (अपने गुरु अडकुजी महाराजकी) और पितृऋण (राष्ट्रपिता बापूजीका) चुकानेका भरसक प्रयत्न कर रहे है। अैसे गुरु-शिष्य दोनो धन्य हैं।

हिंसाके मुखमे अपने आपको झोक देनेकी बापूजीकी कितनी तत्परता थी, यह अुनकी मृत्युसे स्पष्ट हो गया। सीने पर धडाधड तीन गोलिया खाकर भी अुनके मुखसे रामनामके सिवा अेक आह तक न निकली। अिसका नाम है 'अन्ता मता सो गता'। मनुष्यकी परीक्षा अुसके अत समयकी मति परसे होती है।

अुन दिनो लीलावती बहन रसोअीका काम सभालती थी। मेरा और अुनका झगडा हो गया और मैंने अपनी रसोअी अलग बनानेके लिअे बापूजीके सामने सूचना रखी।

बापूजीने मजूर किया और मैं अलग भोजन बनाने लगा। लेकिन आश्रममे जो कुछ भी फल वगैरा आते थे, अुसमे से मेरा हिस्सा बापूजी किसीके साथ मेरे पास भेज दिया करते थे।

मैं तुकडोजी महाराजको धुनना और पूनी बनाना सिखाता था। अुन्होने अेक दिन कहा, भाअी, तुम क्या खाते हो, हमको भी खिलाओ। मैंने अुनको खिलाया। अिसका पता बापूजीको चला। दूसरे दिन मेरी पेशी हुअी। बोले, मैंने तो सिर्फ तुम्हारी तदुरुस्तीकी दृष्टिसे तुमको अलग खाना बनानेकी अिजाजत दी है, नही तो तुम्हारे पास दूसरोको खिलानेके लिअे समय कहा है? तुम्हारा सारा समय गोमाताके लिअे है। अुसमे से अेक मिनट भी दूसरेको देना गोमाताकी चोरी है। अिस प्रकार काफी बोले। मैंने अपनी भूल कबूल की और आगेसे अैसा न करनेका वचन दिया।

विनोबाजी कहा करते है कि मेरे दिल पर सबसे अधिक असर बापूजीके प्रेमसे भोजन करानेका पडा था। रास्ता चलतेको भी बापूजी भोजनका निमत्रण दे दिया करते थे। लेकिन मैंने जब तुकडोजी महाराजको दो मोटी रोटिया खिला दी तो लम्बा भाषण सुनना पडा। अगर किसी अन्य प्रसग पर मैं अुनको न खिलाता तो भी शायद अिससे ज्यादा लम्बा भाषण सुनना पडता। यही तो मर्यादा-पालनकी बापूजीकी खूबी थी। मुझे तो केवल अनिवार्य कारणसे सिर्फ मेरे लिअे अलग भोजन बनानेकी अिजाजत मिली थी। यदि मैं अिसी प्रकार लोगोको खिलाने लगता तो अुसमे समय तो जाता ही, मर्यादाका भी भग होता। अिसमे तुकडोजी महाराजको भी चेतावनी थी। बापूजीके विविध पहलुओको समझना बडा कठिन काम था। यह तो वही जान सकते है जिन पर बीती हो। बाझ क्या जाने प्रसूतिकी पीर?

व्यवस्थापकके रूपमें

वापूजीका यह आग्रह कि मै सेवाग्राममें अकेला ही रहूगा पहले ही मेरे व मुन्नालालजीके प्रवेशसे ढीला हो गया था। लेकिन थोडे दिनो तक अैसा लगता रहा कि हम तो तत्कालके कामके लिअे हे। वाहरके किसी भी आदमीको वहा विश्राम नही मिलता था। पहले दिन किसको रोटी मिली असका मुझे स्पष्ट खयाल है। धुलियासे श्री पारनेरकरजी वापूजीसे वात करने आये। वात करके जव वे वर्धा लौटने लगे तो वापूजीने कहा कि यहा तो किसीको खाना नही मिलता है, लेकिन तुम्हे मिल जायगा। पूछो वलवन्तसिहको अगर अुसके पास कुछ आटा हो तो।

अुन्होने मुझसे पूछा — भाअी मुझे खिलाओगे? मैंने कहा — जरूर। अुस समय हमारे पास आटा भी सेर सवा सेरसे ज्यादा नही रहता था। मैंने अुनको खाना खिलाया।

हमे गायोके लिअे जो चारा वगैरा चाहिये था, वह जमनालालजीकी खेतीमें से माग लाते थे। जैसे जैसे वापूका परिवार वढता गया वैसे वैसे गायका परिवार भी वढाना पडा और अुसके लिअे मकान और अधिक खेतीकी भी जरूरत पडती गयी। शुरूमे तो हमने अुसी अेक अेकड जमीनमे जहा खाली जगह थी सागभाजी वोना आरभ कर दिया था। वापूजीने यह भी निश्चय किया था कि वर्धासे सागभाजी, जो गावमे पैदा होनेवाली चीज है, न मगायी जाय। मगर वरसातके शुरूमे तो अैसा मौका आता था जव गावमें भी कोअी सागभाजी नही होती थी। वापूजी कहते, "जगलमे भी वहुतसी पत्तिया होती है, जिनका साग वन सकता है। अुनकी जानकारी करो, तोड कर लाओ और साग वनाओ।" देहातके लोग तो अुन पत्तियोकी भाजी वनाते ही थे। हम टोकरी लेकर निकलते और पत्तिया चुनकर लाते तव हमारी भाजी वनती।

आश्रमके नामकरणके वारेमें प्रश्न खडा हुआ। किसीने गाधी आश्रम सुझाया, किसीने मीरा आश्रम, किसीने सेवाश्रम। अैसे कअी नाम सुझाये गये। आखिर वापूजीने गावकी सेवाके लिअे आश्रम वना हे अिस आधार पर सेवाग्राम आश्रम नाम रखा। वास्तवमे सिर्फ वापूजी ही वहा रहते थे और अुनके साथ हम कुछ लोग थे। जव वापूजीसे कोअी वहा आनेके लिअे पूछता तो वे कहते, "यह आश्रम थोडा ही है, यह तो मेरा परिवार है। जो लोग मुझसे अलग रह ही नही सकते या जिनको मै नही छोड सकता, वही

लोग मेरे पास रहते हैं। असलिअे असको संस्था समझना ही नहीं चाहिये। वैसे साबरमती आश्रमके सब नियम यहा लागू है। और वही यहा रह सकता है जो आश्रमके सब नियमोका पालन कर सकता हो।"

सचमुच सेवाग्राम आश्रम बापूके आज तकके अनुभवोका निचोड था। वहा कोअी नियम नही था और सब नियम थे। आश्रमके व्यवस्थापक, सचालक जो भी कहिये बापूजी ही थे। दूसरे लोग तो सिर्फ हिसाब-किताब रखना, बाजारसे सामान खरीदकर लाना, रसोअी बनाना वगैरा काम किया करते थे। यह काम कुछ रोज लीलावती बहनने किया, कुछ दिन नाणावटीजीने किया। लेकिन दूसरी सब जिम्मेदारी बापूजी पर थी। बापूजी आश्रमके छोटेसे छोटे काममे खूब ध्यान देते थे। भोजन परोसनेका काम तो बापूजीका ही था। हम भोजन बनाकर बापूजीके सामने रख देते थे और अपनी अपनी थाली अुनके पास ले जाते थे। बापू अुसमे परोस देते थे। थाली लाने ले जानेकी झझटमे बचनेके लिअे मै बापूजीके बिलकुल सामने ही बैठता था। अुस समय बापू परोसते जाते और कुछ मनोरजन भी करते जाते। साथ साथ भोजनकी मात्रा और अुसके गुण आदिके बारेमे भी सूचनाअे करते जाते। यह क्रम बहुत दिनो तक चला।

प्रार्थनामें रामायण

मैंने मगनवाडीमे बापूजीसे कहा था कि मै आपको रामायण सुनाया करू तो कैसा रहे? बापूजीने कहा — हा, पर मुझे वह स्वर प्रिय लगता है जिसमे मेरे पिताजीको अेक पडितजी सुनाया करते थे। अुसको देवदासने ग्रहण कर लिया था, और अुसके पाससे बालकोबा[1]ने। अगर तुम अुसको सीख सको तो मुझे रामायण सुनना प्रिय है। असलिअे मै बालकोबाजीके पास गया, लेकिन मुझे सगीतका ज्ञान नही था। मुझे अुनका राग अच्छा तो लगा लेकिन अुस रागको मै खुद नही सीख सका। जब नाणावटीजी मगनवाडीमे बापूजीके पास रहने आये थे तबसे सुबह नौ बजे बापूजीको रामायण सुनाना शुरू हुआ था। कभी कनु और कभी नाणावटीजी सुनाते थे। लेकिन अभी तक रामायण प्रार्थनामे शुरू नही हुअी थी। जब नाणावटीजी सेवाग्राममें जाकर रहने लगे तब मैने बापूजीको सुझाया कि जैसे सुबहकी प्रार्थनामे गीता

---

१ आचार्य विनोबा भावेके छोटे भाअी। अिनका ज्यादा परिचय आगे 'सेवाग्रामसे सम्बद्ध कुछ विशिष्ट व्यक्ति' नामक प्रकरणमे दिया गया है।

पढी जाती है वैसे सायप्रार्थनामे रामायणका भी पाठ हो तो कैसा रहे? बापूजीने पसद किया और नाणावटीजी द्वारा शामकी प्रार्थनामें रामायण प्रारभ हुअी।

कामका विस्तार

अब कामकी योजना बनानी थी। मुन्नालालजीको गावके बच्चोको पढानेका काम सौंपा गया और नाणावटीजीको ग्रामसफाअीका। नाणावटीजीने गावमे चलते-फिरते पाखाने और स्त्रियोके लिअे आड करके नालिया खोदकर कुछ पाखाने बनाये। शुरूसे ही गावकी आम सफाअीके लिअे अेक भगी भी रखा गया था, लेकिन बहुत कोशिश करने पर भी भगीका काम सतोषजनक न रहा और अुसको बद करना पडा। अिसी बीचमे चक्रैया नामका लडका आ गया। अुसको बुनाअी सिखानी थी और आश्रममें बुनाअी जारी भी करनी थी। अिसलिअे नाणावटीजीने बुनाअीका काम भी शुरू किया।

अिस चक्रैयाके आनेके दिन भी बडी बोधप्रद घटना हुअी। अेक दिन बापूजीने महादेवभाअीको बुलाकर कहा, 'देखो, सीताराम शास्त्रीका पत्र आया है। अुनके आश्रमका अेक हरिजन लडका कल सुबहकी गाडीसे आनेवाला है। तुम स्टेशन जाकर अुसे ले आना।' महादेवभाअी हा कहकर चले गये। दूसरे दिन सुबहकी मद्रास अेक्सप्रेससे चक्रैया सेवाग्राम पहुचा और बापूजीको प्रणाम करके बोला, 'मै आ गया।' बापूजी 'तुम्हारा नाम चक्रैया है?' 'जी हा।' 'तो महादेव स्टेशन पर पहुच गया था न?' 'जी नही।' बापूजी 'तो तुम यहा कैसे पहुचे?' 'पूछते पूछते।' बापूजी गभीर हो गये और बोले, महादेवको बुलाओ। महादेवभाअी आये। बापूजी गभीरतासे बोले, 'क्यों महादेव, तुम स्टेशन नही पहुच सके?' महादेवभाअी चौक अुठे और बडी नम्रतासे बोले, 'बापूजी भूल गया था।' बापूजीने कहा, 'अैसी भूल तुममे कैसे हो गअी? देखो यह तो बच्चा है। यह प्रदेश अिसके लिअे नया है। हमारी भूलके कारण यह कितनी मुसीबतोमे पड सकता था?' महादेवभाअी शरमा गये और बोले, 'अिसको कष्ट तो हुआ ही होगा।'

बापूजीके चेहरे पर यह भाव था कि हम बडे लोगोकी आवभगत तो मर्यादासे अधिक कर जाते है और अेक लडकेकी, सो भी हरिजनकी, आवभगत करना भूल जाते है। यह हमारी गभीर भूल है।

जैसे जैसे हमारी गायोकी सख्या बढती गयी, वैसे वैसे हमने पैर फैलाना शुरू किया। पहले तो जमनालालजीसे चारेके लिअे थोडीसी जमीन

और नये कुअेकी माग की थी। परतु अब सबकी सब जमीन मागनी पडी। वे तो अिसके लिअे तैयार ही थे। लेकिन अुनके काम करनेवालोका थोडा ममत्व था, जो स्वाभाविक था। लेकिन क्या करते? जमनालालजीने तो जिस रोज बापू सेवाग्राम आये अुस रोजसे ही सेवाग्राम मनसे बापूजीको समर्पण कर दिया था। अिसलिअे अुन्होने अपना सारा काम समेट लिया। बिस्तर-बोरिया अुठा लिया और अुनकी सारी जमीनका कब्जा आश्रमने ले लिया।

अब तक वहाके मकान वगैरा पर जो कुछ खर्च होता था, वह सब जमनालालजी ही करते थे। क्योकि अुनका खयाल था कि कल बापू यहासे अुठकर चले गये तो सार्वजनिक पैसेका क्या होगा? अिसलिअे मेरी जमीन पर मेरा ही पैसा खर्च हो तो अुसका कुछ किया जा सकता है। अुसको मै सह लूगा। लेकिन अब तो स्थायी रूपसे आश्रम बन गया था, अिसलिअे अुनका खर्च बन्द कर दिया गया और बापूजीने सारा खर्च आश्रमसे देना शुरू किया।

पारनेरकरजी भी धुलिया छोडकर स्थायी रूपसे वहा आ गये थे। खेतीका चार्ज अुन्हे दिया गया और गोशालाका मेरे पास रहा। स्कूलके लिअे नये मकानकी जरूरत पडी। तालीमी सघके कुअेके पास अुत्तर-पश्चिमके जिस मकानमे स्कूल है वह मकान आश्रमने स्कूलके लिअे बनाया और तालीमी सघके मकानके पूर्वमे बडा हॉल, जिसमे भोजन होता है और सभा वगैरा होती है, बुनाअी-घरके लिअे बनवाया गया। अुस वक्त तालीमी सघकी वहा स्थापना हो चुकी थी और आर्यनायकम्‌जीको अुसका चार्ज देना था, जो १९३७ के नवम्बरमे सेवाग्राम आ गये थे। बापूजी चाहते थे कि नअी तालीमका प्रयोग अुनके नजदीक हो तो अच्छा। अिसलिअे आर्यनायकम्‌जीको वहा बुलाया गया। तालीमी सघके मकान वगैराके लिअे शिवरामवाली बरडी, जिसमें आज सतरे और मोसबीका बगीचा है, खरीदी गयी। लेकिन आशाबहन और आर्यनायकम्‌जी बापूजीसे अितनी दूर रहना नही चाहते थे, अिसलिअे आश्रमसे कुछ ही दूरी पर अुनके मकान बनानेकी व्यवस्था हुअी।

वात्सल्यमूर्ति बापू

सचमुच आज जब अुन दिनोकी याद आती है तो मनमें अनेक प्रकारकी लहरे अुठती है। अुस समय करीब-करीब हम यह भूल-से गये थे कि बापूजी अेक बडे महापुरुष है और अुन पर देशकी बहुत बडी जिम्मे-

दारी है, अिसलिअे हम अुनके साथ अमुक मर्यादासे वरताव करें। वस अैसा ही लगता था कि वापू हमारे वापू हैं और हम अुनके वच्चे हैं। अुनके साथ हम खेलते थे, खाते थे, झगडते थे और मजा करते थे। गीताके

यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि।
विहार-शय्यासन-भोजनेषु ॥
अेकोऽथवाप्यच्युत तत् समक्ष।
तत् क्षामये त्वामहमप्रमेयम् ॥*

श्लोकका प्रत्यक्ष दृश्य वहां दीखता था। हमारे आपसमें झगडे होते तो वापूजीकी अदालतमें हमारी वैसी ही पेशी होती थी जैसे मां या पिताकी अदालतमें वच्चोंकी होती है और हम भी वच्चोंकी तरह ही अपनी वात पेश करते थे। वापूजी पिताकी तरह ही किसीको डांटते, किसीको पुचकारते, किसीको कुछ कहते और किसीको कुछ। अिस तरह हमारा फैसला करते। वाहरके लोग हम पर नाराज होते कि ये लोग वापूजीको तंग करते हैं और अुनका समय वरवाद करते हैं। मगर अुनको कहां पता था कि हमारी और वापूकी भूमिका क्या है। अगर हममें से किसीके कानमें दर्द हुआ, हमने वापूजीको नहीं कहा और फिर वापूजीको पता लग गया, तो वे वहुत नाराज होते और डांटते कि तुमने मुझको क्यों नहीं वताया? और अिसी पर अेक लंवा भाषण सुना देते। अिसलिअे वापूके सामने हमारी कोअी वात न छोटी थी न वडी।

गोकशी कैसे वन्द हो?

तारीख २६-७-'३६ की वात है। वापूजीने कुछ विद्यार्थियोंको समय दिया था। अुन्होंने अनेक प्रश्न पूछे और वापूजीने अुनके अुत्तर दिये। मेरी डायरीमें अुनके अेक प्रश्न और अुसके अुत्तरका नोट है जो अिस प्रकार है

प्रश्न — गोकशी कैसे वन्द हो?

अुत्तर — गोकशी होती क्यों है? गायको कसाअीके हाथ वेचता कौन है?

---

* हे कृष्ण, विनोदार्थ खेलते, सोते, वैठते या खाते आपका जो कुछ भी अपमान हुआ हो अुसे क्षमा करनेके लिअे मैं आपसे प्रार्थना करता हूं।

प्रश्न — अुनका मूल्य कम होनेसे हिन्दू ही गायोको कसाअियोंको देते हैं और गाये अधिकतर फौजके लिअे काटी जाती हैं।

अुत्तर — बस, सस्ती गायको हम महगी बना सके तो गाय बच सकेगी। और अुसको महगी बनानेका यही अेक तरीका है कि मरी हुअी गायके सब अगोका अच्छेसे अच्छा अुपयोग होने लगे। जब तक वह जिन्दा रहे अुसीके दूध व घीका हम अुपयोग करे, अुसकी नस्लमे सुधार करके अुसका दूध बढावे और बढिया बैल अुत्पन्न करे। हमारे पास पशुपालनके लिअे अितना चारा-दाना नही है कि जिससे भैसे व गाये दोनो निभ सके। अिसलिअे हम गायको ही पूरा न्याय दे तो गाय बच सकती है। अगर हम भैस और गाय दोनोको बचाने जावेगे तो अेक भी न बचेगी। हम टीका तो गोकशीकी करते है लेकिन सेवा भैसकी करते हैं। जितनी दुर्दशा गायकी आज हिन्दुस्तानमे है अुतनी शायद ही कही हो। दूसरे देशोके लोग चाहे गायको काटकर खा जाते हो लेकिन जब तक अुसे जिन्दा रखते है तब तक पूरे आरामके साथ अुसे स्वस्थ अवस्थामे रखते हैं। हम गोकशीका विरोध कर रहे है लेकिन हमारी गाय हमारी अुपेक्षाकी शिकार होकर रोज भूखसे तिल तिल करके मर रही है। यह कितना बडा अपराध है? आज गायकी दुहाअी देनेवाले काफी सख्यामे हैं, लेकिन अुसकी सच्ची सेवा करनेवाले सेवक बहुत कम मिलते है।

अहिंसाकी सूक्ष्म व्याख्या

अुस समय सेवाग्राममे साप और बिच्छू खूब निकलते थे। बरसातमें नअी छतमे से रोज दस दस बिच्छू निकल आते थे। साप और बिच्छू पकडनेके लिअे हमने दो चिमटे बनवाये थे। बापूजी यह पता लगाना चाहते थे कि कितने फी सदी साप जहरीले होते है। अिसलिअे अुनको पकडकर पिंजरेमे रखते और जहरीले सापके लक्षणोंसे अुनका मिलान करते। बर्धाके डॉक्टरके पास भी अेक साप भेजा था। सेवाग्राममे साधारण साप तो थे ही, लेकिन नाग और कोबरा भी मिलता था।

अेक रोज अेक बडा भारी नाग पिंजरेमे था। अुसने पिंजरेमें अपना सिर मारमार अुसे काफी घायल कर लिया था। जब मैं अुसे जगलमे छोडने गया तो अुसे देखकर मुझे काफी दु ख हुआ और मैंने निर्णय किया कि अब मैं साप पकडनेमे मदद नही करूगा। सारा प्रकरण कैसे हुआ यह तो मुझे

याद नही है, लेकिन मैंने अपनी डायरीमे जो नोट किया है वह यहा देता हू।

सेगाव, ता० २३–८–'३६ जब सापको खोला तो अुसकी हालत देखकर मनको बुरा लगा और यह विचार किया कि अब साप पकडनेमे मदद नही करूगा। सापका प्रकरण लीलावती बहनने बापूजीसे छेडा था। बापूजीने मुझे समझानेका प्रयत्न किया, लेकिन अुनकी बात मेरे गले न अुतरी और मैंने कह दिया कि अब मै साप पकडनेमे आपकी मदद नही करूगा। अुस रोज तो बात टल गअी, लेकिन २६ तारीखको फिर घूमते समय बापूजीने मुझसे कहा, "तुमको सापकी बात समझा देना मेरा धर्म है। मै सापसे डरता हू। अपनी यह कमजोरी स्वीकार करता हू, लेकिन मै सापके साथ अेकरूप होना चाहता हू। मै अभी तक यह नही जान सका हू कि भगवानने साप और बिच्छूको जहर क्यो दिया होगा। लेकिन साप-बिच्छूमे जो जहर दीखता है वह तो मनुष्यके स्वभावका प्रतिबिब है। अगर मनुष्य काम, क्रोध, द्वेषका त्याग करे तो सर्पसृष्टि बदल सकती है। मेरा पशुसृष्टिके साथ अेक-रूपता साधनेका प्रयत्न है। मै जितना अहिसाकी सूक्ष्मता समझता हू अुतना अुसका पालन नही कर सकता हू, यह मेरी कमजोरी है। आज लोग जिसको अहिसाके नामसे पुकारते है वह किसीका खून न करना ही है। परतु दूसरी प्रकारसे खून पी जाते है, जैसे गरीबका खून चूसकर रुपया जमा करना और अुस रुपयेसे पिंजरापोल आदि खोलकर अहिसाका ढोग करना। 'खटमल चराओ' की बात जानते हो?"

मैंने कहा — जी नही।

बापू — बम्बअी आदिमे लोग प्रभातमे पुकारते फिरते है 'खटमल चराओ'। यानी खटमलोंसे भरी खाट पर भाडेसे सो जाओ तो अुसको अहिसा कहेगे। अगर मै अहिसाका पूरा विकास न कर सका यानी साप-बिच्छूकी सृष्टिके साथ अेकरूप न हो सका तो मै सतोषसे नही मरूगा। अिसका मुझे दुःख रह जायगा।

मनोरजनमें छिपा आशीर्वाद

अुसी दिन बापूको दो-चार दिनके लिअे मगनवाडी जाना था। पू० बाने बापूजीके साथ मगनवाडी चलनेकी बात निकाली। बापूजीने कहा, "जिस प्रकार तुम अपने चलनेकी बात करती हो वैसे बलवन्तसिहकी क्यो नही

करती?" वाने कहा, "बलवर्तसिंह तो स्वतत्र है। कल जाना चाहे तो कही भी जा सकता है।"

अिस पर बापूजीने खूब जोरसे हसकर अपनी लाठी अुठाकर बाको दिखाअी और कहा, "अच्छा बलवन्तसिंह जाय तो खरा, अेमना टाटिया भागी नाखु" (बलवन्तसिंह जाय तो सही, अुसकी टगडी तोड दू।) सब लोग खूब जोरसे हसे।

बापूके अिस मनोरजनमें बडी गभीरता थी, मेरे लिअे अेक बडी चेतावनी थी।

बाने कहा, "तमारी पासे तो सेकडो आव्या ने चाल्या गया हु तो जीवनभरथी जोती आवी छु" (तुम्हारे पास सैकडो आये और चले गये। यह मैं जीवन भर देखती आयी हू।)

बापूजी मौन रहे। लेकिन बापूजीके चेहरे पर मैंने अैसा भाव पढा मानो वे कह रहे हो, यह बात तो ठीक है कि मेरे पास सैकडो आये और चले गये, लेकिन ये जानेवाले नही है।

अुस समय मैंने कुछ गभीरतासे विचार किया था, अैसा तो नही कह सकता और मै बापूजीके जीवनकाल तक सेवाग्राम नही छोडूगा अैसा भी नही मानता था। लेकिन सचमुच ही अुनके अुस मनोरजनमे मेरे लिअे जो गहरा आशीर्वाद भरा था वह सत्य सिद्ध हुआ। अुसने मुझे अत तक अुनके चरणोसे अलग नही होने दिया। सचमुच, महापुरुषोके वचनमे कितना चमत्कारिक असर होता है, अिसका भान मुझे जितना आज होता है अुतना बापूजीके जिन्दा रहते नही हुआ था। अब अुस पर दुख करनेसे भी क्या लाभ है? जितना मिला अुसके लिअे भी मेरा हृदय भगवानको अनेक धन्यवाद देता है।

श्रेष्ठ अेक अीश्वर ही है

ग्रामोद्योगके विद्यार्थी बापूजीसे मिलने आये। अेक विद्यार्थीने प्रश्न किया, "गीताके अध्याय ३ के श्लोक 'यद् यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जन' का क्या अर्थ है?"

बापूजी, "भगवान कहते है कि श्रेष्ठ पुरुष जैसा आचरण करता है वैसा ही जनसाधारण करते है। अिसका अर्थ यह है कि मानव-समाजका स्वभाव ही अैसा है कि लोग श्रेष्ठ पुरुषोके आचरणकी तरफ देखते है। अिसलिअे भगवानने अैसा नही कहा कि श्रेष्ठ पुरुष जैसा कहते है वैसा अन्य

लोग करते है, बल्कि यह कहा है कि श्रेष्ठ पुरुष जैसा करते है वैसा अन्य लोग करते है। अिसीलिअे भगवानने कहा है कि मेरे लिअे कोअी कर्म बाकी नही है, फिर भी मै लोकसंग्रहके लिअे अतन्द्रित रहकर काम करता रहता हू। नही तो जगतका नाश हो जायगा। सब लोग आलसी बन जायेंगे। अब सवाल यह अुठता है कि श्रेष्ठ पुरुष कौन है? किसके आचरणका अनुकरण करें? मै, जवाहरलाल, राजेन्द्रबाबू, वल्लभभाअी जो आचरण करें अुसका अनुकरण करना चाहिये? कदापि नही।

"मै कुछ कहता हू, जवाहरलाल कुछ कहते है। अिस प्रकार अेक-दूसरेमें विरोध है तब किसका अनुकरण करे? अैसा श्रेष्ठ पुरुष आज दुनियामें मिलना असंभव है। दुःखकी बात तो यह है कि आज मेरी ६७ वर्षकी आयु हो गअी और अभी तक मुझे अैसा पुरुष नही मिला जिसके सामने मैं सिर झुका दू। तब क्या करे?

"जो अन्तरात्मा और बुद्धि दोनोंमें ठीक जचे सो करें। श्रेष्ठ तो अेक अीश्वर ही है। अुसको अन्तरात्माके सिवाय कहां ढूंढे?"

अहिंसाका व्यापक क्षेत्र

मुझसे अेक दिन घूमते समय अहिंसाके विषयमें बापूजी कहने लगे, "सत्य और अहिंसाकी जितनी खामी थी अुतना ही सत्याग्रह असफल रहा। यही कारण है कि मैं सेगांवमें बैठ गया हू। यह भी अेक प्रकारका तप नही तो और क्या है? अिधर अुधर घूमकर कुछ आन्दोलन कर सकता था, लेकिन मैंने समझ लिया कि जब तक अंतःशुद्धि नही है तब तक सत्याग्रह करना निरर्थक है। यद्यपि अहिंसासे आज तक कोअी लडाअी राजकारण या सामाजिक ढंगसे नही हुअी यह बात सच है। व्यक्तिगत तो अैसे अुदाहरण बहुत मिलते है। मेरा काम यह है कि अहिंसाका राजकीय और सामाजिक विकास करना। हा, अिस जन्ममें कर सकूगा या नही, यह तो कौन जानता है? अिसीलिअे तो मैंने तुम्हें अपने सान्निध्यमें रखा है कि तुम मेरा तर्ज समझ जाओ। और गोसेवा भी तो तुम्हारे ही भरोसे पर आरंभ की है। बस, यह जो आपसके तुम्हारे झगडे होते है अुनको सहन करो और यहा शून्यवत् होकर पडे रहो।

बापूका सर्टीफिकेट

हमने आश्रमकी सडक जहा तक बनाअी थी वहासे आगे अेक अैसा टुकडा था जहा बहुत कीचड हो गया था। आदमियोंको तो तकलीफ थी ही

किन्तु गाडिया फस जानेके कारण वैलोंके लिअे भी वह अत्यत कष्टदायक थी। वापूजीने मुझसे कहा कि यहा अगर सडक वन सकती है तो वनाना अच्छा है, लेकिन पचास रुपयेसे अधिक खर्च नही होना चाहिये। मैंने स्वीकार किया और कार्य आरभ हो गया। रुपये तो अस्सी खर्च हो गये लेकिन वापूजी और खानसाहव दोनो अुसे देखकर वहुत खुश हुअे। वापूने मुझसे कहा, "तुम अिंजीनियर तो नही लेकिन काम तुमने अिंजीनियरका किया है। तुमको दूसरा कोअी शावाशी दे या न दे, वैल तो देंगे ही।"

ज्वरका प्रकोप

वापूने मुझसे कहा कि तुकडोजी महाराजका पत्र आया है। विद्यार्थियोको धुनना-कातना सिखानेके लिअे किसीको वुलाया है। लिखा है कि अगर वलवन्तसिहको ही भेज दे तो अच्छी बात है।

मैंने कहा — आपकी अिच्छा।

वापू — मेरी अिच्छाकी वात नही है। तुम्हारे जिम्मे जो काम है अुसकी क्या व्यवस्था होगी, अिसका विचार करना होगा। सडकका काम तुम्हारे विना न होगा। गाय-वकरीका क्या होगा? अिन सवकी व्यवस्था हो सकती हो तो मुझे अिनकार नही है।

मैंने कहा — सडकका काम तो दो रोजमें खतम कर दूगा और गाय-वकरीको चम्पत सभाल लेगा। वुननेवाला तो कोअी भी जा सकता है, परतु मैं जाअूगा तो अुनके समाजसे मेरा परिचय हो जायगा और कुछ विचार-विनिमय भी हो जायगा।

वापूजी — अगर तुम गोशालाकी व्यवस्था कर सको तो मुझे अच्छा लगेगा कि तुम जाओ। तुम वारीकीसे और कामको भी देख सकोगे और मुझे सारी रिपोर्ट दे सकोगे, क्योंकि कुछ लोग तुकडोजी महाराजके खिलाफ शिकायत कर रहे हैं।

वापूकी अनुज्ञा लेकर मैं २२ सितवर, १९३६ को तुकडोजी महाराजके आश्रममे मोझरी पहुचा। अुनका कार्यक्रम वडा ही सुन्दर चल रहा था। करीव ५०-६० विद्यार्थी थे। अुनका कीर्तन-सत्सग तो होता ही था, साथ ही कातना-धुनना भी चलता था। वहासे भेजे हुअे मेरे पत्रके अुत्तरमें वापूजीने लिखा

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला है। क्या जानू यह कब मिलेगा? यहा तो सब ठीक चल रहा है। रोज छाछ होती है और मक्खन निकलता है। २।। सेरमें से आज १४ तोला निकला, अुसका घी १० तोला। प्यारेलाल अिस बारेमें अुस्ताद बन गया है। मुन्नालाल दूधकी देख-भाल कर रहा है। आज तो बहुत पानी आया। किशोरलालका खत अिसके साथ है। अब तो ठीक है, दुर्बलता काफी है। महाराजसे कहो अुनका खत मिल गया था।

हा, सफाअीका काम भी अच्छी तरह सिखा दो।

सेगाव, वर्धा बापूके आशीर्वाद
२४–९–'३६

वहा मैं मुश्किलसे ८-१० दिन ठहरा कि मुझे बुखार आ गया और वह भी बहुत सख्त। तुकडोजी महाराजने तारसे बापूजीको मेरी बीमारीकी खबर दी तो अुनका अुत्तर आया, अुसे तुरत सेगाव भेज दो।

मेरी हालत बहुत खराब थी। मोझरीसे सेगाव लगभग ५५ मील है। ३ अक्तूबरको मोटरकारसे मुझे लाया गया। मोटर आकर खडी हुअी और बापूजी तुरत मेरे पास आये। (नाणावटीजी टाअीफाअिडसे बीमार थे। फिर मैं आया। बादमें मीराबहन बीमार पडी।) सोमवारका मौन तोडकर बापूने मुझसे हसकर कहा, "क्यो खूब मिर्च खाअी? बीमार क्यो पड गये?" मैंने कहा, "मिर्च तो नही खाअी लेकिन वहा खाने-पीनेकी व्यवस्था अच्छी नही थी अिसलिअे मैंने केले खूब खाये, जिससे मुझे कब्ज हो गया। मुझे लगता है कि मेरे पेटमें कुछ जहर पैदा हो गया है। आप अुसे निकालनेका प्रबंध कीजिये।"

मा की तरह बीमारोकी सेवा

मैं बापूजीसे बात तो कर रहा था, लेकिन शरीरमें अितनी पीडा हो रही थी कि आधा बेहोश-सा था। बापूजी मुझे अुठाकर अपने स्नानघरमें ले गये और अपने हाथसे अेनीमा दिया। बुखार खूब था। मेरे शरीरसे बदबू आ रही थी। क्योकि जबसे बुखार आया था तबसे स्पज नही किया था। बापूजीने स्पज किया, मेरे कपडे बदले। वर्धासे डॉक्टर महोदयको बुलाया गया। अुन्होने देखकर बापूजीसे कहा कि अिनका हृदय बहुत कमजोर हो

गया है। बहुत सभालकर रखनेकी जरूरत है। कभी भी बन्द हो सकता है। मैंने बापूजीसे कहा कि आपके पास बहुत काम हैं। मेरे कारण आपको काममे बहुत अडचन होगी। अिसलिअे मुझे सिविल अस्पतालमे वर्धा भेज दे तो कैसा रहे?

बापूजीने कहा, "कोअी भी मा अपने बच्चेको अपनेसे दूर करना पसद करेगी? या कोअी भी लडका माको तकलीफ होगी, अिसलिअे दूर जानेका विचार करेगा? तो तुम ही अैसा क्यो सोचते हो? मेरे पास कितना भी काम हो तो भी तुम्हारी सेवामे किसी प्रकारकी कमी नही आयेगी। हा, तुमको मेरी सेवामे विश्वास नही हो तो मैं तुमको रोकूगा नही। तुरन्त जा सकते हो।"

मैंने कहा, "मैं तो आपके कामके कारण सकोच करता था, लेकिन वैसे मैं जाना पसद नही करता।"

बापूजीने डॉक्टरको दिखाया तो सही, लेकिन अिलाज डॉक्टरका शुरू नही किया। प्यारेलालजीको सिर और पेट पर मिट्टीकी पट्टी देनेका काम सौपा और खानसाहबको फलोका रस देनेका। मेरे पास कमोड, पानीकी बाल्टी, पीनेका लोटा, कटोरी, चम्मच सब रख दिया गया तथा मुझे किसी बातकी जरूरत पडे तो बजानेके लिअे घटी भी रख दी गअी।

मुझे खूब प्यास लगती थी। पेशाब बार बार होती थी। मेरे पास सारी व्यवस्था थी। जब जरूरत होती घटी बजाता और अगर कोअी दूसरा न होता तो बापूजी खुद आते। मुझे खुदको डर हो गया था कि शायद मेरा शरीर चला जायगा। और डॉक्टरके कहनेसे बापूजी भी घबरा गये थे। बापूका नर्सिंग, प्यारेलालजीकी मिट्टीकी पट्टी बनानेकी कुशलता, खानसाहबका रस निकालकर व अपने मातृस्नेहकी मिठास घोलकर प्रेमपूर्वक मुझे पिलाना और मीराबहनकी देखरेख — अिस प्रकार मुझे सेवाके सर्वश्रेष्ठ साधन मिले थे। सर्वोपरि औषधि बापूका प्रेम तो मुझे प्राप्त था ही। आज जब अुन दिनोकी याद करता हू तो अपने सद्भाग्यके लिअे आश्चर्य होता है। अगर अिस प्रकारकी सेवाकी व्यवस्था नहीं हुअी होती तो मेरा क्या होता, कौन जानता है। अिस सेवासे मैं जल्दी ही बीमारीके पजेसे निकल गया और मेरा बुखार अुतर गया।

ज्यो ज्यो मेरी तबीयत सुधरने लगी त्यो त्यो मेरी भूख भी बढने लगी। मैंने बापूजीसे रोटी खानेकी आज्ञा मागी। बापूजीने कहा कि अगर

तुम दस सेर भी दूध पियोगे तो मैं खुशीसे पिलाअूंगा, लेकिन तुम अेक भी रोटी मांगोगे तो मुझे दुःख होगा। मैं चुप हो गया। जब भूख लगती तो बापूजीके सामने जाकर खड़ा हो जाता। बापूजी पूछते, क्या बात है? मैं कहता भूख लगी है। बापू कहते "अच्छा, मोसंबी ले लो, मीठा नींबू ले लो, संतरा ले लो।"

जब मैं कहता कि कोअी ठोस चीज दीजिये तो वे कहते, अच्छा सेब ले लो।

यह क्रम करीब तीन महीने तक चला। अिस बीचमें मैंने पानी भी शायद ही पिया हो। अेक रोज थककर मैंने विजयाबहनसे रोटी मांगी और शायद अुनकी आंख बचाकर मैं आधी रोटी खा भी गया। विजयाबहनने हंसकर बापूजीसे शिकायत की। बापूजी बोले, "अरे, बलवन्तसिंह, चुराकर रोटी खाता है?" और हंसे। मैंने कहा, "बापूजी चोरी नहीं की लेकिन जोरी जरूर की है। क्या करता रोटी खाये बिना मेरा शरीर खेतीका काम नहीं देता है। और अिस तरह बैठा तो कब तक रहूं?" तब बापूने अिसको हंसकर टाल दिया। लेकिन रोटीकी अिजाजत नहीं दी। जब बापूजी प्रवास पर जाने लगे तो मैंने कहा कि अब तक आपके लिअे जो फल आते थे अुनसे मेरा भी गुजारा हो जाता था, लेकिन जब आप यहां नहीं होंगे तो फल कोअी भेजेगा नहीं और मैं भूखों मरूंगा। बापूजीने हंसकर कहा, "बात तो ठीक है, लेकिन जितना फल मिले अुतना खाकर यदि भूख बाकी रहे तो अुतनी रोटी खा सकते हो।" मुझे तो यही आज्ञा चाहिये थी।

जब मैं आगाखां महलमें अुपवासके समय बापूजीसे मिलने गया था, तब देवदासभाअीने कहा था कि बापूजीने सरोजिनीदेवीसे अेक बार कहा था कि बलवन्तसिंहकी सेवा मैंने देवदाससे भी ज्यादा की है। सचमुच बापूजीने अपनी सेवा और प्रेमके बलसे ही सबको जीता था। न मालूम कितने लोगों पर अनका अिस प्रकार निकटका प्रेम बरसा होगा।

मेरे चार रोज बाद ही मीराबहनको भी बुखार आ गया और वे सख्त बीमार हो गअीं। अुनकी सेवाका भार बापूजीके अूपर ही पड़ा। अुनको मोतीझरा (टाअीफाअिड) था। बापूजी अेनीमा देते, स्पंज करते और सारी व्यवस्था करते। नाणावटीजीको टाअीफाअिड पहलेसे ही था। अभी मैं कुछ कुछ ही घूमने-फिरने लगा था कि अिन लोगोंको बहुत सख्त बीमारी हुअी। मीराबहन कमजोर तो बहुत हो चुकी थीं, किन्तु बेहोशी तक नहीं पहुंची थीं।

नाणावटीजी तो वेहोश हो गये थे और भय हो गया था कि कही चले न जाय। अुन्होने भी वापूजीका वोझ देखकर अस्पताल जानेकी वात कही, किन्तु वापूने अुन्हे भी वही जवाव दिया जो मुझे दिया था। सारी दुनियाका काम करते हुअे भी वापूजी वीमारोकी पूरी सेवा करते थे। अुसके कुछ दिन वाद ही चिमनलालभाअीको टाअीफाअिड हुआ। अिनका टाअीफाअिड सवसे खतरनाक था और खुद वापूजीको शक हो गया था कि अिनका शरीर चला जायगा। अुनकी पत्नी पू० शकरीवहन अहमदावाद थी। वापूजीको किसीने सुझाया कि शकरीवहनको वुला लिया जाय।

वापूजीने कहा, "मुझे मददकी जरूरत नही है और न अुसका आना मै यहा ठीक ही समझता हू। हा, अगर चिमनलाल चाहे तो जरूर वुला सकता हू।" चिमनलालभाअीने अिनकार कर दिया था।

मुझे वापूजीकी यह कठोरता अच्छी नही लगती थी। मै सोचता, चिमनलालभाअी जानेकी तैयारी कर रहे है और ये अुनकी पत्नीको अुनके पास नही आने देते। लेकिन वापूजीकी मनोभूमिकाको मै कैसे समझ सकता था? वापूजी वीमारोकी पत्नी थे, अुनकी मा थे और अुनके डॉक्टर थे। तव फिर दूसरोकी जरूरत ही कहा रह जाती थी? सनधी आकर तो मोह ही पैदा कर सकते थे।

चिमनलालभाअीकी तवीयत अितनी कमजोर थी कि वापूजीने मुझे भी पहरा देनेको कहा, यद्यपि मै कमजोर था। वापूजीने कहा, "हो सकता है आज रातको ही चिमनलाल चला जाय। हम सवको सावधान रहना चाहिये। हमारी सेवामे किसी प्रकारकी कमी न रहे तो हमारे लिअे वस है।" वडी कठिनाअी और सेवासे चिमनलालभाअीकी तवीयत सुधरी।

अिस प्रकार आश्रम पर वीमारीका अेक वडा प्रकोप आया था, जिसका सामना वापूजीने वडी कुशलता और धीरजके साथ किया।

मै अव भोजनालयमे ही भोजन करने लगा था। वापूजीको यह अच्छा लगा। वे कहने लगे, "तुम जो अलग वनानेका आग्रह रखते थे वह मुझे अच्छा नही लगता था। हमको तो जगतके साथ कुटुम्वका-सा वरताव करना है। हर प्रान्तमे आनेवालोंके साथ प्रेमसे रहना सीखना है।"

मैने कहा, "अवकी वार मै भोजन अलग करना नहीं चाहता था, लेकिन अेक दिन दो-तीन वाते अैसी हो गअी जिससे मुझे लाचार होकर अलग होना पडा।"

बापूने कहा, "अैसी बातोंको तो हसकर टाल देना चाहिये। तुम अधिकारपूर्वक कह सकते हो कि मुझे यह चाहिये और यह नही चाहिये। शरीरको जिस जिस चीजकी आवश्यकता है वह अुसे देना चाहिये। क्रोधको अक्रोधसे जीतना, कामको सयमसे जीतना और मूर्ख भी कह सकता है कि आगको पानीसे जीतना है। जैसे आग और पानी दीखते है, वैसे क्रोध और अक्रोध दीखते नही है। लेकिन वे आग और पानीसे भी ज्यादा प्रत्यक्ष है।"

अहिंसा तथा अन्य चर्चाअें

ग्रामोद्योग सघके विद्यार्थी बापूजीके पास अक्सर आया करते थे। अेक रोज अुन्होंने प्रश्न किया कि अहिंसात्मक साधनोंसे हम सामाजिक विग्रहको कैसे दूर कर सकते है? बापूजीने अुत्तर दिया

"सामाजिक विग्रह मिटानेका अर्थ है अपने आपको शुद्ध करना, अपनी दसो अिन्द्रियो और मन पर काबू रखना। हमारी नजरमे मनुष्यमात्रके लिअे समभाव हो, चाहे वह किसी भी मजहबका माननेवाला हो। अुसके दोषोको जानते हुअे भी अुसके नाशकी वृद्धि हम न करे। अुसके दोषोको दूर करनेकी प्रभुसे प्रार्थना करे। मेरे चार लडके है मगर मेरे दिलमे अैसा नही है कि देवदास मुझे प्यारा है और हरिलाल कुप्यारा। भले वह मेरी और अपने भाअियोकी नदामत-बदनामी करता है। अगर मै हरिलालको खत नही लिखता हू तो अिसका अर्थ यह नही है कि मै अुससे प्रेम नही करता हू। समझो कि देवदासको टाअीफाअिड हो गया है और हरिलाल चगा है, तो जो खुराक मै हरिलालको दूगा वह देवदासको नही दूगा। जहा चगेको रोटी खूब खिलाना धर्म है वहा बीमारको केवल पानी पर रखना धर्म हो जाता है। अिसका अर्थ यह नही है कि दोनोमे कुछ फर्क है। मै चाहता हू कि हरिलालका नाश न हो, अुसके दोषोका नाश हो। अिसी प्रकार मै जानता हू कि   मे दगेकी शुरुआत मुसलमानोने की है। हिन्दू भी निर्दोष नही है, अुनकी तरफसे भी हिंसा होती है। दोनो अेक-दूसरेको खानेके लिअे अपना अपना सगठन करनेकी फिक्रमे है, जिसका नाम गुडाशाही है। अग्रेजोने भी अिसी प्रकार दूसरोको दबानेके लिअे गुडाशाहीका सगठन कर रखा है। गुडे कभी अपने आप सगठित नही होते। फौज गुडाशाही नहीं तो और क्या है? अिस प्रकारकी गुडाशाहीका बोलबाला अधिक टिकाअू नही होता। कितनी सल्तनते आअी और बरबाद हो गअी। अिस प्रकार यह भी बरबाद हुअे बिना नही रहेगी। हा, रह सकती है अगर अग्रेज लोग

समझ जाये और अुनके पास जितने हथियार है अुनको फेंक दे, हवाअी जहाजोंको फूक दे, बारूदमें आग लगा दे और कह दे कि जिनको लूटना हो हमको लूट लो। तो अंग्रेज जिन्दा रह सकते हैं, नही तो नही।"

घूमते समय मेरी बापूजीके साथ चर्चा होती थी। बापू गावके लोगोको गोपालनका महत्त्व समझाते थे। परन्तु लोगोने कहा कि गावमें कीचड बहुत रहता है और चारा भी कम है। बापूजीसे मैंने गावके दूधके बारेमें पूछा तो अुन्होंने कहा कि जैसा अुचित लगे वैसा भाव ठहरा लो, लेकिन अैसी कोशिश न करना जिससे गावके लोगोको अेक पैसा भी कम मिले।

मैंने बापूजीसे आगे प्रश्न करते हुअे कहा, कल मेरी सत्यदेवजीके साथ बात हुअी थी। अुनका मानना है कि आपने मीराबहन पर अितना प्रेम किया है जितना हिन्दुस्तानमें किसी पर नही किया, तो भी अभी तक वह स्वावलम्बी नही बन सकी। अिस प्रकार आपके आश्रित रहना मोहकी निशानी है। ब्रह्मचर्यके बारेमें अुन्होंने कहा कि आज तक आपका जो शिक्षण रहा है वह बाहरी दबाव-सा रहा है। यह बात स्वाभाविक होनी चाहिये, अैसा आश्रमके लडकोंको देखकर अनुभव होता है।

बापूजीने कहा, "बात तो सच है, लेकिन मीराबहनका मोह निर्विकार है। वह मेरे पास कैसे आयी और अुसके जीवनमें क्या क्या तबदीली हुअी, यह जानने लायक बात है। अिमीसे आज भी मुझसे सीखनेकी दृष्टिसे ही वह मेरे पास रहनेका आग्रह रखती है। मैं जानता हू कि यह दोष है, लेकिन मैं अुसे मरने भी नही दूगा।

"ब्रह्मचर्यके बारेमें मैंने अपना विचार स्पष्ट लिखा है। जिसका मनमें पतन हुआ अुसका पतन हो चुका। यह बात ठीक है कि आश्रमके सब लडके भाग गये, लेकिन अिससे मैं असफल हुआ हू अैसा भी नही है। जो दो-चार मभले हुअे हैं अुनमें मुझे वस्तुकी सिद्धताका भरोसा हो गया है। मैं खुद अपूर्ण हू तो दूसरोंको पूर्ण मार्ग कैसे बता सकता हू? मैं कुछ पारस पत्थर तो नही हू जो दूसरोंको स्पर्श करते ही ब्रह्मचारी बना दू। मेरा तो नम्र प्रयत्न है। जो लोग काल्पनिक गावोंको मानते हैं अुनको भी लाभ होता है। मेरे पास तो दूर दूरसे खत आते हैं कि आपके लेखोंसे हमको बहुत लाभ हुआ है। जो लोग मेरे नजदीक आ जाते हैं अुनको मालूम हो जाता है कि मैं तो अेक हाडमासका पुतला हू। मैंने कभी गुरु बननेका दावा तो किया ही नही है। मैं तो अल्पज्ञ हू। सर्वज्ञ तो अीश्वर ही है।"

दूसरे दिन फिर वैसी ही चर्चा चली। बापूजी कहने लगे, "मैं जो धूलमें से धान पैदा करनेकी बात कहता हूं अुसे तुम ध्यानसे सुनते हो न? तुम तो किसान हो। हरअेक चीजका ध्यान रखना और किसका क्या अुपयोग करना है वैसा जान-बूझकर करना।"

बापूजीकी बीमारी

हम लोग तो बीमार पड़े ही, लेकिन बापूजीको भी बुखार आ गया। जमनालालजी सोचने लगे कि यहां पर मलेरिया है, अिसलिअे बापूजीके लिअे अूपर टेकरी पर मकान बनाना चाहिये। अिसके लिअे बापूजीकी अिजाजत लेने आये। बापूजीने कहा, "जब मेरे लिअे बनाओगे तो बलवंतसिंहके लिअे भी बनाना होगा और जब बलवन्तसिंहके लिअे बनाओगे तो अुसकी गायोंके लिअे भी बनाना होगा। क्योंकि मैं अुसको छोड़कर नहीं जा सकता और वह अपनी गायोंको छोड़कर नहीं जा सकता। अिसलिअे तुम अिस झंझटमें ही मत पड़ो।"

जमनालालजीको बापूकी बात माननी पड़ी। परन्तु बापूजीकी तबीयत अधिक खराब हो गअी। अंतमें बहुत आग्रहसे जमनालालजी बापूको सिविल अस्पताल वर्धामें ले गये। अिसी बीचमें मेरा कमरा लीपते हुअे प्रह्लादके हाथमें सुअी टूट गअी और अुसे मैंने बापूजीके पास वर्धा अस्पतालमें भेज दिया। मैं सेवाग्रामके सब समाचार बापूजीको भेजता रहता था। मुन्नालालजीको बुखार था। अिसलिअे अुनको भी वर्धा भेजना चाहता था। बापूजीको पूछवाया तो अुन्होंने लिखा

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारे तीन कागज मिले हैं। मुन्नालालके खतमें तुम्हारे खतोंकी पहुंच दी है। हां, रमणीकलालका खत भी मिला। मैंने तुमको धन्यवाद भी भेजे हैं। मेरी अुम्मीद है कि शायद परसों मैं वहां पहुंच जाअूंगा।

मुझको आराम है।

मुन्नालालको अब तो नहीं बुलाता हूं, लेकिन डॉक्टर महोदयको भेजनेकी कोशिश करूंगा। दरमियान सिर्फ दूध पर रहे। दस्त साफ न आवे तो दीवेल (अेरंडी) तेल लेवे और कमसे कम दस ग्रेन क्विनीन लेवे। अुसकी सेवा तो तुम करते ही हो।

गंगाबहनका खत नहीं मिला है, न मुन्नालालका। प्रह्लाद या किसीके बगैर मांगे दूध मत भेजो। प्रह्लादको दूध कल भी दिया था और आज भी दिया है मगनवाडीसे। प्रह्लाद अच्छी तरहसे है। दस दिन कमसे कम रहना होगा। पुरी (अनन्तराम पुरी) को आज नहीं लिखूंगा। बाकी कल।

दो बोतल तो वापिस आती हैं, बाकी कल भेजनेकी कोशिश करूंगा।

२०–९–'३६, वर्धा अस्पताल बापूके आशीर्वाद

मगनवाडीमें

बापूजी कुछ दिन बाद सेगांव आ गये। कुछ ही दिन पश्चात् मेरे पैरमें फोडे हो गये। अुनके अिलाजके लिअे मैं वर्धाके सिविल अस्पतालमें ड्रेसिंग करा आता था और मगनवाडीमें रहता था। अिसीके साथ मुझे ज्वर भी हो आया। मैंने बापूजीको लिखा कि "फोडे तो थे ही, बुखार और आ गया। मैं रोगी बनता जा रहा हूं। आपने कहा था कि जो सेगांवमें रहकर बीमार पडेगा अुसको सेगांव छोडना पडेगा। अिसलिअे मुझे आपके अुस निर्णयके पालनके लिअे भी सेगांव छोडना चाहिये।" वर्धासे मैंने अेक गाय भेजी थी। अुसके दूधका हिसाब रखनेके लिअे भी लिखा था। बापूजीने लिखा

चि० बलवंतसिंह,

तुम्हारा पत्र मिला। गाय आ गअी है। हिसाब रखा जायगा। डॉक्टर कहे सो करना। तुम्हारे सेगांव छोडनेका प्रश्न अुपस्थित होता ही नहीं है। तुम्हारी व्याधि असाध्य नहीं है। बहुत दिनों तक चलनेवाली भी नहीं है। दो तीन दिनमें हार क्यों गये? तुम्हारे खतमें मुझे अश्रद्धाकी बू आती है। थोडे फोडे हो जाते हैं, अुसका पूरा अिलाज भी नहीं हुआ है। अितनेमें वह न मिटनेका डर पैदा हो जाता है। यह कहांकी बात? तुम्हारे दिलको निश्चित करना है कि मैं अच्छा हो जाअूंगा, शीघ्र हो जाअूंगा। अच्छा होनेके लिअे डॉक्टर-वैद्यकी आज्ञा पालन भलीभांति करूंगा। दिलमें अमंगल तर्क पैदा नहीं होने देना चाहिये। मेरे निर्णयके पालनकी फिकर तुम क्यों करोगे? और मेरे निर्णयमें कोअी महत्त्वकी बात तो है ही नहीं। माना कि मैंने किसी व्याधिग्रस्तकी

मेवा ही करनेके लिअे अुसे सेगाव रखा, तो मेरा कुछ अनिष्ट तो नही होगा। तुम्हारे फिकर करना है अच्छे होनेकी, शीघ्रतासे आ जानेकी और गायोकी मेवा करनेकी। तुम्हारे फिकर करनी है तुम्हारे स्वभावकी अुग्रताकी।

७–२–'३७ वापूके आशीर्वाद

मेरी बीमारी मुझे वढती ही नजर आती थी। मैंने वापूजीको अिस वारेमे लिखा। वापूजीका अुत्तर आया

चि० वलवतसिंह,

व्याकुल होनेकी कोअी वात नही है। डॉक्टरके सुपुर्द किया है सो ठीक ही है। वहीसे आराम होगा। धीरज नही छोडना।

गलतिया तो हकीम, वैद्य, डॉक्टर सव कर लेते है। गलती हो ही नही सकती है अैसी पद्धति सिर्फ नैसर्गिक अुपचारकी ही है। अुसे चलानेकी श्रद्धा वहुत कम लोगोमें रहती है और अुसके अनुभव भी वहुत कम मनुष्योमे देखनेमे आते है।

१४–२–'३७ वापूके आशीर्वाद

मैं अस्पतालसे देरसे आता था, अिस कारण प्रभुदयाल विद्यार्थी मेरे लिअे रोटी वना देता था। अेक रोज वह सेगाव गया और वापूजीने अुसके कामका हिसाव पूछा। अुसने हिसावमे मेरी रोटी वनानेका काम भी वताया। वापूजीने अुससे कहा कि तुम्हे रोटी वनानेकी जरूरत नही है, वह खुद वना लेगा या किसी दूसरेसे वनवा लेगा। अुसने वापूका यह सदेश कुछ अिस प्रकारसे कहा जिससे मेरे दिलको लगा कि वापू यह समझते है कि मै आलस्यके कारण अुससे रोटी वनवा लेता हू। मुझे वापूके अूपर वहुत गुस्सा आया। मैंने क्रोधसे भरा अेक पत्र लिखा कि "मुझे आपकी गरज नही है। मै कही भी चला जाअूगा। अपनी रोटी मै खुद वना सकता हू और अपना सव काम कर सकता हू।"

यह पत्र लिखते समय मै क्रोधसे वेहोश-सा हो गया था। जो मेरे मनमे आया था सव वापूको लिख दिया था। पत्र हाथसे निकलते ही मेरा गुस्सा अुतरा तो मुझे वडा अफसोस हुआ। लेकिन तीर कमानसे निकल चुका था। वापूजीने लिखा

चि० बलवंतसिंह,

तुम्हारे क्रोधकी कुछ सीमा ही नही है? अेक बेहोश, आलसी लडकेके कहने पर अितना क्रोध, अितना अविनय? सब प्रतिज्ञाओका भग? तुमको क्या पता प्रभुदयालके साथ क्या बात हुअी? मैं तुम्हारे खत पर हसू, रुदन करू, कि प्रतिक्रोध करू? रुदन करने योग्य तुम्हारा खत है। लेकिन रुदन नही करूगा। क्रोध करना पाप होगा और बुरा दृष्टात होगा। बस तुम्हारी अिस मूर्खता पर हसूगा। अगर थकान है तो अवश्य सेगाव छोडोगे। लेकिन प्रभुदयालको साथ लाकर मुझसे सुनो क्या हुआ? बादमे जो करना है सो करो। आज ही आनेकी आवश्यकता नही है। अच्छे हो जाने पर आना। प्रभुदयालके हाथकी रोटी हराम समझो। चचलसे* कहो।

१५–२–'३७ बापूके आशीर्वाद

दूसरे दिन बापूका पत्र फिर आया

चि० बलवंतसिंह,

कल तो तुम्हारे खत पर हस दिया। लेकिन अुस खतको भूल नही सका। अिसलिअे अभी दु:ख हो रहा है। अितने क्रोधकी मैंने कभी आशा ही नही रखी थी। मैंने झवेरभाअीके मारफत सदेशा भेज दिया है। अुसके मुताबिक किया होगा। चचलबहन तुम्हारी रोटी पकायेगी। वह नम्रतासे खाओ।

डॉक्टर कहे वही करो और जल्दी अच्छे हो जाओ। अच्छे होने पर दिल चाहे सो करना। अब तो कुछ अैसा ही मुझको लगता है कि तुम्हारी दुर्बलताका कारण क्रोध ही है। क्रोध और किसीको नही जलाता है। क्रोध करनेवाला ही जलता है। अेक नालायक बच्चेकी बाते सुनकर अेक क्षणमे तुमने अपना अनिष्ट कर दिया है और क्योंकि अुसकी बाते तुमने मान ली।

१६–२–'३७ बापूके आशीर्वाद

* श्री झवेरभाअी पटेलकी पत्नी श्री चचलबहन। श्री झवेरभाअी गुजरात विद्यापीठके स्नातक हैं। मगनवाडीमें तेलघानी विभागके सचालक थे। आजकल भारत सरकारके तेलघानी और ग्रामोद्योगोके सलाहकार हैं।

वापूजीके अिस दु खसे मुझे वहुत दु ख हुआ और शरम भी आयी। लेकिन अव क्या कर सकता था? वापूजीका खत आया

चि० वलवतसिंह,

तुम्हारे खत आते रहते है। विचारा लाखा वछडा तुम्हारी अितजारीमे रोता है। तो भी डॉक्टर साहव छुट्टी न दे तव तक वही रहो। हम लोग किसी न किसी तरह निभा लेगे। मीरावहनकी झोपडी शुरू हो गयी है।

२०-२-'३७

वापूके आशीर्वाद

शामको ही वापूजीका दूसरा खत आया

चि० वलवतसिंह,

आज फजरमे दो लाअिन भेज दी। मै कुमारप्पाकी गाडी रोकू तो ज्यादा लिख सकता हू। लेकिन मैने रोकना दुरस्त नही माना। वाये हाथसे लिखनेकी गति वहुत मद चलती है।

अधीराअीसे आराम होनेमे देर ही होनेवाली है। धीरजसे ही वन सकता है। सिविल सर्जनका कहना है कि तुम्हारे खूनकी अशुद्धि आजकलकी नही है, वहुत दिनोकी है। अिसलिअे देर होती है। वहा क्या काम करते हो? समय कैसे व्यतीत होता है? खुराक क्या चलता है? चित्तकी प्रसन्नता भी आराममे मदद देनेवाली वस्तु है। गीताभ्यासीको तो 'येन-केनचित्' सतुष्ट होना चाहिये, यह १२वे अध्यायका वचन है।

२०-२-'३७, सेगाव

वापूके आशीर्वाद

मैने वापूको लिखा था कि खजूर और शहदसे शायद फोडे हुअे हो और ह भी पूछा था कि ग्रामसेवकके लिअे अग्रेजी जानना क्या जरूरी है? पूजीने लिखा

चि० वलवन्तसिह,

खत मिला। शहद या खजूरसे फोडे होनेका कोअी कारण नही पाता हू। तव भी डॉक्टरसे पूछा जाय। दूध या भाजीका अभाव या अुसकी कमी और अधिक गेहू यह कारण तो थे ही। और सवसे ज्यादा तुम्हारा अुग्र स्वभाव।

अग्रेजी जाननेकी ग्रामसेवकोंके लिअे कोअी आवश्यकता नही है। यो तो भाषाका ज्ञान अच्छा ही है। तुम्हारा प्रश्न अिस दृष्टिसे पूछा नही गया है।

२१–२–'३७, सेगाव बापूके आशीर्वाद

आश्रममे अब दूधकी कमी थी, क्योंकि बापूका परिवार बढने लगा था। अिसलिअे मैंने गाय भेजनेके बारेमे बापूसे पूछा तो अुन्होने लिखा

चि० बलवन्तसिह,

हा, गाय तो दूसरी अवश्य चाहिये, यदि अच्छी हो तो। डॉक्टर कहते है जल्दी अच्छे हो जाओगे।

२२–२–'३७, सेगाव बापूके आशीर्वाद

मुझे फिर ज्वर आ गया। मैंने बापूजीको लिखा कि मै रोगी तो बना हू लेकिन राम मिलेगा या नही यह कौन जानता है। 'किस्मतसे राम मिला जिसको' अिस भजनका मनन करता हू। बापूजीने लिखा

चि० बलवन्तसिह,

मेरी कलकी चिट्ठी मिली होगी। बुखार आया, वो अब तो गया होगा। घबराहटकी कोअी आवश्यकता नही है। धीरजसे सब अच्छा ही हो जायगा। हा 'किस्मतसे जिसको राम मिले' भजन अवश्य मनन करने योग्य है। अगर मच्छर कष्ट देते है, तो मच्छेरीका अुपयोग करना चाहिये।

२३–२–'३७, सेगाव बापूके आशीर्वाद

परस्परावलबनकी आवश्यकता

मै वर्धा अस्पतालके अिलाजसे अच्छा होकर बापूजीके पास सेगाव आ गया और बापूजीके साथ सारी बाते हुअी। अेक रोज गामको घूमते समय मैंने बापूजीसे कहा कि मेरे अुस रोजके पत्रमे क्रोध तो था ही आत्मश्लाघा भी थी, अैसा विचार करनेमे पता चला। मनुष्य दूसरेकी सहायताके बिना अेक क्षण भी नही टिक सकता। बापूजीने कहा

"ठीक है। जो हम खाते है जैसे गेहू किसी दूसरेने पैदा किया, दुकानदारने नही। फर्ज करो कि अगर वह हमको पैसेके बदलेमे गेहू न दे तो हम क्या करेगे? और किसीने गेहू भी पैदा कर लिया तो अुसके लिअे

ओजार किसने वनाये थे ? हम अेक-दूसरेके आश्रित है। अगर वेदकी दृष्टिसे विचार करे तो हम अेक ही है। अितना ही नही जिसको हम जड पदार्थ कहते है, जैसे लकडी आदि, वह और हम सव अेक समान ही है। सव अेक ही जमीनमे पैदा हुअे है। जो सेवाभावसे परावलम्वी वनता है, मनसे सेवाके स्वाधीन रहता है, वह स्वावलम्वी है। मगर जो सेवा करते हुअे कुछ कष्ट पडने पर दूसरोकी तरफसे सहायता न मिलने पर नाराज होता है वह गिरता है। मान लो कि अेक आदमी प्यासा पडा है। अुसके पाससे सैकडो आदमी निकल जाते है और कोअी आदमी अुसे पानी नही पिलाता है। अगर अुमे अुन पानी न पिलानेवालो पर गस्सा आये तो अुसका अज्ञान है। वह समझ ले सव लोग अपने अपने काममे लगे है। अगर अीश्वरको मजूर होगा तो पानी मिल जायगा, नही तो पडा रहूगा। आखिर तो कोअी आदमी आता है और पानी पिलाता है। अुसका भी वह अहसान न मानेगा। अहसान तो वह अीश्वरका मानेगा, क्योकि हम सव अीश्वरके ही अश तो है।"

आश्रमवासियोसे अपेक्षा

अेक रोज मैने वापूजीसे पूछा कि आप सेगावके भविष्यके वारेमे क्या आशा रखते है ? आप वार वार कहते है कि मेरे वाद सेगावमे क्या होगा, कौन जाने ? तो यहा जो आदमी है अुनसे आप क्या चाहते है ? वापूजीने कहा

"सेगावमे अेक अच्छी दुकान चले। सवको घानीका तेल मिले। और भी आवश्यक वस्तुओके लिअे वर्धा न जाना पडे। गोपालन हो, यहाके सव वच्चोको दूध मिले। भले दो पैसा या अेक पैसा सेरकी कीमतसे ले। खेतीकी पैदावार वढाअी जाय। शायद वा न रहे, लीलावती जाय। तुम हो, मुन्नालाल हे, नाणावटी है। अगर सव भाग जाओगे तो मीरावहन तो है ही। वह तो यही मरेगी। तुम सवमे अैक्य नही है, यह अच्छी वात नही है।"

मैने कहा — अिसी कारणसे तो यह प्रश्न अुठता है।

वापूजीने कहा, "यह भी तो अेक काम है कि हम आपसमे मधुर सम्वन्ध वाधे। तुमको अितना अक्षरज्ञान तो नही है लेकिन वुद्धिज्ञान तो है। व्यवहारज्ञान भी हे ही। अक्षरज्ञान भी वढा सकते हो।"

बादमे मीराबहनकी बात चली। बापूने कहा, "मीराबहन बहुत गरीबीसे रह सकती है। अुसकी कहीसे भी शिकायत नही आयी कि मीराबहनने हमको तग किया। खैर, कुछ भी हो मीराबहन सेगाव नही छोडेगी।"

अितनेमे लीलावती बहन बीचमे बोल पडी और पूछने लगी, "क्या बात हुअी?" बापूजीने हसकर कहा—यह बात हुअी कि मेरे मरनेके दूसरे ही दिन पहले लीलावती भागेगी या बलवन्तसिह। यह तो मैं जानता हू कि पहले रोज तो कोअी नही भागोगे और झगडा भी नही करोगे। अेक अेक लकडी तो मेरी चिता पर अवश्य डालोगे। याद रखना मुझे तो सेगावमे ही जलाना है। कोअी कुछ भी कहे तो कहना हमको बापूने सेगावमे जलानेको कहा है।

ब्रह्मचर्य-सम्बन्धी प्रश्नोत्तर

अिसके बाद ब्रह्मचर्यके अूपर चर्चा हुअी। मैंने कहा, "आप कहते है कि सतानके लिअे स्त्रीसग धर्म है, बाकी व्यभिचार है, ओर निर्विकार मनुष्य भी सतान पैदा कर सकता है। वह ब्रह्मचारी ही है। लेकिन जिसने विकारके अूपर काबू पाया है वह क्या सतानकी अिच्छा करेगा?"

बापूजीने कहा, "हा, यह अलग सवाल है। लेकिन अैसे भी लोग हो सकते है जो निर्विकार होने पर भी पुत्रकी अिच्छा रखते है।"

मैंने कहा, "अधिकतर तो सतानकी आडमे कामकी ही तृप्ति करते है।"

बापूजी, "हा, यह तो ठीक है। आजकल धर्मज सतान कहा है? मनुकी भाषामे अेक ही सतान धर्मज है बाकी सब पापज है।"

मैंने पूछा, "कुछ लोग वासनाका क्षय करनेके लिअे विवाहकी आवश्यकता मानते है। क्या भोगसे वासनाका क्षय हो सकता है?"

बापूजी, "हरगिज नही।"

स्वावलम्बनका पाठ

अेक बार ठडके मौसममे लोगोकी सख्या अधिक हो गअी और ओढनेके कपडे कम थे। बापूजीने अेक तरकीब निकाली। बहनोकी पुरानी साडिया लेकर अुनके बीच बीचमे कागज रखकर वे रजाअी बना देते और कहते कागजसे ठड दबती है। जो रजाअीकी माग करता अुसे कागजकी

रजाअी दे देते। अिस प्रकार कम खर्चमे काम कैसे चलाया जा सकता है, अिसका बापूजीका प्रयत्न रहता था। बापूने खुद भी अिस युक्तिका खूब अिस्तेमाल किया।

अेक बार अेक शीशीका डाट बनानेके लिअे बापूजीने मुझसे कहा। मैं गया और जो बढअी आश्रममे काम कर रहा था अुसको डाट बनानेके लिअे शीशी दे दी। अुसने अेक खूबसूरत-सा डाट बना दिया। मैं शीशी बापूजीको देने गया। बापूजीने डाट देखा तो बहुत खुश हुअे। मैं समझ गया कि बापूजी अिसको मेरा बनाया हुआ समझते हैं, अिसलिअे अधिक खुश हो रहे हैं। मैंने बापूजीके सामने तुरत ही अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुअे कहा कि यह डाट मैंने नही बनाया है। बापूजी गभीर हो गये और बोले, "अरे, मैं तो तुझे शाबाशी देना चाहता था, लेकिन तूने तो बडा गुनाह किया। मैंने कब कहा था कि बढअीसे बनवाना। मैंने तो तुझको बनानेके लिअे कहा था। भले आज खराब ही बनता लेकिन हाथमे अेक कला तो आती। औजार पकडना सीखता, दुबारा अुससे भी अच्छा बनाता तिबारा अुससे भी अच्छा और अिस तरह डाट बनानेका कारीगर बन जाता। जो काम अपनेको सौंपा गया है अुसकी जवाबदारी दूसरे पर डालना यह तो अच्छी बात नही है।" मैं बहुत शरमाया और मैंने अपनी भूल कबूल की। पहले जो बात छोटी लगती थी वह अब बहुत बडी नजर आती है। बापूजीके अुस डाटके सबकको मैं कभी नही भूल सका। अब यह चीज मेरे स्वभावमें दाखिल हो गअी है कि जो काम हमे सौंपा जाता है वह हमे ही करना चाहिये। अैसी छोटी छोटी बातोमे बापूजी हमे कितना अुपदेश देते थे अुसकी कल्पना आज जितनी आती है अुतनी अुनके सामने आती तो हम अुनसे बहुत कुछ सीख सकते थे।

१३

गोशाला और अुसका परिवार

वापूका गोप्रेम

वापूजी जहा वैठते थे वहासे गाये विलकुल अुनके सामने दीखती थी। यह वापूजीको वहुत प्रिय था। मेरा रिवाज यह था कि जव कोअी नअी गाय या वकरी व्याती तो अुसका वच्चा सुवह जव वापूजी घूमने निकलते थे तव अुनको दिखाता था। वापूजीके साथ मैंने यह शर्त की थी कि घूमने जाय तो वे गोशालामे हो कर ही जाय। अिस वजहसे मै गोशालाकी सफाअीके वारेमे हमेशा सावधान रहता था। वापूजी वच्चा देखकर खूव खुश होते, हसते, वच्चेको प्यार करते और कहते, "अरे, तेरा परिवार तो वढता ही जाता है।"

अेक वार पूज्य राजाजीसे मेरा परिचय कराते हुअे वापूजीने हसकर कहा, "देखो राजाजी, मेरे पास भी अेक राजा है। अिसका परिवार रोज वढता रहता है और नित्य नअी माग मेरे सामने पेश करता रहता हे। देखो तो सही अिसका गोपरिवार कितना वडा है।" राजाजी मेरी तरफ देखकर हस दिये।

अेक रोज आदि-निवासके वरामदेमे वापूजी कुछ लिख रहे थे। रातको अेक गाय व्यायी थी। अुसका वच्चा वापूजीको दिखानेके लिअे मै वही ले गया। वच्चा मेरे हाथसे सटक कर वापूकी गादी पर चढ गया। वापूजी अुसे प्यार करते हुअे हस रहे थे कि वच्चेने पेशाव करना शुरु कर दिया। जव मैंने अुठानेकी कोशिश की तो वापूजीने कहा, "नही, पेशाव कर लेने दो।" मुझे तो सकोच हुआ। लेकिन वापूजीके चेहरे पर मैंने अैसा भाव नही देखा कि मुझसे गलती हो गयी है।

मिट्टीका चमत्कार

गोशालामें अेक वछडीके जुअे पड गअी थी। मैंने अेक रोज वारह वजेके करीव तम्वाकूका चूरा, राख और मिट्टीका तेल मिलाकर अुसके शरीरको पोत दिया और मै आराम करने लगा। मुझे थोडी देर नीद आ गयी।

जब मै अेक बजे अुठा तो मैने देखा कि बछडी बिलकुल बेहोश पडी है, मरनेके बिलकुल नजदीक है। मै दौडता हुआ बापूके पास पहुचा और कापते हुअे बोला कि 'मुझसे आज गोहत्याका अपराध हो गया।' बापूजीने चौंककर पूछा, क्या हुआ? मैने सारा किस्सा सुनाया। बापूजी अुठकर मेरे साथ आये और बछडीको देखकर बोले, "हा, गलती तो हो गअी है, लेकिन क्या किया जाय? अेक अुपाय है वह करके देखो। अगर अिसका जीवन होगा तो बच जायगी। अिसके सारे शरीर पर मिट्टी लगा दो और देखो अिसका क्या परिणाम होता है।" बापूजी यह कहकर चले गये और मैने अेक बाल्टीमें घोलकर अुसके शरीर पर मिट्टी लगायी।

बापूजीने तो सिर्फ लगानेको ही कहा था, पर मैने १५ मिनटके बाद अुसको साफ कर दिया और दूसरी बार लगा दी। पहली मिट्टीके साथ अुसका तम्बाकूका और तेलका काफी अश निकल गया। मैने देखा कि बछडीकी आख जहा बद हो गअी थी वहा अुसने पलक अुठाये। मुझे आशा हो गअी और मैने तिबारा मिट्टी लगाअी। तिबारा मिट्टी लगाने पर अुसने कान हिलाये। अिस प्रकार मैने दो तीन बार और मिट्टी लगायी और निकाली। पाच बजे तक बछडी खडी हो गअी, यद्यपि अभी तक बेहोशीसे ही अिधर-अुधर पैर डालती थी। जैसे तैसे मैने अुसको थोडा दूध पिलाया। दूसरे दिन तक वह बिलकुल स्वस्थ हो गअी। अुसके खडे होनेकी खबर मैने बापूजीको दी तो वे बहुत खुश हुअे। अुन्होने कहा, "यह मिट्टीकी करामात है।"

अुस रोजसे मिट्टीके अूपर मेरा यह विश्वास हो गया कि अुसमें जहर खीचनेकी अजीब ताकत है। अुस बछडीको डॉक्टर या वैद्यकी कोअी दवा बचा नही सकती थी, अैसा मुझे आज भी लगता है। बादमे वह बछडी बडी हुअी और अुसने कअी बच्चे दिये। अुसको जब मैं देखता तो मुझे मिट्टीकी बात हमेशा याद आ जाती।

शुभ भावनाओंका सिंचन

अेक रोज बापूजीकी बकरी जगलमे ब्याअी। बकरीने बच्चेकी नाभी अितनी चाटी और अुसका नार मुहसे पकडकर अितना खीचा कि बच्चेका पेट फट गया और अुसकी आते निकल आयी। बकरी चरानेवाला अुसे लेकर मेरे पास आया। वह दृश्य देखकर मेरे तो होश अुड गये। बापूजी देखेंगे तो कहेंगे कि तुम सावधानी नही रखते हो।

आखिर मैं अुसे लेकर बापूजीके पास गया। अुसकी करुणाजनक दशा देखकर बापूजीको बहुत ही दया आअी और बोले, क्या किया जाय? बकरीने तो प्यारसे ही चाटा था, लेकिन अैसा परिणाम आ गया तो बकरी बिचारी क्या करे? वह तो पशु है। लेकिन मनुष्य मोहवश अपने बच्चोंको कितना नुकसान पहुचाते हैं? अिसका भी तो हमारे पास क्या अिलाज है? मिर्ची-मसाले, चाय, मिठाअी, अरे बीडी-तम्बाकू भी अुनको पीना सिखाते हैं या पीने देते हैं! यह अुनकी पेटकी आत निकालना नहीं तो और क्या है? यह तो मैं दूसरी बात कह गया। अब तो अिसे सुशीलाके सुपुर्द करो। देखो वह क्या कर सकती है। अुसकी डॉक्टरीकी भी परीक्षा हो जायगी। देखें वह सिर्फ मनुष्यका ही अिलाज कर सकती है या हमारे पशु-धनका भी।

मैं तुरत दवाखानेमें, जो पास ही आखिरी-निवासमें था, अुसे सुशीला-बहनके पास ले गया। सुशीलाबहनने अुसकी आतें अंदर करके पेटके टांके लगा दिये। मैंने बापूजीको दिखाया तो बोले, "ठीक है अगर अिसकी जिंदगी होगी तो बच जायगा। तुमसे जो बन सका किया और अिसकी सेवा भी करोगे। आगे हमको अनासक्तिकी साधना करनी है। अगर अब यह मर भी जाय तो दुःख क्या करना?"

मुझे लगता था बापूजी मुझे डाटेंगे कि जब तुमको पता था कि बकरी ब्यानेवाली है तो तुमने सावधानी क्यों नहीं रखी? लेकिन बापूजीने मेरी भूलकी तरफ अिशारा भी नहीं किया, अुलटे मुझे आश्वासन दिया कि मैं अिसका दुःख न मानूं। साथ ही बहुतसा अुपदेश भी दे गये। सचमुच बापूजी जैसे पिता बड़े पुण्यके प्रतापसे ही मिल सकते हैं। मैं मन ही मन बापूजीके मधुर स्नेह और अुपदेशका मनन करता हुआ गोशालामें आया। और जितनी सभाल सभव थी अुतनी मैंने अुस बच्चेकी रखी। लेकिन आखिर वह दो-तीन रोजमें मर गया।

अेक रोज अेक गाय ब्याअी तो अुसके बच्चेने गोबर नहीं किया और अुसका पेट फूल गया। मैंने बापूजीको खबर दी तो बोले, जाओ सुशीलाको पकडो। मैं सुशीलाबहनके पास गया और अुन्हें गोशालामें ले गया। अुन्होंने दवा दी और पानीमें घोलकर पिलानेको कहा। मैंने पिला दी। दवा पिलानेसे या पेटकी ही गर्मीसे अुसके मुहमें छाले हो गये। सुशीलाबहनने अुसे डिफ्थेरिया रोगका नाम दिया और छूतका रोग बताया। गोशालासे अलग रखनेकी सलाह दी। मैंने अुसे गोशालाके पीछे खेतमें अेक आमके

पेडके नीचे रख दिया और खुद भी अुसके पास सोने लगा। अुसका पेट बार बार फूलता था, अिसलिअे मुझे अेनीमा देना पडा। खुराकमें थोडा साका दूध तो देता ही था, लेकिन मोसम्बीका रस भी देता था। किसीने बापूजीके पास शिकायत की कि बलवतसिंह तो गायके बच्चोंको भी मोसम्बीका रस पिलाता है। बापूजीने कहा, "अरे, अुसके लिअे तो गायका बच्चा मनुष्यके बच्चेसे भी प्यारा है। तो मैं अुसे मोसम्बीका रस पिलानेसे कैसे रोकूं?" जब यह बात मेरे कान पर आअी तो मैं बापूजीके प्रेममें अितना दब गया कि अपने आपको खोया-सा अनुभव करने लगा। मेरी गोसेवाकी भावनाको अितने मधुर और जीवनदायी जलका सिंचन मिला है, यह मेरे पूर्वजोंके पुण्यका ही प्रताप हो सकता है। बापूजी जिस प्रकार आश्रमवासी रोगियोंकी सुबह घूमनेके बाद संभाल करते थे, अुसी प्रकार मेरे गायके बीमार बच्चेको भी देखते थे। अुसके बारेमें सब हाल पूछते थे। अुस बच्चेकी बीमारीके कारण ही मैं गावी-सेवा-संघकी सभामें जानेके लिअे बापूजीसे अिजाजत न मांग सका था।

जिस प्रकार माली छोटेसे पौधेको खूब सावधानीसे सींचता है, अुससे भी अधिक सावधानीसे बापूजी हमारी शुभ और सेवाकी भावनाओंको सींचते थे, और अशुभ भावनाओंको डॉक्टरके आपरेशनकी तरह प्रेमसे ही काट फेंकनेमें सतत लगे रहते थे। नहीं तो मैं आज यहां बैठा अुनके प्रेमकी पवित्र स्मृतिका लेखक बनकर रसपान करनेके बजाय कहीं विषपान करता होता। अैसे महान बापूका ऋण मैं कैसे चुकाअूं, यह जटिल प्रश्न मेरे सामने है।

गोशाला और खेतीके लिअे नियम

अुस समय मैंने गोशालाके लिअे अैसा नियम बनवाया था कि जितने भी आश्रमवासी हैं वे सब आधा घंटा रोज गोशालाको दें और अुसकी सफाअी करें। सब लोग रोज आधा घंटा गायों और अुनके बच्चोंको साफ करते थे। अुस समय विजयाबहन पटेल खास तौरसे गोशालामें मेरी मदद करती थीं। खेतीके कामके लिअे भी मुझे कभी जरूरत पडती तो बापूजीके पास जाता और बापूजी सबको खेतीके कामके लिअे भेज देते।

अेक बार हमारा गेहूं पका खडा था। बादल हो रहे थे। बारिशका डर था। मजदूर नहीं मिल रहे थे। मैंने बापूजीसे कहा तो अुन्होंने सबको गेहूं काटनेके लिअे भेज दिया। राजकुमारी बहन, महादेवभाअी, विजयलक्ष्मी पंडित तथा दुर्गाबहन भी थीं। खास तौरसे दुर्गाबहनका चित्र

मै नही भूल सका हू । अुनका शरीर भारी था। लेकिन सवके साथ वडे अुत्साह और प्रेमसे गेहू काटनेमे अुन्होने पूरी पूरी मदद की। राजकुमारी वहन, जहा तक मेरा खयाल है १९३५ मे जब वापूजी दिल्लीकी हरिजन बस्तीमे अेक महीना ठहरे थे, तव मिली थी । बीच वीचमे मगनवाडीमे भी आती थी। सेवाग्राममे अुनका वापूके पास रहनेका समय अधिकाधिक वढता गया और फिर करीव करीव वे वापूके पास ही ठहर गअी ।

वर्षाका कष्ट

गोशालामे मकानोकी कुछ कमी थी। मैंने कुछ नये मकान वनानेकी माग की तो वापूजीने गरीवीसे काम चलानेका अुपदेश दिया। यह मुझे रुचा नही। लेकिन यह मोचकर मै चुप रहा कि कष्ट होने पर देखा जायगा। वरसातके दिन थे। पानीकी झडी लगी थी। साथमे हवा भी थी। गोशालामे वौछार आ रही थी और अूपरसे भी पानी टपक रहा था। मैंने वापूजीको लिखा ·

परम पूज्य वापूजी,

आपने मेरे मकानका वजट स्वीकार न करके मुझे गरीवीसे काम चलानेका अुपदेश दिया। आपकी आज्ञाका अुल्लघन तो कैसे किया जाय ? लेकिन आपके गरीवीसे रहनेके सिद्धान्तको गाय विचारी क्या समझे ? वह तो चुपचाप कष्ट ही सह सकती है। आप आरामसे सूखी कुटियामे वैठे है। आपके पास अनेक सेवक-सेविकाअे सेवाके लिअे प्रस्तुत है। कही अेक भी वूद टपके कि तुरन्त अुसे रोकनेके लिअे दौड पडेगे। लेकिन यहा मेरी और गायोकी पुकार कौन सुने ? चारो ओरसे पानीकी वौछारोंमे गोशालामे पानी ही पानी हो गया है। गाये ठडसे ठिठुर रही है। अैसे समयमे मेरी क्या दशा हो रही होगी, अिसकी कल्पना आप कर सकते है। विशेप क्या लिखू ?

गायोंके दुखसे दुखी,
वलवन्तके सादर प्रणाम

मेरी टेर सीधी ठिकाने पर जा पहुची। थोडी देरमें ही श्री रामदासजी गुलाटी[1] वरसाती कोट पहनकर गोशालामें आ पहुचे और वोले, मुझे वापूजीने

[1] सीमाप्रान्तके अेक वापू-भक्त अिजीनियर। ज्यादा परिचय प्रकरण १५ में देखिये।

अभी हाल बुलाकर आपका पत्र पढाया और कहा कि 'अभी जाकर देखो अुसकी गायोका क्या हाल है तथा जो करना हो वह जल्दीसे जल्दी करवा दो। अुसका कहना ठीक है। मैं तो महात्मा ठहरा, अिसलिअे मेरे सुख-दु खकी चिन्ता तो तुम सब लोग रखते हो, लेकिन गायके सुख-दु खकी चिन्ता अुसके बिना कौन करे?' तो अब आप बताओ कि आप क्या चाहते है। यह बात सुनकर तथा बापूजीकी तत्परता देखकर मेरे आनदका पार न रहा। मैंने अपनी कठिनाअी रामदासभाअीके सामने रख दी। अुसके अनुसार अुन्होने नये मकान बनानेकी योजना बनाकर बापूके सामने पेश कर दी और तत्काल टट्टे बनाकर जो सुविधा की जा सकती थी वह करवा दी। थोडे दिनोमे ही मेरी कल्पनाके अनुसार मकान बनकर तैयार हो गये। यह था बापूजीकी गरीबी और अुदारताका अद्भुत नमूना।

गोपरिवारकी वृद्धि

अिस समय हमने गावकी गायोका दूध भी खरीदना शुरू कर दिया था। पहले तो सीधा भोजनालयमे ही लेते थे, लेकिन बादमे पारनेरकरजीने आश्रमके दरवाजेमे प्रवेश करते ही बाये हाथको जो अूचा-सा मकान है अुसे दूधघर बनाया। आगे चलकर अुसमे भी काम नही चला तो तालीमी सघकी ओर बनाया। गावमे अब काफी दूध होने लगा था। तालीमी सघका भी विस्तार बढा और चरखा सघ भी आ गया। अिस कारण दूधकी खपत भी काफी होने लगी थी। आश्रमवासियोकी सख्या ज्यो ज्यो बढती जाती थी, त्यो त्यो गायोकी सख्या भी बढानी पडती थी।

बापूजी चाहते थे कि व्यक्तिगत गाय कोअी न रखे। अिसलिअे आर्यनायकम्‌जी और मगनवाडीसे झवेरभाअीकी गाय भी आश्रम गोशालामे आ गअी।

गायकी समझदारी और स्नेह

गायकी समझदारी और स्नेहके विषयमे मैं पहले भी विश्वास रखता था, लेकिन अुसका मूर्तिमान विकास तभी हुआ जब सेवाग्रामकी गोशालाका सचालन करते समय मेरा सारा ध्यान गायो पर ही केन्द्रित हो गया। मैं तूफानीसे तूफानी गाय खरीदकर ले आता और थोडे ही दिनोंके स्नेहसे वह मेरे साथ हिल जाती और मेरी भाषा (सकेत) समझने लगती। अुसके कुछ मोटे अनुभव यहा देता हू।

अेक बार आश्रममे दूधकी कमीको पूरा करनेके हेतुसे आठ-दस गाये खरीदनेके लिअे मै और पारनेकरजी यवतमाल जिलेकी पाढरकोढा तहसीलमे गये। वहा मैने अेक गाय पसन्द की। गायवालेने साठ रुपये मागे। हमने पचपन रुपये कहे, लेकिन सौदा न बना। हम आगे बढ गये। बीस पच्चीस मील जाकर हमने अेक वैसी ही गाय पचास रुपयेमे खरीद ली। मेरा मन पहली गायमे भी फस गया था। दोनोकी सुन्दर जोडी बन सकती थी। अिसलिअे साठ रुपये देनेके लिअे पारनेरकरजीकी सहमति लेकर मै अकेला ही प्रथम स्थान पर गया। गाय खरीद ली लेकिन लेकर चलते समय वह छूट कर भाग गअी और फिर दिनभर नही मिली। जब शामको भी न लौटी तो गायवालेको सदेह हो गया कि कही शेरने न मार दी हो। अिस-लिअे अुसने रुपये वापस करनेसे अिनकार कर दिया। दिनमे वह रुपये वापस देनेको राजी था। दूसरे दिन गाय मिल गअी और अुसे अेक बैलके साथ गलेमे बाधकर अुसने बीस मील दूरके अेक गाव तक पहुचा दिया। गाय पहलोन ओसर थी और मजबूत थी। पारनेरकरजी अुस गावसे आगे चले गये थे, लेकिन वह भाअी अपना बैल लेकर वहीसे लौट गया। मैने गाय पर हाथ फेरा और रामनाम लेकर अुसे वहासे खोलकर अेक स्कूलमे ले जाकर बाध दिया। दूसरे दिन अुस गावसे अेक और आदमी और बैलके लिअे खोज की लेकिन सफलता नही मिली। सिर्फ अेक आदमी जमीदारकी जबरदस्तीका शिकार होकर मिला। अुसे साथ लेकर मै चल तो दिया लेकिन शीघ्र ही अुसकी हालत जानकर कि अुसकी स्त्री सख्त बीमार है और अुसे वहा जाना जरूरी है मैने अुसे छोड दिया। मैने फिर रामनाम लेकर गायसे बात की और अुसे लेकर अकेला ही चला। गाय चुपचाप मेरे पीछे चली आअी और दोपहर तक हम गन्तव्य स्थान पर पहुच गये। रास्तेसे तीन और गाये खरीदी, जिससे कुल पाच गाये हो गअी। हम अुसी दिन सेगाव पहुचना चाहते थे। रास्तेमे शामको अेक गावमे लोगोकी टोली गायोको देखनेके लिअे जमा हुअी। जिससे तीन गाये चमक कर भाग गअी। अुनका पीछा करनेमे मुझे कटीले तारोमे अुलझ जानेसे गहरी चोट आ गअी। लेकिन सौभाग्यसे सवेरे गावके पास ही वे तीनो गाये मिल गअी और सेवाग्राम पहुच गअी। मै अेक मास तक बिस्तरमे रहा।

साठ रुपयेवाली गायका नाम चन्द्रभागा रखा और दूसरीका साबरमती। ये दोनो नाम साबरमती आश्रमकी स्मृतिमे रखे गये थे। चन्द्रभागा नदी आश्रमके

पास ही साबरमतीमे मिलती है। चन्द्रभागा सफेद कपडोसे भडकती थी और हमला कर बैठती थी। अेक दिन अेक दर्शक महोदय मेरे साथ खडे बातें कर रहे थे। अुधरसे गाये चरकर लौटी। चन्द्रभागा अुन दर्शक पर दौड पडी और आगेके दोनो पैर अुठाकर वह अुन पर छलाग मारनेवाली ही थी कि मेरी आवाज 'अरे, चन्द्रभागा यह क्या करती है?' अुसने सुनी और लौट पडी। वे भाअी अचम्भेमे रह गये कि अभी अभी तो यह शैतानकी तरह चढी आ रही थी और तुरन्त ही आदमीकी तरह रुक गअी। अुनके लिअे यह बडी अद्‌भुत घटना थी। मुझे भी यह पक्का विश्वास तो नही था कि चन्द्रभागा मेरा कहना मान ही लेगी। परतु मै खाली हाथ खडा था। जो शब्द मेरे मुहमे निकल गये अुनके सिवा और करता भी क्या? चन्द्र-भागाने अुस दिन मेरी बात मानकर मेरी गोभक्तिकी बेलमे पानी सीचनेका काम किया।

अेक दिन बछडे चरानेवाले लडकेने आकर कहा कि आज बलराम (बछडेका नाम) कही खो गया है, मिलता नही है। मै खोजने चला। काफी दूरी पर गावके पशु चर रहे थे। मैने दूरसे पुकारा, 'अरे बलराम, तू है क्या यहा?' अुत्तरमे अुसने हुकार की, 'हू तो यही।' मैने फिर कहा, 'तू यहा क्यो भटकता है?' अिस शब्द पर वह दौडा और अुसके बीचमे अेक काटेदार बाड थी अुसे अेक छलागमे पार करके मेरे पास आ गया और मेरे पीछे पीछे चला आया।

अेक दिन अेक बछडी बीमार हो गअी थी। अुसे ज्वर हो गया था। अुसने अपनी माके पास न जाकर मेरे पास बैठना पसन्द किया। अिसलिअे मैने तख्ते पर बिस्तर लगाया, ताकि वह जमीन पर बिछी हुअी चटाअी पर बैठ सके। लेकिन जब वह तख्ते पर मुह रखे खडी ही रही तब लाचार होकर मुझे चटाअी पर सोना पडा। वह मेरे पास शातिसे बैठ गअी।

अेक बैलके पैरमे चोट लगी थी। वह बैठा था। जब मै दवा लेकर अुसके पास गया तो वह अुठकर खडा हो गया। मैने कहा, भले आदमी (बैल), मै तो तेरे लिअे दवा लाया तेरे पैरमे लगाने और तू खडा हो गया। और अुससे बैठ जानेके लिअे कहा। वह तुरन्त ही बैठ गया। जब मैने अुसका पैर पकडा तो अुसने अपनी आखे बन्द कर ली और दवा लगाकर पट्टी बाधने तक चुपचाप बैठा रहा। मेरे हटते ही वह फिर खडा हो गया।

सन् १९४४ मे मैं बगालमे पूज्य सतीशबाबू (बाबा) के पास अुनके लिअे गाये खरीदकर अुनकी गोशाला चालू करनेके लिअे गया था। अेक देहातमे, जहा अुनका काम चल रहा था, अेक भाअी अपने बीमार बैलको लेकर आया और मुझसे बोला, बाबा कहते है कि आप पशुओकी भाषा पहचानते है। यह सुनकर पहले तो मुझे बाबा पर गुस्सा आया कि वे अैसी गलत बाते गावके भोलेभाले लोगोसे क्यो कहते होगे। लेकिन जरा सोचने पर मैंने अुनका रहस्य समझ लिया कि अुनका आशय जानवरका दर्द समझ लेनेसे होगा। तब मैंने अुत्तर दिया कि बाबा सच कहते है और अुसे अुपचार बता दिया। वह बैल अच्छा हो गया। तबसे वहाके लोग मुझे गोरुबाबूके नामसे पुकारने लगे (गोरु अर्थात् पशु)। मुझे भी यह नाम प्रिय लगा। यह बात सच है कि मेरा दिल गायके साथ अितना अेकरूप हो गया है कि गाय जब हरी हरी घास चुगती है तब मुझे अैसा अनुभव होता है कि वह घास मेरे ही पेटमे जा रही है।

१४

आश्रमका विस्तार

आश्रम-परिवारमें वृद्धि

अेक रोज परचुरे शास्त्री दूधघरके पास छिपे बैठे थे। मीराबहनने अदर आनेको कहा। वे आकर खडे हो गये और बापूजीसे कहने लगे कि मुझे तो आपके सान्निध्यमे रहना है और यही मरना है। अुनको कुष्ठ हो गया था। कहने लगे, "मुझे कुछ नही चाहिये। अेक झाडके नीचे पडा रहूगा। दो रोटी मिल जाये तो बस है।" बापूजी गभीर विचारमे पड गये। अुनको हा भी कैसे कहे? अितना समाज आता है, जाता है और रहता है। किस तरह अुनको सभालेगे? और अुनको ना भी कैसे कहे? लेकिन दूसरे दिन बापूजीने कहा कि अगर मैं आज शास्त्रीको ना कह देता हू तो अपने धर्मसे चूकता हू। मेरी कसौटी करनेको ही अीश्वरने अिन्हे भेजा है। बस, बापूजीने अुन्हे आश्रममे रखनेका निश्चय कर लिया और आश्रमके पासमे ही अुनके लिअे अेक झोपडी बनवा दी। अितना ही नही, बापूजी हमेशा अुन्हे कुछ न कुछ समय देते ही थे। जब अुनका रोग भयानक स्थितिमे पहुचा तो बापूजीने स्वय ही अुनकी मालिश करना भी शुरू कर दिया।

अब महादेवभाओीका काम बहुत बढ गया था और अुन्हे वर्धासे आने-जानेमे बहुत अडचन होने लगी थी। अिसलिअे महादेवभाओीके लिअे अलग मकान बनाना पडा। फिर किशोरलालभाओीके लिअे भी अेक मकान बनवाया गया। आश्रमके कुअेके पानीमे कुछ खराबी थी, अिसलिअे सीमेंट कांकरीटका अेक नया कुआ बनाया गया, जो अभी तालीमी संघके अधिकारमे है। दूध-घरके लिअे भी अलग मकान बनाना पडा, जो अभी श्री आशादेवीके मकानके पीछे है और जिसमे लडकियोंका छात्रालय है।

नओी तालीम

आरंभमे बापूजी नओी तालीमका काम भी आश्रमके मार्फत ही करना चाहते थे। अुसके लिअे जरूरी मकान बनाये गये, जो आज तालीमी संघमे विलीन हो गये है। शिक्षकका काम श्री मुन्नालालभाओीको सौंपा गया था। अिसलिअे अुनका नाम गुरुजी पडा था, जो सेवाग्राममे आज भी प्रचलित है। श्री अमृतलाल नाणावटीने भी कुछ दिन यह काम किया। फिर तो बडे गुरुजी आर्यनायकम्‌जीको यह सारा काम सौंप दिया गया। अुनका मकान तो बन ही गया था। आश्रमने बुनाओी, धुनाओी और पढाओीके लिअे जो मकान बनाये थे वे भी अुनको सौंप दिये गये। आश्रमको जो जमीन जमनालालजीने सौंप दी थी, अुसका दानपत्र आश्रमके नाम अभी तक नही हुआ था। अुस जमीनमे से ८ अेकड जमीनका दानपत्र तालीमी संघके नाम जमनालालजीने लिख दिया। तो भी तालीमी संघका विस्तार बढता जा रहा था और वह आश्रमकी तरफ सरकता ही जा रहा था। आशादेवी और आर्यनायकम्‌जीकी 'जमीन चाहिये, मकान चाहिये' की मांग बढती ही जा रही थी। अिससे तंग आकर अेक रोज मैंने बापूजीसे कहा, 'आखिर अिसकी कहीं हद भी है? ये तो रोज रोज मांगते ही रहते हैं।

बापूजीने कहा कि हमको तो अपरिग्रह व्रतका पालन करना है। जो दूसरोंको चाहिये वह हमको नही चाहिये। अुनको तो नओी तालीमका काम मैंने सौंपा है। अिसलिअे अुनको आश्रममे जो चाहिये वह देनेको मैंने कह दिया है। और हमारा दुनियामे है भी क्या? जिस जगह हम बैठे हैं वह भी हमारी नही है। हमको तो जलानेके लिअे साढे तीन हाथ जमीन मिलनेवाली है। और वह जमीन भी कहां रहनेवाली है? हमारे शरीरकी राख हो जायगी। और वह राख भी मुट्ठीभर हो जायगी। यह कहते हुअे बापूजीने मुट्ठी

बाधी, मुहके सामने हाथ खोलकर जोरसे फूक मारी और फर्रर किया। और जोडा, वह राख भी कहा रहनेवाली है? यो अुड जायगी। और हसने लगे।

मै गया तो था शिकायत करने, क्योकि जमीन और मकान छोडना सबसे अधिक मुझे ही कष्टदायी था। मुझे अुनकी माग गैरवाजिब लगती थी। लेकिन मेरा पासा अुलटा ही पडा। बापूजीने तो ज्ञान और वैराग्यकी कथा छेड दी। फिर बोले, "देखो, यह नअी तालीमका काम मेरे जीवनका आखिरी काम है। अगर अिसे भगवानने पूरा करने दिया तो हिन्दुस्तानका नकशा ही बदल जायगा। आजकी तालीम तो निकम्मी है। जो लडके स्कूल-कॉलिजोमे शिक्षा पाते है अुनको अक्षरज्ञान भले हो जाता हो लेकिन जीवनके लिअे अक्षरज्ञानके सिवाय और भी तो कुछ है। अगर यह अक्षरज्ञान हमारे दूसरे अगोको निकम्मा बना दे तो मै कहूगा मुझे तुम्हारा यह ज्ञान नही चाहिये। हमको तो लुहार चाहिये, सुतार चाहिये, तेली चाहिये, राज चाहिये, पिजारा चाहिये, कातनेवाला और मजदूर चाहिये। साराश यह कि सब प्रकारके शरीर-श्रम करनेवाले चाहिये और अुसके साथ साथ अक्षर-ज्ञान भी सबको चाहिये। जो ज्ञान मुट्ठीभर लोगोके पास ही हो वह मेरे कामका नही है। अब सवाल यह है कि सबको यह सब ज्ञान कैसे मिले? अिस विचारमे से नअी तालीमका जन्म हुआ है। मै जो कहता हू कि नअी तालीम सात सालके बच्चेसे नही, माके गर्भसे आरभ होनी चाहिये — अिसका रहस्य तुम समझ लो। अगर मा परिश्रमी होगी, विचारवान होगी, व्यवस्थित होगी, सयमी होगी तो बच्चे पर अिसका सस्कार माके गर्भसे ही पडेगा।

"तुमने तो अभिमन्युकी कथा पढी है न? तो जो अुसका रहस्य है वही नअी तालीमका है। यह अलग बात है कि अभिमन्युका जमाना हिंसाका था। लेकिन हमको तो कविकी मूल कल्पनाको ही लेना है, बाकीको फेक देना है। तो मै यह कह रहा था कि जब मैने यह काम आशादेवी और आर्यनायकमजीको सौंपा है तो मै यह सुनना नही चाहता कि बापूने हमको यह सुविधा नही दी, अिसलिअे हम जो करना चाहते थे वह नही कर सके। हा, अुनको अपना स्वभाव भी बदलना होगा और मै देख रहा हू कि वह बदल भी रहा है। आशादेवी तो गजबकी बाअी है। बच्चो पर कितना प्यार करती है और सदा नअी तालीमका ही चिन्तन करती है। मेरी स्वराज्यकी कल्पना भी तो नअी तालीममे छिपी है। सिर्फ अग्रेज यहासे चले जाय और हम जैसे है वैसे ही

रहे तो वह स्वराज्य मेरे क्या कामका? मेरी नअी तालीमकी व्याख्या यह है कि जिसको नअी तालीम मिली है अुसे अगर गादी पर बिठाओगे तो वह फूलेगा नही और झाडू दोगे तो शरमायेगा नही। अुसके लिअे दोनो काम अेक ही कीमतके होगे। अुसके जीवनमे फिजूलके मौजशौकको तो स्थान हो ही नही सकता है। अुसकी अेक भी क्रिया अनुपयोगी और अनुत्पादक न होगी। नअी तालीमका विद्यार्थी वुद्धू तो रह ही नही मकता है। क्योकि अुसके प्रत्येक अगको काम मिलेगा, अुसकी वुद्धि और हाथ माथ साथ चलेगे। जव लोग हाथसे काम करेगे तो वेकारी और भुखमरीका तो सवाल ही नही रहेगा। मेरी नअी तालीम और ग्रामोद्योग अेक ही सिक्केकी दो वाजुअे है। अगर ये दोनो सफल होगे तो ही सच्चा स्वराज्य आयेगा।

"खैर, तुमको तो मै यह समझाना चाहता हू कि आर्यनायकम्‌जी जो मागे वह हमे देना है और यह समझकर देना है कि आखिर वह काम भी तो हमारा ही है। अगर अुनके लडके खेती और गोशालामे काम मागे तो तुमको देना ही पडेगा। क्योकि जव मै तालीमको अनिवार्य वनानेकी वात करता हू तो वह तालीम स्वावलवी होनी चाहिये। सरकार तो अितने स्कूल खोलना भी चाहे तो आज अुसके लिअे शक्य नही है। आजकी वात तो छोड ही दो, क्योकि अग्रेजोको हमारे शिक्षण और स्वावलवनकी कहा पडी है। लेकिन स्वराज्य-सरकार भी छूमतर नही कर सकेगी। हा, नअी तालीमसे छूमतर जरूर हो सकता है। आजके शिक्षाशास्त्री कहते है कि शिक्षाका खर्च विद्यार्थियोंसे निकलवाना योग्य नही हे, निकलेगा भी नही। मै कहता हू कि तव मवको शिक्षित करनेकी वात भूल जाओ। जव गाव गावमे स्कूल चलाना है तो अुनको अपना खर्च निकालना ही होगा। आज यह खर्च भले कुछ कम भी निकले, लेकिन अतमे हमे शिक्षाको स्वावलवी वनाना ही होगा। यह अलग वात है कि सव अेक ही प्रकारका काम नही सीखेगे। हमारे गावोमे तो अनेक अुद्योग पडे है। आज अुनमे सुधार भी तो किसीको नही सूझते है। नअी तालीमका विद्यार्थी सोचेगा — अगर अेक घटेमे १ सेर कपाम रेची (ओटी) जाती हे तो हम दो सेर कैसे रेचे? अरे, वह तुम्हारी गायका दूध कैसे वढे यह भी तो सोचेगा। खेतीकी पैदावार वढायेगा तव तुम अुसे गोशाला और खेतीमे काम क्यो न दोगे? अिसीलिअे मै कहता हू कि हमारे सव काम अेक-दूसरेसे अलग किये ही नही जा सकते है। अेक लोटा पानीका भी मोहताज रहे अैसा विद्यार्थी मेरे किस कामका?"

वापूजीकी वातमे रस तो आ रहा था, लेकिन मेरे पास अितना लवा भाषण सुननेका समय नही था। खेतीमे आदमियोको काम वताना था। मैंने जैसे तैसे पीछा छुडाया और अपने काम पर चला गया। आज सोचता हू तो लगता है कि सचमुच ही वापूजीकी मुट्ठीभर राख अैसी अुडी कि सारे देशके तीर्थस्थानो पर छा गअी। जव मैं हिमालयमे श्रीकेदारनाथजी पर पहुचा और पडेने वताया कि वहा अुस कुण्डमे वापूजीकी भस्मी प्रवाहित की गअी थी, तो मैं वहा वर्फ जमी नदीके अूपरसे जानेका खतरा अुठाकर भी अुस स्थानका दर्शन करने गया। अुस सरोवरको देखकर और वापूजी तथा किशोरलालभाअीका स्मरण करके मुझे रोमाच हो आया और वहा थोडी देर वैठकर वापूजी और किशोरलालभाअीको मैंने श्रद्धाजलि दी। वापूजीने अुस रोज नअी तालीमके वारेमे जो कुछ कहा था, आज सेवाग्राममे अुसका काफी विकास हो गया है। यह वापूजीके शुभ सकल्पका ही फल लगता है। और शुभ सकल्प पर मेरी निष्ठा वढती ही जा रही है। वापूजी जो ज्ञान हमारे लिअे अच्छा समझते थे वह साराका सारा ज्ञान हमारे मगजमे ठूस-ठूसकर भर देनेकी कोशिश करते थे।

तुकाराम महाराजने ठीक ही कहा है

कृपेचे सागर हेचि सावुजन। तिही कृपादान केले मज ॥ १ ॥
वोवडे वाणीचा केला अगीकार। तेणे माझा स्थिर केला जीव ॥२॥
तेणे सुखें मन स्थिर झाले ठायी। सती दिला पायी ठाव मज ॥३॥
ना भी ना भी अैसे वोलिले वचन। ते माझे कल्याण सर्वस्व ही ॥४॥
तुका म्हणे झालो आनदनिर्भर। नाम निरतर घोप करू ॥५॥

अर्थ — ये सन्त पुरुष ही कृपाके सागर है। अुन्होने मुझ पर कृपा की है। मेरी तोतली वोलीको स्वीकार कर लिया है। अुससे मेरा चित्त स्थिर हुआ है। अुस सुखसे मेरा मन ठिकाने पर स्थिर हो गया है (आ गया है)। सतोने मुझे चरणोमे आश्रय दिया है। 'मत डरो, मत डरो' अैसा अभय-वचन दिया है। अिसीमे मेरा कल्याण है और यही सर्वस्व है। तुकाराम कहते है मैं आनदविभोर हो गया हू और सदा प्रभुनामका घोप करता हू।

वापू—कूप

आज जहा गोशालाके पूर्वमे तालीमी सघका सतरे और मोसम्बीका वगीचा है वह जमीन तालीमी सघके मकानोके लिअे खरीदी गअी थी। जव

तालीमी नघ आश्रमकी ओर वम गया, तो मैंने अुममें वगीचा लगानेकी वात की। जिमका मेरे कुछ मित्रोंने विरोव किया। मैं नागपुरमे सरकारी अुद्यान-विशेपज्ञको लाया, अुन्हें जमीन वतायी, और वापूजीमे अुनकी मुलाकात करायी। विशेपज्ञने वह जमीन पमन्द की और अुममें वगीचा लगानेका निश्चय हुआ। अुममे वापूजी खुले पैर घूमते थे।

अुम जमीनमें कुआ वनानेका मुहूर्त वापूजीके हाथमे ९ सितम्बर १९४०को हुआ। सोमवारका दिन था। वापूजीने अपना गमछा वगैरा अुतारकर रखा और कुदाली हाथमें ली। अुन्होंने मजदूर जैमे खोदना शुरू करता है वैसे ही जोरमे जमीनमे कुदाली मारी और खिलखिलाकर हस दिये। वापूजी हसते तो हमेशा ही थे, लेकिन अुम दिनका वह मुक्तहास्य मैं कभी नही भूल सकूगा। मुझे तो अेक विशेप प्रकारका आनद था ही, क्योंकि मुझे अुस काममें विशेप रम था और वापूके हाथमे अुसका श्रीगणेश हो रहा था। किन्तु वापूको भी विशेप प्रकारका आनद हुआ, क्योंकि वे अेक अैमे कामका मुहूर्त कर रहे थे जो हमेशा पशुओं और मनुष्योंके जीवनवारणके मावन अुत्पन्न करनेमें मददगार सावित होता रहेगा। सचमुच ही अुम कुअेका पानी वहाके अन्य सब कुओंमे श्रेष्ठ निकला। २५ मितम्बरको अुममे पानी निकल आया। पहले पहल पानी भी परचुरे शास्त्रीने वेदमत्रोंके अुच्चारके साथ वापूजीके ही हाथसे निकलवाया।

अैमी चीज जव जव मैं लिखता हू, तो सेवाग्रामका मारा चित्र मेरी आखोंके मामने नाचने लगता है। अितने प्रकारकी विचित्र घटनाअे आखोंके मामने आकर खडी हो जाती है कि क्या लिखू और क्या न लिखू। मनमें आता है कि भगवान अेक वार फिर अैसा अवमर दे तो अवकी वार खूब मावधानीमे मीच सीचकर वापूजीके अुपदेशोंका मचय करू और अुनके प्रेमका स्वाद चखू। लेकिन आज तो स्मृतिका रम ही पिया जा सकता है।

अुम वगीचेमे पेड लगानेका मुहूर्त भी वापूजीके हाथसे ही कराया गया था और अुनके घूमनेके लिअे खाम रास्ते वनाये गये थे। अुसके अुत्तरके कोनेमे जो अेक मकान है वह मीरावहनके लिअे वनाया गया था। वादमें अुसमें वालकोवा रहे थे। अुम कुअेंका नाम हमने 'वापू-कूप' रखा था। अेक रोज चिमनलालभाअी वापूजीको खर्चका हिमाव वता रहे थे। अुसमें अुस कुअेका हिमाव वताते हुअे 'वापू-कूप' नाम आया। चिमनलालभाअीमे वापूने कहा कि मेरे नाममे कोअी भी चीज न रखी जाय। मैं नही चाहता कि किसी

भी चीजके साथ मेरा नाम जोडा जाय। अुसी रोजसे हमने वह नाम छोड दिया।

आश्रममे विवाह

लोगोको आश्चर्य हो सकता है कि अेक तरफ तो आश्रममे अेकादश व्रतोका कडाअीसे पालन होता था, जिनमे ब्रह्मचर्यका प्रधान स्थान था, और दूसरी तरफ विवाह भी कराये जाते थे। आश्रममे कअी विवाह हुअे। सबसे पहला चिमनलालभाअीकी सुपुत्री शारदाबहनका सूरतके भाअी गोरधनदास चोखावालाके साथ और विजयाबहन पटेलका मनुभाअी पाचोलीके साथ। अिन दोका कन्यादान बापूजीने दिया था। शादीके लिअे चार-पाच आदमी आये थे और हम लोगोसे बापूजीने कह दिया था कि शादीके समय तुम लोगोके आनेकी जरूरत नही है। मानो कुछ हो ही नही रहा है, अिस प्रकारसे विवाह-सस्कार बापूजीने करा दिया और अेक रोज रोटी खिलाकर सबको विदा कर दिया।

पारनेरकरजीकी लडकी चि० शरदका विवाह भाअी प्रभाकर माचवेके साथ आश्रममे ही हुआ। पारनेरकरजीकी अिच्छा थी कि अुनकी लडकीका कन्यादान भी बापूजीके हाथसे हो। लेकिन पारनेरकरजीकी माताजी छुआ-छूतमे विश्वास करती थी, अिसलिअे बापूजीने अुनकी भावनाका आदर करके कन्यादान पारनेरकरजीको ही देनेके लिअे कहा। विवाहके समय बापूजी वहा अुपस्थित रहे और सारे काम अुनकी सूचनाके अनुसार ही सपन्न हुअे। अितना ही नही, जब पारनेरकरजीकी माताजीने अपना रसोअीघर आश्रमसे अलग चलाया तो बापूजीने पारनेरकरजीको आश्रममे भोजन बन्द करके आग्रहपूर्वक अपनी माताजीके साथ भोजन लेनेके लिअे राजी किया। दूसरेके विचार जब तक बदले न जा सके तब तक अुसके विचारोकी रक्षा करना, लेकिन स्वय अुसके विचारोके साथ सहमत न होना — यह बापूजीकी अद्भुत कला और महानता थी।

श्री जी० रामचन्द्रन्‌जीका विवाह भी सुन्दरम् बहनके साथ सेवाग्राम आश्रममे ही हुआ था। अेक मुस्लिम बहनका विवाह भी बापूजीके हाथो ही सपन्न हुआ था। बादमे तो बापूजीने निश्चय किया था कि वे हरिजन और सवर्णके विवाहमे ही आशीर्वाद देगे। प्रो० रामचन्द्ररावने अपनी लडकी अेक हरिजन लडकेको देनेका निश्चय किया था। अुस लडकेका

नाम अर्जुनराव था। अुसका विवाह प्रो० रामचन्द्ररावकी लडकीके साथ करनेके पहले वापूजीने अुसे आश्रममें रख कर अच्छे संस्कार देना और अुसकी योग्यता बढाना अुचित समझा। अिसलिअे विवाहसे पहले करीब दो साल अुसे आश्रममें रखा। लेकिन अुनके विवाहके समय वापूजीके आशीर्वाद नहीं मिल सके। वापूजी अुन्हीं दिनों अिस दुनियासे विदा हो चुके थे। तो भी पूज्य ठक्करबापा जैसे महान सेवकके आशीर्वाद तो मिले ही। यह विवाह आश्रममें ही हुआ था। अुस समय वापाने कहा, यह काम तो बापूका था लेकिन हमारे दुर्भाग्यसे आज मुझे करना पड रहा है। यह कहते कहते वापाका गला भर आया। वे बालककी तरह रोने लगे। वह दृश्य बडा ही करुण था।

कनु और आभाका विवाह आश्रममें वापूजीके सामने हो चुका था। अिस प्रकार आश्रम अेक विचित्र ही ढंगसे विकास तथा विस्तार कर रहा था।

बाका महल!

शुरूमें हमारा अेक ही मकान था, जिसके अेक कोनेमें बापूजी, अेकमें बा, अेकमें खानसाहब और अेकमें मुन्नालालजी थे। और भी जो मेहमान आते थे अुसीमें ठहरते थे। पू० बाको आराम करनेके लिअे बहुत संकोच होता था। अुन्होंने बापूजीसे कहा, "आपको तो कुछ नहीं लगता है। लेकिन हमारा क्या हो? हमको यहां सराय जैसी जगहमें डाल दिया है। कपडा बदलनेके लिअे और आराम करनेके लिअे कुछ आडकी जगह तो चाहिये।"

बापूने कहा, "हम गरीबोंके प्रतिनिधि हैं, अिसलिअे हमेशा अडचनमें ही रहना हमारे लिअे शोभाप्रद है। हां, थोडीसी आड करा दूंगा।" बापूजीने मुझे बुलाया और कहा, "देखो, बाको बडी तकलीफ होती है। बरामदेमें अुसके लिअे अेक टट्टेकी कोठरी-सी बना दो।"

अुत्तर-पूर्वके खाली बरामदेमें मैंने दीवारमें दो छेद कर दिये। अुनमें बांस डाले। बांसोंको बरामदेके खंभोंसे बांधकर टट्टा बांध दिया और अेक दरवाजा रख दिया। करीब आधे या पौन घंटेमें सब तैयार हो गया। मैंने बापूजीसे कहा कि बाके लिअे महल बन गया है। बापूजी अुठकर आये और बाको भी साथ लाये। बोले, "अरे, यह तो बहुत अच्छा बन गया!" बा बिचारी क्या बोलती? कह दिया, "ठीक है।" मैं मन ही मन हंस रहा था कि बापूजी बाको बच्चोंकी तरह कैसे फुसला रहे हैं।

अन्तमे, बाकी यह असुविधा जमनालालजीसे नही देखी गअी और अुन्होने हठ करके अेक छोटासा मकान बनवा दिया, जो आज 'बा-निवास' कहलाता है।

कुछ और सदस्य जुडे

मीराबहन बरोडाकी झोपडीमे गअी तो सही और थोडे दिन अुनकी तबीयत वहा अच्छी भी रही, लेकिन बादमे अुनको बुखार आने लगा। अुनकी झोपडी जगलमे और रास्ते पर थी, अिस कारणसे दिन भर लोग कुतूहलसे भी वहा आते रहते थे। सबसे प्रेम तो वे करती ही थी, अिसलिअे लोग घटो बैठकर फिजूलकी बाते अुनसे किया करते थे। अिससे भी मीराबहन दु खी हो गअी थी। अिस कारण लाचार होकर अुन्हे सेवाग्राम लाना पडा। आज जो बापू-कुटी है अुसका मध्यवर्ती भाग प्रारभमे मीराबहनके लिअे बनाया गया था और अुसमे वे बच्चोको कातना-बुनना सिखाती थी। बादमे बापूजीकी तबीयत खराब हुअी तब अुन्हे आदि-निवाससे यहा लाया गया और अुस झोपडीके अुत्तरी भागमे बरामदा और दक्षिणी भागमे सेप्टिक टैंक बढाये गये।

हमारा मकान अैसा था, जिसमे ५ दरवाजे थे और किसीको किसी भी समय अन्दर आनेमें कोअी रोकटोक न थी। दिनभर किसी भी समय कोअी न कोअी अदर घुस जाता था और अिससे बापूजीके कार्यमे बाधा पडती थी। बापूजीकी तबीयत बिगडी अिसलिअे अुन्हे वहासे हटाना पडा और मीराबहनकी झोपडीमे रखना पडा। बस, तबसे बापूजीका सबको परोसना बद हुआ, क्योंकि बापूजीका भोजन वही जाता था। परतु जब अुनकी तबीयत अच्छी होती थी तब तो वे सबके साथ पगतमे ही बैठते थे। अब समाज भी बढ गया था। किन्तु जिसकी तबीयत कुछ खराब रहती थी, अुसे बापूजी ही परोसते थे।

कृष्णचन्द्रजी पहले १९३५ मे मगनवाडीमें बापूजीसे मिलने आये थे। बादमें १९३८ मे स्थायी रूपसे सेवाग्राममे रहनेके लिअे आ गये। सुशीला-बहन डॉक्टरी पास करके आ गयी थी। अिसलिअे दवाखानेका चार्ज अुन्होने ले लिया। बाके मकानके पीछे जो मकान है, वह जमनालालजीने अपने लिअे बनवाया था। जमनालालजी तो शायद ही अुसमें रहे होगे। किन्तु बादमें अुसमें आश्रमका दवाखाना शुरु हुआ। शकरन्‌जी पहले नालवाडीके चर्मालयमें

काम सीखते थे। वे भी वापूजीके सान्निध्यमे रहना चाहते थे। वापूजीने अुनको रख लिया और यह काम सौंपा कि जो लोग पाखाना जाय अुनका पाखाना देखे और अुस पर मिट्टी डाले। सवसे कह दिया गया कि अपने पाखाने पर कोअी मिट्टी न डाले, ताकि अुन्हे पाखानेकी परीक्षा करनेकी आदत पड जाय। यह काम मीरावहनको विलकुल पसद नही था। मीरावहनको छोडकर हमारा सवका पाखाना शकरन्‌जी देखते थे, अुसके वारेमे रिपोर्ट लिखते थे और पाखाने पर मिट्टी डालते थे। वापूजी अुनसे कहते, "तुमको तो रहना भी वही चाहिये। अेक झोपडी पाखानेके पास ही वनवा लो। तुम्हारी सफाअी अितनी आदर्श होनी चाहिये कि पाखानेके पास रहते हुअे भी जरा वदनू न आये।"

आश्रम-परिवारके दिल पर गहरी चोट

आर्यनायकम्‌जीकी दो सन्ताने थी। मितू लडकी अभी मौजूद है। अुससे छोटा लडका आनन्द था जिसके अनेक नाम थे। अपने नाम भी वह खुद ही रख लेता था। मै अुसको तागेवालेके नामसे पहचानता था। अेक रोज मैने सव लोगोको वनकरीके कुअे पर हुरडा (हरी ज्वार) खानेकी पार्टी दी। अुसमे जमनालालजी भी थे। सव लोगोने वडे प्रेमसे खूव ज्वार खाअी। तागेवाला भी अुसमे था। अुसने भी खाअी। थोडी देरमे पता चला कि लडका वेहोश हो गया है। मै घवराया कि कही अधिक ज्वार खानेसे तो कुछ गडवडी नही हो गअी है। लेकिन वादमे पता चला कि वह ६० ग्रेन कुनैनकी गोलिया चाकलेट समझकर खा गया था। अुसीकी गर्मीने अुसके प्राण ले लिये। अुस रोज आर्यनायकम्‌जी वहा पर नही थे। वापूजी तुरत ही वहा पहुच गये और काफी अुपचार किये। डॉ० सुशीलावहनने भी काफी कोशिश की, लेकिन कुछ भी वस नही चला। और वह वालक १९ दिसवर १९३९ को हम सवको छोड कर चला गया। सेवाग्रामके जीवनमे यह वडा भारी आघात था। आर्यनायकम्‌जी दूसरे दिन आये। अुनके आने पर वालकका दाह-सस्कार किया गया। आशालतावहन तो काफी दुखी थी, लेकिन आर्यनायकम्‌जीने वडे धीरजका परिचय दिया। वापूजीने दोनोको सात्वना देते हुअे कहा, "अव तक तो तुम्हारे अेक ही वच्चा था। आजसे सारे ग्रामके वच्चे तुम्हारे है। नअी तालीममे तो सारा हिन्दुस्तान आ जाता है। अिसलिअे सारे हिन्दुस्तानके वच्चे तुम्हारे ही है। अव तुम्हारी जवावदारी और भी वढ गअी है। अिनकी सेवा

करो और जिसको अपना बच्चा कहते थे अुसे भूल जाओ या अुसीका रूप सब बच्चोमे देखो। यही शाति और सेवाका मार्ग है।"

अुस बच्चेका वियोग मा-बापको तो सतानेवाला था ही, लेकिन सारे सेवाग्राम परिवारके दिल पर भी अुसकी गहरी चोट लगी। मेरी तो अुसके साथ अितनी दोस्ती थी कि अुसका वियोग आज भी मुझे सताता रहता है। आशादेवी और आर्यनायकम्‌जीने सचमुच सेवाग्रामके ही नही आसपासके सब बच्चोको अपना बच्चा बना लिया है और अुनका प्रेम हिन्दुस्तानभरके बच्चो तक फैल गया है। महापुरुषोके आशीर्वादमे कितनी शक्ति होती है, अिसका अन्दाज लगाना कठिन है।

१५

सेवाग्रामसे सम्बद्ध कुछ विशिष्ट व्यक्ति

काशीबा

पू० काशीबा दक्षिण अफ्रीकासे ही बापूजीके साथ रही। नअी तालीम माके गर्भसे आरभ होती है, बापूजीके अिस वचनका मिलान मैं करता ही रहता हू। जब मैं काशीबाको देखता हू और अुनके दोनो पुत्रो भाअी कृष्णदासजी व प्रभुदासजी गाधीको देखता हू, तो बापूजीके कथनकी सत्यताका प्रत्यक्ष अनुभव करता हू। काशीबाकी सरलता, अुनकी नम्रता, अुनकी व्यवहार-कुशलता और भक्तिभावका वारसा अिन दोनो सतानोको मिला है। सचमुच अैसी माके गर्भमे जन्म मिलना बडे पुण्यके प्रतापका फल हो सकता है। अुनका कठ कितना मधुर है! 'कहाके पथिक, कहा कीन्ह है गवनवा' भजन बार बार अुनके मुहसे सुननेकी अिच्छा होती है। अुनके दर्शनमे ही अेक प्रकारकी सात्त्विक खुराक मिलती है। अुन्होने बापूजीसे बहुत कुछ सीखा है। सीखकर अुसे पचाया है। कीमत खानेकी नही पचानेकी ही है। 'दरस परस अरु मज्जन पाना। हरहि पाप कहहि वेद पुराना।' यही अनुभव काशीबाके दर्शनमे होता है।

दादूजी

दादूजी (जान कॉर्डिस) बापूजीके दक्षिण अफ्रीकाके साथियोमे से अेक है। वे कही शान्तिपूर्वक रहना चाहते थे। बापूजीसे मिलकर स्थानका निश्चय करना था। लेकिन बापूजीने सेवाग्रामकी तरफ अुगली अुठाअी और कहा कि मेरा

अभी ठिकाना नही है, लेकिन आप सेवाग्राम पहुच जाअिये। वे सन् १९४६ मे सेवाग्राम आये। बापूजीने आश्रमको लिखा कि अुनकी सेवामे किसी प्रकारकी कमी न रहे। अुनकी अुम्र ८४ के लगभग है। बापूजीके प्रति अुनकी प्रगाढ श्रद्धा है। वे बडे ही व्यवस्थित और कार्यकुशल व्यक्ति है। अेक मिनट भी खाली रहना अुनके स्वभावमे ही नही है। बडे कलाप्रेमी है। आजकल पू० किशोर-लालभाअीवाले घरमे रहते है। अुसमे अुन्होने मदिरकी तरह कुछ अच्छी अच्छी सामग्रियोको सजाकर रखा है। आनेवाले दर्शकोको वे बडे प्रेम और अुत्साहसे सब बताते है। आजकल तालीमी सघकी लायब्रेरीका काम सभालते है। घडीके काटेकी तरह वे ठीक समय पर लायब्रेरी पहुचते है और पुस्तकालयको बहुत ही स्वच्छ और व्यवस्थित रखते है। बापूजीने लिखा था कि दादू आश्रमकी शोभाको बढायेंगे। सचमुच ही दादूजीने आश्रमकी ही नही, समग्र सेवाग्रामकी शोभाको बढाया है। बापूजी कहते थे, आश्रमके अस्तित्वकी सार्थकता ही अिसमे है कि अैसे सत्पुरुषोकी सेवा करनेका अुसे अवसर मिले।

चाचा खानसाहब

सन् १९३६ के अगस्त महीनेकी बात है। हमारे प्यारे बादशाह खान, सीमात गाधीको सरकारने जेलसे छोडा तो था, पर अपने सूबेमे रहनेकी मनाही कर दी थी। बापूजीने अुनको सेवाग्राम आनेका प्रेम और आग्रहभरा निमत्रण भेजा था। खानसाहबने अुतने ही प्रेमसे अुसे मजूर भी किया। खानसाहबके सेवाग्राम आनेसे अेक रोज पूर्व बापूजीने मुझे बुलाकर कहा, "देखो, खानसाहब और अुनकी लडकी आ रही है। अुनकी तबीयत खराब है। तुम जानते हो, पठान कितना दूध पी सकते है। अुनके लिअे पाच सेर दूधका प्रबध कल शाम तक हो जाना चाहिये। कल ही नअी गाय ले आओ।" अैसी गाय, जैसी बापू चाहते थे, बाजारमे सहज मिलनेवाली चीज तो थी नही। तीन समय अुसका दूध देखना होता था। दस जगह तलाश करना पडता था। लेकिन बापूके पास अिन दलीलोको सुननेका समय कहा था?

दैवयोगसे दूसरे दिन पानीकी अैसी झडी लगी कि बाहर निकलना असभव हो गया। बापूजीका फरमान मेरे पेटमे वायुगोलेकी तरह दिनभर दर्द करता रहा। आखिर, शामकी प्रार्थनाके बाद जब पेशीका हुक्म आया, तो मै अपनी सारी हिम्मत और दलीलोंके साथ हाजिर हुआ।

बापूजीने पूछा, "क्यों आ गयी गाय?"

मैंने कहा, "बापूजी, आज तो दिनभर पानी बरस रहा था।"

बापू बोले, "तो मैं खानसाहबको दूध कहांसे दूंगा?"

मैंने देखा यहां तो अबेके आगे रोना अपनी ही आंख खोना जैसा है। 'अच्छी बात है, कल खानसाहबके आनेसे पहले गाय आ जायगी' कहकर मैं चला तो आया, लेकिन गाय लाना तो फिर भी आसान कहां था? दूसरे दिन भाओी पारनेरकरजीको साथ लेकर वर्धाका रास्ता लिया। कओी जगह ढूंढा। अेक ग्वालेके पास दैवयोगसे या मेरे नसीबसे दो अच्छी गायें मिल गयीं, जिनके दस सेर दूध था। हम दोनों गायें खरीद लाये और विजयी योद्धाकी तरह बापूजीको सुना दिया कि दस सेर दूधकी दो गायें हाजिर हैं। बापू खुश हो गये।

बापूजीने खानसाहबके आने पर अुनके भोजनके बारेमें सब कुछ जान लिया और अुनकी रुचि व अपनी प्राकृतिक चिकित्साके अनुसार अुनके भोजनका प्रबंध कर दिया। दिनमें तीन बार दही देना तय हुआ। खानसाहबको बिलकुल मीठा दही पसंद था। दही जमानेका काम मुझे सौंपा गया। अेक तरफ अुनकी सेवाके लाभके आनंदने और दूसरी तरफ दही खट्टा होने या न जमनेके डरने मेरी 'सांप-छछूंदर' के जैसी गति कर दी। पर परीक्षामें मैं पास रहा। अपनी आदतके अनुसार कओी बार बापूजी पूछते, "क्यों खानसाहब, दही कैसा है?" मैं अुनके मुंहकी तरफ देखता और जब तक जवाब न मिलता, मेरा सांस लेना बंद-सा रहता। खानसाहब जब कह देते कि महात्माजी, दही बिलकुल अच्छा है, तब मैं आरामसे सांस ले पाता।

अिस सेवाका बदला भी मैंने ब्याजसहित वसूल कर लिया।

मैं जब सख्त बीमार पड़ा, अुस समय आश्रममें गिने-चुने ही आदमी थे। भाओी प्यारेलालजी और खानसाहबने अद्भुत प्रेम और तत्परतासे मुझे संभाला अेवं मौतके मुंहसे बचा लिया। बापूजीकी तो बात ही क्या कहूं? वे अेनीमा देते, स्पंज करते और जब मैं घंटी बजाता तो मेरे पास ही खड़े दीखते। सचमुच ही अुस समयका वह छोटासा लेकिन महान पारिवारिक जीवन कितना सुमधुर था! बापूजी तो बापू और मां सब कुछ थे ही, लेकिन खानसाहबने सचमुच चाचाका स्थान ले लिया था। वे हमारे साथ अितने घुलमिल गये थे कि न तो अुनको और न हमको कभी अैसा अनुभव होता था कि खानसाहब कोओी बड़े आदमी हैं और हमको अुनके साथ

अदवसे रहना चाहिये। जितना चाचाका अदव करना चाहिये अुतना तो हम करते ही थे। खानसाहवके साथ अुनकी लडकी मेहृताजवहन भी आयी थी। वह वडे सरल स्वभावकी भोलीभाली लडकी है। वह भी वहनकी तरह हमारे साथ घुलमिल गयी थी। शाक काटना, अनाज साफ करना, झाडू लगाना आदि सव काम आश्रमवासीकी तरह खानसाहव करते थे। खानपानके मामलेमे वापूजीने खानसाहवको पूरी आजादी दे दी थी। यहा तक कि माम लेनेकी भी छूट दे दी थी। किन्तु आश्रमके नियमोका ध्यान रखते हुअे जरूरत होने पर भी अुन्होने माम लेना कभी पसद नही किया।

अुनके हाथमें फावडा और झाडू वहुत ही फवता था। अेक-दो दिनके लिअे भी जव अुन्हे वाहर जानेका प्रसग आ जाता, तव वापिम आने पर वे हमसे पठान-रिवाजके अनुसार कौली भरकर ही मिलते थे। हमारा सिर तो अुनके पेट तक ही रह जाता था। और हमारी कौलीमे भी वे कैसे समाते? अुम वक्त हमको महसूस होता था कि खानसाहव हमसे कितने वडे है। अुनकी कमखर्ची और सादगी तो गजवकी थी। अेक कुरता और पाजामा अुनकी पोगाक और अुममे हलका-मा नीला रग अिसलिअे कि अधिक मावुन खर्च न करना पडे। अेक साधारण किसानसे अधिक अच्छे कपडे खानमाहव पसद नही करते है।

फैजपुर-कांग्रेसके अध्यक्षपदके लिअे खानसाहवको राजी करनेके लिअे पू० राजेन्द्रवावू और जवाहरलाल नेहरू मेवाग्राम आये थे। वर्धामें वर्किंग कमेटीकी वैठक चल रही थी। वे आये अुस समय मैं और भाअी मुन्नालालजी भी वापूजीके पास वैठे थे। राजेन्द्रवावू और जवाहरलालजी अपनी वात कहनेमे हिचक रहे थे। वापूजीने अुनकी अिस हिचकको ताड लिया। वे वोले "आप सकोच न करे। ये दोनो अपने ही आदमी हैं। आपको जो भी कहना हो नि सकोच भावसे कहे।" अिसमे पता चलता है कि वापूजी महत्त्वके राजनैतिक प्रश्नोके वारेमें भी अपने साथियोसे कोअी दुराव-छिपाव नही रखते थे। दोनोने खानमाहवको अध्यक्ष वनानेकी अपनी सूचना सामने रखी। खानसाहव वोले, "यह मेरा काम नही है। मैं तो सिर्फ खिदमतगार सिपाही हू। मुझे अिसमे रुचि भी नही है। आप किसी दूसरेको वनाये।" अुनकी वातका समर्थन करते हुअे वापूजीने जवाहरलालजीसे कहा, "खानसाहव ठीक कहते है। मै अिनको अिस झझटमे डालना नही चाहता। अिनसे तो दूसरा ही काम लेना है। अिनके लिअे दूमरे वहुत काम

है, जिन्हें अिनके सिवा दूसरा कर ही नहीं सकता। कांग्रेसका भार तो तुमको ही अुठाना होगा और आज यही ठीक भी है। अिसलिअे खानसाहबका विचार छोडो और तुम तैयार हो जाओ।" खानसाहब तो खुश-खुश हो गये और बोले, "महात्माजी ठीक कहते हैं। यह भार जवाहरलालजीको ही लेना चाहिये।" आखिर पंडितजीको कबूल करना ही पड़ा।

खानसाहब सीमाप्रांतके और जेलके अपने अनुभव बताया करते थे कि कैसे जेलमें अुन्होंने शाक-भाजीका बगीचा लगाया, वहां पर हिन्दू-मुसलमानोंके भेदभाव मिटानेके लिअे क्या-क्या किया, अित्यादि।

खानसाहबने अहिंसाकी लड़ाओीमें अपना सब कुछ तो समर्पण कर ही दिया था, साथ ही साथ हिंसक प्रवृत्तिवाले पठानोंको अहिंसाका पाठ पढ़ाकर अहिंसाका बेजोड़ दृष्टांत भी देश और दुनियाके सामने रखा। अुनका दिल स्फटिक जैसा निर्मल और पारदर्शक है। अुनकी अुदारता और गंभीरता सागर जैसी महान है। अुनका धीरज हिमालय जैसा अचल है। अुनकी सरलता, नम्रता, सादगी और मिलनसारिताकी सुगंधने भारतवासियोंके मनको अितना सुगंधित किया है कि अुनका पावन प्रेम कभी भी भुलाया नहीं जा सकेगा। अुसे पाकिस्तान और हिन्दुस्तानकी बनावटी सीमारेखाअें रोक नहीं सकतीं। हो सकता है कि आज हमारे प्रत्यक्ष मिलनमें ये सीमायें बाधक हो जायं, लेकिन हृदयोंके मिलनको रोकनेकी शक्ति किसी भी सरकारके किसी भी कानून या फौजी ताकतमें नहीं है। आज खानसाहबका घर भले ही पाकिस्तानकी सीमामें आ गया हो, लेकिन अुनके प्रेमका बटवारा थोड़े ही हुआ है? अुनकी महानता और हमारे पारिवारिक जीवनके वे मधुर संस्मरण जब आज याद करता हूं और अुनके प्रेम, सौहार्द आदिके बारेमें जब सोचता हूं, तो मेरे श्रद्धापूरित आंसू रोके नहीं रुकते हैं। पर चाचा खानसाहबको अुनकी सरकार शायद यहां न आने दे! काश, वह अैसी अुदारता बरतती। बादशाह खान जैसा भी कोओी अुसका हितैषी हो सकता है? अुनसे खतरा काहेका? वे तो टूटे दिलको जोड़नेवाले सरेस हैं, कड़वेको मीठा बनानेवाले शहद हैं और रोनेवालोंको हंसानेवाली मां हैं। अैसी विभूतिको भी अपना शत्रु मानकर पाकिस्तान सरकारने आज जेलके सींखचोंके भीतर बन्द कर रखा है, और वह भी अुनके भाओी डॉ० खानसाहबके प्रधानमंत्री होते हुअे, यह अेक अनोखी और करुण घटना ही कही जायेगी।

अुनके कानो तक अगर मेरी आवाज पहुच सकती हो, तो दुर्गापुरा आनेका मेरा आदरभरा निमत्रण और शत-शत प्रणाम अुन्हे स्वीकार हो।

वालकोवा

विनोवा जैसे विनायकसे विनोवा वने वैसे ही वालकोवा, विनोवाजीके छोटे भाअी, वालकृष्णसे वालकोवा वने। अिनसे छोटे भाअी शिवाजी है। शुकदेवजीकी तरह जन्मसे ही तीनो भाअी साधु, भक्त, ज्ञानी, सन्यासी और देशभक्त तो थे ही, तिस पर कडवी और नीमचढी अिस नियमके अनुसार तीनो ही वापूजीके जालमें आ फसे।

कुल पवित्र जननी कृतार्था वसुन्धरा पुण्यवती च तेन।

अिसी आशयका तुलसीदासजीका भी अेक वचन है पुत्रवती युवती जग सोअी, रघुपति भगत जासु सुत होअी। सचमुच ही अैसा दृष्टान्त दुनियाके अितिहासमे मिलना दुर्लभ है। अुस माका पवित्र स्मरण करके आज भी विनोवाजीकी आखोमे गगा-जमुना वहने लगती है। अिनके माता-पिता तो धन्य थे ही, लेकिन अिन तीनोको पाकर वापूजीने भी धन्यताका अनुभव किया। तभी तो वापूने विनोवाजीको सारे देशके सामने १९४० के व्यक्तिगत सत्याग्रहका प्रथम सत्याग्रही घोषित करके अपने अत्यन्त प्रेम और विश्वास-पात्रताका प्रमाणपत्र दिया था।

पहले वापूजीके पास विनोवाजी आये और वादमें जैसे रामके पीछे लक्ष्मणने वनका रास्ता पकडा था अुसी प्रकार अिन दोनो भाअियोने भी विनोवाका पीछा पकडा। वालकोवाजीको भी विनोवाजीने घर पर रहनेको समझाया था। धमकाया भी था। लेकिन —

अुतरु न आवत प्रेम वस गहे चरन अकुलाअि।
नाथ दासु मै स्वामि तुम्ह तजहु तो कहा वसाअि॥

अिन दोनो छोटे भाअियोका भी अैसा ही हुआ। सबसे छोटे भाअी शिवाजीको वहुत कम लोग जानते है। वे प्रसिद्धिसे विलकुल दूर भागते है। वापूजीके 'गीतापदार्थकोश' की तरह अुन्होने विनोवाजीकी मराठी 'गीताअी' का वडी मेहनतसे शब्दकोश तैयार किया है। महाराष्ट्रकी जनतामे घूम घूम कर 'गीताअी' की लाखो प्रतियोका प्रचार किया है। रामायणका भी अुनका गहरा अध्ययन है। जीवन और जनसेवाकी दृष्टिसे अुन्होने जो साधना की है, वह प्रशसनीय कही जायगी।

तीनों भाअियोंने बापूजीकी प्रयोगशालाको सजानेमें जो पार्ट अदा किया है वह अितिहासके पन्नोंको दीपस्तम्भकी तरह प्रकाशित करता रहेगा। खैर, मैं कहने कुछ जा रहा था और बह गया दूसरे पानीके साथ। यह भी अच्छा ही हुआ। अिन त्रिमूर्तिका स्मरण भी तो त्रिवेणी-संगममें स्नान करने जैसा ही है।

बालकोबाजीको क्षय रोगने पकड लिया था। दोनों फेफडे खराब हो चुके थे। दस-बारह सालसे सतत बुखार बना रहता था। पहले महिलाश्रम वर्धामें बापूजीकी ही देखरेखमें अुनका अिलाज चलता रहा। जब बापूजी सेवाग्राम आये तो अुनको भी सेवाग्राम बुला लिया और अुनके अिलाज आदिकी सारी व्यवस्था अुन्होंने अपने हाथमें ले ली। बालकोबाके रहनेकी व्यवस्था आश्रमसे दूर मीराबहनवाली बरोडाकी झोपडीमें थी। अुनके खाने-पीनेका जरूरी सामान आश्रमसे जाता था। सुबह शाम घूमते समय बापूजी अुनकी झोपडी तक जाते थे, जो आश्रमसे करीब डेढ मीलकी दूरी पर थी। सुबह रातके और शामको दिनके सब समाचार बापूजी अुनसे पूछते थे। नींद कितनी आअी, दस्त कैसा और कितना हुआ, बुखार कितना रहा, कितने कदम और कितनी देर घूमे, खुराकमें क्या क्या चीजें लीं, कितनी कितनी मात्रामें ली — अित्यादि अित्यादि।

२४ घंटेका अपना कार्यक्रम बालकोबाजीने अिस प्रकार बना लिया था कि वह घडीके कांटेकी तरह ही नहीं बल्कि सूर्यकी गतिकी तरह नियमित चलता था। कितना और कितनी बार खाना लेना, अुसमें क्या क्या और कब कब लेना, कितना सोना, अगर नींद न आये तो चुपचाप बिस्तरमें पडे रहना, अमुक समय पर ही और बहुत कम बोलना, बिस्तरको रोज धूपमें सुखाना, कितना घूमना, किस समय बुखार नापना, कितना काम खुद करना और कितना सेवकसे कराना — अिसका भी बराबर हिसाब था। अुनकी झोपडी और सामान सब अितना सुव्यवस्थित और स्वच्छ रहता था कि देखकर आनन्द होता था। कहनेका अर्थ यह कि अुनका आत्मसंशोधन और स्वास्थ्य-सुधारका प्रयत्न और निरीक्षण अितना सूक्ष्म था कि अुसमें अुपेक्षा, आलस्य, निराशा आदिका नाम भी न था। मैं भी अुनके पास जाया करता था। अुनकी छोटी छोटी बातोंमें अितनी बारीकी मुझे बालकी खाल निकालने जैसा लगता था। और मैं सोचता था कि यह आदमी मृत्युदेवके दरवाजे पर खडा है तो भी जीनेके

लिअे अितनी चिन्ता और खटपट क्यो करता है? वात तो ज्ञान, वैराग्य, अुपनिषद्, योगदर्शन आदिकी करते है और जीनेका अितना लोभ? मैने अपना यह विचार अेक आश्रमवासी भाअी कृष्णचन्द्रजीको वात वातमे कह डाला। अुन भाअीने वात ही वातमे मेरी वात वालकोवाजीको सुना दी। अैसी नाजुक वात अुनको सुनानी नही चाहिये थी, लेकिन वह भाअी अुनके भक्त थे। मेरे भी मित्र तो थे ही, लेकिन अुनके पेटमे यह वात पच नही सकी। सुनकर वालकोवाजीको वहुत ही दुःख हुआ और अुनको लगा कि अगर साथियोके मनमे अैसा विचार आता है तो मुझे यहा न रहकर हिमालयकी तरफ चला जाना चाहिये। जव तक शरीरको रहना होगा तव तक रहेगा। जव पडना होगा पड जायगा। आखिर यह वात वापूजी तक तो पहुचनी ही थी, क्योंकि कोअी वात या विचार वालकोवाजीके पास पहुचे या अुनके मनमे आये और वह वापूजी तक न जाय यह सभव नही था। अुन्होंने वापूसे हिमालय जानेकी अिजाजत मागी।

मैने तो सहज ही चर्चा करते करते अुन भाअीसे अपना विचार कह दिया था। मुझे पता नही था कि यह प्रश्न सचमुच ही अितना गभीर वन जायगा और मेरी पूरी पूरी हाजरी ली जायगी। जव मुझे पता चला कि प्रश्न वापूजी तक पहुचा है तो कृष्णचन्द्रजी पर मुझे गुस्सा आया। मेरा कलेजा धडकने लगा कि न मालूम कव मेरा वारन्ट आयगा और क्या हाल होगा। अेक कहावत है कि हाकिमके आगेसे और घोडेके पीछेसे कभी नही निकलना चाहिये, न मालूम हाकिम कव क्या पूछ वैठे और घोडा कव लात मार वैठे। अिसलिअे मै भी वापूजीसे कतराकर निकल जाता था। आखिर दूर भी कव तक रह सकता था? मैने यह भी समझा था कि वापूजी मेरा स्वभाव जानते है, अिसलिअे वातको टाल भी सकते है। लेकिन वापूजीके लिअे तो वह महत्त्वका प्रश्न था। अुसे वे यो ही कैसे छोड सकते थे?

अेक रोज घूमते समय अुन्होने धीरेसे वात निकाली, "क्यो वलवन्तसिंह, तुमने वालकृष्णके लिअे क्या कह दिया था? तुम्हारी वातसे अुसको वडा दुःख हुआ है और वह हिमालयमे भाग जानेकी वात करता है।" मेरे अुस समय क्या हाल हुअे होगे अिसका अन्दाज पाठकगण लगा सकते है। लेकिन अदालतमें जवाव न देना भी तो गुनाह है। अिसलिअे मैने भी धीरेसे कहा, "हा वापूजी, मैने कहा था कि वालकोवाजी जीनेके लिअे अितनी खटपट क्यो

करते है? खुद परेशान होते है और दूसरोको भी परेशान करते है। अेक तोला दूध या अेक खजूर या मुनक्का कम हो गया तो क्या और अधिक हो गया तो क्या?"

बापूजी गभीरतासे बोले, "यह तुम्हारी भूल है। तुमको क्या पता है कि अगर मै न रोकता तो वह कबका हिमालय चला गया होता। अुसको तो सेवा लेना और खटपट सहन ही नही हो सकती थी। वह बहुत ही सकोची और भावना-प्रधान है। तुमको क्या पता है कि अुसमे सेवा करनेकी कितनी शक्ति भरी है? अगर वह खडा हो सका तो तुम देखोगे कि वह कितनी सेवा दे सकता है। अैसा ही समझो कि अुसे जीनेका लोभ है ही नही। वह तो मेरे प्रेमके वश होकर ही मेरे हुक्मका पालन करनेके लिअे यहा पडा है, नही तो कबका हिमालयमे चला गया होता और शरीर भी पड सकता था। लेकिन मैने अुससे कहा है कि तुमको अच्छा होना ही है और सेवा करना है। साबरमतीमे तो अुसके खिलाफ यह शिकायत थी कि वह काम बहुत करता है और खुराक बहुत कम लेता है। अुसका शरीर बिगडनेका यह भी अेक कारण हो सकता है। और भी कारण है। लेकिन अब वह समझ गया है कि शरीरको ठीक रखना भी धर्म है और जो भी नियम डॉक्टर या मै बताता हू अुसका अक्षरश पालन करता है। डॉ० डेविडने अुसके पीछे काफी मेहनत और प्रेम बरसाया है। वह तो बडे सेवाभावी और अपनी कलामे बडे अुस्ताद है और अुनको पूरी अुम्मीद है कि बालकृष्ण ठीक हो जायगा। अगर मै अुसे खडा कर सका तो मेरा अेक बडा काम हो जायगा। कुछ भी हो हमको साथियोके प्रति अुदारता, सहनशीलता, और सेवाभाव रखनेका अभ्यास करना चाहिये। हम अपने आपको दूसरेकी स्थितिमे रखकर सोचना सीखे। अुसने मुझे सर्वार्पण किया है तो मेरा धर्म हो जाता है कि मै अुसे खडा करनेका पूरा पूरा प्रयत्न करु। अितने पर भी अगर वह जायगा तो मै रोते नही बैठूगा। आखिर तो हम सब अुसी कालके गालमे खडे है न? कोअी हट्टा-कट्टा पहलवान भी यह दावा नही कर सकता कि दूसरे क्षण अुसका शरीर रहेगा या नही? गीतामाता तो अपना कर्तव्य-कर्म करके अनासक्त रहनेको कहती है न? खैर, अुसको तो मैने समझा दिया है। लेकिन तुमको भी कर्तव्यधर्मका रहस्य और साथियोके साथ सहानुभूतिसे बरतना सीखना है। बालकृष्णको हम जितनी सेवा और अपना प्रेम दे सके अुतना देना हमारा धर्म है।"

मैं तो वापूजीका भाषण सुनकर सुन्न रह गया। वापूजीने मुझे सव कुछ कह दिया, लेकिन अुसमे अेक भी शब्द अुपदेशसे खाली और चुभनेवाला नही था। वापूजीने गुडमे लपेटकर मुझे कुनैनकी अेक कडवी गोली खिलायी। अुसे गलेके नीचे अुतारे सिवा मेरे पास भी दूसरा चारा नही था। मैं वालकोवाजीके पास गया और मेरे शब्दोसे अुनको जो दुःख हुआ अुसके लिअे अफसोस जाहिर किया। अुनका स्वभाव तो वडा ही सरल और भोला है। अुनके मनमे मेरे प्रति द्वेष नही आने पाया था, वल्कि अपने आप पर ही ग्लानि आअी थी कि कही सचमुच ही तो मुझे जीनेका लोभ नही हो गया है। अगर अेक साथी अैसा सोचता है तो यह विचार करने लायक प्रश्न है। मेरी वातचीतसे अुनके मनसे वह असर भी चला गया और आज तक हम दोनो अच्छे मित्र हैं।

आज वापूजीकी अुस दिनकी दिव्य दृष्टिका मैं विचार करता हू तो आश्चर्यचकित रह जाता हू। अुस निमित्तसे वापूजीने मुझे तो ज्ञान-गोष्ठी सुना ही दी। लेकिन वालकोवाजीके लिअे वापूका शुभ-सकल्प अक्षरश कितना सत्य सिद्ध हुआ, अुसका दर्शन निसर्गोपचार आश्रम, अुरुलीकाचन (पूनाके पास) मे देखनेको मिलता है। अुस सस्थाके लिअे देशके कोने कोनेसे ही नही, समुद्र पार जाकर भी लाखो रुपये जमा करना वालकोवाजीकी शक्ति और स्वभावके वाहरकी वात थी। वे कभी सरदी और गरमीमें पैदल चलने लायक हो सकेंगे और अितनी वडी सस्थाको चला सकेंगे यह स्वप्न जैसी कल्पना कौन कर सकता था? कमसे कम मुझे तो नही ही थी। परतु आज वे अुसके सचालनमे प्राणपणसे जुटे हुअे हैं। अगर आज वापूजी जीवित होते तो मुझसे पूछते कि देखो, वालकोवाके वारेमे मैंने जो कहा था वह कैसे सच सावित हो रहा है। आज वालकोवा कितनी सुन्दर सेवा कर रहा है!

मूक सेवक रामदासजी गुलाटी

भाअी रामदासजी गुलाटी सीमाप्रान्तके अेक अिजीनियर थे, जो सरकारी नौकरी छोडकर पू० ठक्करवापाकी प्रेरणासे १९३४ मे सेवा और साधनाकी दृष्टिसे वापूजीके पास आये थे। वापूजीने अुन्हे पू० जाजूजीको सौंप दिया। जाजूजीने अुन्हे सावलीके चरखा सघके अुत्पत्ति-केन्द्रमे वुनाअीका अभ्यास करने भेज दिया। वे कुछ ही समयमे वुनाअीका शास्त्र समझ और सीखकर केन्द्रके

सचालक वन गये। वही मेरा अुनसे परिचय हुआ, जव मैं १९३५ मे लुनाअी सीखने सावली गया था।

अुनका प्रेमी स्वभाव, अुनकी सत्यता, सरलता, व्यवहार-कुशलता, सूक्ष्म दृष्टि और सेवाभावना प्रशसनीय थे। भगवद्भक्त और साधक भी वे अुच्च कोटिके थे। अुनके साथ थोडे ही दिनोमे मेरा घनिष्ठ सबध हो गया। सावलीमे अुन्होने मुझसे रामायणका अभ्यास करना शुरू कर दिया था। पाखाना-सफाअी व ग्रामसफाअीमे भी वे सवसे आगे रहते और सब काम अपने हाथसे ही करनेका आग्रह रखते थे।

जव वे सेवाग्राममे आ गये, तव हम दोनोकी आत्मीयता और भी वढ गअी। अुसके वाद सेवाग्रामका जो भी मकान वनता, अुन्हीकी देखरेखमे वनता। फिर तो काग्रेस-अधिवेशनोमे भी सारी रचना अुनसे ही करानेका वापूजी आग्रह रखते थे, क्योकि अुन्होने वापूजीकी सादी ग्रामीण कलाकी दृष्टिको पूरी तरह समझ लिया था।

मेरी गोशालाके नये मकानोकी योजना वनानेके खर्चका अन्दाज लगाने और मकान वनवानेका काम भी वापूजी अुन्हे ही सौंपते थे। और मैं अुनकी सलाह, सूचना या सशोधनको मजूर कर लेता था।

वापूजीके अवसानके वाद श्री भाअीलालभाअी पटेलके आग्रहसे वे वल्लभविद्यानगर, आणदमे अिजीनियरीके प्रोफेसर हो गये थे। वहा कुछ समय वाद अुन्हे केन्सरका असाध्य रोग हो गया, जिससे वचना असभव था। मृत्यु अुनके सामने मुह वाये खडी थी। लेकिन अुन्होने तो वापूके अुपदेशको जीवनमे ओतप्रोत कर लिया था। अिसलिअे मृत्युसे अुन्हे किसी प्रकारका भय, क्षोभ, या ग्लानि जैसा कुछ नही लगता था। वे सदा प्रसन्नतासे मृत्युका स्वागत करनेके लिअे तैयार रहते थे। अन्तमे अुसी रोगने अुनके प्राण लिये।

अुनका सारा परिवार वडा ही सुसस्कृत है। वीमारीमे अुनके भाअी और भाभीने अुनकी अद्भुत सेवा की।

सेवाग्राममे रहते हुअे अुन्होने वालकोवासे पचदशी आदि वेदान्त और अुपनिषदोका गहरा अध्ययन किया था। वहा अुनकी साधना वीजकी तरह विलकुल मूक अवस्थामे चलती थी।

अुनका रहन-सहन अत्यन्त सादा था। अुनके पास कुछ पैसे थे। अुन्हीसे आश्रममें रहकर वे अपना गुजर चलाते थे। आश्रम या चरखा सघमे अुन्होने कभी अेक पैसा भी अपने निजी खर्चके लिअे नही लिया था।

वापूजीका अुन पर अद्‌भुत प्रेम था। अुनकी रायको वापूजी सील-मोहर मानते थे। सेवाग्रामसे अुनके चले जानेके वाद हमें अुनकी वहुत याद आती थी और पद पद पर अुनकी सलाह और मार्गदर्शनकी जरूरत महसूस होती थी।

मुझे वडा दुःख है कि बीमारीमें न तो मैं अुनकी कोअी सेवा कर सका, न अुनके दर्शन [ही] कर [पाया। 'परुषवचन कवहू नहिं वोलहिं' तुलसीदासजीके अिस वचनका प्रत्यक्ष दर्शन रामदासभाअीके जीवनमें मिलता था। अैसे मूक सेवकोंका जीवन और मृत्यु दोनों ही भव्य होते हैं। आज अुनका स्मरण करके मैं धन्यताका अनुभव करता हूं।

धन्य घडी जव होहि सतसगा।

अप्रकट सतमालिकाके अेक मोती

सेवाग्राम आश्रमके वृद्ध श्रीपत वावाजीने अपनी अिहलोककी यात्रा पूरी कर ली। वावाजीका शरीर कृश हो गया था। अुनके वियोगकी छायाने मनको अुदासीन वना दिया। अुनकी पवित्र स्मृतिसे हृदय भर आया। हमारे यहां कअी प्रकारके वावा और महात्मा होते हैं। लेकिन वावाजीने तो न कपडे रंगे थे, न लंवी दाढी वढायी थी। वे सच्चे वावा और महात्मा थे। अुम्र सत्तर वर्षकी थी। दरअसल वे देहातके अेक सच्चे विद्वान वुजुर्ग थे।

सन् १९४२ में जव वे 'जितना कमाये, अुतना ही खाये' सिद्धान्तके अनुसार चलनेके कारण खुराकमें कमी हो जानेसे अत्यधिक कमजोर हो गये थे, तव अुन्हें पवनारसे सेवाग्राम आश्रम लाया गया था। अितनी अुम्रमें भी वे कताअीसे जितना कमा सकते थे अुतना ही खाते थे। मुझे ठीक पता नहीं है, लेकिन वावाजीकी कमाअी अितनी कम होती थी कि अनेक वार मैंने अुनको चने या अरहर अुवाल कर ही खाते देखा था। वावाजीकी अिस कठिन तपश्चर्याका मैंने विरोध किया था और साधारण ठीक खुराक लेनेकी राय दी थी। लेकिन वावाजीका विचार तो यही था ही कि जितना कमाओ, अुतना ही खाओ!

यद्यपि वावाजीसे पढानेका काम अधिक नहीं होता था, फिर भी जिनको वे आश्रममें पढाते थे अुनको जव तक शुद्धतम वोलते न आ जाता तव तक अुन्हें संतोष नहीं होता था। अितनी तत्परता व लगनसे वे पढाते थे। अुनके सव

अुच्चार बडे शुद्ध होते थे — चाहे मराठी हो, चाहे संस्कृत, चाहे हिन्दी। संस्कृत मराठीके समान ही अुनकी मातृभाषा लगती थी।

मुझे 'गीताअी' पढानेके समय, मैं यदि कभी स्थान पर नहीं रहा तो वे खुद मुझे खोजने आते और नाराज तक नहीं होते। नम्रता भी अुनमें गजबकी थी। दरअसल बाबाजी आश्रमकी शोभा थे, आश्रमके सच्चे सेवक थे और गायकी तरह सरल और प्रेमी थे। पूज्य विनोबाकी सूचनानुसार अुन्होंने बापूजीकी कुटिया संभालनेकी जिम्मेदारी ली थी, जो अुन्होंने अपनी सेहत ठीक रहने तक पूरी तरह निभायी। वे आत्मज्ञानी और वैराग्यवान भक्त थे। अुनकी ज्ञान-पिपासा आखिर तक बनी रही। वे करीब दो बजेसे जाग जाते और तबसे सुबहकी प्रार्थनाके समय तक 'केकावली', 'अुपनिषद्' या 'ब्रह्मसूत्र' अथवा अन्य कोअी अैसा ही ग्रंथ अुनके अध्ययनका विषय रहता। अुनको गीताअी, गीताजी, अुपनिषद्, ब्रह्मसूत्र आदि अनेक ग्रंथ कंठस्थ थे। प्रार्थनामें जब ये पढे जाते तब बाबाजी बिना पुस्तकके ही अिन्हें बोलते थे। अुनका अिन पुस्तकोंमें प्रगाढ परिचय था।

बाबाजी अपनी धुनके पक्के थे। वे मानते थे कि जो अपनी कमाअीसे अधिक खाता है, वह दूसरेका पेट काटकर ही खा सकता है। यह बात बुद्धिसे माननेवाले तो बहुत मिलेंगे, लेकिन अिस विचार पर अमल करनेवाला माअीका लाल कोअी बिरला ही मिलेगा। बापूजी अुनको बहुत ही आदरकी दृष्टिसे देखते थे। आश्रमका हर काम, घंटी बजानेसे लेकर चक्की, चरखा और झाडू लगाने तकका काम, वे प्रेमसे करते थे। वे बडे व्यवस्थित रहते थे। अुनके कपडे कभी भी बिखरे हुअे मैंने नहीं देखे। सब बडे साफ-स्वच्छ रहते थे। आश्रममें रहते हुअे अुन्होंने बापूजीका भी कम-से-कम समय लिया। बापूजी खुद जब अुनको कोअी बात पूछते, तभी वे अुतनी बात कर लेते थे।

बाबाजीकी नम्रता तुकाराम जैसी ही थी। जब कोअी आध्यात्मिक चर्चा छिडती, तो बाबाजी बालकोंकी तरह बोल अुठते, "भाअू, अितके सर्व करूनहि आतून कोराचि राहिला!" (भाअी, जितना सब करके भी अंदरसे कोरा ही रहा!) और तुकारामके शब्दोंमें आगे सुनाते, "मापून झिजलों मापाची या परी। जाळावी हे थोरी लाभ विण।" (माप-माप कर घिस गया। अिस प्रकारके बडप्पनको जला देना चाहिये। लोग मुझे महात्मा कहते हैं, लेकिन मैं तो अंदरसे खाली ही रहा।) महाराष्ट्रमें पायलीसे अनाज मापनेका रिवाज है। पायली बार बार भरती है और घिसती है और अंतमें

खाली ही रह जाती है। जव अहभावका अत्यधिक अभाव रहता है, तव ही अैसी नम्रताकी भाषा निकल सकती है। मनुष्यकी वाह्य जगतमे स्याति अलग चीज होती है और आतरिक साधना अलग।

स्व० श्रीपत वावाजीको चाहे कोअी जाने या न जाने, अुनका स्थान सतजनोकी गुप्त मालिकामे कायम रहेगा। आश्रममे पहली पवित्र मृत्यु स्व० धर्मानन्दजी कौशाम्वीकी हुअी थी, जिन्होने अपना शरीर चलने लायक न समझ कर अेक मासका अुपवास करके अुसे छोडा था, और दूसरी पवित्र मृत्यु वावाजीकी हुअी।

प्रभुसे प्रार्थना है कि वावाजीके जैसी सरलता, जीवनके सवधमे जागृति और 'जितना कमाओ, अुतना ही खाओ' के सिद्धात पर अत तक अमल करनेका वल हमको भी दे।

वापूजीके वेदाग साथी

मध्यप्रान्तीय हरिजन-सेवक-सघके अध्यक्ष श्री तात्याजी वझलवारका स्वर्गवास १७ दिसम्वर, १९५५ को लवी वीमारीके वाद नागपुरमे हो गया। यह दुखद समाचार मुझे अुनके नाम लिखे पत्रके जवावमे मिला। काफी दिनोसे अुनकी तवीयत खराव थी। छह-सात महीने पहले अुनके पेटका आपरेशन वम्वअीमे हुआ था। अुसके वाद वे सभल ही नही सके। श्री तात्याजी नागपुरके अेक महाविद्यालयके मुख्य अध्यापक थे। जहा तक मुझे याद है, सन् १९३९-४० के लगभग अुन्होने सेवाग्राम आश्रममे वापूके पास आना आरभ किया था। विद्यालयमे थोडा अवकाश मिलता तो वे आश्रममे दौड आते, वापूजीसे प्रेरणा लेते, आश्रमवासियोको अपना स्नेह देते और चले जाते। महीनेमे दो-चार दिन आश्रममे रहनेका अुनका आग्रह रहता था।

धीरे-धीरे नोकरी परसे अुनका मन हटता गया, और वापूजीके रच-नात्मक कार्योमे दिलचस्पी वढती गअी। अुन्होने त्यागपत्र देनेका निश्चय किया, तो विद्यालयके अुच्च अधिकारियोने अुनका त्यागपत्र मजूर न करके सेवाके लिअे अुनको लवा अवकाश दिया। क्योकि वे विद्यालयके प्राण थे और किसी भी कीमत पर अधिकारी ओर विद्यार्थी अुनको छोडना नही चाहते थे। थोडा समय देकर भी वे विद्यालयके मुख्याध्यापक ही वने रहे, अैसी सवकी अिच्छा थी। अिस अिच्छाके वश होकर अुन्होने थोडे समय तक निभानेकी कोशिश की। लेकिन वे वापूजीकी तरफ अितने अधिक आकर्षित हो गये थे कि वडे

परिवारके खर्चका भार और साथियोंका प्रेमभरा आग्रह होते हुअे भी विद्यालयसे त्यागपत्र देनेके लिअे वे विवश हो गये।

अुनका मित्र-मडल वहुत वडा था। अुनकी अुदारता, नम्रता, सेवा-भावना, सहनशीलता और हसमुख प्रकृतिका असर वहुत ही व्यापक था। सन् १९४२ के आन्दोलनमे वे भोजन वर्धाके कलेक्टरके घर, जो अुनका मित्र था, करते और पानी आश्रममे पीते थे। लेकिन अुनके अूपर किसी भी प्रकारका शक नही किया जा सकता था, क्योकि अुनका जीवन गगाजलके जैसा पवित्र तथा स्फटिकके जैसा स्वच्छ और पारदर्शी था। अुनका काम अेक प्रकारसे 'रेडक्रास' का, शुद्ध सेवाका ही था। अुनके जीवनमे किसी प्रकारका राजनैतिक दावपेच, पदलोलुपता या भौतिक आकर्षणोका दाग तिलमात्र भी नही था। गीताकी भाषामे अिन सव चीजोंसे वे कमलपत्रवत् अलिप्त थे। सफेद कपडोमे वे सन्यासी थे। विनोवाजीकी भाषामे शुद्ध काचनमुक्त थे। अुनकी सादगी और परिश्रमशीलता अद्वितीय थी। आश्रमके लिअे नागपुरसे कुछ सामान मगाना होता, तो अुसकी लिस्ट या तो वे स्वय ले जाते या भेज दी जाती। वर्धा स्टेशनसे सेवाग्राम पाच मील है। जिस सामानको वे खुद अुठा सकते थे, अुसे सिर या कमर पर लादकर पैदल ही सेवाग्राम पहुचते थे। अगर कुछ अधिक होता तो सायमे मजदूर कर लेते थे। तागा करनेकी नौवत तभी आती, जब सामान वहुत ज्यादा होता था। आश्रममे पहुचते ही आश्रमके नित्यकर्मोमें — जैसे पाखाना साफ करना, झाड देना, पानी भरना आदिमे — अैसे ही लग जाते जैसे वे नित्य आश्रममे ही रहते हो। वापू और आश्रमके प्रति अुनकी श्रद्धा अगाध थी। आश्रमवासी अुनको अपने वीचमें पाकर प्रफुल्लित हो अुठते थे, और चाहते थे कि हमारे वीच वे जितना अधिक रहे अुतना ही अच्छा है। अुनका मन आश्रममे ही रमता था।

जवसे वे हरिजन-सेवक-सघके अध्यक्ष वने, तवसे प्रान्तके कोने-कोनेमे जाकर अुन्होने हरिजनोंके सुख-दुःखको समझा और अुनके अधिकार अुन्हे दिलानेकी दिलोजानसे कोशिश की। अपने शरीरको अुन्होने चन्दनकी तरह घिसने दिया। रोजाना २५—३० मील तक साअिकल पर या पैदल दौड लगाते थे। मित्रोने अुनको मोटरकी सुविधा कर देनेका प्रेमभरा आग्रह किया था, लेकिन अुन्होने नम्रतापूर्वक अुसे अस्वीकार कर दिया था। अुनकी तवीयत विगडनेका सबसे कारण अुनकी मर्यादासे अधिक साअिकलकी दौड भी थी। अुनका भोजन वहुत ही सादा था। लेकिन वह भी वे समय पर

नही कर पाते थे। घर पर तो अुन्होने तुलसीपत्र ही रख दिया था। नागपुरसे तीन मील बाहर अेक मित्रके यहा सोते और भोजन करते थे। पत्नीके आग्रह करने पर सप्ताहमे दो या तीन दिन घर पर भोजन करना कबूल किया था, लेकिन वे अुसका भी पालन नही कर पाते थे। सेवाके कामोमे अुनका मन अितना फसा हुआ था कि भोजन, आराम आदिका अुन्हे विस्मरण ही हो जाता था। अिसका भी अुनके शरीर पर बुरा परिणाम हुआ। मन आकाशमे अुड सकता है, लेकिन शरीरको तो प्रकृतिके नियमके अनुसार जमीन पर ही चलना पडता है। जब अुन नियमोका अुल्लघन होता है, तो शरीर मन और आत्माका साथ छोडकर अपने निज तत्त्वोमे विलीन हो जाता है। अुनका शरीर अिस नियमका अपवाद कैसे हो सकता था? अनेक मित्रोके आग्रह करने पर भी वे शरीरका अुतना ध्यान नही रख सके, जितना रखना चाहिये था। अुनका मन और आत्मा शरीरसे बहुत अूचे अुठ चुके थे, तो शरीर बिचारा अुनका साथ कहा तक दे सकता था?

अुनका वस्त्र-स्वावलम्बन गजबका था। तकली और तुनाअीका सामान अुनकी थैलीमे ही रहता था। वे अेक पैसेकी भी रुअी या कपास नही खरीदते थे। फसलके मौके पर नागपुरमे जो कपासकी गाडिया आती, अुनमे से जो कपास सडको पर बिखर जाती अुसे चुन लेते थे और साफ करके अुसका सुन्दर सूत कातते थे। अिस प्रकार धूलमे से धन पैदा करनेके बापूजीके मत्रको अुन्होने अपने जीवनमे सिद्ध कर लिया था। बुनाअीके लिअे भी पैसा न देकर बदलेमे वे सूत ही देते थे। अुठते-बैठते, चलते-फिरते अुनकी तकली अबाध गतिसे चलती ही रहती थी। 'मुखमे राम और हाथमे काम' अुनका मूल मन्त्र था। रामदास स्वामीका वचन है

देह त्यागिता कीर्ति मागे अुरावी।
मना सज्जना, हेचि क्रिया धरावी॥
मना चन्दनाचे परी त्वा झिजावे।
परि अतरी सज्जना नीववावे॥

अर्थात्—देह त्यागने पर कीर्ति पीछे बच जाये। रे मन, सज्जनोको अैसी ही क्रिया करनी चाहिये। रे मन, तू चन्दनकी तरह घिसा जाय, तो भी अतरकी सज्जनता कायम रहे। अिस वचनको अुन्होने अपने जीवनमे परिणत किया था। चन्दनकी तरह जैसे-जैसे अुनका शरीर घिसता गया,

तैमे-तैसे अुनकी सुगन्ध प्रखर होती गअी। अुनकी देह गअी लेकिन अपनी मेवा और सुगन्धरूपी बहुत बडी पूंजी वे हमारे लिअे छोड गये है। हम अुसका अच्छेसे अच्छा अुपयोग कर सकें, यही अुनके प्रति हमारी श्रद्धांजलि होगी।

मध्यप्रदेशके बाहर शायद अुनको बहुत कम लोग जानते है, क्योंकि वे अखबारी दुनियाके झमेलेसे बिलकुल अछूते थे। तो भी अैसे मूक सेवकोंकी सेवाकी सुगन्ध वायुके साथ सारे आकाशको सुगन्धित करनेमे समर्थ होती है। अैसे बेदाग सत्पुरुषोंका जीवन और मृत्यु दोनो धन्य होते है। अुनका पवित्र स्मरण मनको पवित्र बनाता है। अुनके वियोगमे भी शोकके बजाय सात्त्विक प्रेरणा अधिक मिलती है।

प्रभुसे प्रार्थना है कि वह हम सबको अुनके सत्पथ पर चलनेका बल दे। बापूजीके अैसे बेदाग साथी न मालूम देशमे कितने पडे होंगे।

अनोखा महापुरुष

पू० श्रीकृष्णदासजी जाजू, जिन्हें हम काकाजीके संबोधनसे पुकारते थे, सचमुच ही बापूजीके बाद हमारे परिवारके काकाजीका पूरा फर्ज अदा करते थे। सबकी सार-संभाल, सबके सुख-दु:खकी चिन्ता, सबकी कठिनाअियोंको सुलझानेमें मदद — अिसे अुन्होंने अपना ही फर्ज समझ लिया था। बापूजीके बाद हमारे परिवारमे तीन बडे बचे थे। पू० किशोरलालभाअी, पू० जाजूजी अेव पू० विनोबाजी। किशोरलालभाअीका स्थान बडे भाअीका था, जो अंत समय तक अुसे निभाते हुअे हमे छोडकर चले गये। काकाजीने कुछ लम्बे समय तक निभानेकी ही गरजसे हार्नियाका आपरेशन कराना मंजूर किया था। डॉक्टरकी राय थी कि यदि आराममें अेक जगह रहा जाय तो आपरेशनकी जरूरत नही है। लेकिन काकाजीके लिअे तो 'राम काज कीन्हे बिना मोहि कहा विश्राम' हनुमानका यह वचन सार्थक था। तीसरे है विनोबाजी, जो अपने रुग्ण शरीरको लेकर केवल आत्मबलसे ही भूदानका गोवर्धन पहाड अपने सिर पर अुठाये घूम रहे है। लेकिन कुटुम्बके बारेमें जो दिलचस्पी और लगन काकाजीमे थी वह अुनकी अपनी निराली वस्तु थी।

बापूजी और विनोबाके काममें अुन्हें अेक क्षण भी विश्राम लेना असह्य था। सूर्यकी गतिकी भांति अुनका कार्य सतत चलना ही रहता था। आपरे-शनके बाद हार्नियाका कष्ट मिटनेमें अुन कामको और भी वेगसे करने लगेंगे,

अिस अुत्साहने ही आपरेशनकी बात अुनके मनको रुची थी। डॉ० बलबीर नारायण शर्माकी श्रद्धा और कुशलताने भी अुन्हें राजी करनेमें मदद की थी। ता० १४-१०-'५५ को आपरेशन बडी सफलतापूर्वक सवाओी मानसिंह अस्पताल जयपुरमें हुआ। किसी प्रकारकी शंकाको स्थान नहीं था। वे बडे आनन्दके साथ प्रगति कर रहे थे। दूसरे दिन सवेरे अुन्हें घर ले जानेकी बात थी। अिसके लिअे मैंने रातमें ही अुनके लिअे अेक तखत अपने केन्द्रमें भिजवाया था। रातको डेढ बजे वे जगे और अुन्होंने पानी मांगा। नारायण, अुनका कनिष्ठ पुत्र, सेवामें था। वह अुठा और अुसने पानी दिया। काकाजी बोले, 'आज कुछ गर्मी है।' नारायणने कहा, 'नहीं, गर्मी तो नहीं है।' 'अच्छा खिडकी खोल दो।' खिडकी खोली गअी। बस, गर्दन ढीली पड गअी। नारायणने डॉक्टरोंको पुकारा। डॉक्टर वहां पहुंचे। लेकिन वहां तो १०-१५ मिनटमें ही हंस अुड चुका था।

मेरे मन कुछ और थी और कर्ताके कुछ और।

पू० काकाजीका जीवन अपने ढंगका अनोखा था। अुनकी अपनी मौन साधना बडेसे बडे योगिराजोंको भी मात करनेवाली थी।

शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक् शरीर-विमोक्षणात्।
कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः॥*

गीताके अिस श्लोकके अनुसार जीवनको अणिशुद्ध बनानेकी अुनकी लगन रोम रोममें प्रगट होती थी। भूदान, संपत्तिदान तथा व्यवहारशुद्धिके लिअे अुनके मनमें जो ज्वालामुखी धधक रहा था, अुसकी आंच और प्रकाश अुनके शब्द शब्दमें टपकता था। अुन्होंने सालों तक मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और अखिल भारत चरखा-संघके मंत्रीका काम किया। अुन्होंने मध्यप्रदेशके मुख्य-मंत्री और भारतके वित्तमंत्री बननेमें नम्रतापूर्वक अिनकार कर दिया। अुनके लिअे यह बडी बात नहीं थी, सहज और सरल काम था। क्योंकि अुनके जीवनका लक्ष्य अिससे कहीं अूंचा था।

पू० काकाजी अेक अैसे सज्जन पुरुष थे जिनके दर्शनसे युधिष्ठिरकी याद आती थी। लेकिन व्यासजीने युधिष्ठिरके मुखसे 'नरो वा कुंजरो वा' कहला

---

* देहान्तके पहले जिस मनुष्यने अिस देहमें ही काम और क्रोधके वेगको सहनेकी शक्ति प्राप्त की है, अुस मनुष्यने समत्वको प्राप्त किया है, वह सुखी है।

कर अुनके जीवनको जो धब्बा लगाया है, अुस प्रकारका धब्बा काकाजीके जीवनमे मिलना कठिन है। हमारे परिवारके वे 'प्रिवी कौंसिल' थे। किसी व्यावहारिक प्रश्नके लिअे वापूजीके पास समय न होता तो वे कहते, "जाओ, जाजूजीके पास चले जाओ। जैसा वे कहे वैसा करो, फिर मेरे पास नही आना।"

जब सेवाग्राममे वापूजीकी लगोटीमे मे ससार वढा तो मैंने पूज्य जमनालालजीके खेती-कार्यकर्ताओको वहासे अपना झोली-झडा अुठानेका नोटिस दिया। अुन्होने जमनालालजीसे कहा कि अगर मालगुजारी रखनी हो तो यहा खेती रखना भी जरूरी है। जमनालालजीने वापूजीसे सारे सेवाग्रामका कब्जा देनेकी बात की, क्योकि वे तो वापूजीके वहा जाते ही अुस गाव पर तुलसीपत्र रख चुके थे। लेकिन वापूजी जमीदार बनना पसन्द नही करते थे। आश्रमको तो सिर्फ काश्तकी जमीन चाहिये थी। प्रश्न खडा हुआ — या तो सब लो नही तो जमीन भी नही मिलेगी। अिस पर मेरी और जमनालालजीकी वापूजीके सामने मीठी टक्कर हुअी, क्योकि जमनालालजी मीठे थे। मामला काकाजीकी कोर्टमे गया। अुन्होने देखा और फैसला दिया कि जमीदारीके साथ काश्तकी जमीनका कोअी सम्बन्ध नही है। जमनालालजीकी हार हुअी और मै जीता।

काकाजीका प्रथम दर्शन मुझे वनस्थली (अुस समयकी जीवनकुटीर) राजस्थानमे १९३४ मे हुआ था। लेकिन १९३५ मे मै जब वापूजीके साथ मगनवाडी (वर्धा) और वादमें सेवाग्राम गया तो वहा अुनका सच्चा परिचय हुआ। जब गन्नेका रस चालू होता तो मै अुनके पास जाकर पूछता कि रस चालू हो गया है कितना भेजू। वे पूछते, 'भाव क्या रखा है?' मै कहता, 'आप भावकी झझटमे क्यो पडते है?' वे कहते, 'अरे भाअी, मुझे अपना हिसाब देखना पडेगा कि कौनसी चीज कम करके रस लिया जा सकता है।' अुस समय अुनके मासिक खर्चका बजट ३० रु० था। अगर मै आधा सेर भेजता और अुनको डेढ पावकी जरूरत होती तो दूसरे दिन अुतना कम भेजनेको कहते।

जबसे मै राजस्थानमे आया तबसे वे सीकर आते तो मेरे पास ही गोशालामें ठहरते और कहते, देखो आश्रमके लोग साग अधिक खाते हैं, मेरे लिअे अुस हिसाबसे नही बनाना है। अुनका हिसाब तोलेका था।

अेक बार अुन्हे सीकरसे अजमेर जाना था। मैं भी अपने काममे अुधर जा रहा था। अुनके साथ ही गया क्योंकि वे किसीको सेवाके लिअे साथ नही रखते थे और जहा तक सभव होता तीसरे दर्जेमे ही सफर करते थे। फुलेरासे गाडी वदलनी थी। वहासे अजमेरके लिअे दो डिब्बे लगते थे। मैंने अेक सीट पर अुनका विस्तर लगा दिया। देख कर वे बोले, 'अरे भाअी, तुमने मेरा विस्तर लगा दिया तो दूसरे लोग कहा बैठेगे? अिसे समेट लो।' मैंने समेट लिया। गाडीमे खूब भीड हो गअी। अजमेर तक काफी कष्टमे गये लेकिन अुन्होंने अुफ तक न की। सीकरमे मैंने अुन्हे थोडी मालिशके लिअे राजी कर लिया और यह भी सूचना की कि आप किसीको साथमे रखा करे, अब आपकी अुम्र अकेले घूमनेकी नही है। थोडी थोडी मालिश भी कराते रहे तो शरीरको मदद मिल सकती है। वे बोले, 'भाअी, अब अिस शरीरको और कितने दिन रखना है? अिससे बहुत काम लिया है। अिसके लिअे दूसरेका समय क्यो खर्च करू?'

जब २ अक्तूबरको काकाजी जयपुर आये तो मैंने दुर्गापुरा आकर मेरी कुटी देखनेकी बात की। वे हसकर बोले, 'अरे भाअी, वह जमीन तो मैंने पवित्र की है। मैं वहा गया था। अब तो समय नही है।' पर मैंने ८ तारीखको अुन्हे राजी कर ही लिया। यहा आये। डॉ० शर्मा भी साथ थे। शर्माजी अुनको अमेरिका आदिकी बहुतसी बाते सुनाते रहे। मैं भोजन बनाने लगा तो बोले, 'देखो, बलवतसिह, तुम आश्रमवासी हो और आश्रमवासियोंको भोजनकी झझटमे नही पडना चाहिये। आओ, मेरे पास बैठकर कुछ बात करो।' मैंने कहा, 'आपकी बात तो ठीक है। लेकिन स्वभाव पड गया है, अुसका क्या करू?' बोले, 'अच्छा तो जल्दी खिला दो।' अुन्होंने बडे प्रेमसे भोजन किया और सब देखकर चले गये। मुझे क्या पता था कि सचमुच अिस स्थानको पवित्र करनेका अुनका वह अन्तिम दिन था।

अेक बार राजस्थान गोसेवा सघकी सदस्यताका गायके घीका नियम कुछ ढीला करनेकी सूचना आअी। हम लोग कुछ ढीले पडे। प्रश्न काकाजीके पास गया तो कडक कर बोले, 'अगर तुम लोग राजस्थानमें रहकर भी गायके घीका व्रत नही पाल सकते तो गोसेवा कैसे करोगे? मैं तो सारे हिन्दुस्तानमे घूमता हू और गायके घी-दूधके व्रतका पालन करता हू। अगर थोडी अडचन भी आये तो अुसे सहन करनेकी तैयारी होनी चाहिये।' हमारे पास

अिसका क्या अुत्तर हो सकता था ? हम सावधान हो गये और अपने व्रतको हमने ढीला नही किया। यह थी अुनकी नियम-पालनकी कडाअी।

जब अुनके आपरेशनकी बात तय हुअी तब राधाकृष्णजीके मनमे सहज यह शका हुअी कि कही आपरेशन सफल न हुआ तो ? अिस खयालसे अुन्होने काकाजीसे पूछा, "आपको कुछ कहना तो नही है ?" अुन्होने अुत्तर दिया, "नही, मुझे कुछ नही कहना है। मेरे मनमे अैसा कुछ कहनेको है ही नही।" आपरेशनसे पहले अुन्होने कहा, 'मुझे तो सामान्य वार्डमे रहना है।' अन्तमे साथियोके आग्रहसे अलग छोटे कमरेमे रहना अुन्होने मान लिया। लेकिन अुस समय कमरा खाली न होनेसे अुन्हे १० रु० रोजके किरायेके बडे कमरेमे रखा गया, जिसमे सब प्रकारकी सुविधा थी। वह कमरा अुन्हे रुचता न था। जब छोटा कमरा खाली हुआ तो साथियोने बडेमे ही रहनेकी अुनसे विनती की। वे बोले, अरे, मुझे अितने आराममे क्यो रखते हो ? कहते कहते अुनकी वाणी रुक गअी और हिचकी बाधकर रोने लगे। अुनकी अिस भावनाको देखकर हमारे मुह बद हो गये और हम अुनको तुरत छोटे कमरेमे ले आये। अुससे अुनको बडी प्रसन्नता हुअी। यह था अुनका गरीबीसे जीनेका महामत्र। काकाजीने कभी अपने पास घडी या फाअुटेन पेन तक नही रखी, जो आजके जीवनकी बहुत ही जरूरी चीजे बन गअी है। गाडीमे जाना होता तो टाअिममे १०-१५ मिनट पहले ही स्टेशन पर पहुच जाते। अिसलिअे गाडी छूट जानेका तो प्रश्न ही नही रहता था।

पू० काकाजीके जीवनमे हम जितना भी पाठ ले अुतना ही थोडा होगा। अैसे अनोखे सत्पुरुष भाग्यमे ही कभी कभी आते है। और

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जन ।
स यत्प्रमाण कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥ *

का पाठ देकर चले जाते है। पीछे रहनेवाले अुनके आदर्शोसे जितना लाभ अुठा सकें अुठाये।

मुझे अुनकी पवित्र आत्माकी शातिके लिअे प्रार्थना करनेका तो क्या अधिकार है ? क्योकि अुनकी आत्मा तो शात तथा प्रभुमय ही थी। अुसे अपनी नम्र श्रद्धाजलि अर्पित करते हुअे अितना ही कह सकता हू

---

* जो जो आचरण अुत्तम पुरुष करते है, अुसका अनुकरण दूसरे लोग करते है। वे जिसे प्रमाण बनाते है, अुसका लोग अनुसरण करते है।

वायुर्यमोऽग्निर्वरुण शशाक, प्रजापतिस्त्व प्रपितामहश्च।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्व, पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते ।।
नम पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते, नमोऽस्तु ते सर्वत अेव सर्व।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्व, सर्वं समाप्नोपि ततोऽसि सर्व ।।*

भगवान हम सबको अुनके छोडे हुअे अधूरे कामको पूरा करनेका बल दे यही प्रार्थना है।

१६

बापूके विभिन्न पहलुओका दर्शन

वज्रसे भी कठोर

अेक दफा वादा जिलेके कुछ हरिजन डिस्ट्रिक्ट बोर्डमे सीट चाहते थे। वह अुनको मिल नही रही थी, अिसलिअे वे बापूजीसे मिले। वापूजी अपने ढगसे अुस वातकी छानवीन करके तथा वहाके कार्यकर्ताओंसे पूछताछ करके अुन्हे न्याय दिलानेका प्रयत्न करना चाहते थे। लेकिन हरिजन भाओी अपने ही ढगसे तत्काल न्यायकी माग करने लगे। वापूजीको यह बात ठीक नही लगी। तो अुन्होने बापूजीके खिलाफ ही सत्याग्रह कर दिया और आश्रमके दरवाजे पर अुपवास आरभ कर दिया। बापूजीने कहा, "आप लोग दरवाजे पर वैठे है, आपको तकलीफ होती है। आश्रममे ही वैठे तो कैसा हो? मे आपको मकान देता हू।" वाका स्नानघर अुनके लिअे खाली कर दिया और आश्रमवालोसे कह दिया कि अिनको किसी प्रकारकी तकलीफ न हो। अुनमे स्त्रिया भी थी। वे लोग समझते थे कि शायद हमारे और विशेपकर स्त्रियोंके अुपवाससे वापूजी घवरा जायेंगे और हमको सीट दिला देंगे। लेकिन वापूजी तो हिमालयकी तरह

---

* आप ही वायु, यम, अग्नि, वरुण, चन्द्र, प्रजापति और प्रपितामह है। आपको हजारो वार मेरा नमस्कार है और फिर फिर आपको मेरा नमस्कार है।

हे सर्व, आपको आगे, पीछे, सब ओरसे मेरा नमस्कार है। आपका वीर्य अनन्त है, आपकी शक्ति अपार है, सब कुछ आप ही धारण करते है, अिसलिअे आप सर्व है।

अटल रहे। अुन्होने कह दिया कि योग्य रीतिसे जितना मै कर सकता था अुतना मैने किया है। अिस प्रकारसे हठपूर्वक अुपवास करके यदि आप मर जायेगे तो भी मै परवाह नही करुगा। रोज सुबह-शाम बापूजी अुनके पास जाते और अुनसे बडे प्रेमसे बाते करते थे। अुनको किसी चीजकी जरूरत पडे तो आश्रमसे मदद लेनेके लिअे कहते थे। आश्रममे भी कह दिया था कि अिनको किसीके बरतावसे अैसा प्रतीत नही होना चाहिये कि ये हमारे विरोधी है। आखिर वे लोग हारे और अुपवास बद करके चले गये।

अजीब मागोंकी पूर्ति

अेक दफा सेवाग्राममे हैजा फैल गया था। सुशीलाबहनने कहा कि सेवाग्रामके पाससे अेक नाला बहता है और सेवाग्राममे अुसमे पैर डालकर जाना पडता है। बरसातके दिनोमे तो अिसीमे हैजा फैलता है। अिस कारण अैसी व्यवस्था होनी चाहिये, जिससे पानीमे पैर न भीगे। बापूने शामको मुझे बुलाया और कहा, "देखो, सुशीला जब सेगाव जाती है तो रोज अुसके पैर नालेमे भीग जाते है। कल १० बजे अुसको जाना है। अुसके पहले नाले पर पुल बध जाना चाहिये।" बापूजीके सामने तो हा कहना ही पडता। अिसलिअे मैने कह दिया, "जी, बन जायगा।"

मैने शामको ही जाकर नालेका मौका देखा। नालेमे अितने चौटेमे पानी बहता था कि अुसके अूपरसे कामचलाअू पुल भी अितनी जल्दी नही बन सकता था। मेरे सामने बडी समस्या थी। सुबह गया तो बहुत विचार किया। नालेके आसपास बडे बडे पत्थर पडे थे। मै कुछ आदमी तो आश्रमकी खेतीके अपने साथ ले गया और दस-पाच आदमी गावके बुला लिये। अुनकी मददसे वे बडे बडे पत्थर ढकेल ढकेल कर अैसे मिला दिये कि अुनमे से पानी भी निकल जाय और आदमी भी पार हो जाय।

मैने दस बजेके पहले ही जाकर बापूजीको रिपोर्ट दी कि पुल तैयार है। बापूजी हसकर बोले, "अच्छा!" और सुशीलाबहनसे कहा, "देखो, सुशीला बलवन्तसिंहने पुल बना दिया। अब तू आरामसे जा सकती है।" सुशीलाबहन गअी और अुस पुलके बारेमे बापूजीको अच्छी रिपोर्ट दी। बापूजीको अिससे काफी आनद हुआ।

अेक रोज सुबह बापूजीने मुझे बुलाया और कहा, "मीराबहनको यहा शाति नही मिलती है। वह टेकरी पर जाना चाहती है और आज ही जाना

चाहती है। तो शाम तक वहा मकान वन जाना चाहिये।" मनमें तो मुझे वहुत हसी आओी कि वापूजी कैसी शेखचिल्लीकी-सी वात करते है। लेकिन ना थोडे ही कह सकता था। वापूजीको हा कहकर मैं चला आया। सोचने लगा, क्या हो सकता है? विचार करते करते ध्यानमे आया कि खेतकी रखवालीके लिअे मचान वनाते है वैसा गोल-सा कुछ वनाया जाय। अुसके अूपर गोल छप्पर भी वनाया जाय। वम, गाडीमें लकडी, रस्सी, छप्पर वनानेका मारा मामान और अेक चलता-फिरता पाखाना ले गया। पाच वजे तक टेकरी पर मीरावहनके लिअे मुदर झोपडा वन गया। अिसकी रिपोर्ट मैंने वापूजीको दी। वापूजीने मीरावहनसे तैयार होकर जानेके लिअे कहा। मीरावहन गअी और झोपडा अुनको वहुत पसद आया।

अिस प्रकारसे वापूजीके पास अजीव अजीव मागे आती थी और अजीव ढगसे वापूजी अुन्हे पूरा करते थे। अिसमे वापूको कितना आनद आता था, अिसकी कल्पना वे लोग नही कर मकते थे जो यह मानते थे कि वापूके पास अितने वडे वडे काम है फिर भी आश्रमके लोग छोटे छोटे कामोके लिअे अनका अितना वक्त ले लेते है। अिन छोटे छोटे कामोमे भी वापू वडे कामका दर्शन कर लेते थे।

'कभी नही हारना'

मअीका महीना था। वापूजी हवापानी वदलनेके लिअे तीथल जा रहे थे। मैं स्टेशन तक अुनके माथ गया। आश्रममे कअी प्रकारके झगडे चलते थे, जिनके कारण मैं काफी दुखी हो गया था। मैंने सव वापूजीको सुनाया। वापूजीने भुसावल जाकर मुझे पत्र लिखा

चि० वलवन्तसिह,

तुम्हारे साथ ठीक वाते हुअी। तुम्हारे समाजके साथ रहनेका अिलम सीख लेना है। और मवके गुणोको देखो। दोपोको भूल जाओ। गायोंके वारेमे सेवायज्ञ आरभ किया होगा।

१०-५-'३७, भुसावल वापूके आशीर्वाद

मैं मेवाग्रामसे कुछ अूव गया था और वहासे जानेकी अिच्छा मनमें घर करने लगी थी। मैंने वापूजीको पत्र लिखा, जिसके जवावमे अुन्होने लिखा

चि० वलवन्तसिह,

तुम्हारा खत मिला। दूधके वारेमे मुन्नालालसे पूछता हू। तुम्हारी दलील सही तो लगती है।

मै न तुमको निकालूगा, न किसीको। अपने आप भाग जायेगे अुनको रोकूगा नही। और सबसे यथाशक्ति सेवा भी लूगा। यो तो कुछ न कुछ सव करते है, लेकिन मेरे हिसावसे वह काफी नही है। 'कभी नही हारना भले सारी जान जावे' यह भी मेरे जीवनका अेक मत्र है। सवको रहने दिया मैने, अव मै सवको रुखसत दे दू तो मै हारू और मूर्ख वनूगा। मूर्ख वनना आपत्ति नही है, अैसे तो मूर्ख हू पर यह आपत्ति होगी। अिसलिअे हारनेकी वात मै कैसे सहू?

आज किशोरलालभाअी और गोमतीवहन ववअी गये।

२६–५–'३७, तीथल वापूके आशीर्वाद

ब्रह्मचर्य और सन्तानोत्पत्ति

कुछ दिन पश्चात वापू तीथलसे लौट आये। मैने ब्रह्मचर्यके विपयमे वापूजीको अपने मनकी शका लिखी थी। अुत्तरमे वापूजीने लिखा

चि० वलवन्तसिह,

तुम्हारा पत्र वहुत ही अच्छा है। निर्मल है। और तुम्हारी सव शका अुचित है। भय भी स्थान पर है। और सावधानी स्वागत योग्य है।

१९३५ की प्रतिज्ञा लिखी गअी है अग्रेजीमे। गुजराती अथवा हिन्दी अनुवाद मैने पढा नही था। मूल अग्रेजीका अर्थ यह है वहनोंके कधे पर हाथ रखनेका मुहावरा मैने रखा है अुसका मै त्याग करता हू। अुस वख्त या आज भी मैने कुछ दोप महसूस नही किया, न करता हू। लेकिन लोकसग्रहकी दृष्टिसे अुसका त्याग किया। दिलमे कभी यह अर्थ नही था कि मै कभी किसी लडकीके कधे पर हाथ नही रखूगा। मुझे खयाल नही है कि सेगावमे कधे पर हाथ रखनेका मैने किस लडकीसे शुरु किया। लेकिन मुझे अितना खयाल है कि मुझको १९३५ की प्रतिज्ञाका पूरा स्मरण था और यह स्मरण होते हुअे मैने अुन लडकीके कधे पर हाथ रखा। हो सकता है कि अुन लडकीके आग्रहको मै रोक न सका अथवा मुझे अुनके कधेके टेकेकी दरकार थी। जैसा तो मै कैसे यह मानता हू कि दुर्वलताके कारण ही मैने सहारा लिया। और अगर अैसा ही था तो मै

प्रतिज्ञाको कायम रखनेके लिअे किसी भाअीका सहारा ले सकता था। लेकिन मेरी प्रतिज्ञाका अैसा व्यापक अर्थ था नही, मैंने कभी किया नही।

अब रही अमलकी बात। मैंने मेरे निर्णयका अमल शुरू किया अुसके बाद ही भाष्य चला। प्रथम भाष्यमे जो अमल तीन चार दिनके बाद करनेकी बात थी, अुसको मैंने दूसरे ही दिन शुरु कर दिया। जहा तक मेरी निर्विकारता अधूरी रहेगी वहा तक भाष्यको होना ही है। शायद वह आवश्यक भी है। सपूर्ण ज्ञान मौनसे ज्यादा प्रगट होता है, क्योकि भाषा कभी पूर्ण विचारको प्रकट नही कर सकती। अज्ञान विचारकी निरकुशताका सूचक है, अिसलिअे भाषारूपी वाहन चाहिये। अिस कारण अैसा अवश्य समझो कि जहा तक मुझे कुछ भी समझानेकी आवश्यकता रहती है वहा तक मेरेमें अपूर्णता भरी है अथवा विकार भी है। मेरा दावा बहुत छोटा है और हमेशा छोटा ही रहा है। विकारो पर पूर्ण अकुश पानेका अर्थात् हर स्थितिमे निर्विकार होनेका सतत प्रयत्न करता हू। काफी जाग्रत रहता हू। परिणाम औश्वरके हाथमें है। मैं निश्चित रहता हू। अगर अब कुछ चीज बाकी रह जाती है अथवा कुछ नयी चीज याद आती है तो मुझे अवश्य लिखो। तुम्हारा खत वापिस करता हू।

सेगाव, ११–६–'३८

बापूके आशीर्वाद

ब्रह्मचर्य और सन्तानोत्पत्ति दोनोमे मुझे विरोध-सा लगता था। मैंने बापूजीसे अिस बारेमे प्रश्न किया। अुत्तरमें बापूजीने लिखा

चि० बलवन्तसिंह,

ब्रह्मचर्यमे अेक वस्तु यह है कि वीर्य निष्फल न होना चाहिये। जब अुसकी अूर्ध्व गति होती है तब माना जाता है कि वह निष्फल नही जाता है। बात सही नही है। जो मनुष्य क्रोध करता है, वह वीर्यका दुर्व्यय करता है अथवा नाश करता है अिसलिअे वह निष्फल हुआ। अिसी कारण ब्रह्मचर्यका अितने अशमे नाश हुआ। अिसी तरह जो मनुष्य भोग-वृत्तिसे स्त्रीसग करता है अुसके वीर्यका नाश होता है। क्योकि वह निष्फल जाता है। जब मनुष्यको किसी प्रकारकी विषयवासना नही है, स्त्री-पुरुष दोनों सन्तान चाहते हैं और अिसी कारण मिलन होता है तब वीर्य सपूर्ण-तया सफल होता है। अिसलिअे अैसे दपति सपूर्णतया ब्रह्मचारी हैं। अैसे

दपति शायद करोडोमे अेक मिले। तब अेक ही वक्त अुनका मिलन होता है। अुसके सिवा जैसे भाअी-बहन रहते हैं अुसी तरह रहते हैं। मनसे, वाचासे, स्पर्शसे अथवा किसी तरह विषयतृप्ति नही करते हैं। अुसके, सतान अुत्पत्तिके, कारण बना हुआ मिलन किसी प्रकारसे भोगकी व्याख्यामे नही आता है। अितनेमे तुम्हारी शकाका समाधान होना चाहिये।

सेगाव, ८–७–'३८ बापूके आशीर्वाद

छोटी-छोटी बातोंमें बापूका अुपदेश

अेक रोज गोशालाके चरागाहमे गावके लोगोके जानवर चर रहे थे। अक्सर ये लोग आगापीछा देखकर अिस तरहसे घास चरा लेते थे। मैंने अेक लडकेको धमकाया और अुसके साथ थोडी धक्कामुक्की भी की। अुसने जाकर अपने बापसे शिकायत की। अुसका बाप पहलेसे ही मुझसे नाराज था, क्योकि जो जमीन हमने मालिकसे वाजिब दाम देकर चरानेके लिअे ली थी अुसको ये लोग बहुत कम दाम देकर चराते थे। लोगोको यह पसन्द नही था कि जमीनके मालिकको अधिक दाम मिले। अिसलिअे अुस आदमीने मेरे खिलाफ अेक तूफान-सा अुठाया। वह ४०–५० आदमी लेकर बापूके पास शिकायतके लिअे आया और बहुत ही बढा-चढाकर शिकायत की। मैंने जो घटना घटी थी वह सब बापूके सामने स्पष्टतया रख दी। बापूजीने अुन लोगोसे कहा कि 'किसी भी हालतमे बलवतसिहको तुम्हारे बच्चे पर हाथ नही अुठाना चाहिये था। अिस बार तो मै अुसे माफ करता हू, लेकिन अगली बार अैसी घटना होगी तो अुसे सेगाव छोडना पडेगा। क्योकि मै तो तुम्हारा सेवक बनकर यहा बैठा हू, स्वामी बनकर नही। आप लोग जिस रोज नापसन्द करेंगे अुसी रोज मै यहासे चला जाअूगा।' अिस घटनासे मुझे काफी दुःख पहुचा।

मैंने बापूजीको लिखा कि "अिस प्रकारकी घटना तो खेती और चरागाहके बारेमे घटती ही रहती है और लोगोको नुकसान करनेकी आदत पड रही है। मै भी अपने क्रोधको नही रोक सकता हू। खास तौरसे मेरे खिलाफ वातावरण तैयार करनेके लिअे लोगोको आपके पास लाया। अब मेरी भी अिच्छा सेगावमे रहनेकी नही है। मै कहीं बाहर जगलमे चला जाना चाहता हू।"

बापूजीने लिखा

चि० बलवंतसिंह,

अुपाय अेक ही है। कल्का कडुआ घूट पी जाना। क्रोधको मारनेका प्रयत्न करते ही रहना। गोसेवाके खातिर क्या नहीं हो सकता है? अेकातमे तो क्रोध हो नही सकता। जहा हो सकता है वही अुसे जीता जा सकता है ना? हम सेवक है। सेवक स्वामी पर हाथ कैसे अुठाये?

२९–७–'३८ बापूके आशीर्वाद

आश्रमकी खेतीकी व्यवस्था के हाथमे थी और गोशालाका काम मैं देखता था। मेरी गाये कभी कभी खेतमे घुसकर फसल चर जाया करती थी। को लगता था कि मैं जान-बूझकर फसल चरवा देता हू। जिससे हम दोनोंके बीच सघर्षके मौके आते रहते थे। जिस पर मैंने बापूजीको लिखा कि आप खेती और गोशाला दोनोंका काम के हाथमे दे दे तो यह हमेशाका झगडा मिट जाय। मेरे पत्रके अुत्तरमे बापूजीने लिखा .

चि० बलवंतसिंह,

सच्ची माता और झूठी माताकी बात सुनी हे न? झूठी माताने कहा, 'अच्छा, लडकेका टुकडा करो। अेक मुझे और दूसरा दूसरी दावे-दारनी है अुसे दे दो।' सच्चीने काजीसे कहा, 'अगर यहा तक नौवत आती हे तो मेरा दावा मैं खीच लेती हू, भले लडकेको यह औरत ले जाय। जिंदा तो रहेगा।' देखे, अब सच्चा गोसेवक कौन सिद्ध होता है। दोनो हो सकते हो या दोनो निकम्मे भी साबित हो सकते हो या अेक सच्चा, अेक झूठा। मेरे नजदीक तीन प्रश्न है। 'कभी नही हारना भले सारी जान जावे।'

२०–९–'३८ बापूके आशीर्वाद

ये पत्र मैंने जिसलिअे दिये है कि पाठकोको पता चले कि बापूजी छोटी छोटी बातोंमे किस तरहसे अुपदेश देते थे और हमारे जीवनको आगे बढानेकी कोशिश करते थे। अुनके पास अेक बार जो ठहर गया अुसमें अगर कोअी नैतिक दोष नही है या अगर कोअी नैतिक दोष अुत्पन्न हो जाय और अुसे स्पष्ट कबूल करके सुधारनेकी वह कोशिश करे तो मनुष्यके अूपरी स्वभावके कारण बापूजी अुसका कभी त्याग नही करते थे। जिस प्रकार अुन्होंने बडे-बडे नेताओंसे लेकर छोटे छोटे कार्यकर्ताओंको सहन किया और अुनको आगे

बढाया। आज अिसीलिअे तो छोटे और बडे सब अुनके अभावको महसूस करके दिल ही दिल रोते है, क्योकि अुनके जैसा सबके जहरको पीनेवाला शिव-रूप पिता मुझे कोअी नजर नही आता है। अुन्होने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूपसे हिन्दुस्तानके अनेक स्त्री-पुरुषोके जीवनमे अितनी गहराअीसे प्रवेश किया था जिसकी अुपमा देना कठिन है। हम शरीरसे अुनके पास थे अिसलिअे कुछ लोग जानते है और हम भी बता सकते है। लेकिन अनेक अैसे लोग है जिन्होने शरीरसे अुनका दर्शन भी नही किया था, फिर भी जो अुनके बहुत नजदीक थे। हम लोग किसी निमित्तसे भले शरीरसे अुनके पास पहुच गये थे, लेकिन दूर रहनेवाले कितने ही लोग अुनके साथ बडा गहरा सबध रखते थे। जब कभी मुझे अैसे लोगोके दर्शन हो जाते है तो मेरा सिर अुनके चरणोमे झुक जाता है। सचमुच ही अीश्वर अपना काम अजीब ढगसे करता है।

अन्तमे स्थिति यहा तक पहुची कि मुझे गोशालाका काम छोड देना पडा। चार्ज देते समय गोशालाका हिसाब बनाकर मैने बापूजीको भेजा। बापूजीने लिखा

चि० बलवन्तसिह,

तुम्हारा खत वापिस करता हू। अक्षर पहलेसे ठीक तो है परतु सुधारके लिअे काफी जगह है। ठूस ठूसकर लिखना नही चाहिये। बाये बाजू पर हमेशा जगह होनी चाहिये। शब्द शब्दके बीचमे भी जगह रखी जाय। कलमकी नोक पतली होनी चाहिये। और यह सब सुधार भी गो-माताके निमित्त करना है, यह सकल्प करना। सकल्पकी महिमा तो जानते हो न?

जो हिसाब तुमने भेजा है वह तो अच्छा है ही। तुम्हारी प्रामाणिकताके बारेमे, तुम्हारी निःस्वार्थ बुद्धिके बारेमे कभी शका थी ही नही।

शातिमे रहते हो वह अच्छा ही है। शरीर मजबूत कर लो। हिन्दी ज्ञानमें वृद्धि करो।

बारडोली, १८-१-'३९ बापूके आशीर्वाद

अिस प्रकार बापूजी छोटीसे छोटी बातका सूक्ष्मतासे ध्यान रखते थे और हमें आगे बढनेकी प्रेरणा देते थे।

राजकोट-प्रकरण और बाका पत्र

अिसी समय राजकोटका प्रकरण शुरू हुआ। बापूजी अुसको निबटानेका प्रयत्न कर रहे थे। वहा काफी लोगोंको पकड लिया गया था। अुस समय श्री विजयलक्ष्मी पडित भी सेवाग्राम आयी थीं। अुन्होंने बापूजीसे कहा कि राजकोटकी लडाअीमें शामिल होना तो मेरा भी धर्म है, क्योंकि राजकोट हमारा पुराना घर है। प० रणजीतके पिता राजकोटके ही अेक प्रतिष्ठित नागरिक थे और अिस दृष्टिसे वे राजकोटको अपना स्थान मानती थीं।

बापूजीने कहा, "तुम्हारी दलील तो सही है, लेकिन अभी तुमको नही भेजूगा। पहले बाको भेजूगा और फिर मैं जाअूगा। हो सकता है तुम्हारी भी जरूरत पडे।"

बापूजीने बाको कुमारी मणिबहन पटेलके साथ राजकोट भेजा। बा और मणिबहनको गिरफ्तार करके जगलमें अेक सरकारी बगलेमें रखा गया। बा मणिबहनसे बापूजीको और आश्रमके लोगोंको पत्र लिखवाया करती थीं। मैंने भी बाको अेक पत्र लिखा। अुसके जवाबमें अुन्होंने जो पत्र लिखा अुससे अुनकी विशाल दृष्टिका दर्शन होता है कि वे आश्रमकी प्रवृत्तियों और व्यक्तियोंसे कितना गहरा सबध रखती थीं। मेरे सारे जीवनमें बाका लिखा सिर्फ अेक ही पत्र मेरे पास है, जिसका मैंने बडी श्रद्धासे सग्रह किया है। मूल पत्र गुजरातीमें है। अुसका हिन्दी अनुवाद अिस प्रकार है

मार्फत कौंसिलके प्रथम सदस्य,
राजकोट,
२७–२–'३९

भाअी बलवतसिंह,

तुम्हारा पत्र कल मिला। पढकर आनद हुआ। तुम तो वहा आनदमें हो। कुछ न कुछ काम तो चलता ही होगा। तुम्हारा गायों पर बडा प्रेम है, कभी अीश्वर फल देगा ही।

विजया तो ससुराल गअी। भसालीभाअी वहा हैं, मुन्नालाल है। सब आनदमें रहना।

मणिबहनके पत्र वहा रोज आते हैं। तुम अुन्हें पढते ही होगे। मैं अुनसे लिखवाती हू। राजकुमारीको अग्रेजीमें लिखती है। मि० कैलनबेक वहा बीमार पड गये। दो तीन दिन तुम्हें खूब तकलीफमें डाल दिया। परतु अब ठीक हो गये हैं। दो चार दिनमें निर्बलता भी चली जायगी।

मैं आअूगी तो मुझे नाणावटीके बिना बहुत सूना लगेगा। अब गावमें सवेरे पाठशाला देखने कौन जाता है? किसीको सौंपा तो होगा। देखें, काकासाहबके पास अुनकी कैसी तबीयत रहती है। काकासाहबको खूब प्रवास करना पडता है। रातको तीन चार बजे अुठने व लिखानेका काम काकासाहबके पास खतम नही होता। आदमी बिलकुल थक नही जाता तब तक लिखाया ही करते हैं।

आज तो बापूजी यहा आ रहे हैं। देखें, क्या होता है। कल शामको नारणदास मिलने आये तब खबर मिली कि बापूजी आज आ रहे हैं।

तुम लोगोंका प्रेम मुझ पर बहुत है। अीश्वर अिसे अैसाका अैसा ही रखे तो बस है।

हम सब यहा मजेमें हैं।

बाके आशीर्वाद

नाणावटीजी बाको रामायण पढाते थे और गावके स्कूल वगैराका निरीक्षण करते थे। बादमें काकासाहबने अपने कामके लिअे अुन्हें ले लिया था। बाका अुनके अूपर बहुत प्रेम था।

अुस समय मि० कैलनबेक सेवाग्राममें थे। अुनकी अुम्र साठसे अूपर थी, लेकिन वे अेक नौजवानकी तरह आश्रमके सब कामोंमें हिस्सा लेते थे। अुनको बगीचेका बडा शौक था, खास तौरसे फलके पेडोंकी कलम आदि करनेका। कैंची लेकर वे घंटों बगीचेमें खर्च करते और दक्षिण अफ्रीकाके अपने अनेक अनुभव सुनाते। मैं अंग्रेजी नहीं जानता था और वे हिन्दी नहीं जानते थे, अिसलिअे हमारी सब बातें अिशारोंसे होती थीं। बापूजीके प्रति अुनकी श्रद्धा अुनकी हरअेक हलचल, बोलचाल और अुदार भावोंसे स्पष्ट झलकती थी। बडे ही प्रेमी और अुदार पुरुष थे। वे बीमार पडे तो बापूजीने अुनकी बडी सेवा की। यह सेवा खास तौरसे लीलावती बहनको सौंपी गअी थी। अुनकी सेवासे वे बहुत संतुष्ट हुअे थे। अेक तरहसे आश्रम-जीवनमें वे घुल-मिल गये थे। आश्रमसे वे दक्षिण अफ्रीका लौट गये। वहा जाकर कुछ समयके बाद फिर बीमार पडे और अिस दुनियासे चले गये।

लाहौर जानेकी तैयारी

पू० बापूजीने ता० १८–१–'३९ के पत्रमें संकल्पकी महिमाकी ओर संकेत किया था। शायद अुस समय तो मैंने अुनको अितना नहीं समझा था,

लेकिन आज जब अुनका नीचेका पत्र मेरे सामने आता है तो पता चलता है कि अुन्होने मेरे लिअे क्या सकल्प किया था। बीचमे मै गोसेवासे करीब करीब अलग हो गया था और मनमें यह भी तय कर लिया था कि अब अिसमे नही पडूगा। और शायद अिसका प्रसग भी नही आता। लेकिन अेक अकल्पित घटनासे मै आज यहा सीकरमे गोमाताकी सेवाका ही सकल्प लेकर बैठा हू। मै नही जानता कि गोमाताकी मुझसे कितनी सेवा बन सकेगी, लेकिन बापूके अिस वचन पर विश्वास करके धीरजसे आगे बढनेका प्रयत्न कर रहा हू। वह वचन यहा देता हू

चि० बलवतसिह,

वडे शब्दोंके बीच ज्यादा अतर होना चाहिये। कैसी भी सुधारणा काफी हुअी है। अैसा ही चलता रहेगा तो अच्छा ही होगा। मेरी चली तो तुम सच्चे और कुशल गोसेवक होनेवाले हो।

यह खत यही बारडोली होकर आज आया।

३–३–’३९ बापूके आशीर्वाद

सचमुच मै यह अनुभव कर रहा हू कि मुझमे बापूके अिन शब्दोको पूरा करनेकी शक्ति न होते हुअे भी मेरा दिल आज गोसेवाके विचारोसे ओतप्रोत है। अुसमे कुशलता कितनी आयी है यह तो मेरे कामसे दूसरे लोग ही आक सकते है। लेकिन मेरा दिल गोसेवाकी बडी बडी अुडाने भरता है। कभी कभी तो मनमें यह विचार आता है कि मै मनुष्य-शरीरको छोडकर गो-शरीर ही क्यो न धारण कर लू। या किस तरहसे सब लोगोंके अदर पैठकर गोमाताकी सेवाके भाव भर दू। सचमुच ही यह बापूके अुस शुभ सकल्पका ही फल है जो अुन्होंने मेरे लिअे किया था। आशीर्वादकी शक्तिमे मेरा विश्वास बहुत बढ गया है।

अुसी समय बापूजी मुझे पजाबमे की डेरीमे अनुभवके लिअे भेजना चाहते थे और अुनके साथ लिखा-पढी कर रहे थे कि मै कब आअू ? अुधर श्री बालकोबाजी स्वास्थ्य-लाभके लिअे पचगनी गये थे। अुनके लिअे अेक सेवककी जरूरत थी। अिस बारेमे पत्र लिखकर मैंने बापूजीसे पूछा।

बापूजीका जवाब आया

चि० बलवतसिंह,

तुम्हारा खत मिला। डेरीके बारेमे सम्मति चार दिन पहले आ गअी है। मैंने तो पचगनी जानेका तार बनाकर प्यारेलालको दिया था, लेकिन वह तार भेजा ही नही गया, अैसा आज ही जाना। क्या करू? जैसा है अैसा हमारा कुटुम्ब है। अिस अव्यवस्थाके लिअे मैं निजी जिम्मेदारी प्रतिक्षण महसूस करता हू। लेकिन मेरा यह दोष अब निकल नही सकेगा।

अब तुमको पचगनी नही भेजूगा। लाहौर जानेकी तैयारी करो। ने सब प्रबध करनेका कबूल कर लिया है। कब जाओगे? मुझे तारीख भेजो तो मैं खबर भेज दूगा।

बम्बअी, २६-६-'३९ बापूके आशीर्वाद

१७

मेरे गोसेवा-सम्बन्धी प्रवास

मुझसे बापूजीकी आशायें

मैंने तारीख २२-१२-'३८ को गोशालाका चार्ज श्री पारनेरकरजीको सौंप दिया। गोशाला छोडते समय मुझे और दूसरे काम करनेवालोको खूब दुख हुआ। कुछ लोग रोने तक लगे। लेकिन दिल कडा करके मैंने विदा ली। दूसरे दिन सवेरे घूमते समय बापूजीने कहा, "देखो, मैंने पारनेरकरसे साफ कह दिया है कि बलवतसिंह सब लेनेको तैयार हैं और अुसके हाथमे गोशालाका न तो आज तक कुछ बिगडा है, न आगे बिगडनेका अन्देशा है। अगर तुम अपने अूपर भरोसा रखते हो तो जो निर्णय हुआ है अुसे मैं बदलना नही चाहता। अैसा समझो कि अब नये सिरेसे सब काम शुरू हुआ है, तब तुमको दिया गया है। अिसमे तुम्हारी परीक्षा हो जावेगी। यह सब मैंने पारनेरकरसे कहा। तुमसे यह कहना है कि जब तक तुम्हारे हाथमें गोसेवाका काम सीधा न आवे तब तक तुम बाहर जाकर अपना गोसेवाका ज्ञान बढाओ। गायका शास्त्र तो हमारी भाषामें है ही नही, यह दुखकी बात है। अब तक हम अैसे आदमी

निर्माण नही कर सके है जो कुछ लिख सके। तुमको मै लाहौर भेजनेकी बात सोच रहा हू। मैने राजकुमारीको लम्बा पत्र लिखा है। वह . को लिखेगी। अुनका जवाब आने पर तुमको जाना होगा।"

मैने पूछा, आप मुझसे क्या आशा रखते है और मेरा किस प्रकारसे अुपयोग करना चाहते है? बापूजीने कहा, "जितना तुम्हारा अनुभवज्ञान है अगर अुसमे शास्त्रीयता भी आ जाय तो अच्छा हो। प्रवासमे तुम कितना ज्ञान पा सकोगे, अिसके अूपर आधार है। अगर तुम्हारा ज्ञान अितना हो जाय कि किसी भी जानकार आदमीके सामने गोसेवाकी बात अिस प्रकारसे रख सको जो अुसके गले अुतर जाय और मै जहा चाहू वहा तुम्हे भेज सकू और तुम सबके साथ मिलजुल कर काम कर सको तो मेरा काम निबट जायगा। मै देख रहा हू कि तुम्हारे स्वभावमे परिवर्तन तो काफी हुआ है, लेकिन अभी और भी करना होगा। मै तो तुमसे अखिल भारतीय विशेषज्ञकी हैसियतसे सारे हिन्दुस्तानकी गोसेवा करा लेना चाहता हू। मेरे पास पैसे तो काफी पडे है। परन्तु अुनका अुपयोग कैसे करू? मेरे पास अेक भी आदमी नही। दिल्लीकी गोशाला (कैटल ब्रीडिंग फार्म) के लिअे घनश्यामदासने कहा था कि अगर आप कहे तो अुसमे दो-तीन लाख रुपये लगानेको तैयार हू। लेकिन आदमी आपको ही देना होगा। तो मै आदमी कहासे दू? जब पारनेरकर धुलियामे काम करता था तब अुन्होने पारनेरकरकी माग की थी। तब मै देनेको तैयार नही था। अब तो वह मेरे ही पास रहना चाहता है और मुझे भी यही पसद है। यो तो हिन्दुस्तानमे गोसेवा विशारद बहुत पडे है, लेकिन अुनसे मेरा काम नही चलेगा। मेरा काम तो वही कर सकता है, जिसने मेरी सब बातोको अच्छी तरह समझा है। गुजरातमे भी गोसेवाका काम अधूरा ही पडा है। अिसीलिअे मैने तुमसे कहा था कि भले खाली बैठना पडे लेकिन यही पडे रहो। तो मै कुछ न कुछ काम ले ही लूगा। अगर आदमीमे तेजोबल है तो दूसरी चीजे तो आ ही जाती है।" अिस सिल-सिलेमे बापूजी बहुतसे लोगोके दृष्टात दे गये जिनको अुन्होने अपने कामके लिअे अयोग्य पाया था। फिर मुझसे बोले कि तुमको अेक और भी परीक्षा देनी होगी। तुम्हारा और पारनेरकरका जो अेक-दूसरे पर अविश्वास है अुसे मिटाना होगा। आज तुम अुसके काममे बिलकुल विश्वास नही करते और न वह तुम्हारेमें। जब तुम भी शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त कर लोगे तो

वह भी समझ जायगा और तुम भी अुसके कामकी कीमत समझ सकोगे। मैंने कहा, "आपकी वात विलकुल ठीक है।" वापूजीने कहा कि तुमको थोडी अग्रेजी भी सीखनी होगी। मैंने कहा, "मुझे स्वय अग्रेजी सीखनेकी अिच्छा नही है, लेकिन आप चाहेगे तो सीखना कठिन न होगा।" वापूजीने कहा, यह तो मै जानता हू।

दूसरे दिन फिर घूमते समय मैंने वापूजीसे कहा, आपकी वात पर मैंने खूब विचार किया हैं। मुझे अैसा नही लगा कि मै पारनेरकरजीके प्रति मनमे अीर्ष्या या द्वेष रखता हू या अुनके काममे वाधक वना हू। यह वात सच है कि मुझे अुनके काममे विश्वास नही हैं। वापूजी वोले, "यह तो मै जानता हू। लेकिन मुझे अविश्वास नही है। मै यह भी जानता हू कि अुसके पास तुम्हारा जितना अनुभवज्ञान और श्रम करनेकी शक्ति नही हैं। लेकिन अुसके पास शास्त्रीय ज्ञान है जो तुम्हारे पास नही हैं। हो सकता हें तुम्हारी वात ही ठीक हो। क्योकि मै तो अिस विषयमें कुछ भी नही जानता। मैंने वीरावाला*के साथ जो प्रयोग किया है वह करने जैसा है, क्योकि मै अहिंसाका जो अर्थ करता हू अुसके अनुसार साप भी मेरे हाथमें खेलना चाहिये। वह मेरे स्पर्शमात्रसे यह समझ जायगा कि मेरा अिरादा अुसको चोट पहुचानेका नही है। परन्तु अुसी सापको छूनेकी मै दूसरेको अिजाजत नही दूगा। अहिंसाका यह अर्थ नही हैं कि हिंसक समान रूपसे सवके लिअे अहिंसक वन जाय। परन्तु जिसने अुसके साथ अहिंसाका वरताव किया हो अुसके लिअे तो वह अवश्य अहिंसक वन जायगा। वीरावाला साधु वन जायगा अैसा नही है। लेकिन वह मेरे साथ जरूर सीधा चलेगा। मेरा मतलव यह नही हैं कि दुष्टकी दुष्टताको नही देखना। मेरे जीवनमे अनुचित सहिष्णुताने प्रवेश करके मेरे कामको खूब नुकसान पहुचाया है। अली भाअियोंके कडवेसे कडवे भाषणोका मैंने कुछ भी जवाव नही दिया। अुससे आज मुझे नुकसान हो रहा है। आज मै कडवेसे कडवे जवाव देता हू। अगर तुम्हारी वात सच होगी तो मुझे भी पता चल जायगा। मेरा काम अिसी प्रकार चलता है। अगर तुम्हारे दिलमें अैसा लगे कि वापूने कितना अन्याय किया तो मुझे छोडकर भाग सकते हो। दुनियामें तुम्हारे लिअे कहा जगह नही है? लेकिन अगर तुमने

---

* वापूजीके राजकोटके अुपवासके समय राजकोट राज्यके दीवान।

यह समझकर धीरज रखा है कि बापू जो कर रहे है कुछ सोच कर ही कर रहे हैं तो मेरे पास बहुतसा काम पड़ा है। हिन्दी पढ़ना तो है ही, अुर्दू भी पढ़ना ही है और अंग्रेजी भी पढ़ना है।"

तारीख २९–४–'३९ से ६–५–'३९ तक वृन्दावन (चम्पारन, बिहार) में गांधी-सेवा-संघकी सभा थी, अुसमें मैं गया। वहां भी बापूजीसे कुछ न कुछ चर्चा होती रही। अेक रोज बापूजीने कहा, "मैं तुमसे बड़ी आशा लगाये बैठा हूं। गोसेवाका काम बड़ा कठिन है। अुसके लिअे बड़े शुद्ध मनुष्य चाहिये, धीरज चाहिये, सहनशीलता चाहिये। अुसका पूरा पूरा ज्ञान चाहिये। यह सब तुममें हो अैसी आशा लगाये बैठा हूं। मैं देख रहा हूं कि ये सब गुण तुममें बढ़ रहे हैं, लेकिन अभी बहुत कुछ करना है। मेरे सामने गोसेवाका पहाड़ पड़ा है, लेकिन आदमी नहीं हैं। तुम जहांसे भी गोसेवाका ज्ञान प्राप्त कर सकते हो वहां हिन्दुस्तानमें कहीं भी जानेकी और जितना भी खर्च करना हो वह करनेकी तुमको छूट है।" मैंने कहा, यहांसे सेवाग्राम लौटते समय अिलाहाबाद, दिल्ली, हिसार और दयालबागकी गोशालायें देखते जानेका मेरा विचार है। बापूजीने सबके नाम पत्र लिख दिये और मैं सब गोशालायें देखता हुआ सेवाग्राम पहुंचा।

भाअी गजवरजी

जब मैं आगरेमें दयालबागकी गोशाला देखने गया तो वहां भाअी गजवरजीसे परिचय हुआ। वे बड़े अुत्साही और मिलनसार कार्यकर्ता थे और दयालबागके चर्मालयके संचालक थे। अुनको लंका जाना था। बीचमें वर्धा पड़ता था। अुन्होंने बापूजीसे मिलनेकी अिच्छा प्रकट की और मुझसे परिचयपत्र चाहा। मैंने अेक छोटासा पुरजा बापूजीके नाम लिख दिया। वे सेवाग्राम गये और बापूजीसे मिले। वहांसे अुनका पत्र आया

भाअी बलवन्तसिंहजी,

मैं सेवाग्राम पहुंचा और महात्माजीको आपका पत्र दिया। अुन्होंने बड़े प्रेमसे मुझसे बात की। अपने पास बिठाकर ही खाना खिलाया और रातको अपने साथ ही सुलाया। मैं तो अुनके प्रेमसे पागल-सा बन गया। मैं सिर्फ अुनका दर्शन और लंकाके लिअे आशीर्वाद ही चाहता था। लेकिन महात्माजीने तो मुझे प्रेमसे अितना अपना लिया कि मुझे आश्रम अपना घर जैसा और महात्माजी अपने पिता जैसे ही महसूस

हुअे। आप लोग धन्य है, जो अैसे महापुरुषके चरणोमे रहनेका सौभाग्य आपको प्राप्त हुआ है। मुझे भूलना नही।"

यह पत्र पढकर मेरे आनन्दकी सीमा न रही। मैं सोचने लगा कि बापूजी हमारा होसला बढानेके लिअे हमारी बातकी कितनी कीमत करते है। भाअी गजवरजीको अैसा आशीर्वाद मिला कि अभी तक वे लकामे है और वहाकी सरकार अुनके कामसे बहुत खुश हैं। अुनको बडा पद मिला है और भरपूर तनख्वाह भी मिलती है।

लाहौरकी गोशालाका अनुभव

अिसी बीच जुलाअीमे लाहौरके प्रवासका कार्यक्रम बना। बापूजीने मुझे लाहौर जानेका आदेश दिया। बापूजी यात्रामे थे। मैं दिल्ली जाकर अुनसे मिला। अुन्होने कहा कि ९ तारीखको तुम्हे लाहौर पहुचना है। वहा तुम्हारी सब व्यवस्था हो जायगी। तुमको सब प्रकारका ज्ञान देनेकी कोशिश करेगे। मैंने पूछा कि मुझे वहा कितने दिन रहना होगा। बापूजीने कहा कि मैंने छ मासका सोचा है, लेकिन तुमको लगे कि अधिक समय रहना चाहिये तो दो-चार वर्ष भी रह सकते हो। फिर वहा किस तरह रहना होगा, अिस विषय पर अेक लम्बा भाषण सुना दिया। मैंने स्टेशन पर बापूजीको प्रणाम किया। वे बोले, देखो हारना नही। मैंने अुत्तर दिया, बापूजी, हारनेसे तो मेरी लाज ही चली जावेगी। फिर बापूजीने कहा, "जाओ और गोमाताका अच्छा ज्ञान प्राप्त करके जल्दी सेवाग्राम पहुचो। वहासे सब हाल मुझे लिखते रहना।"

९ जुलाअीको मैं लाहौर स्टेशन पर अुतरा। भी अुसी दिन लाहौर पहुचे थे। अुन्होने स्टेशन पर मुझे तलाश किया, परन्तु हम लोग मिल न सके। क्योंकि वे किसी जटाधारी पुरुषकी खोजमे थे और मेरा सिर घुटा हुआ था। आखिरकार मैं जैसे-तैसे अुनकी गोशालामे जा पहुचा। रास्तेमे मुझे मिले भी थे, लेकिन अेक-दूसरेकी पहचान न होनेसे वह मिलना निरर्थक रहा। गोशाला पर जाकर मैंने देखा कि वहा न तो मेरे ठहरनेका प्रबन्ध था और न खाने-पीनेका। कठिनाअीसे स्नानादि किया। खाना बनानेके साधन बडी कठिनाअीसे शामको मिले। कुछ समय बाद आये तो अुनसे मेरी बातें हुअी। भोजनके प्रबन्धके बारेमे अुन्होने अपनी असमर्थता प्रकट की। अेक खराब-सी जगहमे मैंने जैसे तैसे खाना बनाया।

जब मुझे ठहरनेके लिअे कमरा बताया गया तब तो मै दग रह गया। क्योकि कमरेमे पानी भरा था और आसपास कीचड था। मैने अुस कमरेमे ठहरनेसे अिनकार कर दिया। सारी गोशाला ही कीचडशाला बनी हुअी थी। सब जानवर कीचडमे खडे थे। सिर्फ दूध निकालनेकी जगह पक्की थी और वहा कीचड नही था। गोशालामे अठारह भैंसे भी थी। मेरे आश्चर्यका पार नही रहा, जब मैने देखा कि दूध निकालनेवाले ग्वाले दूध निकालते समय थनोमे साफ पानी या चिकनाअी न लगाकर थूकका अुपयोग करते है। अिस गन्दी प्रथाकी कल्पना मुझे स्वप्नमे भी नही थी। रातके समय जब मैने फूका-प्रथाका शर्मनाक दृश्य देखा तो दु खसे मेरा मगज फटने लगा। अेक भैंस कुछ गडबड कर रही थी। अुसके योनिद्वारमे अेक बासकी पोली नली डालकर अुसमे जोरसे फूक मारी गअी। थोडी ही देरमे भैंस लाचार बनकर खडी रह गअी और अुसने सारा दूध थनोमे अुतार दिया। बापूजीने यही प्रथा कलकत्तेमे देखी थी और अुससे दु खी होकर दूधका त्याग किया था। मैने फूका-प्रथाके विषयमे पढा तो था, लेकिन समझमे नही आया था। अब आखो देखकर मै हैरान हो गया।

अभी मेरे नसीबमे अेक और भी दु खद घटना देखनी शेष थी। जब मै रातको सोनेका प्रयत्न कर रहा था तो अेक पाडेकी करुणाजनक आवाज मेरे कान पर पडी। मै अुठकर अुसके पास गया तो देखा कि अेक नवजात पाडा भूखसे तडप रहा है। रातमे अुसे खिलानेके लिअे मेरे पास कुछ भी नही था। सुबह लोगोसे मालूम हुआ कि वहा यह प्रथा थी कि गाय या भैंसके ब्याते ही अुसका बच्चा अुससे अलग कर लिया जाता था। गायकी बाछीको और भैंसकी पाडीको तो दूध पिलाकर पाल लेते थे, लेकिन गायके बछडेको किसी पालनेवालेको मुफ्तमे दे देते थे। वह बिचारा बैल बनानेके लोभसे अुसे कुछ न कुछ दूध, छाछ या पानीमे घुला आटा पिलाकर बचानेकी कोशिश करता था। तो भी आधेमे ज्यादा बछडे मर जाते थे। भैंसके पाडेको तो सीधी मौतकी सजा दी जाती थी। पैदा होते ही अुसे गोशालाके बाहर फेंक दिया जाता था, जहा वह दो-तीन दिनमे तडप-तडपकर मर जाता था। मैने गोशालाके मैनेजरसे अुसे दूध पिलानेकी बात की तो अुसने आनाकानी की। तब मैने कहा, अुसे मेरे भागका दूध पिला दो, क्योकि अिस प्रकारका हत्याकाड मुझसे देखा नही जायगा। अिस पर वह बिचारा धर्मसकटमे पड गया। अन्तमे अुसने दूध पिलाना कबूल

किया । ग्वाले कहने लगे कि आत्माजी (महात्मा कहनेकी कोशिशमें वे आत्माजी कहते थे) यहां तो यही पाप चलता है। यह पाडा तो आपकी कृपासे बच जाय तो खुदाका शुक्र मानना चाहिये । यह सब देखकर मैं विचारमें पड गया कि 'आये थे हरिभजनको ओटन लगे कपास'। बापूजी समझेंगे कि मैं गोसेनाका विशारद बन रहा हूं और यहां मेरी गांठकी पूंजी भी जानेका खतरा है । मैंने बापूजीको सारा हाल विस्तारसे लिखा और पूछा कि मैं यहां सीखूं या अिनको सिखाअूं? जवाबमें बापूजीने लिखा

चि० बलवंतसिंह,

तुम्हारा खत बहुत अच्छा है। सब साफ साफ लिखा है। अैसा ही चाहिये । कुछ तो सीखोगे लेकिन काफी सिखाओगे । थोडे ही दिनोंमें तुम्हारा मार्ग साफ हो जायगा । का मुझ पर खत आज ही आया है । वे अपने बडे फार्म पर भी तुमको भेजना चाहते हैं। के हिसाबसे तुमको करीब करीब २॥ महीने लगेंगे। देखें क्या होता है।

गायका दूध अलग रखकर अुसमें से मक्खन निकाल लेना। दही बनाकर शीघ्र ही निकालोगे। धैर्यसे सब कुछ ठीक हो जायगा।

तुम्हारा खत राजकुमारीको भेजूंगा। वहांसे आश्रम जायगा और वहांसे सुरेन्द्रको। को तो कुछ भी नहीं लिखूंगा।

बा और प्यारेलाल और सुशीला वहांसे शुक्रवारकी गाडीमें रवाना होंगे। यह खत अुसके बाद मिलेगा।

अेबटाबाद, १२-७-'३९ बापूके आशीर्वाद

अिस विषयको लेकर से मेरी चर्चा और पत्रव्यवहार काफी लम्बा चला । आखिरकार अुन्होंने सरलतासे स्वीकार किया कि भाअी हम तो व्यापारी आदमी हैं। सब कुछ नफा-टोटा देखकर करना होता है। अेक बच्चेको पालनेके लिअे अेक सौ पचास रुपया खर्च होता है। वह कहांसे आवे? भैंसे मुझे भी पसंद नहीं हैं। लेकिन ग्राहकोंको खुश रखनेके लिअे रखनी पडती हैं। धीरे धीरे अुन्हें निकालनेका प्रयत्न करना है।

मॉडल टाअुनमें मेरी प्रवृत्ति

मैं कुछ न कुछ सीखनेका प्रयत्न तो करता ही था। लेकिन मेरी चरखेकी बात मॉडल टाअुनमें फैल गअी। गोशालाका प्रधान कर्मचारी मॉडल टाअुनमें रहता था। अुसने कुछ लोगोंसे मेरा परिचय कराया।

अिसलिअे चरखा चलाना और धुनना सिखाना भी मेरा अेक काम हो गया। श्री चुन्नीलालजी कपूर सी० आअी० डी० पुलिसके सुपरिण्टेण्डेण्ट थे। अुनकी लडकी कान्ताकुमारी मेरी प्रचारिका बनी। वह खुद कातना-धुनना सीखती और दूसरी लडकियोंको भी बुलाकर लाती या अुनके घरों पर मुझे ले जाती। अिस प्रकारसे मेरा परिचय बढता ही गया।

अेक रोज वहाकी भगी बस्तीमे गया, तो वहाका हाल देखकर मुझे अत्यत दुख हुआ। अेक छोटेसे कमरेमे आठ आदमी अेकके अूपर अेक तीन खाटे बिछाकर रहते थे। न वहा पानीका प्रबध था, न रोशनीका। घरोंके सामने कीचड ही कीचड था। मॉडल टाअुनके सस्थापक दीवान-चन्दजी तथा पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट श्री चुन्नीलालजीसे मैंने हरिजनोंकी करुण कथा कह सुनाअी। दोनोंने जाकर हरिजन बस्ती देखी तथा अुसी दिनसे अुसमें सुधार करवानेकी खटपटमे लग गये। और भी कअी भाअी-बहनोंको मै वहा ले गया। सब लोगोंने कमेटी पर जोर डालकर भगियोंको सुविधा दिलानेके लिअे कमर कस ली। रात्रि-पाठशाला चलानेका भी निश्चय हुआ। अुसमे चरखा चलवानेके लिअे भी विचार किया गया। और चरखोंके लिअे कुछ चन्दा भी हुआ। रामप्यारी बहनने बापूजीके पास रहनेकी अिच्छा बताअी। मैंने अुनको आशादेवी और बापूजीसे पत्रव्यवहार करनेकी राय दी। आजकल वह बहन माता रामेश्वरी नेहरूके साथ काम कर रही हैं। अेक नौजवान लडका सूरजप्रकाश भी सेवा करनेको तैयार हुआ। बहन कान्ताकुमारी, सुशीलाकुमारी, विमलाकुमारी, अुषाकुमारी और महेन्द्रकौरने कातने, धुनने और हरिजन बहनोंकी सेवामे दिलचस्पी बतायी। मॉडल टाअुनमे गाधी-जयती पर खादी प्रदर्शनी की गअी तथा खादी बेचने और हरिजन फड जमा करनेका प्रोग्राम बना। डॉ० गोपीचन्दजी भार्गवसे मिलकर खादी प्रदर्शनीका प्रबध कराया। हरिजन-फडमे ३०० रुपये मिले। जयतीके दिन काफी अच्छी सभा हुअी। मॉडल टाअुनके जीवनमें अैसा यह पहला ही प्रोग्राम था। लोगोंमे बडा अुत्साह था। लोगोंने मुझे वहा दो-तीन मास रहनेको कहा, लेकिन मेरा रुकना सभव नही था।

शुद्ध दूधकी व्याख्या

अेक दिन अेक रायबहादुर साहबने मुझे भोजनके लिअे प्रेमभरा आग्रह किया। मैंने कहा कि मेरे भोजनमे बडी खटपट है। आप अिसका विचार छोड दीजिये। जब अुन्होंने पूछा तो मैंने बताया कि अबली भाजी और

गायका घी-दूध चाहिये। वे बोले यह तो सीधी-सी बात है। रोज ग्वाला मेरे घर गाय लाकर दूध निकाल जाता है और भाजी अुबालना तो अेक मामूली-सी बात है। मैंने अुनके घर भोजन करना कबूल किया। दूसरे दिन सवेरे जब मैं घूमने गया तो रायबहादुर साहबके दरवाजे पर अेक ग्वाला दुबली-सी गाय लेकर आया। मैंने सहज ही पूछा कि गाय कहा ले जा रहे हो। वह बोला कि रायबहादुर साहबके यहा दूध निकाल कर देना है। गायके हाडपिंजर देखकर मेरी आखे खुल गअी। अैसी गायके दूधको लोग शुद्ध भले कहे, लेकिन अमलमे तो वह गायका खून ही है। मेरे मनमे शुद्ध दूधकी व्याख्या स्पष्ट हो गअी। जिस गायको पेटभर चारा, जरूरी दाना, स्वच्छ पानी, रहनेकी स्वच्छ जगह तथा प्रेमी पालक मिला हो और जिसके बच्चेकी तन्दुरुस्ती अच्छी हो, जिसे किसी प्रकारका रोग न हो और जिसे देखकर मन प्रसन्न होता हो अुसी गायका दूध शुद्ध माना जाना चाहिये। कैसी भी गायके थनोंमे से जो सफेद चीज निकलती है वह दूध नही होता, बल्कि अुसके खूनका ही सफेद रग हो गया होता है। यह बात मैंने रायबहादुर साहबको और दूसरे लोगोको समझाअी और अुस गायका दूध पीनेसे अिनकार कर दिया। अुसके बाद मेरी गोसेवा और जनसेवा साथ साथ चलने लगी। शायद चलते समय बापूजीने मुझे रहन-सहनके बारेमे यही समझानेकी अिच्छासे कुछ कहा होगा। अुनके शब्दोंको तो मैं भूल गया था, लेकिन अुनका अर्थ गुप्त रूपसे मुझसे अपना काम करा रहा था।

अेक भक्त परिवारके सम्पर्कमें

मेरे लाहौर-निवासके अर्सेमे लायलपुरके अेग्रीकल्चरल कॉलेजमे, जो भारतका अुच्च कोटिका कॉलेज माना जाता था, 'अेस्टेट मैनेजर क्लास'का १५ दिनका वर्ग चला था। अुसमे सारे पजाबके फार्मोंके मैनेजर ट्रेनिंग लेने आये थे। मैंने भी अुस वर्गके लिअे अर्जी भेजी थी जो मजूर हुअी थी। अिसलिअे मैंने १५ दिनका वह कोर्स पूरा किया। और अुसमे अच्छे नम्बरसे पास हुआ। अब यदि कोअी मुझे निरक्षर कहे तो अुस पर बेअदबीका दावा करनेके लिअे मेरे पास लायलपुर अेग्रीकल्चरल कॉलेजका प्रमाणपत्र मौजूद है।

कॉलेजके विद्यार्थियो और प्रोफेसरोमे चरखा मेरा प्रचारक बना। यो तो जितने लोग अुस कोर्समे आये थे सबके ही साथ मेरा अच्छा परिचय हो गया था। लेकिन सरदार गुरुदयालसिंहजी मानने मुझे अपने

गाव मानावाला चलनेका आग्रह किया, जो शेखूपुरा जिलेमें था। वहा अुनकी अच्छी खेती चलती थी। सरदारजी फौजमें कप्तान थे। लेकिन अुन्हे खेतीका बडा शौक था। मैं अुनके साथ वहा गया। अुनकी खेती देखकर तो आनन्द हुआ ही, लेकिन अुनकी छोटी बहन गुरुवचन कौरसे मिलकर बहुत ही खुशी हुआी। दरअसल सरदारजी मुझे अिन बहनसे मिलानेकी ही गरजसे ले गये थे। वह बहन प्रज्ञाचक्षु थी। अुन्होंने गुरुमुखी और हिन्दीकी कअी परीक्षाये दी थी। बडी ही विवेकी, सात्त्विक और बुद्धिमान थी। अपने खर्चसे अेक कन्याशाला चलाती थी। कअी लडकिया अुनके पास ही रहती थी। अुनमे हरिजन लडकिया भी थीं। छूतछात बिलकुल नही थी। नेत्रहीन होने पर भी अुत्तम सूत कातती थी। भजन-कीर्तन तथा गुरुग्रथ साहबका पाठ नियमित चलता था। अुनके आसपासका वातावरण ऋषिके आश्रमका-सा लगता था। बहनके आग्रहसे मैं दो तीन रोज वहा ठहरा। वहासे गुरु नानक साहबके जन्मस्थान ननकाना साहब भी गया। बहनकी बापूजीसे मिलनेकी बडी अिच्छा थी। वे सेवाग्राम दो बार आअी और बडे भक्तिभावसे थोडे दिन रहकर चली गअी। बापूजीको अुनका विचार और स्वभाव बहुत पसद आया। सरदार गुरुदयालसिंह भी सेवाग्राम आकर बापूजीसे मिले। सी० आअी० डी० ने अुनके खिलाफ रिपोर्ट की। जब अुनसे जवाब तलब हुआ तो अुन्होने जवाब दिया, मै सरकारका वफादार नौकर हू। अगर अुसमे कही फर्क पडे तो सरकार मुझसे जवाब तलब कर सकती है। लेकिन अपने धार्मिक मामलेमे मै स्वतत्र हू। मै महात्माजीको धार्मिक महात्मा मानता हू और अुसी भावसे अुनके दर्शनके लिअे गया था। और जब मौका मिलेगा आगे भी जाअूगा। अिसके लिअे सरकारको जो करना हो सो कर सकती है। अुनकी दृढता देखकर सरकार चुप हो गअी। पाकिस्तान बनने पर सारा मानावाला खाली करना पडा। भूपेन्द्र मान अिनके छोटे भाअी है जो ससदके सदस्य और पेप्सु सरकारमे मिनिस्टर भी रह चुके है। बहन गुरुवचन कौरसे और अुनके सारे परिवारसे आज भी मेरा वैसा ही प्रेमका सम्बन्ध है।

आजकल यह परिवार बल्कि सारा मानावाला गाव ही फतेगढ साहब, जहा गुरु गोविन्दसिंहके जिन्दा बच्चोको दीवारमे चुनवाया गया था, तलानियामे रहते हैं। बहन गुरुवचन कौरकी कन्याशाला और कन्या-छात्रालय वहा भी चलता है।

अेक आदर्श गोसेवकके दर्शन

जब मै पजाबकी गोशालाओका अनुभव लेते हुअे लाहौरसे माटगुमरी पहुचा तब वहाके कुछ मुसलमान भाअियोने अलहदाद फार्म देखनेका आग्रह किया। यह स्थान मुलतान जिलेकी जहानिया तहसीलमे हे। मै वहा पहुचा और अलहदादजीसे मिला। अुनसे मिलकर मुझे अैसा अनुभव हुआ जैसे किसी देवतासे मिल रहा हू। जब अुनको यह पता लगा कि मै बापूजीके पाससे आया हू और गोसेवामे रुचि रखता हू, तो वे आनदसे गद्गद हो गये और बोले, "देखो भाअी, मै महात्माजीसे अेक साल छोटा हू। अुनके लिअे मेरे दिलमे बहुत बडी अिज्जत हे। वे तो खुदाके बन्दे है ओर मुल्ककी बडी खिदमत कर रहे है। मै तो अेक नाचीज आदमी हू और छोटासा गोसेवाका काम लेकर बैठा हू, सो भी अपने स्वार्थसे। मै तो अेक गरीब किसान था। जब पजाब सरकारने साड तैयार करनेकी योजना बनाअी और बीस सालके पट्टे पर जमीन देनेकी जाहिरात की तो मैने हिम्मत करके हाथ फैला दिया। मेरे चार लडके है। मैने किसीको भी अग्रेजी नही पढायी। अुनको थोडासा कामचलाअू पढाकर खेती और गोपालनमे लगा दिया। अेक दूधकी गायो और दूधकी व्यवस्था करता हे। दूसरा दूध पीते बच्चो और दूसरे बच्चोको सभालता है। खेती और हरी घास पैदा करनेकी जवाबदारी तीसरेकी है। सूखी घास और साड चौथा सभालता है। खुदाके फजलसे मुझे तो गायकी मेहर-बानीसे ही रिजक मिल रहा है। मेरी अेक गाय मेरे फार्म पर २३ साल जिन्दा रही और अुसने १७ बच्चे दिये। सरकारी डॉक्टरोने कहा कि अिसे गोलीसे मार देना चाहिये। तो मैने कहा कि अब मेरा भी क्या बनेगा, मुझे भी क्यो नही गोलीसे मार दिया जाय? वह गाय मेरी ही भूलमे मरी। मैने अुसे हर जगह चरनेकी छूट दे दी थी। अेक रोज वह चनेके कोठेमे घुस गअी और अधिक चने खाकर पेट फूलनेसे मर गअी। अुसका मुझे बडा अफसोस है।"

अलहदादजीकी सफेद चिट्टू लम्बी दाढी, अुनका हसमुख चेहरा और गोसेवाकी भावनासे ओतप्रोत अुनके मनको देखकर मुझे बहुत ही खुशी हुअी। अुनके सब जानवर हृष्ट-पुष्ट थे। अुनके फार्म पर पूरा साम्यवाद था। काम करनेवालोको अितना अनाज, अितनी कपास और आध सेर रोजका दूध तथा अूपरसे थोडा पैसा मिलनेका प्रबन्ध था। वहा मजदूर-मालिकका भेद नहीके बराबर प्रतीत होता था। अुस समय अुनके पास कुल मिलाकर ५००

जानवर थे। अुनके लडके कहने लगे कि जब हमारे अब्बाजान गोशालामे आते है तो सबमे पहले कमजोर जानवरोका निरीक्षण करते है। अगर कोअी जानवर कमजोर मिले तो हमारे साथ लाठीके सिवा बात नही करते। अुनका कहना है कि जो जानवर बोलता नही है अुसे हम तकलीफ देते है तो खुदाके घर गुनहगार होते है। देखो, यह घोडी यही अभी पैदा हुअी थी। अिसे ९ सालसे हम खाली बथीको चुगा रहे है। सबसे पहले हमारे अब्बाजान अिस घोडीके पास आते है। अगर यह कमजोर हो जाय तो हमारी खैर नही है।

मुझे मालूम हुआ कि खासाहबने स्टेशनके पास अेक सराय हिन्दू-मुसलमान दोनोकी समान सुविधाके लिअे बनवाअी है, जहा मुसाफिरोकी काफी सेवा की जाती है। मुसलमानी ढगके अनुसार अपनी आमदनीका दसवा हिस्सा वे अैसे ही पुण्यकार्योमें खर्च करते रहते है। बहुतसे हिन्दुओंका अैसा गलत विचार बन गया है कि गायकी सेवा हिन्दू ही कर सकता है। लेकिन अैसे अनेक माअीके लाल मुसलमान पडे है जो हिन्दुओंसे कही अच्छी सेवा गायकी करते है। मै अपने अनुभवसे कह सकता हू कि सारे पजाबमे हिन्दुओ और सिक्खोकी व्यवस्था और सेवामे कही अच्छी व्यवस्था और सेवा मैंने अलहदादजीके यहा देखी।

चलते समय अलहदादजीने कहा, देखो, मै तो महात्माजीके पास पहुच नही सकता, लेकिन आप अुनकी खिदमतमे मेरा सलाम अर्ज कर देना। जब मैंने यह सारा समाचार बापूजीको लिखा तब बापूजीने मुझको लिखा कि मुसलमान भाअियोकी कथा बडी रोचक है। अिस प्रकारके अनेक अनुभव मैंने अुस प्रवासमे लिये।

बापूजीसे भेंट

अुन्ही दिनोमे आसफपुरमे श्री प्रभुदासभाअी गाधी अुत्सव मना रहे थे। वर्धामे वे किसी प्रमुख आदमीको बुलाना चाहते थे। पूज्य किशोरलालभाअीने अुनको मेरा नाम सुझाया और मुझे भी वहा जानेके लिअे लिखा। अुनका लिखना मेरे लिअे फौजी हुक्म था। मै वहा गया और वहा भी गायके ही गीत आये। वहासे दिल्ली आया और पन्द्रह दिन पूसा फार्म पर रहकर वहाकी गोशालाका सब हाल देखा। अुस समय वहा पर डॉक्टर फरनान्डीज सुपरिण्टेण्डेण्ट थे। वह बडे सरल आदमी थे। अुन्होने बडे प्रेमसे मुझे सब कुछ दिखाया।

लाहौरसे लौटते समय फिरोजपुर छावनीकी मिलिटरी डेरी भी देखी। सरदार किशनसिंह अुसके बडे ही योग्य मेनेजर थे। ता० ६–७–'३९ को वापूजीसे विदा लेकर गया था। ता० १–११–'३९ को दिल्लीमे लौटकर मैंने जव अुन्हे प्रणाम किया तो वे हसकर वोले, "अरे, चोर कहासे आ गया?" घूमते समय सव हाल पूछा और वोले, "दिल्लीका कैटल ब्रीडिग फार्म भी देख लो। अगर तुमको अैसा लगे कि अुसमे कुछ किया जा सकता है तो अुसका चार्ज मिल सकता है।" अुसी दिन मेरी भतीजी चि० होशियारी वापूजीसे मिलने आअी थी। अुसने वापूजीसे कहा कि मेरी अिच्छा आपके पास रहनेकी है। लेकिन पिताजी राजी नही होते है। वापूजी वोले, "मेरे पास तो तुम रह सकती हो, लेकिन पिताजीको राजी करना होगा। अगर तुम्हारा सकल्प सच्चा होगा तो तुम्हारी जीत होगी।" अुसी सकल्पने जोर मारा और पाच सालके वाद सन् १९४४ मे वह वापूजीके पास सेवाग्राममे आ ही गअी।

दूसरे दिन दिल्लीका कैटल ब्रीडिग फार्म देखने गया और वहा श्री लक्ष्मीनारायणजी गाडोदियासे वाते की। फार्म अिन्हीके खर्चसे चल रहा था। अुसमे भैसोका भी प्रवेश हो चुका था। अिसलिअे मैंने वापूजीसे कह दिया कि अिन तिलोमे तेल नही है। अगले दिन जव मै वापूजीके पास गया तो वापूजीकी मालिश की जा रही थी। मै चुपचाप जाकर खडा हो गया। वापूजीने मुझे देख लिया और वोले, "देखो वलवन्तसिह आ गया है। अैसा न समझना कि वह चुपचाप खडा रहेगा। अुसको मालिशमे हिस्सा दो, नही तो तुम्हारी खैर नही।" सव लोग हस पडे और वापूजी भी खूब हसे। मेरे लिअे अेक पैर खाली हो गया और मै अपने काममे लग गया। अिस अनोखे प्रेमका स्वाद चखकर आज सव स्वाद फीके लगते है। वापूजीकी कल्पना वहुत अूची थी। लेकिन तो भी अुन्हीके प्रसादसे आज मै अितना-सा जानकार हो गया हू कि वडे जानकारोके सामने भी अपनी गोसेवाकी वात अिस प्रकारसे रख सकता हू कि अुनके गले अुतर जाती है। यदि न अुतरे तो जव तक सफलता न मिले तव तक अुनके पास डेरा डालकर अपनी वात अुनके गले अुतारनेकी हिम्मत और आत्म-विश्वास मुझमे आ गया है। यह सव वापूका ही प्रताप है।

मूक होहि वाचाल पगु चढै गिरिवर गहन।

१८

विविध प्रसंग

अेक बोधपाठ

अिसी समय बगालमे गाधी-सेवा-सघकी सभा थी। बापूजी वहा जा रहे थे। मैने बगाल जानेकी अिच्छा बताअी और कहा कि मै वहाकी गाये देखना चाहता हू। अुस समय कृष्णचद्रजी मुझे हिन्दी पढाते थे, लेकिन ठीक ठीक समय नही दे पाते थे। अिसलिअे मैने बापूके पास शिकायत की थी। मैने लिखा था कि मै अुनकी खुशामद नही करूगा। बापूजीने अिन दोनोंके सम्बन्धमे लिखा

चि० बलवर्तसिह,

अिस वक्त गाधी-सेवा-सघमे तुमको ले जानेका दिल नही है। बगालकी गायोकी चिन्ता हम न करे। कृष्णचन्द्रसे कहूगा। लेकिन ज्ञानके पिपासुको खुशामद करनी पडती है। जब मेरे जैसे महात्मा बनोगे तब तुमको ज्ञान देनेवाले तुम्हारी खुशामद करेगे। दरम्यान गीताका वचन याद करो। वह यह है कि प्रणिपात (खुशामदसे), परिप्रश्न (बार बार प्रश्नसे) और सेवा करके ज्ञान सीखो। गीताका क्रम तो महात्माओंके लिअे ही शायद बदलता होगा। बाकी मुझे जो खुशामद करनी पडती है सो मै ही जानता हू।

२७–१–'४० बापूके आशीर्वाद

अुन दिनो मेरे पास कोअी दूसरा खास काम नही था। मैने बापूजीको लिखा कि मै कुछ नही करता हू और करूगा भी नही। खाली बैठकर दूध पीता हू। अगर आप दूध पिलाते पिलाते थक जायेगे तो चला जाअूगा। बापूने लिखा

चि० बलवर्तसिह,

दूध पीते पीते थको तो दूसरी बात। मै तो थकनेवाला नही हू। न मै यहासे तुमको कही हटानेवाला हू। यही रहना और आनदपूर्वक जो काम मै दू वह करना। अुसीमें तुम्हारी साधना है। अुसीमे गोसेवा है।

सेगाव, ८–२–'४० बापूके आशीर्वाद

मैंने हिन्दीकी पढाअीके बारेमें फिर बापूजीको लिखा। असलिअे बापूजीने लिखा

चि० बलवतसिंह,

अिसे देखो। गीतामाता कहती है — जिससे ज्ञान लेना है असको प्रणिपात करो, परिप्रश्न करो, असकी सेवा करो। कृष्णचन्द्रकी शक्तिका माप करके असुसे शिक्षा लो। असुसे अच्छा शिक्षक कहासे मिलेगा?

सेगाव, २०–४–'४० बापूके आशीर्वाद

छोटी बातके लिअे बडा कदम

अेक बार अैसा हुआ कि आश्रममे अेक बहनका पत्र गुम हो गया। असुने अेक दूसरी बहन पर शक किया। बापूजीने पूछा तो वह बहन, जिस पर शक किया गया था, नट गअी। बापूजीको भी शक हुआ और अन्होंने अपवास शुरू कर दिया। मैंने बापूजीको लिखा कि आप शकके अपर अपवास करके किसीके अपर दबाव डालते हैं। यह ठीक नहीं।

बापूजीने लिखा

चि० बलवतसिंह,

समझना सुगम है। जब पिताको घरमे किसी लडके पर शक आता है, लेकिन कौन है असका पता न लगे तब वह अपवास करके शाति पाता है। अगर लडकोमे प्रेम है तो लडके कबूल कर लेते है। ठीक है कि मेरा अनुमान ही है, लेकिन हम सर्वज्ञाता नही है।

बापूके आशीर्वाद

अेकाध दिन अपवास करनेके बाद आश्रमवासियोका अिस अपवासके लिअे विरोध होनेसे बापूने असे छोड दिया था और बादमे असु बहन परकी शका भी निकल गअी थी। यह शकानिवारणकी बात तथा शका करनेका दुःख बापूजीने बादमे लिखित रूपमे प्रगट किया था।

अिस तरह अपरसे छोटी दीखनेवाली बातोमे बापू कितने भारी भारी कदम अुठा सकते थे और अनके पास रहना कितनी सावधानीका काम था, अिसका अनुभव तो अुन्हीको होगा जो अनके निकट रहे है। बाहरसे देखनेवाले तो समझते थे कि बापूजीके पास रहनेवाले मौज करते है। लेकिन सचमुच ही अनके पास रहना तलवारकी धार पर चलनेसे भी कठिन

और फूलो पर चलनेसे भी आसान था। 'साओीका घर दूर है, जैसी लबी खजूर। चढे तो चाखे प्रेमरस, गिरे तो चकनाचूर।।' अिस दोहेका प्रत्यक्ष अनुभव अुन लोगोने किया है, जिनको बापूजीके निकटसे निकट सपर्कमे रहनेका सौभाग्य मिला है।

लार्ड लोथियन सेवाग्राममें

यो तो बापूजीके पास बडेसे बडे मेहमान आते थे और बापूजी अुनकी आवभगत और सुख-सुविधाका प्रबध अपने ही ढगसे करते थे। लेकिन लार्ड लोथियन अेक निराले ही प्रकारके मेहमान थे। वे १९४० मे बापूजीसे मिलने आये थे। बापूजीने जमनालालजीसे पहले ही कह दिया था कि अुनको अपने बैलोंके तागेमें ही लाना है। अेक रोज देखा तो जमनालालजी और लार्ड साहब बैलके तागेमे फसे बैठे चले आ रहे हैं। दोनो पूरे लबेचौडे डील-डौलके थे, और तागेकी सीट साधारण ही चौडी थी। दोनोको बैठनेमे कठिनाअी हो रही थी। बापूजीने प्रार्थनाकी जगह पर अुनका स्वागत किया। अेक-दूसरेसे मिलकर दोनो खूब खुश हुअे। दोनोंके चेहरेसे आनन्द ही आनन्द टपक रहा था। अुनका ठहरनेका अितजाम आखिरी-निवासमे किया गया। सोनेके लिअे तख्ता, स्नानघरमे कमोड आदि छोटी छोटी सुविधाओका प्रबध बापूजीने खुद अपनी निगरानीमे कराया था। अुनके भोजनका प्रबध हमारे साथ पक्तिमे ही किया गया था। पतलूनके कारण जमीन पर बैठनेमे अुनको थोडी असुविधा तो होती थी, लेकिन हमारे साथ बैठना अुन्हे बहुत ही पसन्द था। बापूजी अपने पास ही अुन्हें बिठाते और परोसनेका काम भी खुद ही करते थे। बीच बीचमे अुनसे पूछते जाते और भोजनकी सामग्रीके गुणोका बखान भी करते जाते। अग्रेज लोग मिर्ची-मसाला तो खाते ही नही। अिसलिअे आश्रमका भोजन अुन्हे बहुत ही पसन्द था। वे सेवाग्राममे ३ रोज रहे और हमारे साथ खूब घुलमिल गये। अुन्होने कहा, मेरे सारे जीवनमे ये तीन दिन जैसे शातिसे बीते है वैसे कभी नही बीते। अितना अेकान्तवास मुझे कभी नही मिला है। यहा मुझे बडी शातिका अनुभव हुआ है। हमको भी लगता था जैसे कोअी पुराना साथी हममे आ मिला हो। अुनको वापिस भेजनेका प्रबध भी अुसी बैलके तागेमे किया गया। अुनके जानेके बाद बापूजीने शामकी प्रार्थनामे कहा, "मै चाहता तो जमनालालजीकी मोटर थी ही और मै जब बम्बअीमे था तभी अुनको मुलाकात दे सकता था। लेकिन अुसे मैंने

जानबूझ कर टाला। क्योंकि बम्बअीमे बैठकर मै अुनको हिन्दुस्तानका सही दृश्य नही दिखा सकता था। हिन्दुस्तान शहरोमे नही गावोमे बसता है। यह मै बम्बअीमे बैठकर अुन्हे कैसे समझाता? जो अग्रेज भारतमे आते है अुनको गावोका दर्शन कहा होता है? लोग तो अुनके आसपास शहरोकी ही चकाचौध खडी करते है। अिससे वे भी भ्रममे पड जाते है। मै किनका प्रतिनिधित्व करता हू अिसका पता सेवाग्राममे आये विना कैसे चलता? अुनके यहा आनेसे हिन्दुस्तानका कुछ भला होगा सो बात नही है, लेकिन वह यहासे जो विचार लेकर गये है अुनका असर दूसरो पर भी अच्छा होगा। अुन्होने देख लिया कि असली हिन्दुस्तान किसको कहते है। हमारे किसान मोटर कहासे लाये? अुनके पास तो बैलगाडी ही हो सकती है। अिसलिअे मैने जमनालालजीसे कहा कि अुनको बैलगाडीमे ही लाना चाहिये। जमनालालजीके मनमे सकोच हो सकता था, लेकिन वे तो मेरे तर्जको समझते है। अिसलिअे अुनको भी आनन्द ही हुआ।"

बापूजी देहातोके साथ कितने अेकरूप होना चाहते थे यह अैसी घटनाओसे स्पष्ट हो जाता है। बापूजी देहातोके जीवनमे जहा तक प्रवेश करना चाहते थे वहा तक जानेका अुनको अवसर ही नही मिला। वे अेकमात्र ग्रामसेवककी अपनी तमन्ना पूरी न कर सके, क्योकि देशको आजाद करानेका कार्यक्रम अुनके सहारेके बिना चल ही नही सकता था। अिसलिअे अुस जवाबदारीका भार भी अुनको अुठाना पडा।

होड बदना दूषित है

१९४० के मअी मासके अतिम सप्ताहमे खेती और गोशालाका चार्ज फिर मुझे लेना पडा। आश्रमकी खेतीका नियम था कि कोअी बैलको आर न मारे। लेकिन हमारे खेतीवाले लोग अेक छोटीसी आर अपनी जेबमे रखते थे और जब वर्धा वगैरा कही जाते थे तो अुसका अुपयोग करते थे। अिसका मुझे पता नही था। गावके अेक भाअीसे मै बात कर रहा था तब अुसने बताया कि आपके बैलोके अूपर भी आरका प्रयोग होता है। मैने अिनकार किया तो अुसने कहा, 'शर्त लगाओ।' मैने कहा, 'अगर मेरे आदमियोके पास आर पकडी जाये तो मै ५ रुपये दूगा।'

अुस भाअीने वर्धा जाते हुअे हमारे गाडीवानके पास आर पकडी, मुझे वह आर दिखाअी और अुस आदमीसे मेरा मुकाबला कराया। बात

सच थी। मुझे पाच रुपये देने पडे। अिसका पता बापूजीको लगा। बापूजीने लिखा "हम ट्रस्टी हैं अिसलिअे हमको होड बदनेका अधिकार ही नही है। क्योकि दान हमको अिस कारण नही मिलता है। तुम्हारे पास पैसे हैं ही नही, अर्थात् तुम्हे चाहिये नही। अिसलिअे तुम्हारी होडमे ये दोनो दोष थे। आश्रमके पैसे पर होड बदनेका तुम्हे अधिकार नही था। और होड बदना ही दूषित है, अभिमानका सूचक है।"

हृदय-परिवर्तन

सेगावमे वहाके अेक हरिजनका भानजा आया। अुसने वहा हरिजन बच्चोको पढाना और अुनको क्रिश्चियन बनानेका प्रचार आरभ किया। अुसको नागपुर क्रिश्चियन सोसायटीकी तरफसे तनख्वाह मिलती थी। वह बहुत ही गलत ढगसे हरिजन बच्चोको बहकाता था। वह हरिजन लडका था तो नादान लेकिन लोभमे फसा था। समझाने पर भी मान नही रहा था। हम लोगोने भी अुसे समझानेका काफी प्रयत्न किया। बापूजीको अिससे काफी दु ख पहुचा। अुन्होने नागपुरके बिशपके साथ पत्रव्यवहार किया। लेकिन बिशपका अुत्तर सतोषजनक नही था। अन्तमे बापूजी अपने प्रयत्नमे सफल हुअे और वह प्रचार बद हो गया। अब वह लडका आश्रमका वफादार सेवक है। नाम है तुकाराम जामलेकर। गावके लोगो और आश्रमवासियोके समझानेसे भाअी जामलेकरने पादरीकी नौकरी छोड दी और आश्रममे काम करने लगे, अिससे पादरीकी पाठशाला भी बद हो गअी।

सच्ची सलाह न माननेका फल

अेक बार गावमे कुछ झगडा हुआ। अेक सवर्णके हाथसे अेक हरिजनकी आख फूट गअी। मामला पुलिसमे जानेको था। बापूजी बीचमे पडे। अुन्होने सवर्णोको यह समझानेकी कोशिश की कि जिस हरिजनकी आख फूटी है अुससे सार्वजनिक रूपमे अपराधी माफी मागे और अुसको मुआवजेके सौ रुपये दे। जिसके हाथसे आख फूटी थी वह पहले सेगावका माल्गुजार था और माफी मागनेमे अपनी बेअिज्जती समझता था। वह रुपये देनेको तो तैयार था, लेकिन सार्वजनिक रूपमे माफी मागनेके लिअे तैयार नही था। बापूजीने कहा कि मेरे नजदीक रुपयेका बहुत महत्त्व नही है। अगर तुम नही दे सकोगे तो मै भी दे सकता हू। लेकिन तुमने जो अपराध किया है अुसकी क्षमा तो मागनी ही होगी। तिस पर भी गरीब हरिजनके प्रति अपराध किया है।

यह दुहरा पाप है। विना क्षमा मागे तुम पापसे मुक्त नही हो सकते। वह भाअी तो सीधा था, लेकिन दूसरे कुछ अैसे लोग थे जिन्होने अुसको माफी मागनेके लिअे तैयार नही होने दिया। आखिर मामला पुलिसमे गया। वाप-बेटेको सजा हुअी, अेकको चार मासकी और दूसरेको आठ मासकी। हजारो रुपये खर्च हो गये सो अलग। तव अुनको वापूजीकी वात न माननेका खूव पश्चात्ताप हुआ।

फोटो खिचानेसे अरुचि

वापूजीको फोटो खिचाना पसन्द नही था। सिर्फ कनुको अुसके आग्रहके कारण कुछ प्रसगो पर मौका देते थे। मगनवाडीमे अेक रोज जव हम सव लोग भोजनके लिअे वैठ रहे थे, वाहरके अेक फोटोग्राफरने फोटो लेनेके लिअे कैमरा लगाया। वापूजीकी नजर अुस पर गअी तो वहुत गभीर होकर वोले, "तुम लोगोको अितनी भी सभ्यता नही है? किसीके घरमे आकर भोजनके समय भी फोटो लेते हो?" वापूजीने अुसको खूव डाटा और वह विचारा अपना कैमरा लेकर चला गया।

सेवाग्राममे अेक रोज वापू किशोरलालभाअीको देखने जा रहे थे। वापूका नियम था कि सुवह घूमते समय किशोरलालभाअीसे थोडी वातचीत कर लेते थे, क्योकि तवीयत अच्छी न होनेके कारण वे वापूके पास आ नही सकते थे। वहा जा रहे थे अुस समय अेक आदमीने आगे आकर अेकदम कैमरा लगा दिया। वापू तेजीसे झपटे और अुसके हाथसे कैमरा छीन लिया। हम सव आश्चर्यमे पड गये कि आखिर हुआ क्या? अितना विगडते मैंने वापूजीको पहली ही वार देखा।

अेक रोज वापू अपनी कुटियामे वैठे थे। किसी परिचित भाअीने वापूजीका फोटो लेनेके लिअे अुनके सामने जो पुस्तक रखी थी और जिसके कारण तस्वीर स्पष्ट नही आती थी अुसे हटानेके लिअे किसीसे कहा। पुस्तक हटा दी गअी। लेकिन वापूने वह पुस्तक अुठाकर जहा थी वही रख दी। वे कुछ वोले नही, लेकिन गभीर हो गये।

वापूका गायमाताका प्रेम

सन् '४० की वात है। वापूजी व्यक्तिगत सत्याग्रहकी तैयारी कर रहे थे। स्वय कव पकडे जायेंगे अिसका पता न था। हमे क्या करना होगा,

यह मैंने अुनसे लिखकर पूछा था। जमीन आदिका भी कुछ प्रश्न था। बापूजीने लिखा

चि० बलवतसिह,

तुम्हारा खत अच्छा है। जमीन अित्यादिके बारेमे मैंने ठीक किया है। और भी अगर आजाद रहा तो करूगा। तुम्हारे, पारनेरकरने, चिमनलाल, सुखाभाअू अित्यादिने बाहर रहना ही है।

सेवाग्राम, ११-११-'४० बापूके आशीर्वाद

दिसम्बरमे तालीमी सघके बोर्डकी सेवाग्राममें मीटिंग थी। आर्यनायकम्‌जीने बापूजीके सामने अेक माग पेश की कि गोशालाके मकान अित्यादि तालीमी सघको दे दिये जाय। वे वहा पर छात्रालय बनाना चाहते थे। आर्यनायकम्‌जी, जाजूजी और डॉ० जाकिरहुसैन सब गोशालाका स्थान देखनेके लिअे आये। मुझे सीधा तो किसीने नही कहा, लेकिन मुझे अुनकी चर्चाका पता चल गया। जब वे लोग गोशालामे घुसे और सब चीजे देखने लगे तो मैं समझ गया कि वे क्यो आये हैं। मैंने सख्त टोनमें आर्यनायकम्‌जीसे पूछा, 'आप क्या देखते हैं?' अुन्होंने कहा कि हम यह स्थान छात्रालयके लिअे लेना चाहते हैं। आप अपनी गोशाला दूसरे खेतमे ले जाय। मैंने कहा, अैसा नही हो सकता। जाकिरहुसैन साहब व जाजूजीने भी कुछ कहा, लेकिन मैंने साफ कह दिया कि यह स्थान नही मिलेगा। जब वे लोग चले गये तो मैंने बापूजीको अेक लबा सख्त पत्र लिखा। अुसमे लिखा, 'सुनता हू कि आप गोशालाका स्थान तालीमी सघको देना चाहते हैं। आर्यनायकम्‌जी, जाकिरहुसैन साहब और जाजूजी तो आपके प्रिय सेवक है, अपनी जरूरत आपको समझा सकते है। क्योंकि भगवानने अुनको जबान दी है। लेकिन गाय तो मूक प्राणी है। अपने सुख-दुःखके बारेमें आपको कुछ नही कह सकती। मैं अपने आपको गायका प्रतिनिधि मानता हू। अगर आप मेरे अिस दावेको कबूल कर सके तो मैं आपसे कहता हू कि गाय यहासे हटना नही चाहती है। अगर आप यह स्थान तालीमी सघको दे देंगे और गायको यहासे हटायेंगे तो मैं भी गोशालाका काम नही कर सकूगा। आपको जो कुछ करना है खूब सोच-समझकर करें।'

बापूजीका अुत्तर आया

चि० बलवन्तसिंह,

सिंहका नाद और गायोंका रुदन दोनों सुना। अब गाय जहां है वहीं रहेगी। आर्यनायकम्‌जी और आशादेवीको कह दिया है। बस ना?

सेगांव, १५–१२–'४० बापूके आशीर्वाद

सेप्टिक टैंकका किस्सा

कुछ डॉक्टरोंकी सलाहसे बापूजीने आश्रममें सेप्टिक टैंक शुरू किया। जब वह बन रहा था तो मैंने बापूजीको नीचेका विरोधपत्र भेजा

सेवाग्राम

६–२–'४१

परम पूज्य बापूजी,

मैंने सुना है कि आपने पाखानेका तहखाना (सेप्टिक टैंक) बनानेकी अिजाजत दे दी है। आपकी अिस प्रकारकी बदली हुआी नीतिको सुनकर मुझे दुःख और आश्चर्य हो रहा है। अब तक आप धूलमें से धन पैदा करनेका मंत्र हमको सिखाते आये हैं। अब सोनेका पानी करनेका मंत्र हमसे सिद्ध होगा या नहीं यह कहना कठिन है। आश्रममें आकर मैंने यों तो बहुत कुछ सीखा है, लेकिन जिसका मुझे अभिमान हो सकता है वह है पाखाना-सफाअी और अुसका सदुपयोग तथा धुनाअी। लेकिन अगर अेकको ही चुननेका अधिकार हो तो मैं पाखाना-सफाअीको ही चुनूंगा।

पाखाना-सफाअी और अुसके खादमें मेरे स्वार्थका भी घनिष्ठ संबंध है। लेकिन सिद्धान्तकी दृष्टिमें भी मैं अिसको आश्रमकी नाक या आत्मा मानता हूं। आपके पास तो नित्य नये डॉक्टर और नित्य नये रोगी आते ही रहते हैं और आते ही रहेंगे। लेकिन अगर आप जैसा कोअी नचावे वैसा ही नाच नाचते रहेंगे तो शायद आपके सत्तर वर्षके बूढ़े पैर जवाब दे बैठेंगे। किसीकी भी अच्छी चीजको अपनाने या अुसका प्रयोग करनेका आपका स्वभाव है। जनसंग्रह करना तो आपका धंधा ही है। लेकिन जैसा कि कहा जाता है, जल जाये वो सोना जिसमें नाक छिदे। अब तक आप ढोल पीट पीट कर यह कहते आये हैं कि यदि हिन्दुस्तानके सात लाख गांवोंका पाखाना सुव्यवस्थित रूपसे खादके काममें लाया जाय तो अुसका कीमिया बन सकता है। आपकी अिस बातको काटनेकी हिम्मत किसीमें नहीं है। और हो भी कैसे सकती है?

जिस तिजोरीमे मे हम निकालते ही रहें लेकिन रखें नही वह कितने दिन पैसा पुरावेगी? क्या यही हाल जमीनका भी नही है? जानवर वनस्पति खाकर भी वेशकीमती खाद जमीनको वापिस देते हैं, तो मनुष्य जमीनकी अुत्पत्तिका सार अनाज खाकर कितना कीमती खाद दे सकता है? अिसीलिअे तो पाखानेको सोनखाद कहा जाता है न?

पहले तो कुअेमे धूलके साथ जन्तु जाते है, अिसलिअे मोट वद की, पानी गरम किया, भाजी लाल और गरम पानीमें धोअी, लेकिन टाअीफाअिड वन्द न हुआ। अव मक्खियोका नवर हैं। मुझे पूरा पूरा शक है कि अिस अिलाजमे भी मर्ज चला जावेगा। लेकिन हमारा खाद तो अवश्य चला जावेगा।

मुझे लगता ह कि अिसका अिलाज यह है कि या तो आप सेवा-ग्राम छोड दे या अितने वडे समाजको छोड दे, और मुझे तो यह भी लगता है कि हमारा अधमरा समाज और जिनके मगजमे ही जतुओंने घर कर लिया है अैसे डॉक्टर यदि हिमालयकी चोटी पर भी जाकर वसे तो भी अिनका पीछा टाअीफाअिट शायद ही छोडे। डॉक्टर दास सज्जन आदमी हैं और लगनके पक्के है। लेकिन जव वे सुखाभाअूके लडकेके अिलाजके लिअे सेवाग्राम गावमे न जा सके और अुसको यहा आना पडा तो वे हिन्दुस्तानके सात लाख गावोंमे सेप्टिक टैंक वना सकेंगे यह कैसे माना जाय?

अेक तरफ तो आप गरीवीके गीत गाते नही अघाते और दूसरी तरफ अमीरीके साधन मुहैया करते करते आपकी अुदारता वरसाती नदीकी तरह सव कुछ वहा ले जाती है, जिसके सामने कोअी सूरा ही खडा रह सकता है। अैरे गैरे पचकल्याणीके पैर तो जम ही नही सकते। मुझ जैसा विलकुल तैरना न जाननेवाला तो समुद्रमे ही जाकर दम लेगा। शायद आपको अिस पत्रमे मेरे पैने दात और नख दिखाअी दें, लेकिन मैं लाचार हू। मेरी नम्र सूचना है कि पाखानेको थोडा दूर हटा दिया जाय या अुसे प्रतिदिन खिसकानेकी व्यवस्था की जाय, लेकिन अुसको दफना देना किसान और जमीनके लिअे अन्याय होगा। आगे राजा कहे सो न्याय।

कृपापात्र
वलवन्तसिंहके सादर प्रणाम

वापूजीने अुत्तर दिया

चि० वलवन्तसिंह,

तुम्हारा लिखना सही है। मै सावधानीसे काम ले रहा हू। यदि अधूरा छोडकर मर गया तो सव काम टीकापात्र होगा। अगर पूरा करके मरा तो सव देखेगे। अितना कहता हू कि खादको वरवाद नही होने दूगा। मै जो कुछ करता हू, सव अन्तमे गरीवोके ही लिअे है। लेकिन आज तो अिसमे से कुछ भी सेवाग्राममे सिद्ध नही कर सकता हू।

श्रद्धा रखोगे और अपना निजी जीवन सादा और विशुद्ध रखोगे तो देखोगे कि सव ठीक ही है।

तुमने लिखा सो ठीक ही किया है। अिसमे न दात हे, न पजा।

५–२–'४१ वापूके आशीर्वाद

आश्रम खतम नहीं होगा

आश्रममे आनेवालोकी सख्या घटती-बढती रहती थी और अुसके हिसावसे सागभाजीकी कम-ज्यादा जरूरत रहती थी। कुछ लोग अैसा भी कहते थे कि हम यह नही खायेगे, वह नही खायेगे।

हमारा खेतीका गेहू था। अुसमे कुछ कीडा लग गया था। भोजनालयके व्यवस्थापकने अुसे लेनेसे अिनकार कर दिया था। मैने वापूजीको लिखा कि अेक दिन ५० सेर सागभाजी मागते है तो दूसरे दिन १० सेर। मै किस हिसावसे पैदा करू? और अगर आश्रमका गेहू खराव हो गया तो अुसको कहा फेक दू? मै नही जानता कि अिस तरह यह आश्रम कितने दिन चल सकेगा। गरीव लोग तो अिस तरह फेक नही सकते है। हम लोग क्या अमीर हो गये है?

वापूजीने लिखा

चि० वलवन्तसिंह,

शाकभाजीके वारेमे थोडी अव्यवस्था सहन करने योग्य है। जो आश्रममे न चाहिये वह वाहर वेचनेकी हमारी शक्ति होनी चाहिये। डॉक्टरसे वात करके भविष्यका पाक वनाना चाहिये। शाकभाजी ताजी और अच्छी वनानेकी शक्ति हमारेमे होनी चाहिये।

गेहू खराव हो जाय तो फेकना ही चाहिये। गरीवको भी अैसा ही करना चाहिये। हमारे गेहू बिगडे क्यो ?

यह आश्रम खतम होनेवाला नजर नही आता है। परिवर्तन होना सभव हे। जो होगा सो हमारे या कहो मेरे कर्मोका फल होगा। धैर्य रखो।

१६–२–'४१ वापूके आशीर्वाद

जमीनका झगडा

सेवाग्रामके अेक गरीब किसान पर कअी सालका लगान चढा हुआ था। अुसकी सारी जमीन वेदखल होनेवाली थी। अुसका अेक खेत गोशालासे लगा हुआ था। अुस किसानको लेकर गावका अेक प्रतिष्ठित आदमी मेरे पास आया और वोला, आप अिसके अुस खेतको खरीद ले तो अिसके वच्चोके लिअे अिसकी दूसरी अच्छी जमीन वच सकती है। मुझे जमीनकी खास जरूरत नही थी। तो भी पास होनेसे अुसमे गायके दूध पीते वच्चे चरानेकी सुविधा थी। और अुसकी सारी जमीन जमनालालजीकी जमीदारीमे थी। अगर वेदखल होती तो हमारे पास ही आनेवाली थी। अुनके मुनीमजीने मुझे कह भी दिया था कि यह सारी जमीन आपको ही दे देगे। लेकिन मुझे लगा कि अिस प्रकारका लोभ ठीक नही है। अगर अिसकी जमीन वच सकती हो तो वचानी चाहिये। अिम विचारमे मै वापूजीके पास गया और सारी परिस्थिति अुन्हे वताअी। वापूजीने कहा, तुम्हारे पास जमीन तो काफी है। लेकिन अुसकी दूसरी जमीनकी रक्षा होती है और अुस जमीनका तुमको अुपयोग है तो भले खरीद लो। मैने अुस जमीनको खरीद लिया।

अुस किसानके दो लडके थे। अेक वाहर पटवारी था और वही वस गया था। लिखापढीके समय जव मैने अुसकी सही लेनेकी वात की तो जो भाअी वीचमे पडा था अुसने मुझे विश्वास दिलाया कि अिसकी आप चिन्ता न करें, वह भाअी अुज्र करनेवाला नही है, न अिस जमीनसे वह हिस्सा ही लेगा। क्योकि अुसने वहा काफी जमीन कर ली है और अिस जमीनका लगान भी वह नही देता है। अिसीलिअे तो अिसका लगान चढा है। अुसके विश्वास दिलाने पर मैने आग्रह नही किया और जमीनका विक्रीपत्र आश्रमके नाम करा लिया। जितनेमे सौदा पक्का हुआ था वह मुझे कुछ सस्ता लगा। मैने सोचा कि अुसकी मुसीवतका लाभ अुठाना अुचित नही है। अिसलिअे लिखा-

पढी होनेके बाद भी अुसको थोडी रकम मैंने और दे दी, जिससे अुसे बडा सतोष मिला और दूसरे लोगो पर भी अिसका बहुत अच्छा असर हुआ।

८-१० मासके बाद अुस किसानका दूसरा लडका, जो पटवारी था, नौकरी छूट जानेसे सेवाग्राममे ही आ गया और अपने लिअे जमीन खरीदनेकी कोशिश करने लगा। किस्सा अैसा बना कि पडोसके गाव नादोरामे अेक किसान अपनी जमीन बेच रहा था, अुसे वह लेना चाहता था। अुसी जमीनको सुखाभाअू चौधरी, जो चरखा सघके कार्यकर्ता थे, लेना चाहते थे। दोनोसे मेरा अच्छा सबध था। अत अुस जमीनका सोदा सुखाभाअूके लिअे हो गया। पटवारीको लगा कि अिस सौदेमे मैंने मदद की है। अिसलिअे चिढकर अुसने अपने बाप और छोटे भाअी द्वारा आश्रमको बेची हुअी जमीन वापस मागी। जब यह सवाल बापूजीके सामने गया तो बापूजीने अुसके बाप और भाअी तथा गावके दूसरे लोगोको बुलाकर पूछा कि अिसमे क्या किया जाय। गावके लोग यह कैसे कह सकते थे कि जमीन वापिस कर दी जाय। अिसलिअे वे कुछ न बोले। बापूजीने अुसके बाप और भाअीसे पूछा कि बोलो क्या करना चाहिये। अुन्होने कहा कि जमीन वापिस कर देनी चाहिये। बापूजीने मुझे आदेश दिया कि अिनकी जमीन वापिस कर दो, अुस पर तुम्हारी जो फसल खडी हो काट लो। अिन आदमियोमे वह आदमी भी था जो मेरे पास अुनकी जमीनको बचानेकी वकालत करने आया था। लेकिन अुसने अिस अन्यायका प्रतिकार नही किया। अिससे मुझे भारी दुख हुआ। जब वही आदमी मेरे पाससे जमीनका चार्ज और हिसाब-किताब लेने आया तो मै अपने गुस्से पर काबू न रख सका। मैंने अुससे कहा कि आपको अिसके साथ हिसाब-किताब लेने आनेमे शर्म आनी चाहिये थी। जिस मुहसे आप मेरे पास अिसकी जमीन बिकवाने आये थे अुसीसे वापिस करानेमे आपको जरा भी शर्म नही आती? अुसको मेरी अिस बातसे दुख हुआ। अुसके अिस दुखकी बात बापूजीके कान तक पहुची।

बापूजीने मुझे बुलाकर कहा, "तुमने विठोबाके अूपर गुस्सा करके भारी अपराध किया है। अिसलिअे मुझे क्षमा मागनी पडी। तुम भी माग लो। हम तो सेवक है। अिसलिअे हमको किसी पर गुस्सा करनेका अधिकार ही नही है। तुम्हारी बात तो सच थी। लेकिन गुस्सेने अुसका सच्चापन मिटा दिया।" मैंने गावमे जाकर क्षमा मागी। साथ साथ कहा कि आपने मेरे साथ विश्वासघात तो किया है, लेकिन मैंने गुस्सेमे आपसे जो कठोर

शब्द कहे अुन्हे मैं वापिस लेता हू। अिससे अुन लोगोको और भी वुरा लगा। जव सारा किस्सा वापूजीके पास गया तो वापूजीने लिखा

चि० वलवन्तसिह,

मुन्नालाल कहते है कि तुम्हारी क्षमा-याचनासे शाति नही हुअी है। क्षमा मागनेके समय विठोवाको सुनाया, तुमने विश्वासघात तो किया है तो भी क्षमा मागता हू। अगर यह ठीक है तो क्षमा-प्रार्थना निरर्थक है। विश्वासघातकी शिकायत वहुत कठोर है। मै विश्वासघात नही पाता हू, हृदय-दौर्वल्य भले कहो। यह वात सुधरनी चाहिये।

१९–५–'४१ वापू

अिस घटनासे मुझे और भी दु ख हुआ। और मैने प्रायश्चित्तके रूपमे ३ रोजका अुपवास करनेका निश्चय वापूजीको वताया। अुन्होने अिसे पसन्द नही किया और वोले, "अुपवास करना ठीक नही है। अिससे तुम्हारे काममे वाधा पडेगी। और अुपवासके लिअे अधिकार भी तो चाहिये। वस नम्र वनो। जिसे जगतकी सेवा करनी है, वह किसीके साथ घनिष्ठ सवध न जोडे। क्योकि अगर हम अेकके साथ घनिष्ठता जोडते है तो स्वाभाविक है कि हम दूसरोसे दूर जाते है। मै तुम्हारा त्याग न करूगा। हा, अेक वात है। मैने लोगोको पहले कहा था (गणपतरावके प्रकरणमे) कि अगर वलवन्तसिह दूसरी वार गुस्सा करेगा तो सेवाग्राम छोडेगा। अिस-विना पर तुम सेवाग्राम छोड सकते हो और लोगोको यह कह सकते हो कि वापूके वचन-पालनके लिअे मै सेवाग्राम छोड रहा हू।" वापूजीकी यह सूचना मुझे वहुत पसन्द आअी। मैने अुपवासका विचार छोड दिया और सेवाग्राम छोडनेका निश्चय कर लिया।

रातको सेवाग्राममे मैने सभा की और लोगोको सारा हाल तथा अपना सेवाग्राम छोडनेका निश्चय वताया। मैने कहा कि मुझे वडी खुशी है कि मै वापूजीके वचन-पालनके लिअे आप लोगोसे विदा मागने आया हू। जिन भाअीको मेरे शब्दोसे दु ख पहुचा है अुनसे मै नतमस्तक होकर क्षमा मागता हू। अुनके आशीर्वाद लेकर यहासे विदा लेना चाहता हू। आशा है कि वे भाअी मुझे क्षमा कर देगे।

मै वापूजीके पास आया और सभाका सव हाल अुन्हे सुनाया। अुनको वडा आनन्द हुआ। मेरे भी आनन्द और अुत्साहका पार नही था।

मुझसे बापूजीने पूछा, कहा जानेका सोचते हो? सावरमती जा सकते हो। नाथके पास जाना हो तो वहा भी जा सकते हो। और भी कअी जगहोंके नाम वे गिना गये। मैंने देखा बापूजी वचनका पालन तो करना चाहते हैं, लेकिन मेरी व्यवस्थाकी चिन्तासे मुक्त होना नही चाहते। मैंने कहा, अैसी जगह नही जाअूगा जहा पर आपके नामका सहारा हो। जब यहासे जा ही रहा हू तो आपके नाम और प्रभावका भी मुझे अुपयोग नही करना है। बापूजीने कहा, तुम्हारा विचार मुझे पसन्द है। जब मेरी और बापूजीकी बात हो रही थी तब प्रभावती बहन* वही बैठी थी। मै जा रहा हू अिसका अुनके मनमे दु ख था। लेकिन मै बापूजीके नामका अुपयोग भी करना नही चाहता अिससे अुनको बहुत ही खुशी हुअी। और जब मै बापूजीके पाससे अुठकर आया तो वे भी मेरे साथ ही अुठकर आअी और अपने स्वभावके अनुसार हसकर बोली, आपने बहुत अच्छा सोचा है। हममे अितना आत्मविश्वास होना चाहिये कि बापूजीके नामके सहारेके बिना जगतमे अपने पैरो पर खडे रह सके।

रातके मेरे निवेदनने गावमे खलबली मचा दी और अुस भाअीका मन भी बदल गया। १०-१५ लोग मिलकर बापूजीके पास आये और बोले, आप बलवन्तसिहजीसे जानेको कहते है यह ठीक नही है। ये हमारे तो कामके आदमी है। हमारी जो भी कुछ अडचने होती है हम अिनको ही बताते है और ये हमको काफी मदद भी करते है। अिनको तो हम नही जाने देगे। बापूजीने कहा, "देखो गणपतरावके लडकेको जब बलवन्तसिहने धक्का मारा था तो मैंने गणपतरावसे क्षमा तो मागी थी, लेकिन साथ साथ यह भी वचन दिया था कि अगर बलवन्तसिह दुबारा गुस्सा करेगा तो अुसे आश्रम छोडना ही पडेगा। अुस वचनके पालनके लिअे मैंने अुसे आश्रम छोडनेकी सलाह दी है। नही तो आप लोगोको क्या, वह तो मुझे भी कितनी गालिया सुनाता है। अिसका हिसाब आप लोगोको क्या बताअू? तो भी मै सहन करता हू, क्योकि वह कामका आदमी है और अुसके मनमे मैल नही है। मैंने अपने वचन-पालनके लिअे अुसे जानेको कह दिया है। आप लोगोसे अेक बात और भी कह देना चाहता हू कि अुसके पाससे जमीन वापिस लेकर आपने अुसके प्रति अन्याय किया है। अुसने तो मेरे साथ झगडा करके अुस भाअीकी जमीन बचानेकी सद्‌भावनासे जमीन ली थी। अगर वह जमीन अुसको

---

* श्री जयप्रकाश नारायणकी पत्नी।

वापिस नही मिलेगी तो अुसके दिलमे अिसका दर्द वना ही रहेगा। अिसलिअे भी अुसका यहासे चला जाना ही अुसके लिअे अच्छा है। आपका धर्म है कि अुस भाअीको धर्म समझाओ और जमीन वापिस करा दो।" गावके लोगोने कहा, हम अिसका पूरा पूरा प्रयत्न करेगे। वापूजीने कहा, ठीक है अव वलवन्तसिहसे वात करो। मुझे हर्ज नही है, क्योकि मेरे वचनका पालन हो जाता है।

वे लोग मेरे पास आकर बोले, वापूजीको तो हमने राजी कर लिया है। अव आपसे कहते है कि हम आपको किसी भी तरह नही जाने देगे। और अूपरकी वापूजीके साथकी वातचीत सुनाअी। मैने कहा, मै तो वापूजीके वचन-पालन और आप लोगोकी नाराजगीके कारण जाना चाहता था। लेकिन अगर वापूजीके वचनका पालन हो जाता है ओर आप लोग मुझे रोकना चाहते है तो मै नही जाअूगा। जमीन वापिस मिले या न मिले, अिसकी मुझे चिन्ता नही है। मुझे तो दु ख अिस वातका हुआ था कि मेरा साथ आप लोगोमे से किसीने न दिया। लेकिन अव जो हुआ सो हुआ।

मेरे जानेका निश्चय हो जाने पर वापूजीने मुझे लिखा था

चि० वलवतसिह,

तुम्हारे मनमे खयाल यह रहना चाहिये कि यदि तुम्हारी तपश्चर्या शुद्ध होगी तो यही वापिस आओगे। कही भी रहो अुर्दूका अभ्यास नही छूटना चाहिये। हिन्दी अक्षर अच्छे वनाने चाहिये। खेती और गोपालनके शास्त्रका अभ्यास वढाना।

२७–८–'४१ वापूके आशीर्वाद

वापूजीने गावके लोगोकी आग्रहकी वात मुझसे की ओर जमीनकी वात भी वताअी। मैने कहा, "लोग मेरे पास भी आये थे। अगर आपके वचनका पालन हो जाता हो तो जमीन वापिस मिले या न मिले अुसकी मुझे चिन्ता नही है। क्योकि मै देख रहा हू कि लोगोके दिल साफ है।" वापूजीने कहा, "मेरा वचन तो गावके लोगोकी दया पर ही निर्भर था। वे लोग तुमको रखना चाहते है तो मेरा काम निवट जाता है।" और मै रुक गया।

अिस सारी घटनामे मैने वापूजीके चित्तकी अवस्थाका जो अध्ययन किया वह कभी भुलाया नही जा सकता। लेकिन मेरे हाथसे अेक वडा अवसर चला गया अिसका जरूर मुझे दु ख रह गया। अगर मुझे जाना पडता तो

मुझे आजसे भी अधिक लाभ होता और बापूजीके प्रेमका असिसे कहीं अधिक दर्शन करनेको मिलता। लेकिन अैसे अवसरके लिअे मेरे पुण्य अधूरे पडे। जो मिलता है सो भाग्यसे मिलता है। लेकिन जो मिला वह क्या कम है? अैसा सोचकर सतोष मान लेता हू।

मौनका आदेश और अुसका लाभ

आश्रमके अेक साथीसे मेरा कुछ झगडा हो गया था, क्योकि वे गोशालाके काममे अनधिकार दस्तदाजी करते थे। यह सब मैंने डायरीमे लिखा। बापूजीने मुझे बुलाया और कहा

"मैंने तुम्हारी डायरी पढ ली हे। अुसकी गलती तो मैं कबूल करता हू, लेकिन तुमको भी गुस्सा बार बार आना ठीक नही है। नही तो अितनी बडी जवाबदारी निभा नही सकोगे। नाव बिलकुल किनारे पहुचकर भी अगर डूब जाय तो अुसका सारा पानी पार करना व्यर्थ हो जाता है। बात सबकी सुनना लेकिन अुसमे जितना सार हो अुतना लेकर बाकी फेक देना। मैंने तुम्हारे बारेमे बहुत विचार किया कि तुमको कही बाहर भेज दू या आश्रममे कोअी अैसा काम दे दू जिससे किसीके साथ सघर्ष न आये। लेकिन तुम्हारे कामसे तुमको अलग करना भी ठीक नही लगता है। अिसलिअे मैंने अैसा सोचा है कि तुमको मौन रहकर काम करना चाहिये। तुम्हारे पास पचासो आदमी काम करते है और बार बार बोलनेका प्रसग आता है। लेकिन मौनसे भी बहुत बडे बडे काम किये जा सकते हैं। श्री अरविन्द घोष और मेहर बाबा बडी बडी सस्थाअे मौन रखकर चलाते हैं। मैंने भी कअी बार मौन रखकर काफी काम कर लिया है। प्यारेलाल पर गुस्सा करने पर मैंने तीन मास तक मौन रखा था। अुससे मुझे काफी फायदा हुआ था और मैंने काम भी काफी कर लिया था। फिलहाल तुमको अेक मासका मौन रखना चाहिये। अिसमे तुम अगर मीठी भाषा बोलना सीख गये तो ठीक है, नही तो और लबा मौन चलने देंगे। तुम्हारा बजट मैंने नामजूर नही किया है। बस, आजसे ही मौन रखा जाय।"

प्रार्थनाके बाद बापूजीके चरण छकर मेरे मौनका आरभ हुआ। बापूने आशीर्वाद देते हुअे कहा, "अिस सकल्पको ीश्वर पूर्ण ही करेगा।" मुझे भी अुस समय बडा अुत्साह था।

अुस समयका सारा चित्र आखोके सामने नाचता है। बापूका प्रेम, छोटी छोटी बातोमे भी हमको सभालकर चलानेकी अुनकी तत्परता और नीचे

गिरनेसे बचानेके लिअे पत्थरसे भी अधिक कठोरता। मैं सोचता हू कि किसी माता या पितामें ये गुण अपनी सन्तानके प्रति होते है तो भी अुनमे कही न कही कुछ ढीलापन आ ही जाता है। लेकिन बापू हमारे कल्याणकी दृष्टिसे ही सब कुछ सोचते और करते थे। वह हमें कडुआ लगे या मीठा लगे, अिसकी अुनको चिन्ता नही थी। यह मेरा मौन अेक महीनेके बजाय दो महीने तक बढा। शान्तिसे चला और कोअी भी काम मौनसे बिना रुका नही, बल्कि व्यवस्थित ढगसे चला। शहरके काम भी मौनसे ही चलते थे। कअी प्रसग अैसे आये जो मौनके कारण शातिपूर्वक निबट गये। अगर अुस समय मैं बोलता होता तो कुछ न कुछ झगडा जरूर होता।

अेक दिन मैं भोजनालयमें चावल नही दे सका, क्योंकि मगनवाडीसे साफ होकर नही आये थे और अितवार होनेसे धान कूटनेवाली स्त्री भी नही आअी थी। अुस सबबमें भोजनालयके व्यवस्थापक मुझसे बात कर ही रहे थे कि अेक बहन बीचमें कूद पडी और अुस विषयको लेकर अुन्होंने मुझे खूब गालिया सुनाअीं। यह भी कहा कि जितना मला है तभी तो मौन लेना पडा है। अुस अपमानको मैं सहन नही कर सका। परतु मौन होनेके कारण कुछ कह भी न सका। बापूजीको लिखा कि अपमान सहन करानेके बदले आप मुझे यहासे भगा दें तो अच्छा हो।

बापूजीने लिखा

"यह सब क्या है? अबलाके अपमानसे यह सब दुःख कैसे? मैं तो जानता भी नही कि बहनने क्या क्या गालिया दी। हमारी बहन गालिया दे अुसे भी घीकी नालिया समझें। मैं तलाश तो करूगा लेकिन किसी कारण मैं तुम्हारा लिखना पसन्द नही कर सकता हू। अपमान तो सहन करना चाहिये। तुम्हारे हसना था। और भागनेकी बात कैसे अुठती है? सब अपने आपको भगा सकते है। आश्रम तो तुम्हारा है। बहनका भी है। दोनो लडे तो कौन किसको भगावे? ठीक ही कहा है गीतामाताने कि जिसको क्रोध होता है अुसको समोह होता है, समोहसे स्मृतिभ्रश और अुसमे से बुद्धिनाश। यह तुम्हारा हाल पाता हू। सावधान हो लो और अपनी मूर्खता पर हसो।

१–१२–'४१ बापू

अिस प्रकार मौनके कारण और वापूजीके प्रेममय व्यवहारसे यह कठिन प्रसग यो ही टल गया।

मौनके सारे समयमे सिर्फ दो वार वोलनेके अवसर आये। अेक वार जमनालालजी और मीरावहनसे ४५ मिनट वात की थी। दूसरी वार कुछ ग्रामसेवक गोशाला देखने आये थे अुनसे थोडी वाते की थी। अिसके सिवा वडे आनदसे दो मास पूरे हुअे। ता० १६–१–'४२ को प्रार्थनाके वाद वापूजीको प्रणाम करके मैंने मौन छोडा। अुस दिन सरदार वल्लभभाअी पटेल वही थे। अुन्होने प्रेमसे डाटते हुअे कहा कि तुम्हारे जैसे किसानका काम मौन रखनेका नही है। वह महात्मा लोगोका काम हे। यदि मौन ही रखना हो तो भगवे कपडे पहनकर जगलमे भाग जाओ।

गोशाला-सम्वन्धी सूचनायें

मै गोशालाके लिअे कुछ नयी गाये खरीदना चाहता था। वापूने नयी गाये खरीदनेका विरोध करते हुअे कहा, "समझो, यह गोशाला, मकान और जमीन तुमको दानमे मिली है और अेक भी पैसा तुम्हारे पास नही है तो तुम क्या करोगे? यही न कि जो अधिक खर्च करना हो वह अिसमे से कमाकर करो? वस, अगर तुम्हे नयी गाये खरीदना हो तो वछडे वेचो, वछडी वेचो, दूधका पैसा जमा करो और जितनी रकम वचे अुससे गाये खरीदो। यो तो मेरे पास पैसे आते ही रहते है, अुनमे से मै खर्च भी कर सकता हू। लेकिन यह ठीक नही है। तुम्हारी खूवी तो अिसमे है कि अपने पैरो पर खडे होकर आगे वढो। मेरा तुम पर पूरा पूरा विश्वास है कि अिसमे से कुछ शुभ परिणाम लाओगे। अिसलिअे ही तो यह सव चल रहा है।"

भोजनालयमे दूध कुछ कम जाता था। अिस विषयमे भोजनालयकी शिकायत थी। मैंने वापूजीसे कहा कि अगर भोजनालयमे अधिक दूध देता हू तो वच्चोका पेट कटता है जिससे वच्चे कमजोर होते हे और गोशाला खराव होती है। वापूजीने कहा, "भोजनालयमे पूरा दूध देनेकी तुम्हारी जवावदारी नही है। जितना तुम चाहते हो अुतना दूध वच्चोको पिलानेके वाद ही जो दूध तुम्हारे पास वचे वह भोजनालयमे दो। तुम्हारा काम दूध पैदा करना नही है, अच्छे जानवर पैदा करना है। देखो, आज युरोपमे कैसा हत्याकाड चल रहा है? मनुष्य राक्षस वन गये हे। नीति-अनीतिका कुछ भान ही नही रहा है। अिस आगकी आच हिन्दुस्तानको नही लगेगी अैसा

कहना कठिन है। देखो, गुजरातमे बरसातसे कितना दर्दनाक नुकसान हुआ है? अिन सब बातोको देखते हुअे हमे अधिक विस्तार बढानेकी झझटमे बचना चाहिये।"

खजूरी गरीबोका वृक्ष है

हमने गोशालाके लिअे जो जमीन खरीदी थी, अुसमे खजूरके बहुतमे पेड थे। अुनके कारण घास होनेमे बडी कठिनाअी होती थी। मैंने अुनको कटवानेका निश्चय किया और तदनुसार ठेका दे दिया। श्री गजाननजी नायक अुस समय ताडगुड विभागके सचालक थे। अुन्होने अिसके खिलाफ बापूजीसे शिकायत की। बापूजीने मुझे बुलाया और अिसका जवाब पूछा। मैंने बापूजीसे कहा, वह जमीन साफ किये बिना अुसमे घास होना सभव नही है। मैं कमसे कम खजूरसे होनेवाली आमदनीकी चौगुनी आमदनी अुस खेतसे करनेका आश्वासन देनेको तैयार हू। चूकि खेतमे सुधार वगैरा करनेकी मेरी जिम्मेदारी है, अिसलिअे मैंने पेड काटते समय किसीको पूछनेकी जरूरत नही समझी।

बापूजीने लिखा

"मैंने मेरे हाथोमे सैकडो खजूरी काटी है और आखोके सामने कटवाअी है। वह वृक्ष मैं वापिस नही ला सकता। तुम्हारी दलीलके मुताबिक तो कोअी भी वृक्ष काट सकते है। हा, यह ठीक है कि तुमको अच्छा लगा सो किया। मुझे दुख तो हुआ कि तुमने अितने वृक्षोको काटा तो सबमे बहस करनी थी। खजूरी गरीबोका वृक्ष है। अुसके अुपयोग तुम्हे क्या बताअू? अगर सब खजूरी कट जाय तो सेवाग्रामका जीवन बदल जायगा। खजूरी हमारे जीवनमे ओतप्रोत है। घास अित्यादि दूसरी जमीनमे बो सकते थे। लेकिन हुआ अुसका दुख भूल जाना है। अुसमे से जो शिक्षा मिलती है ले तो अच्छा है। मैं तो वक्त नही निकाल सकता। गजाननसे बात करो, दूसरोको पढाओ। खजूरीके अुपयोगका हिसाब करो।"

१३-१-'४२ बापूके आशीर्वाद

जमनालालजी और गोसेवा

व्यक्तिगत सत्याग्रह समाप्त हो चुका था। अुस समयके बापूजीके विचार और प्रवचन तो महादेवभाअीकी डायरीमें छपे है। प्यारेलालजीके पास भी कुछ नोट होगे। रोज कुछ न कुछ चर्चा चलती ही थी। मैं दूसरे

देखता था, क्योंकि अुसमे शामिल होनेका मुझे समय नही था। अब वापूजी अेक नये आन्दोलनकी तैयारी कर रहे थे। सेवाग्रामकी भूमिमे अुनको 'करूगा या मरूगा' मत्रकी प्रेरणा भी मिली।

अुन्ही दिनो अेक रोज जमनालालजी वापूजीके पास आये। अुन्होने कहा कि अब मुझे राजनैतिक काममे रस नही रहा है। अब शातिसे वैठकर मै कुछ रचनात्मक काम करना चाहता हू। आपकी अिस वारेमे क्या सूचना है?

वापूजीने कहा, "काम तो अनेक है, लेकिन खादीका काम चरखा-सघ कर रहा है, ग्रामोद्योगका कुमारप्पा कर रहे है, नअी तालीमका आशादेवी और आर्यनायकम्‌जीने अुठा लिया है। गोसेवा सघका काम ही अेक अैसा है जो बढ नही सका है। अगर तुम अुसे वढा सको तो वह तुम्हारे लिअे योग्य है।" जमनालालजीको तो यही चाहिये था। अुन्होने वडे आनन्द और अुत्साहसे अिसे स्वीकार किया और अुसकी योजनामे लग गये। यो तो सस्थाके नामसे गोसेवा सघ वहुत दिनोका था, किन्तु अुसका काम अुल्लेखनीय अुन्नति नही कर सका था। जमनालालजीने सारे हिन्दुस्तानके गोपालनके विशेषज्ञोकी अेक सभा की। फरवरीके पहले सप्ताहमे सभा हुअी। अुस सभामे ता० १–२–'४२ को वापूजीने जो भाषण दिया, अुसके मुख्य अग ये है

"आजकल जिस तरह गोसेवाका कार्य हो रहा है, दूसरी सस्थाअे जो कुछ कर रही है, अुसमे और गोसेवाके काममे वडा अन्तर है। वह काम जनताके सामने नही आ रहा था। जमनालालजीके अिसमे पड जानेसे वह सवकी नजरमे आ गया है। गोरक्षाका दावा करनेवालोको गोशाला और गोवशकी हालतका ज्ञान नही है। अपनेको परम्परासे गोभक्त माननेवाले लोग अेक तरफ गोसेवाके नाम पर पैसा देते है और दूसरी तरफ व्यापारमे वैलोंके साथ निर्दयता करते है। मै किसीकी टीका नही करता। सिर्फ यह बताना चाहता हू कि हममे असली अुपायके प्रति अितना अज्ञान भरा है। यही बात मैने पिजरापोलोमे भी देखी। वहा भी विवेक, मर्यादा और ज्ञानकी कमी पायी।

मुसलमानोसे गोकुशी छुडानेके लिअे अुनका विरोध किया जाता है और गायको बचानेमे अिन्सानोका खून तक हो जाता है। लेकिन मै वार-वार कहता हू कि मुसलमानोसे लडकर गाय नही बच सकती। अिसमे तो और भी ज्यादा गाये मारी जावेगी।

असली दोष तो हिन्दुओंका है। घीका सारा व्यापार हिन्दुओंके हाथमें है। लेकिन क्या घी-दूध शुद्ध मिलता है? दूधमें मिलावट की जाती है, और जो पानी मिलाया जाता है, वह भी स्वच्छ नहीं होता। घीमें दूसरे पशुओंका घी और वेजिटेबल घी मिलाया जाता है। फूकेसे दूध निकाला जाता है। बाजारमें जो घी बेचा जाता है, उसे एक तरहसे जहर कहें तो ज्यादा नहीं है। न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया या डेन्मार्कमें विश्वस्त रूपमें गायका शुद्ध मक्खन मिल सकता है। लेकिन हिन्दुस्तानमें जो घी मिलता है, उसकी शुद्धताकी कोई गारटी नहीं।

मुझे यह देखकर आश्चर्य होता है कि हम भैंसके घी-दूधका कितना पक्षपात करते हैं। असलमें हम निकटका स्वार्थ देखते हैं, दूरका लाभ नहीं सोचते। नहीं तो यह साफ है कि अन्तमें तो गाय ही ज्यादा उपयोगी है। गायके घी और मक्खनमें एक खास तरहका पीला रग होता है, जिसमें भैंसके मक्खनसे कहीं अधिक केरोटीन यानी 'ए' विटामिन रहता है। उसमें एक खास तरहका स्वाद भी है। मुझसे मिलनेको आनेवाले विदेशी यात्री सेवाग्राममें गायका शुद्ध दूध पीकर लट्टू हो जाते हैं। और युरोपमें तो भैंसका घी, मक्खन कोई जानता ही नहीं। हिन्दुस्तान ही ऐसा देश है, जहा भैंसका घी-दूध इतना पसन्द किया जाता है। इससे गायकी बरबादी हुई है और इसलिए मैं कहता हू कि हम सिर्फ गाय पर ही जोर न देंगे, तो वह नहीं बच सकती। यह बड़े दुःखकी बात है कि सब गायें और भैंसें मिलकर भी हम चालीस करोड लोगोंको पूरा दूध नहीं दे सकती। हमें यह विश्वास होना चाहिये कि गायका महत्त्व इसलिए है कि वही काफी दूध, खेती और बोझा ढोनेके लिए जानवर देनेवाली है। वह मरने पर भी मूल्यवान है, यदि उसके चमडे, हड्डी, मास और अतडियोंका भी हम उपयोग करें।

पिंजरापोलोंका प्रश्न कठिन है। देशभरमें उनकी सख्या काफी है। शायद हर बड़े कस्बेमें एक-एक धर्मार्थ गोशाला होगी। उनके पास रुपया भी बहुत जमा है। लेकिन बहुतोंकी व्यवस्था बिगडी हुई है। उनका असली काम सूखे, बूढ़े और अपाहिज गाय-बैलोंका पालन करना है। इन सस्थाओंका काम दूधका व्यवसाय करना नहीं है। हा, वे चाहें तो एक अलग दुग्धालय या गोशाला विभाग रख सकती हैं। लेकिन उनका मुख्य धर्म यही है कि बूढे और अपग ढोरोंका पालन करें और चर्मालयके लिए कच्चा माल

भेजे। हर पिंजरापोलके साथ अेक-अेक सुसज्जित चर्मालय होना चाहिये। अुन्हे अुत्तम साड भी रखने चाहिये, जो जनताके भी काम आ सके। खेती और गोपालनकी शिक्षाका भी पवध अुनमे होना चाहिये।

गोसेवा सघने अपने सदस्योंके लिअे यह शर्त रखी है कि वे गायका ही घी-दूध खाये और गाय-बैलका मुर्दार चमडा ही काममे ले। अिस नियमके पालनमे वडी कठिनाअी यह बताअी जाती है कि जिनके यहा हम मेहमान बनते हैं, अुनको वडी दिक्कत और परेशानी होती है। लेकिन अिन कठिनाअियोको बहुत महत्त्व नही देना चाहिये। धर्मका पालन सदा कष्टदायी तो होता ही है। अुससे भागनेमे न बहादुरी है, न जीवदया।

आज तो गाय मृत्युके किनारे खडी है। और मुझे भी यकीन नही है कि अन्तमे हमारे प्रयत्न अुसे बचा सकेंगे। लेकिन वह नष्ट हो गअी, तो अुसके साथ ही हम भी यानी हमारी सभ्यता भी नष्ट हो जायेगी। मेरा मतलब हमारी अहिसाप्रधान और ग्रामीण सस्कृतिसे है। हमारा जीवन हमारे जानवरोके साथ ओतप्रोत है। हमारे अधिकाश देहाती अपने जानवरोके साथ ही रहते है और अक्सर अेक ही घरमे रात बिताते है। दोनो साथ जीते है और साथ ही भूखो मरते है। लेकिन हमारा काम करनेका ढग सुधर जाय, तो हम दोनो बच सकते है।

हमारे सामने हल करनेका प्रश्न तो आज अपनी भूख और दरिद्रताका है। हमारे ऋषियोने हमे रामबाण अुपाय बता दिया है। वे कहते हैं 'गायकी रक्षा करो, सबकी रक्षा हो जायगी।' ऋषि ज्ञानकी कुजी खोल गये है। अुसे हमे बढाना चाहिये, बरबाद नही करना चाहिये। हमने विशेषज्ञोको बुलाया है और हम अुनकी सलाहसे पूरा लाभ अुठानेकी कोशिश करेंगे।"

लेकिन ११ फरवरी, १९४२ को भगवानने अचानक जमनालालजीको अुठा लिया और सारे सकल्प जहाके तहा रह गये।

१९

बापूके पाचवें पुत्रका स्वर्गवास

११ फरवरीको सुवह आठ वजे में वर्धा लोहेका नागर लेने गया था। भैया वचुकी दुकान पर करीव साढे तीन वजे यह दुखद समाचार मिला कि जमनालालजीका स्वर्गवास हो गया। मुझे यह गप्प लगी, विलकुल ही विश्वास नहीं हुआ। क्योंकि वे कल ही मेरे साथ वात करके आये थे कि परसों आकर आपसे गोसेवाकी देशव्यापी योजना पर वात करूगा। आज अुनकी मृत्यु हो जाय यह कैसे सच हो सकता है? भैया वचुने अेक आदमीको अुधर दौडाया तो अुसने भी यही समाचार दिया। मैं अुनके मकानकी तरफ तेजीसे लपका तो क्या देखता हू कि अुनकी दुकानके सामने आदमियोका हजूम खडा है। और सचमुच ही जमनालालजी अिस जगतसे विदा हो चुके हैं। मैंने देखा कि अुनका सिर वापूजीकी गोदमे है और वापूजी गभीर मुद्रामे मानो अुनसे कह रहे हैं, 'भाअी, तू मेरा पाचवा पुत्र वना था तो मुझसे पहले जाना तेरा धर्म नही था।' अुनकी मृत्यु अचानक हुअी थी अिसलिअे सव हक्केवक्के हो रहे थे। मुझे वडे जोरका धक्का लगा और मेरे सारे मनोरथो पर पानी फिर गया। अिस विचारने मेरे पैरोंके नीचेकी मिट्टी खिसका दी, क्योंकि जवसे जमनालालजी गोसेवाका सकल्प लेकर वैठे थे तवसे मेरा अुनके साथ वहुत ही निकटका सवध हो गया था और मेरा पुराना मनोरथ पूरा होगा अैसी आशा वधने लगी थी। मैंने अनेक वार वापूजीके साथ झगडा किया था कि आपने जिस प्रकार चरखा सघ, ग्रामोद्योग सघ, हरिजन-सेवक-सघ, तालीमी सघ, आदिका काम देशव्यापी पैमाने पर किया है, अुस प्रकार गोसेवाके लिअे कुछ भी नही किया है, जो मेरी नजरमे अिन सव कामोसे अधिक महत्त्वका काम है। तो वापूजी कहते, देखो मैं किसी कामका आरभ नही करता। जैसी परिस्थिति होती है और जैसे सेवक मिल जाते है अुसी तरह काम भी आरभ हो जाता है। गोसेवाका काम मैं करना नही चाहता हू अैसी वात नही है। लेकिन अभी तक मुझे अैसा प्रभावशाली गोसेवक नही मिला है, जिससे मैं हिन्दुस्तानकी गायोको वचानेका काम ले सकू।

जवसे जमनालालजीने गोसेवाका काम सभाल लिया था तवसे मुझे आशा वध गअी थी कि अव गोसेवाका काम जमेगा। क्योंकि जैसे सेवककी वापूजी

तलाशमे थे, वैसा सेवक जमनालालजीमे अुन्हे मिल गया है और अुनके मार्फत बापूजीके अुद्देश्यकी पूर्ति हो सकेगी। मेरे जीवनमे जिन स्नेहियोंके वियोगका दु ख अमिट रहा हे, अुनमे जमनालालजीका स्थान सबसे अूचा है। लेकिन अुनकी मृत्युसे मेरा धीरज टूट गया और मुझे गोसेवाके प्रकाशकी जो किरणे दिखाअी देती थी, वे फिरसे गहरे अधकारमे विलीन हो गअी। मैने अनेक बार जमनालालजीको पुत्रवत् बापूजीके चरणोमे बैठकर अुनका प्यार पाते और अुनकी फटकार भी सुनते देखा था। मैंने जब अुनकी सारी जमीनका कब्जा लिया तब मुनीमोके कहनेसे कुछ ढीली बात करने पर जमनालालजीको बापूजीके सामने अेक मुलजिमकी तरह पेश कर दिया था। तब नम्रतासे अुन्होने सब कुछ मुझे सौपनेका आदेश अपने मुनीमजीको दे दिया था। अितना ही नही, वर्धासे सेवाग्रामकी सडकके आसपास जितनी जमीन मै चाहू अुतनी खरीदनेका अधिकार मुझे दे दिया था और अपने मुनीमजीको कह दिया था कि जब तक अपने अिस आदेशको मै वापिस न खीच लू तब तक बलवतसिंह जिस जमीनका सौदा जितनेमे कर ले अुतनी रकम मुझसे बिना पूछे अुसे चुकाते रहना।

वे बापूके पाचवे पुत्रके नामसे पहचाने जाते थे, लेकिन अुनके काम प्रथम पुत्रके थे। वे बापूके पुत्र थे, अुनके भामाशाह थे, अुनके सलाहकार थे, और अुनके सेवक थे। अुनकी ही भाषामे वे बापूजीके पीर-बबर्ची-भिश्ती-खर सब कुछ थे। अुनके चले जानेसे बापूजीकी अेक बाह टूट गअी थी। महादेवभाअीके जानेसे अुनकी दूसरी बाह भी टूट गअी। और बाने तो जाकर अुनका अन्तर ही खोखला बना दिया था। पू० जमनालालजीकी नम्रता, अुनकी महानता, अुनकी अुदारता और अुन सब पर चढे हुअे गोसेवाकी पवित्र भावनाके कलशको देखकर अुनके वियोगसे किसको दु ख नही होता? आखिर बहुत विचारके बाद मैंने अपने आपको धीरज बधानेका रास्ता ढूढ लिया या मुझे लाचारीसे ढूढना पडा था। मै सोचने लगा कि अीश्वरकी अिच्छाके बिना पत्ता तक नही हिल सकता तो अुसकी अिच्छाके बिना अैसी पवित्र महान आत्मा हमसे दूर क्योकर भाग सकती है। अन्दरसे अुत्तर मिला कि अुनका गोसेवाका सकल्प अितना महान था कि जर्जरित शरीर अुनका साथ दे नही सकता था। अीश्वरने सोचा होगा अैसे प्राणप्रिय भक्तके शुभसकल्पको जल्दीसे जल्दी किस तरह पूरा किया जा सकता है, अुसका अेकमात्र मार्ग यही हे कि अुसे अेकसे मिटाकर अनेकमे विलीन कर दू। यह जो जर्जरित शरीर अुनके सकल्पको पूरा करनेमे रुकावट डालता

है अुसको दूर कर दू। भगवानने अधिक काम लेनेकी गरजसे ही अुनको अपने पास बुला लिया। 'प्रभु तेरी गति लखि न परे।'

कुछ भी हो अुनका आरभ किया हुआ काम हर हालतमे अधिक वेगसे आगे बढेगा, अैसा मेरा आत्मविश्वास है। प्रभुसे प्रार्थना है कि वह मुझे बल दे, ताकि अुनकी आरभ की हुअी मशीनमे मेरा भी पुर्जेकी जगह पर अुपयोग हो सके।

बापूजीके मनमे तो अुनके चले जानेका डर था ही। वे कअी रोज पहलेसे कह रहे थे कि मुझे लगता है मैं जमनालालको खो दूगा। जब फोनसे अुनकी अकस्मात बीमारीका समाचार मिला तो बापूजी सर्पगधा औषधि लेकर ही निकले थे। लेकिन वे तो बापूजीके पहले ही चले गये। सारे वर्धामे और सेवाग्रामकी सस्थाओमे यह दु खद समाचार बिजलीकी तरह पहुच गया और हजारो लोग अुनकी श्मशान-यात्रामे शामिल हुअे। अुनका दाह-सस्कार अुसी शातिकुटीके सामने करनेका निश्चय हुआ, जहा सब छोड-छाडकर अुन्होने मात्र गोसेवाका ही ध्यान, अुसीका ज्ञान और अुसीकी भक्ति करनेका शुभ निश्चय किया था। जब अुनके पार्थिव शरीरको चिता पर रखा गया तो अुनकी धर्मपत्नी श्री जानकीबहनने अुनके साथ जलकर सती होनेका बहुत आग्रह किया। बापूजीने अुनको धीरज बधाते हुअे कहा कि "जमनालालजीके मृत शरीरके साथ जल जानेसे धर्मका पालन थोडे ही हो सकता है। धर्मका पालन तो जिस कामके लिअे अुन्होने अपना जीवन समर्पण किया था अुसको पूरा करनेसे होगा। किसीके प्रेम या मोहके वश होकर प्राण देना आसान है, लेकिन अुसके कामके लिअे जीना भारी काम है और वही अुसके प्रति सच्ची भक्ति और प्रेम है। बस, आजसे यह सकल्प करो कि जमनालालजीका काम मुझे पूरा करना है।"

जब जमनालालजीका शरीर अग्निदेवकी सीढियोसे आकाशकी तरफ धाय-धाय करके अुड रहा था, सबके चेहरे मुरझाये हुअे थे, बापूजी गमगीन थे, तब केवल विनोबाजी ही अुच्च स्वरसे अीशावास्योपनिषद्का अुच्चारण अिस प्रकारसे कर रहे थे, मानो यज्ञ चल रहा हो और होता अग्निमे म त्रोकी आहुति दे रहा हो। अुनके चेहरे पर अुदासी नही बल्कि अेक प्रकारका आत्मतेज था।

अुस दिन जमनालालजीकी पवित्र स्मृति हृदयपटल पर नाचती रही और मैं सोचता रहा कि अुनके अधूरे काममे मैं कैसे मददगार हो सकता हू, गोसेवाका काम कैसे सुव्यवस्थित हो सकता है?

शामको अुनके प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करनेके लिअे वर्धामे सभा थी। मैं भी अुसमे गया था। अुसमे अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुअे विनोबाजीने कहा कि "जमनालालजीके साथ मेरा २० सालका परिचय था। लेकिन अुनके मनकी जैसी अुन्नत अवस्था मैंने अिन मना दो महीनोमे देखी वैसी कभी नही देखी थी। मनकी अैसी अुन्नत अवस्थामे मृत्यु प्राप्त करना बहुत ही दुर्लभ है, जो जमनालालजी प्राप्त कर सके। यह सोचकर मुझे अुनकी मृत्युसे दु ख नही बल्कि आनद हुआ है। अैसी पवित्र मृत्यु पानेका हम सब प्रयत्न करे। जब आत्मा अपने सकल्पको शरीरमे पूरा होते नही देखता तो वह अुस शरीरको फेंककर सबमे प्रवेश करके अपना कार्य करता हे। वही जमनालालजीने किया है। अीश्वर हम सबको बल दे कि हम भी जमनालालजीकी-सी मृत्यु प्राप्त कर सके। ॐ शाति शाति शाति।"

जानकीदेवीने अपने हिस्सेकी सारीकी सारी सम्पत्ति गोसेवाके लिअे गोसेवा सघको समर्पण कर दी और अपना जीवन भी गोसेवामे लगानेका निश्चय किया। वे धीरजसे अपने काममे लग गअी। अुनके पास अिस प्रकारकी शास्त्रीय योग्यता तो नही है जो आजकलके जमानेको चकाचौंध कर सके। अुनका समझानेका और बात करनेका तरीका बिलकुल पुराने ढगका है। लेकिन अुनके दिलमे गोसेवाकी ही नही, बापू और विनोबाके हरअेक रचनात्मक काममे अपने आपको खपा देनेकी तमन्ना हे। मैं तो अुनको काफी सताता हू। और प्रेमसे वे भी मुझे काफी गालिया सुना देती है। लेकिन मेरी अुनके प्रति कितनी श्रद्धा है और अुनका मेरे प्रति कितना प्यार है, अिसका अन्दाजा दूसरोको चल नही सकता हे। दधीचिकी तरह अगर गोसेवामे अुनकी हड्डियोका अुपयोग हो सकता हो तो वे खुशीसे दे देगी। सारे देशमे गोसेवा, भूदान, सपत्तिदान आदिके कामसे अकेली ही घूमती रहती है। अुनकी अिस सेवा और लगनको देखकर भारत सरकारने अुन्हे पद्म-भूषणकी अुपाधि प्रदान की हे। अुनकी सादगीसे तो दूसरे भी तग आ जाते है। अगर मैं यह कहू कि अुन्होने बापूजीके अुस रोजके श्मशानके आदेश और आशीर्वादके अनुसार काम करनेमे कुछ भी अुठा नही रखा है तो अिसमे कोअी अिनकार नही कर सकता हे। अिसमे अुनकी पतिभक्ति, गोभक्ति, देशभक्ति, गुरुभक्ति, सब कुछ आ जाता है। अिसको कहते है शुभ सकल्प और दृढ निश्चय।

२०

गोशालासे विछोह और मेरी बेचैनी

जमनालालजीके स्वर्गवासके बाद गोसेवा सघका नया सगठन बना। अध्यक्ष माता जानकीदेवी बजाज, अुपाध्यक्ष श्री घनश्यामदासजी बिडला और मत्री स्वामी आनद बनाये गये। ये लोग चाहते थे कि बापूजीके आसपास ही गोसेवा सघका गोपालन केन्द्र खोला जाय। अिस दृष्टिसे अिन लोगोने आसपासके गावोमे जमीन तलाश की, लेकिन मौकेकी जमीन नही मिली। अेक रोज सरदार वल्लभभाअीने स्वामीसे कहा, अरे भाअी तुम अिधर-अुधर क्यो घूमते हो? आश्रमकी ही खेती और गोशाला लेकर काम करो ना। अब तक अुनके मनमे अिस प्रकारका विचार था या नही यह तो भगवान जाने, लेकिन सरदारजीके कहनेसे अुनको यह विचार ठीक लगा। बापूजीसे पूछा गया तो अुन्होने कहा, मैने अिस प्रकार सोचा तो नही है तो भी अगर बलवन्तसिंह और पारनेरकर राजी हो जाय तो मै राजी हो जाअूगा। स्वामीने मुझसे कहा कि हमने तलाश की है लेकिन आसपास कोअी ठीक जमीन नही मिल रही है। अगर न मिल सके तो हम आपकी जमीन और गोशालाका अुपयोग करना चाहते है। बापूजीने कहा है कि अगर आप और पारनेरकरजी राजी हो जाय तो मुझे कुछ भी हर्ज नही होगा। तुम बलवन्तसिंहजीसे बात करो। मैने कहा कि अगर बापूजी चाहते है तो मुझे क्या हर्ज है। स्वामीने कहा, अगर आपको प्रयोगके लिअे जमीन चाहिये तो थोडी हम दे सकते है। मैने कहा, मुझे कुछ व्यक्तिगत प्रयोग नही करना है।

मैने अपनी डायरीमे लम्बा नोट लिखा कि अगर बापूजी सचमुच ही खेती और गोशाला गोसेवा सघको सौपना चाहते हो तो भले सौपे, क्योकि आखिर यह सब अुनकी अिच्छासे खडा हुआ है। हा, मुझे दुःख तो जरूर होगा। क्योकि मैने अिसके निर्माणमे काफी शक्ति लगाअी है और जहा तक अिसे पहुचानेका सोचा था वहा तक नही पहुचा सका और बीचमे ही यह विघ्न आ गया। गोसेवा सघके साथ काम करना भी मेरे लिअे कठिन पडेगा, क्योकि दो कल्पनाअे साथ साथ नही चल सकेगी। अिसलिअे मुझे अपने आपको गोशालासे हटाना ही पडेगा। मै अुनका रास्ता साफ कर दूगा।

अिस पर वापूजीने लिखा अिसका अर्थ अिनकार है, अिमीलिअे तो मैंने कहा कि वलवन्तसिह और पारनेरकरको पूछो और वे लोग राजी हो तो मुझे कुछ अडचन नही होगी। वे लोग तुम्हारी वात समझे भी नही है। अुनसे वात करो।

२८–४–'४२ वापू

महावीरप्रसादजी पोद्दार और स्वामीने मेरे पास खवर भेजी कि आपको वापूजीने वुलाया हैं। अिस पर से मुझे लगा कि ये लोग वापूजीके मार्फत मुझे दबाना चाहते है। खवर लानेवालेसे मैंने कह दिया कि जव वापूजी वुलावेंगे तव चला जाअूगा। अुन लोगोको वीचमे पडनेकी जरूरत नही है।

मै कामसे कही जा रहा था। वीचमे स्वामी और पोद्दारजी मिल गये। वही अुन्होने वात दोहराअी और मुझे समझानेकी कोशिश की। साथ ही यह भी कहा कि वापूजीने हमसे कह दिया है कि तुम वलवन्तसिहको समझानेकी कोशिश करो। अगर वह नही मानेगा तो अेक आदमीके कारण अितना वडा काम रोका नही जा सकता हैं। अिसलिअे आप मान जाय तो अिसमे आपकी शोभा हैं। जिस परसे मुझे लगा कि ये लोग मेरे साथ औपचारिक भाषाका प्रयोग करना चाहते है। अिसके पीछे तलवार लटकती है। अुनकी वातचीतके अिस रुखने मुझे विद्रोही वना दिया। मैंने कह दिया कि अगर सचमुच अैसी वात है तो मुझे पूछनेका कुछ भी अर्थ नही है। क्योकि मै यह समझ गया हू कि मुझे केवल राजी रखनेकी कोशिश की जा रही है। होगा तो वही जो आप लोगोने ठान लिया हैं। तो मै अितना मूर्ख नही जो अिस डरसे राजी हो जाअू। तव तो आज तककी मेरी साधना फिजूल ही जावेगी। पोद्दारजीने कहा, भाअी आजका जमाना ही अैसा है कि औपचारिक भाषा वोलनी पडती है। जव आप जानते है कि काम तो होने ही वाला है तो राजीसे कबूल करनेमे आपकी भलमनसाहत होगी। अिस पर घनश्यामदासजी ३ लाख रुपये खर्च करनेवाले हैं। मैंने कहा, अैसी भलमनसाहत और घनश्यामदासजीके ३ लाख रुपयेकी मेरे पास कोअी कीमत नही है। अिस प्रकारसे मेरे साथ सधिकी कोशिश करना वेकार है।

वादमे मै वापूजीके पास गया और अुनसे पूछा कि आपने मुझे वुलाया था। वापूजीने कहा, मैंने तो नही वुलाया था। हा, अुन लोगोको तुमसे वात करनेको कहा था। तुमको कुछ कहना हो तो कहो। अितनी वात मुझे

लगती है कि गोशाला गोसेवा सघको देनेसे मेरे सिरका भार हलका हो जावेगा। लेकिन तुम सोचो। मैंने वापूसे कहा कि मैं सव आश्रमवासियोंसे मिलकर आपको वताअूगा।

वादमें श्री चिमनलालभाअी और मुन्नालालभाअीके साथ वैठकर विचार किया। हम तीनो अिस नतीजे पर पहुचे कि अगर गोशाला अुनको देना ही हो तो मेरा समावेश अुसमें नही हो सकेगा। दोपहरके भोजनके वाद जानकीवहन आअी और कहने लगी, आप थोडे अुदार वनो। मैंने कहा, मेरा काम करनेका तरीका अलग है और अुनका अलग होगा। अिसलिअे या तो मुझे हटाकर पूरा काम ले लो या मेरे हाथके नीचे अपने प्रयोग करो। मेरे पास वीचका रास्ता नही है। मैंने अपने जीवनमे आजतक जो सीखा है अुसे मैं खोना नही चाहता हू। अिसमे वापूजीका भी काफी हाथ है। घनश्यामदासजी या और कोअी अिसमे ३ लाख खर्च करेगे अिसकी मेरे नजदीक कुछ भी कीमत नही है। हा, वापूजी मुझे योजना दे और अुसके लिअे पैसा दे तो अुसे पूरा करनेका मैं सामर्थ्य रखता हू। लेकिन कठपुतली वनकर मैं कुछ भी करनेको तैयार नही हू। वादको मैं सतरेके वगीचेमे जाकर सो गया। शामको अुडती हुअी खवर मिली कि खेती और गोशाला वापूजीने गोसेवा सघको सौंप दी है। साथ साथ यह भी खवर मिली कि गोसेवा सघ मुझे साथ रखनेके लिअे तैयार नही है। दूसरी खवरका तो कुछ भी अर्थ नही था, क्योंकि मैं खुद ही साथ रहनेको तैयार नही था। लेकिन मुझे विश्वास नही होता था कि मेरे साथ पूरी वात किये विना वापूजी अैसा कर सकते है। मैंने अपने मनके विचार डायरीमे अिस प्रकार लिखे अगर वापूने सचमुच अैसा किया हो तो मेरी और वापूजीकी वडी कसौटी हो जावेगी। मैं मन ही मन कह रहा था कि देखू अीश्वर क्या चाहता है। अपनी वात पर अटल रहनेका अीश्वर वल दे यही प्रार्थना है। वाकी जगतके सम्वन्ध तो स्वार्थसे सने हुअे ही रहते है, लेकिन वापूजीका सम्वन्ध निःस्वार्थ भावसे जुडा है। अगर वह भी टूटा तो मुझे अेक वहुत वडा पाठ सीखनेको मिलेगा। मेरी अीश्वर पर पूरी श्रद्धा है कि वह जहा भी मुझे ले जायगा, वहा मेरे कल्याणके लिअे ही ले जायगा। अगर मुझसे और भी शुद्ध और कठिन साधना करानी होगी तो मुझे यहासे जवरन् अुठा ले जायगा और अिससे भी लायक वनानेकी परिस्थितिमे रख देगा। अिसका मुझे पूर्ण विश्वास है।

भगवान, तू कितना ही नाच नचा लेकिन आखिर तो तुझे ही व्यवस्था

करनी होगी। आज तकके अनुभवके आधार पर मैं कबूल करता हूं कि तूने मेरा कल्याण करनेके लिअे ही पहले कड़ुआ घूंट पिलाया है। अिसलिअे अिस अंधकारकी आड़में मुझे तेरी ज्योति नजर आती है। हालांकि मैं अभी तक अुसके लायक नहीं बना हूं। तेरे अूपर विश्वास जरूर है। यह तेरी मेरी गूढ़ सगाओी किसीको मालूम न हो अिसका भी मैं ध्यान रखता हूं। और तू भी रखता है। यह बात कागज पर लिखना भी अपना भेद खोलना है। मौन में ही सब कुछ समाया है। गुड़की मिठासकी व्याख्या करने बैठना मूर्खता नहीं तो और क्या है? बस होने दे तमाशा और देखने दे मुझे कैसा आनंद आता है।

मैंने बापूजीको लिखा

परम पूज्य बापूजी,

गोशालाके बारेमें आपके सामने मेरे बारेमें महावीरप्रसादजीने जो बात कही है वह अेकपक्षीय है, क्योंकि अुस समय मुझे भी बुलाना चाहिये था। आपसे यह कहा गया है कि बलवन्तसिंह तो यह कहता है कि मेरे साथ संधि नहीं हो सकती है। मैं आपको बता देना चाहता हूं कि अुन्होंने मुझे धमकी दी थी कि आप न मानोगे तो भी काम तो होने ही वाला है, अच्छा है आप समझ जायं। अिस पर मैंने कहा कि अगर यही बात है तो मुझे पूछनेका कुछ भी अर्थ नहीं रह जाता और अिस प्रकार धमकीकी तलवार मेरे सिर पर लटकाकर आप मुझे झुका नहीं सकते। अगर आपकी धमकीसे मैं झुक जाअूं तो आज तकका मेरा प्रयत्न व्यर्थ हो जायगा। अिसलिअे मैंने कहा था कि अिस मनोवृत्तिसे मेरे साथ संधि नहीं हो सकती। जब तक मुझे अैसा न लगे कि मेरी राय अमान्य हो सकती है, तब तक अिस डरसे कि अच्छा है अिनकी ही बात मान लूं, मैं क्यों अपनी बेअिज्जती करूं? यह बात मेरे स्वभावमें नहीं है कि मैं किसीके डरसे झुक जाअूं। आपने जो फैसला किया होगा वह तो ठीक ही होगा। लेकिन मुझे समझाकर और मेरी बात समझकर आप फैसला करते तो अच्छा होता। दूसरोंकी बात सुनकर किया होगा तो मुझे अिस बातका दुःख होगा कि मेरी बात बिना सुने फैसला क्यों किया। आप अपने फैसलेसे जल्दी सूचित करेंगे तो मुझे शांति मिलेगी।

कृपापात्र

बलवन्तसिंहके प्रणाम

यूपरकी डायरी और पत्र, जो डायरीमे ही था, पढनेके बाद मेरी डायरीमे बापूजीने लिखा

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा सब लेख पढ गया। मुझे बडा दु ख होता है। यहा ओीश्वरका नाम लेना अज्ञानसूचक है। तुम्हारे लेखमें अहकार भरा है। तुमको बुलाकर क्या फैसला करना था? गोसेवा सघ हमारा सब काम ले ले तो हमें खुश होना है। अुनमें से किसीको स्वार्थ नही है, तो भी तुमको स्वार्थकी बू आती है। तुमको धमकी देनेकी बात कहा है? जानकीबहनको तो बेचारीको मैने भेजा था। तुमको विनय करने आयी थी। मैंने भी कहा, विनय करो। ठीक है जो अच्छा लगे सो करो। मैं तो अब भी कहता हू कि जैसा सबवाले कहे वैसा करो। अिसमे तुम्हारी शोभा है। तुम्हें मुझको कुछ समझाना है तो समझाओ। वे लोग भी तो सब मुझको पूछकर ही करनेवाले हैं। वे भी तुम्हारे जैसे ही सेवक हैं। वे भी अुसी ओीश्वरको भजते हैं जिसको तुम। फरक अितना है, तुम नाम ओीश्वरका लेकर काम अपना ही करना चाहते हो। अहता अितनी है कि किसीके साथ काम नही कर सकते हो। जरा नीचे अुतरो, जरा समझो।

१–५–'४२ बापूके आशीर्वाद

अिसके अुत्तरमे मैंने लिखा

परम पूज्य बापूजी,

आपका लेख पढकर मुझे अितना दु ख हुआ कि आज तक कभी नही हुआ था। अिसमे अितना रोष है कि अुसे हजम करना मेरी शक्तिके बाहरकी चीज है। अहिंसाकी तो अिसमे बू तक मुझे नही आती है। 'नाम ओीश्वरका लेकर काम अपना ही करना चाहते हो।' यह मर्मभेदी वाक्य आपकी कलमसे!! 'तुमको बुलाकर फैसला क्या करना था?'—आपके अिस वाक्यने मेरी सारी भावनाओंको कुचल डाला है। वे सेवक नही है या ओीश्वरको नहीं भजते या ओीश्वरका काम नहीं करते है, अैसा मैंने कभी नही कहा है। चूकि आप सबके अन्तरकी बात जानते हैं अिसलिअे अैसा कह सकते हैं कि नाम ओीश्वरका लेकर काम अपना ही करना चाहते हो। मेरे लिअे आपका यह वाक्य जले पर नमक डालता है।

बापू, आप मेरे प्रति अितना अविश्वास भी रख सकते हैं, अिसका मुझे आज पता चला! दरअसलमे मेरा वह लेख आपके लिअे नही, मेरे लिअे ही था। खेती और गोशालाके अेक अेक झाड और अेक अेक जानवरके साथ मेरा आत्मीय सबंध है। वह किसीको दिखानेके लिअे नही या ओीश्वरका नाम लेकर अपना ही काम करनेके लिअे नही है। अुसके पीछे मैंने अपने खूनका पसीना बहाया है। वह नाम या अपने कामके लिअे नही। अुसके करने और सोचनेमे जो आत्मिक संतोष मिलता है, अुसके लिअे आप या और कोओी अिसमे मेरा स्वार्थ माने तो भले माने। अगर नाम ओीश्वरका और काम अपना ही किया होता तो आप या और कोओी मुझसे अिस चीजको अिस तरहसे छीन नही सकता था। अेक तरफ तो आप यह कहते हैं कि बलवन्तसिंहको राजी कर लो और दूसरी तरफ लिखते हैं 'तुमको बुलाकर क्या फैसला करना था?' मुझे लगता है कि आपका काम था कि मुझे बुलाकर समझा देते कि गोशालाकी भलाओी संघको ही देनेमे है और तुम संघकी दृष्टिसे काम करो। तो मैं आपकी बातका अिनकार थोडा ही करनेवाला था। श्री जानकीबहनको मैंने साफ कह दिया था कि अगर बापूजी चाहे तो मैं गोसेवा संघके पैमाने पर काम कर सकता हू। संघके साथ काम करनेमे मुझे यह अडचन थी कि अगर संघवाले की दृष्टिसे यहाका सारा कार्यक्रम बनाये और अुसको मेरे अूपर लादना चाहे तो अिसे मेरी आत्मा बर्दाश्त नही कर सकेगी और अिससे अुनको भी अपने विचारके अनुसार काम करनेमे अडचन होगी और मुझको भी। अगर मैं अुनसे दबकर काम करूगा तो मेरा तेजोवध होगा और काम भी बिगडेगा। अिसलिअे पहलेसे ही अलग हो जाना सुरक्षित मार्ग है। हो सकता है अिसमे मेरी भूल हुओी हो। स्वामी या पोद्दारजीके साथ काम करनेमे मुझे किसी प्रकारकी अडचन नही थी।

गोसेवा संघका काम बढे और फले-फूले, अिससे मुझे जितनी खुशी हो सकती है अुतनी थोडी है। आपको याद हो तो मैं आपसे कओी बार झगडा हू कि आपने जिस प्रकार चरखा संघ, ग्रामोद्योग संघ अित्यादिका काम व्यापक रूपसे किया है, अुसी प्रकारसे गोसेवा संघका क्यो नही करते हैं। मुझे लगता है कि आपने जो लिखा है अुस पर फिरसे विचार करियेगा। मेरा लेख भी फिरसे पढियेगा। अगर फिर भी अुसका अर्थ यही निकले

कि मैं नाम ओिश्वरका लेकर काम अपना ही करना चाहता हू तो अैसे स्वार्थी आदमीके लिअे आपके पास स्थान नही होना चाहिये। . "

मैं यह सब लिख रहा था कि वापूजीका वुलावा आ गया। मैं गया। वापूजीने कहना आरभ किया "देखो मेरे मनमे गोशाला सघको देनेका विचार नही था। लेकिन मेरे ही आसपास अिनकी काम करनेकी अिच्छा रही, जो ठीक भी थी। क्योंकि मैं भी देखना चाहता हू कि ये लोग कितना काम कर सकते है। अिनको दूसरी अुपयुक्त जमीन न मिली तो मुझसे पूछा। मैंने कहा अगर वलवन्तसिंह और पारनेरकर राजी हो जाय तो मैं राजी हो जाअूगा। अिसलिअे ये लोग तुम्हारे पास गये। अिसमे धमकीकी क्या वात थी? तुमको तो खुश होना चाहिये था कि ये लोग गोसेवाका वडा काम करना चाहते है तो अपना भार अितना कम हुआ। मेरे सिर पर तो लडाअी झूल रही है। कब क्या होगा कहना कठिन है। तो यह भार हलका हो जाय तो अच्छा ही है। तुम्हारा धर्म है कि तुम अुनके साथ काम करो और अुनकी मदद करो। अपने अनुभवका लाभ अुनको दो। आखिरमे वे भी तो गोसेवा ही करना चाहते है। तरीकेमे फरक हो सकता है तो अेक दूसरेको अपनी वात समझाकर आगे वढ सकते हो। मेरी सलाह है कि तुम अपनी सेवा गोसेवा सघको दो। हा, यह दूसरी वात है कि वे तुम्हारी सेवाका अस्वीकार कर दे तो तुम्हारा रास्ता साफ हो जायगा। लेकिन अपनी तरफसे अिनकार करना किसी भी तरह अुचित न होगा। तुम अिस पर विचार करो। मैं कहता हू अिसलिअे नही लेकिन जब तुमको भी अैसा लगे कि तुम्हारे सहयोगसे अच्छा काम हो सकता है और गोवशकी सेवा हो सकती है तो तुम्हारा धर्म हो जाता है कि तुम अुनके साथ काम करो।"

वापूजीकी वातसे मुझे पूरा समाधान तो न हुआ, लेकिन मनमे जो अुद्वेग था वह कुछ कम हो गया। मैंने विचार किया कि अगर मुझे काम करनेकी स्वतत्रता मिली तो मैं आश्रमकी तरफसे ही गोसेवा सघके साथ काम करनेके लिअे अपने आपको तैयार कर लूगा। और जो कुछ अडचन आयेगी वह वापूजीके सामने रख दिया करूगा। आखिर सघबलसे अधिक काम वढनेकी आशा तो की ही जा सकती है।

मैंने अपना यह विचार और सारी डायरी किशोरलालभाअीको पढाअी और कहा कि आपको कष्ट देनेकी अिच्छा तो नही थी। लेकिन क्या करू?

बापूजीके लेखसे मुझे भारी आघात पहुंचा है। असा लिखकर बापूजीने भारी भूल की है। मेरी आन्तरिक भावनाके बारेमें असा निर्णय देना अुनके लिअे योग्य नहीं था।

किशोरलालभाअीने सब पढा और कहा कि 'अब अिसके बारेमें अधिक खुलासा करनेसे कुछ लाभ न होगा। मेरा असा अनुभव है कि असी बातोंको भविष्यके अूपर छोड देना चाहिये। जिसकी भूल होगी अुसको महसूस हो जायगी। मैं अब आपका अिस तंत्रमें रहना लाभदायी नहीं मानता हूं। क्योंकि अिसकी शुरुआत ही बिगड गअी है। आप संतोषपूर्वक काम कर सकेंगे असा मुझे नहीं लगता है। अिसलिअे अगर आपको कुछ करना है तो छोटे पैमाने पर अलग ही स्वतंत्रतापूर्वक करना चाहिये, जो सेवाग्रामके किसानोंके लिअे अुपयोगी हो सके और आपको भी संतोष मिल सके।' किशोरलाल भाअीकी यह बात मुझे पसन्द आअी। लेकिन यहां पर अलग काम करनेमें अनेक बाधायें आयेंगी, असा सोचकर अलग काम करनेका विचार मैंने छोड दिया और तय किया कि अगर संघवाले मेरी मदद चाहेंगे तो जरूर दूंगा। मैंने बापूजीको लिखा

सेवाग्राम, ३-५-'४२

परम पूज्य बापूजी,

मैंने अपनी सारी डायरी पू० किशोरलालभाअीको पढाअी है। वे मेरी और संघकी भूमिका समझ गये हैं असा मुझे लगता है। मैं नाम अीश्वरका लेकर काम अपना करना चाहता हूं, यह लिखकर और मुझे बिना समझाये गोशाला संघको देकर मेरे साथ आपने न्याय किया या अन्याय, अिसकी दलीलमें न पडकर अिसे मैं भविष्यके अूपर छोडता हूं। अगर अपनी भूल समझमें आवेगी तो आपसे और संघसे क्षमा मांगनेमें मुझे शर्म नहीं आयेगी। मैंने अपनी सारी कठिनाअी पू० किशोरलाल भाअीको समझा दी है। मेरा गोसेवा संघके साथ कैसे मेल बैठ सकता है अिसका रास्ता आप निकालकर मुझे बतानेकी कृपा करियेगा। जब आपको समयकी अनुकूलता हो बुला लीजियेगा।

कृपापात्र
बलवन्तसिंहके प्रणाम

गोशालासे बिछोह और मेरी बेचैनी

सेवाग्राम, ४-५-'४२ डायरीसे

आज शामकी प्रार्थनाके बाद बापूजीने मुझे बुलाया। पू० किशोरलाल-भाओी भी वही पर थे। अुन्होने सघकी और मेरी सारी मनोभूमिका समझाओी। बापूजीने कहा, गोसेवा सघने हमारा भार हलका कर दिया यह तो अच्छा ही हुआ। मेरी राय है कि बलवन्तसिहको यही रहना चाहिये। कभी अैन मौके पर काम आ जायगा। जाना चाहे तो जा भी सकता है। मैने कहा, सेवाग्राममे ही रहनेका आग्रह नही है, लेकिन अेकाअेक आपको छोडकर जानेकी अिच्छा भी नही है। अगर आप मेरी भावनाको समझ गये है और अुसकी रक्षा करते हुअे गोसेवा सघमे मेरी सेवा देना चाहते है तो मै अपने आपको तैयार कर लूगा। बापूजीने कहा, यह तो बडी खुशीकी बात है। अगर वे तुम्हारा अुपयोग करना नही चाहे तो मै अेक मिनट भी तुमको अुनके पास नही रखना चाहूगा। और किशोरलालभाओीसे बोले, तुम कल स्वामीसे बात करके सब तय कर देना और मुझे आखिरी खबर सुना देना। हमारी यह बात करीब अेक घटे तक चली।

सेवाग्राम, ५-५-'४२ डायरीसे

आज पू० किशोरलालभाओीने मुझे, स्वामीको, पारनेरकरजीको और चिमनलालभाओीको बुलाकर सब बाते की। स्वामीने मेरी सेवा लेनेसे अिनकार कर दिया।

बस, मेरा रास्ता साफ हो गया। बापूजीने जो कल कहा कि तुम्हारे काममे कोओी दखल नही देगा यह बात गलत सिद्ध हुओी और अब यह बात नही रही कि मै गोसेवा सघके साथ काम करना नही चाहता हू। पू० किशोरलालभाओीने हम दोनोसे सद्भावना बढानेको कहा। गोशालाका चार्ज आज ही देनेका तय हुआ और मैने २ बजे भाओी कमलाकर मिश्रको चार्ज दे दिया। अेक रोज स्वामीने किशोरलालभाओीसे शिकायत की कि बलवन्तसिह गोशालाके मजदूरोको बहकाता है, अिसलिअे वे काम छोड रहे है। किशोरलाल-भाओीने कहा अिसका अर्थ तो यह है कि बलवन्तसिह सेवाग्राम भी छोड दे। स्वामीने कहा, हा यही है। किशोरलालभाओीने यह बात बापूजीको बताओी तो बापूजीने कहा, बलवन्तसिह अैसा कर ही नही सकता है। स्वामी तो कल यह कहेगा कि बाको भी यहा न रहने दो, तो क्या मै बाको निकाल

दूगा? बलवन्तसिंह कहीं नहीं जायगा। बापूजीके अिस प्रेम और दृढताको देखकर मेरा सारा दुःख हलका हो गया। असलमें तो मैंने अिसमें अुलटा ही किया था। सब नौकरोंको मैंने समझाया था कि कोअी काम न छोड़ें और अच्छा काम करें, क्योंकि मेरे मनमें अुनका काम बिगाडनेकी कल्पना ही नहीं थी। लेकिन वहमकी दवा तो लुकमानके पास भी नहीं होती। फिर भी बापूजीका मुझ पर विश्वास है। मेरे लिअे अितना बस है।

अन्त भला तो सब भला। गीतामाताने कहा है, 'यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्। तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम्। (अ० १८, श्लोक ३७) मेरी बात अुस रोज सबको कडवी लगी थी। और मेरे हाथसे गोशाला निकल जानेका मुझे भी दुःख हुआ था। लेकिन आज जब अपनी अिस डायरीके पन्ने अुलटता हूं तो मुझे लगता है कि मेरी बात ही सही थी। आज सेवाग्राममें न तो गोसेवा संघ है, न अुसके कार्यकर्ता हैं।

२१
सेवाग्राम आश्रमके अुद्योग

१
खजूर-गुड और नीरा

भाअी गजाननजी नायक बापूजीके पास कैसे आये, अिसकी पूरी जानकारी मेरे पास नहीं है। लेकिन अैसा लगता है कि ये भाअी मगनवाडीमें ग्रामोद्योगके विद्यार्थी बनकर ही आये थे। कुछ दिन तो अुन्होंने सिंदी गांवमें ग्रामसफाअीका तथा नीरा और गुडका काम किया। लेकिन जब हमारा सेवाग्राममें डेरा जमा तो बापूजीने सेवाग्राममें नीरामें गुड बनानेका काम आरंभ करनेकी ठानी और अिसके लिअे भाअी गजाननजी नायक वहां आ गये। सेवाग्राममें खजूर तो काफी थी। अुसमें लोग ताडी निकाला करते थे। चटाअी और पंखे भी बनाते थे। लेकिन बापूजी तो अुससे गुड बनाना चाहते थे। अिसलिअे सरकारसे खास अिजाजत लेकर मीठी नीरा लोगोंको पिलाने और गुड बनानेका काम आरंभ किया गया। भाअी गजाननजी खजूरका रस निकालनेवालोंके साथ खुद भी खजूर पर चढते, नीरा निकालते तथा अुसका गुड बनाते। आश्रममें भी नीराका नाश्ता होने लगा। गांवके लोग भी वहीं जाकर

नीरा पीने लगे। दो पैसे गिलासमे आधा सेर मीठे पेयके रूपमे लोगोको वडा पोपण मिल जाता था। जब गुडके अनेक नमूने भाओी गजाननजी वापूजीके सामने रखते तो वापूजी सवकी वानगी अुठा अुठा कर देखते और खुश होते थे। वापूजीकी खुशीको देखकर भाओी गजाननजी फूले न समाते। हम सब लोग अुसी गुडका अुपयोग करते थे। अेक दिन वापूजीने मुझसे कहा, "तुम गजाननके कामको देखते हो या नही? वह भी तो अेक ग्रामसेवाका ही काम है न? और तुम तो यहाके भूमिया हो। हर काममे रस लेना ओर अुसकी कलाको सीख लेना तुम्हारा काम है। अिससे गजाननको भी मदद मिलेगी। अरे, खजूर भी तो अेक प्रकारकी गाय ही है न? देखो तो सही अुसका दूध तो तुम्हारी गायसे भी मीठा होता है। तुम तो पीते हो न?" असलमे मैं न तो नीरा पीता था, क्योंकि अुसमे अेक प्रकारकी गध आती थी जो मुझे पसद नही थी, और न गजाननजीके पास ही जाता था। वल्कि मेरा और अुनका तो झगडा भी हो गया था। क्योंकि मैंने अपनी गोचर भूमिमे से खजूरके हजारो पेड काट डाले थे, जिसका केस मेरे अूपर भाओी गजाननजीने वापूजीकी अदालतमें चलाया था। लेकिन जब वापूजीने आग्रहपूर्वक कहा तो मै गजाननजीके पास जाने लगा और यहा तक आगे वढा कि खजूर छेदनेमे अुनका चेला वन गया। मुझे खजूर पर चढकर अुसे छेदने और सुवह नीरा अुतारनेका अितना शौक लगा कि मेरे पैरोमे फोडे होते हुअे भी गामको खजूर छेदकर मटकी वाधने और सुवह अुसे अुतार कर गुड वनानेके लिअे मै लगडाता-लगडाता भी पहुच जाता था। वह काम मुझे वहुत ही पसन्द आ गया था। नीरा पीनेका अभ्यास भी हो गया था। आज भी अगर मेरे पास खजूरके झाड हो तो नीरा निकालनेकी वात मनमे है। भाओी गजाननजी तो अिस कलामे अितने पार-गत हो गये कि अुन्होने सारे हिन्दुस्तानमे अिसका प्रचार और सगठन किया। यहा तक कि दिल्लीमे भारत सरकारके ताडगुड-विभागके वडे अफसरका पद अुनको मिला। वडा पद मिलने पर भी अुन्होने न तो अुस पदका १६०० रुपया वेतन लिया, न अुसकी पहले दर्जेमे सफर आदि सुविधाओका ही अुप-योग किया। अपना वही पुराना परिश्रमी सेवकका ध्येय अुन्होने निभाया। अेक वार वात वातमे पू० श्रीकृष्णदास जाजूजीने मुझसे कहा था, देखो हमारे जो लोग सरकारमे गये अुन सवको वहाकी हवा लगे विना न रही। अेक गजानन ही अैसा है जो अुस हवासे वचा है।

वापूजीकी प्रयोगशालामेंसे अैसे अनेक सेवक निकले, जो आज भी अुसी चक्करमे घूम रहे हैं और देशकी अमूल्य सेवा कर रहे हैं। 'निकसत नाहिं वहुत पचि हारी रोम रोम अुरझानी'। अुनका प्रेम और आशीर्वाद अनेक सेवकोके रोम-रोममे अैसा रम गया है कि वे निकालना भी चाहे तो निकल नही सकता। भाअी गजाननजी नायक भी अुनमे से अेक हैं।

गजाननजी नायक शायद कोकणके हैं। अुन्होने मेट्रिक पास करके हाअीस्कूल छोडा। आजकल वे केन्द्रीय सरकारके ताडगुड-सलाहकार हैं। अखिल भारतीय खादी ग्रामोद्योग वोर्डके ताडगुड-विभागके सचालक हैं और वम्वअीमे रहते हैं।

२

कुम्हार-काम

भाअी चन्द्रप्रकाशजी अग्रवाल मगनवाडीमे कुम्हारका काम सीखते थे। अुनकी अिच्छा सेवाग्राममे वापूजीके निकट रहनेकी हुअी। वापूजीने अुन्हे अिजाजत दे दी। वे आ गये और लगे वरतन वनानेकी मिट्टी खोजने। वापूजीने कहा, "सेवाग्राममे या अिसके आसपास जहा पर भी अच्छी मिट्टी मिले तुम अुसकी खोज करो। यो तो आज भी देहातके लोग मिट्टीके ही वरतनोका अुपयोग अधिक करते हैं। अुनके पास धातुके वरतन खरीदनेके लिअे पैसे कहा हैं? और अैसे भी मिट्टीके वरतन स्वास्थ्यप्रद होते हैं। हा, अुनमे सुधारकी काफी गुजाअिश है। तुमको अिसमे अुस्ताद वन जाना है।"

भाअी चन्द्रप्रकाशजी अपनी धुनके पक्के थे। अुन्होने मिट्टीकी खोज तो की ही, अच्छे कुम्हारोकी भी खोज की। क्योकि आखिर तो कुम्हारीके ही धधेका विकास करना मुख्य अुद्देश्य था। वे कहीसे पाडुरग नामक अेक कुम्हारको खोज लाये। अुसके परिवारको आश्रममे लाकर वसा दिया और खुद भी अुसके साथ कुम्हार-काममे जुट गये। खाने-पीनेके नये नये नमूने, पालिशदार कटोरे, नमकदानी (क्योकि मसाला तो हमारी रसोअीमे था ही नही जो मसालादानी वनाते) वगैरा वरतन वनाते। सवसे मिट्टीके वरतनोमे ही खाने-पकानेका आग्रह करते। दूसरे खाते या न खाते, लेकिन वापूजी तो मिट्टीके वरतनमे ही खाते थे। लकडीका चम्मच और मिट्टीका कटोरा वापूके साथ अन्त तक रहा। जेलसे लाया हुआ लोहेका कटोरा और

पानीका टमलर भी बापूजीके साथ अन्त तक रहा । आश्रमके अेक कोनेमे कुम्हारका टडीरा, अुसके बच्चे-कच्चे, अुसकी मिट्टी, अुसकी गाडी, बरतनोका ढेर, बरतन पकानेका आवा! सारा अेक अद्भुत दृश्य था। जब नये नये नमूने बनाकर भाअी चन्द्रप्रकाशजी बापूजीको दिखाने लाते तो बापूजीकी खुशीका पार न रहता। अुनका अुत्साह बढानेके लिअे बापूजी काफी समय देकर अुनमे और भी सुधारकी सूचनाये करते। जिस प्रकार मुझे गोसेवाका ज्ञान प्राप्त करनेके लिअे देशमे कही भी जानेकी छूट थी, अुसी प्रकार भाअी चन्द्रप्रकाशजीको भी कुम्हार-कामके लिअे कही भी जानेकी छूट थी। अिसलिअे अुनको जहा जहा अच्छे कामका पता चलता वही वे दौड जाते। कुछ दिन काशी विश्वविद्यालयमे भी सीखने गये थे। चीनीके बरतनोका भी अुन्होने अभ्यास किया । नये सुधारोका कुम्हारोमे प्रचार भी खूब किया । और अेक बार तो सेवाग्राममे कुम्हार-सम्मेलन भी करा डाला।

खजूर और ताड वृक्षोमे नीरा निकालनेके बरतनोमे अुन्होने काफी सुधार किया था। पुराने ढगके बरतनोमे नीरा जल्दी खट्टी हो जाती और पीने या गुड बनाने लायक नही रहती थी । वे बरतन नीराको सोख भी जाते थे । भाअी चन्द्रप्रकाशजीने अैसी पालिश खोज निकाली जिससे नीरा जल्दी खट्टी न हो और बरतन अुसे सोखे भी नही। अिसका प्रचार अुन्होने सारे हिन्दुस्तानमे किया, जो काफी कामयाब सिद्ध हुआ । चन्द्रप्रकाशजी जातिके बनिये होनेसे दुकानदारीका काम भी अच्छा कर सकते थे। अुन्होने आश्रममे बापूजी और विनोबाजीके साहित्यकी छोटीसी दुकान भी आरभ कर दी, जो अेक पथ दो काज सारती थी । आनेवाले दर्शनार्थियोको अच्छा साहित्य सहज प्राप्त हो जाता था। और अुसमें से ही अुस कामका व्यवस्था-खर्च निकल आता था। यहा तक कि अुसमे से बची हुअी दस बारह सौ की रकमकी अेक थैली जब राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबू आश्रममे राष्ट्रपति बननेके बाद पहली बार गये तब अुन्हे भेट भी की गअी थी। मै तो अुनको प्रजापतिके नामसे ही पुकारता था। आज भी मेरा तो यही नाम चलता है। अुनका साहित्य-प्रचार और मिट्टीके बरतनोका प्रचार चालू ही है।

मुझे तो हसी आया करती थी कि कुम्हार-काम भी कोअी प्रचारका काम है, यह तो गाव-गावमे चलता ही है। लेकिन बापूजीकी दृष्टि बहुत ही बारीक और लबा सोचनेकी थी। वे देख रहे थे कि ग्रामोद्योगोंके साथ साथ हमारी ग्रामजीवनकी सस्कृतिका भी लोप होता जा रहा है । और लोग

छोटीसे छोटी चीजोके लिअे शहरो और बडे बडे कारखानोके गुलाम बनते जा रहे है। अिससे वे अपना पैसा और स्वास्थ्य दोनो ही बर्बाद कर रहे हैं। अिनको आत्मनिर्भर कैसे बनाया जाय, अिनकी आमदनीमे दो पैसे कैसे बचाये ओर बढाये जाय, यह खयाल तो था ही। दूसरी तरफ बापू जिस कार्यकर्ताकी जिस काममे रुचि देखते अुसको अुसी काममे अुत्साह देकर आगे बढाते थे। जैसे बच्चेको मा चलना सिखाती है और अुसके चलने लगने पर खुश होती है, अगर वह गिरता है तो अुसे अुठाते रहनेमें बिना थके आनन्दका ही अनुभव करती रहती है, अुसी तरह बापूजी भी करते थे। यह बापूजीकी दुहरी साधनाका मूलमत्र था।

चन्द्रप्रकाशजी अग्रवाल पेशावरके थे। मगनवाडीमे ग्रामोद्योगके विद्यार्थी होकर आये थे और सेवाग्राममे रहे थे। आजकल भूदानके साहित्यका प्रचार करते है।

अिस बार जब मै सेवाग्राममे गया तो वहाके कलाभवनमे खूब सुधरा हुअ। कुम्हार-काम देख कर मुझे बडी खुशी हुअी। अुसे वहाके कलाकार श्री देवीभाअी * चला रहे है। नये कुम्हार-चाककी शोध करके और साधारण मालमसाला लेकर वे अिस कामको खूब आगे बढा रहे है। मैंने जाते ही देखा कलाभवनमे काम करनेवालोकी भीड थी। अुनमे से आधेसे ज्यादा लोग कुम्हार-काममे जुटे हुअे थे। नअी नअी चीजो और नये नये आकारके बरतनोका ढेर लगा था। ग्रामीण जीवनके लिअे बरतन और सुन्दर खिलौने जोरोंमे बन रहे थे। वैसे तो सारा कलाभवन ही बडी कलात्मक जगह है, किन्तु मिट्टीका काम देखकर मेरा दिल खुश हो गया।

३

चर्म-अुद्योग

यो तो चर्मालय नालवाडीमे था। श्री गोपालरावजी वालुजकर अुसके सचालक थे। वे सप्ताहमे अेक रोज सुबह घूमनेके समय बापूजीसे अुसके विषयमे चर्चा करने नियमित रूपसे आते थे। अुसकी कठिनाअी, अुसमे सुधार आदिके विषयमे चर्चा होती थी। अेक रोज बापूजीने मुझे पूछा, वालुजकरके साथ जो

---

* श्री देवीभाअी शान्ति-निकेतनके प्रसिद्ध कलाकार श्री नन्दलाल बोसके प्रिय शिष्योमे से अेक है।

चर्चा होती है अुसे तुम सुनते हो न? मैं चुप रहा। क्योंकि मैं नियमित अुनकी चर्चाके समय हाजिर नही रह सकता था। अुसमे मेरी अितनी दिलचस्पी भी नही थी। बापूजी बोले, "देखो, तुम तो गोपालक और किसान हो न? किसानको चमडेकी जरूरत तो होती ही है। वह अपना कच्चा चमडा मुफ्तमे या कौडीमे दे देता है। और पके चमडेकी कीमत अुसे पूरी चुकानी पडती है। अिसमे अर्थशास्त्र तो है ही, लेकिन धर्मशास्त्र भी भरा है। तुमको तो आज मैं गोसेवाके लिअे तैयार कर रहा हू न? और तुम्हारी भी अिस काममे रुचि है। तो अुसका पूरा शास्त्र समझ लेना आवश्यक है। नअी तालीमके लिअे मैं यह कहता हू कि नअी तालीम माके गर्भसे आरंभ होनी चाहिये, तब ही हम अुसमे सफलता प्राप्त कर सकेंगे। लेकिन यह विषय आर्यनायकम् और आशादेवीका है। वे अुसे समझने और कार्यरूपमे परिणत करनेमे दिलोजानसे जुटे है। मैं जानता हू आशादेवी और आर्यनायकम् बनुनी (अुनका स्वर्गस्थ बच्चा आनन्द)को भूल नही सकते है। लेकिन मैंने अुनसे कहा है कि सेवाग्रामके और आसपासके देहातोंके सब बच्चे तुम्हारे हैं। सारे देशके बच्चे अपने समझोगे तो अुनमे तुम्हे बनुनीका दर्शन मिल जायगा। खैर, यह तो मैं विषयान्तरमे चला गया। तुमको तो यह कहने जा रहा था कि गायकी पूरी सेवा अुसके चमडे और अवशेषोंका पूरा पूरा अुपयोग करने तक जाती है। अगर हम गायको कसाअीकी छुरीसे बचाना चाहते है तो अुसे आर्थिक दृष्टिसे लाभकारी सिद्ध करना होगा। अुसमे धर्म और अर्थ दोनोंकी सिद्धि छुपी हुअी है। अुनके चमडेका तो अुपयोग है ही, लेकिन अुसके मास और हड्डियोंका अुत्तम खाद बन सकता है और पश्चिमके लोग बनाते भी है। वे हमारे यहासे हड्डिया कौडीके मूल्यमे ले जाते है और अुनका कीमिया बनाकर हमसे मोहरके दाम वसूल करते है। अुनके सामने हिंसा-अहिंसाका खयाल तो है ही नही। गायको जब तक जिन्दा रखते है तब तक अच्छी हालतमे रखते है, नही तो मारकर खा जाते है। लेकिन वे अुसके मृत शरीरका पूरा पूरा अुपयोग कर लेते है।

"हम तो अहिंसक है। अगर गायको माताका स्थान देते है तो हमारी जवाबदारी दुहरी हो जाती है। जिन्दा रहने पर अुसकी मा जैसी सेवा करे और अुसके मृत शरीरका पूरा पूरा अुपयोग कर ले। अिससे आर्थिक लाभ तो होगा ही, धर्मलाभ भी होगा। लोग कहते है हम हरिजनोंसे अिसलिअे अलग रहते है कि वे लोग चमडा निकालते है और मुरदार मास खाते है।

मुरदार मास तो वे गरीबीके कारण खाते है। वह स्वास्थ्यकी दृष्टिसे हानिकारक है, लेकिन अुसमे पाप है यह तो कैसे कह सकते है? पाप तो जिन्दा गायको कष्ट देनेमे हे। अैसे अुपयोगी और वफादार प्राणीको कत्ल करने और अुसको कत्लखानेके दरवाजे तक पहुचानेमे हमारा हाथ होता है जो हमारे लिअे शर्मकी बात है। चमडा निकालनेका काम तो पवित्र काम है। आखिर हम अपने माता-पिताको भी तो कधे पर अुठाकर ले जाते हैं, तो गायको या किसी भी मृत पशुको ले जानेमे कौनसा पाप है? पुण्य तो जरूर है।

"अस्पृश्यताकी जडमे यह भावना भी काम कर रही है। अिसीलिअे साबरमतीमे मैंने सुरेन्द्रको चमार बननेको कहा था। वह चमारोंके बीचमे जाकर रहा और चप्पल बनानेमे अुस्ताद बन गया। तुम्हारा तो वह मित्र है न? समझो तुम्हारी गाय मर गयी और दूसरे किसीने अुसके मृत शरीरको अुठानेसे अिनकार कर दिया तो तुम क्या करोगे? क्या अुसे घरमे ही सडने दोगे? अगर तुम खुद अुसका चमडा निकालोगे तो तुमको अुसकी बहुतसी बीमारियोका ज्ञान हो जायगा। डॉक्टर मृत शरीरकी चीरफाड क्यो करते है? अुसकी मृत्युका कारण जाननेके लिअे ही न? तो तुम अपनी गायकी मृत्युका कारण क्यो न जान लो? डॉक्टरोको तो कोअी अछूत नही मानता है। अरे, मनुष्य-शरीरमे तो पशुसे कही अधिक गदगी भरी पडी है। लेकिन हम डॉक्टरोका आदर करते है और बिचारे हरिजनोको दूर बैठाते है। मनुष्य-शरीरका तो मृत्युके बाद अुपयोग ही क्या है? अब तो यह घृणा यहा तक पहुच गअी है कि कोअी हरिजन साफ-सुथरा भी रहे तो लोग अुससे भी परहेज करते है। डॉ० आम्बेडकर तो बैरिस्टर है और वह किसी भी सवर्णसे स्वच्छतामे कम नही है। लेकिन अुनको भी कितना अपमान सहन करना पडा है यह तो अुनका दिल ही जानता है। जब डॉक्टर आम्बेडकर मेरे सामने जोरसे बोलते है तो मै अुनका दु ख समझ सकता हू और मुझे सवर्णोंके बरतावसे शर्मका अनुभव होता है।

"जो गायके लिअे मरनेकी बात तो करते है, लेकिन काम गायको मारने या मरने देनेके करते है, अुनके लिअे क्या कहा जाय? गायके घी-दूधका अुपयोग न करना, हलाली चमडेका अुपयोग करना, तेलको जमाकर अुसे घीका नाम या रूप देना अित्यादि गायको मौतके नजदीक पहुचानेके काम करना नही तो और क्या है? यह मै लबी कथा कह गया, क्योकि

यह सब तुम्हारे कामकी चीज है। तुमको तो लोगोंको यह भी समझाना होगा कि गाय आर्थिक और धार्मिक दोनों दृष्टियोंसे अनिवार्य है और हमारे जीवनकी पूरक है।

"गोशालाके साथ साथ अेक अच्छा चर्मालय तो चलना ही चाहिये, लेकिन तुमको यहां चलानेकी जरूरत नहीं है। क्योंकि नालवाडी यहांसे दूर नहीं है और वे तुम्हारे मृत जानवर ले जा सकते हैं और अुनकी तुमको पूरी कीमत भी मिल सकती है। लेकिन तुमको यह सब समझनेकी जरूरत है। तब ही तुम सच्चे और पूरे गोसेवक बन सकोगे। नहीं तो मैं तुम्हें फूटी बादाम (निकम्मा) समझूंगा।"

अैसा कहकर बापूजी हंस दिये। सेवाग्रामके मृत पशुओंको सेवाग्रामका चौकीदार मुफ्त ही अुठाता था और चमडेका अेक पैसा भी किसीको नहीं देता था। मैंने अपने पशुओंका चमडा मुफ्तमें देनेसे अिनकार कर दिया था। मजदूरी देकर मैं चमडा निकलवाकर नालवाडी भेज देता था और अवशेषोंको खादके खड्डेमें पूराका पूरा ही दबा देता था, जिससे अुनका मांस आदि तो सडकर खाद बन जाता था। हड्डियोंका भी काफी भाग गल जाता था और वे पीसनेके लिअे नरम हो जाती थीं। चमडा निकालते समय मैं भी कभी कभी निकालनेवाले भाअीको मदद करता था। लेकिन मैंने चमडा निकालनेकी कला पूरी तरहसे सीखी नहीं थी। हां, अन्दरके अवयवोंकी मुझे काफी जानकारी हो गअी थी। कभी कभी पूरा ही जानवर बैलगाडीसे नालवाडी भेज दिया करता था और अुसके पूरे पूरे पैसे वसूल कर लिया करता था। हड्डियोंका खाद भी बनाया था। हाथसे चमडा निकालनेका प्रसंग तो सीकरमें ही आया। जब मैंने और भाअी ब्रह्मदत्तजी शर्माने हाथसे चमडा निकाला तो सीकरमें काफी विरोधी वातावरण पैदा करनेकी कोशिश की गअी। मुझे बापूजीकी अुस रोजकी सीख याद आअी कि सचमुच ही गायके मृत शरीरका पूरा पूरा अुपयोग कर लेनेसे अर्थ और धर्म दोनों सधते हैं। बापूजीकी दृष्टि कितनी दीर्घ और सूक्ष्म थी और किसी बातके हर पहलू पर अुनका विवेचन कितना विशद होता था, अिसकी कल्पना अुस समय तो अितनी गहराअीसे समझमें नहीं आती थी। लेकिन आज अुसका अनुभव हो रहा है। अुनकी पैनी नजर जीवनके अेक भी कोनेको अछूता छोड ही नहीं सकती थी। अुनकी छाया अितनी सुखद थी कि अुसमें बैठकर हम समझते थे हमारे सिर पर कभी धूप आ ही नहीं सकती। हमको लगता था कि रोज

रोज बतानेके लिअे जब बापूजी बैठे हों तो हम अिन बातोंको याद रखने और अुन पर अमल करनेका कष्ट क्यों अुठाये? बापूजी अितनी जल्दी अिस प्रकार चले जायेंगे अिसकी कल्पना मुझे स्वप्नमें भी नहीं थी।

४

मधुमक्खी-पालन

अेक दिन बापूजीने मुझे बुलाकर कहा, "देखो, छोटेलाल यहां मधु-मक्खी पालना चाहता है। अुसके लिअे जो सुविधा चाहिये वह तुमको करनी होगी। छोटेलालके साथ तुम्हारा परिचय तो है न?" मैंने कहा, "जी हां। यहांके लिअे गाय भी तो छोटेलालजीने ही लाकर दी थी।" बापूजी बोले, "हां छोटेलाल तो हर काममें अुस्ताद है। जब मैंने मगनवाडीमें तेलघानी चलानेकी बात की तो विनोबासे अुसे मांग लिया था। अुसने घानीके पीछे जो मेहनत की है वह अद्‌भुत है। जब मगनवाडीमें मधुमक्खी-पालनकी बात चली तो वह काम भी मैंने अुसीको सौंपा और अुसके पीछे अुसने रात-दिन अेक कर दिया। हिन्दुस्तानमें जहां भी अिसका ज्ञान और साहित्य मिल सका वह सबका सब छोटेलालने प्राप्त करनेमें कोअी कसर नहीं छोडी। चक्कीमें अुसने काफी सिर खपाया है। सच बात तो यह है कि मेरे मनमें ज्यों ही किसी ग्रामोद्योगकी कल्पना आती है और अुसे पता चलता है त्यों ही अुसे मूर्तरूप देनेमें वह अपना खाना-पीना सब भूल जाता है। मेरा काम अैसे ही स्वयं-सेवकोंसे चल सकता है। आजकल ग्रामोद्योग मृतप्राय अवस्थामें पहुंच चुके हैं। अिनको सजीव करनेके लिअे अनेक छोटेलाल खप जायं तो भी कम होंगे। ग्रामोंमें हमारे आसपास सोना बिखरा पडा है। अुसे अुठानेवाले चाहिये। मधुमक्खीका दृष्टांत ही ले लो। मक्खियां फूलोंमें से रसकी अेक अेक बूंद जमा करके कितना पौष्टिक खाद्य अेकत्रित करती हैं। बस अुसकी व्यवस्था करना हमारा काम है।

"यों तो शहद दूसरे लोग भी जमा करते हैं। लेकिन अुनके जमा करनेमें हिंसा और गंदगीका कोअी पार नहीं होता। हमको शहद भी चाहिये और हिंसासे भी बचना चाहिये। यह मधुमक्खी-पालनके सिवा नहीं हो सकता। अुसके शास्त्रियोंने यह सिद्ध कर दिया है कि अेक भी मक्खी मरे बिना हमको काफी मात्रामें अुत्तम शहद मिल सकता है। तुमने मगनवाडीमें छोटे-लालका मधुमक्खीका काम देखा होगा। वह मांकी तरह मक्खियोंकी संभाल

रखता हैं। मगनवाड़ी शहरके बीचमें है, लेकिन यहां तो हम खुले खेतोंमें पड़े हैं। अगर हम सेवाग्राम और दूसरे गांवोंके लोगोंको मधुमक्खी पालनेका शौक लगा सकें तो अुन्हें अेक नया धंधा दे सकते हैं, जिससे अुनकी आमदनीमें वृद्धि हो सकती है। तुम भी अिसका शास्त्र समझ लो। गाय भी तो पहले जंगली ही थी न? लोग अिसका मांस खाना तक अधर्म नहीं बल्कि धर्म मानते थे। यज्ञोंमें गोवलिका भी जिक्र आता है। लेकिन जिसने पहली बार गायसे दूध लेनेकी बात सोची होगी वह कितना बुद्धिमान आदमी होगा। अुसके मनमें गोहिंसाके प्रति तिरस्कार आया होगा और अहिंसाका देव जगा होगा। मैं यह भी देख रहा हूं कि ग्रामोद्योगोंके विकासमें अहिंसाका विकास समाया हुआ है। तुम स्वयं देहाती हो और देहातकी आवश्यकताओंको समझ सकते हो। छोटेलालका मन तो गांवोंमें ही रमता है। अुससे तुमको बहुत कुछ सीखनेको मिलेगा। किसानके लिअे मधुमक्खी-पालन खेती की दृष्टिसे भी आवश्यक है। तुम जानते हो कि मक्खियां फसलको कैसे लाभ पहुंचाती हैं?"

मैंने शर्मके साथ कबूल किया कि मैं नहीं जानता।

बापूजीने हंसकर कहा, "तुम कच्चे किसान हो। देखो, बाहोश किसान अपने खेतोंमें मधुमक्खीके छत्ते जरूर रखते हैं। अुनसे अुनकी पैदावारमें वृद्धि होती है। फलवृक्षोंके फूलोंमें या सागभाजीके फूलोंमें भी नर और मादा दो प्रकारके फूल होते हैं। मधुमक्खी जब फूलका रस अुठाती है तो अुसके पैरोंके साथ थोड़ासा फूलका पराग भी लग जाता है। जब वही मक्खी दूसरे फूल पर जाती है तो वह पराग अनायास दूसरे फूलमें गिर जाता है। अिस प्रकार नर और मादा फूलोंके परागका संयोग होकर फलकी अुत्पत्ति होती है। अिसलिअे लोग मादा वृक्षोंके साथ नर वृक्ष भी रखते हैं। जंगली मधुमक्खियां भी यह काम करती ही हैं। लेकिन अुनका पालन करनेसे दो लाभ होंगे। तुम अिसका हिसाब रख सकोगे कि यहां छत्ते रखनेसे फसलमें कितनी वृद्धि हुअी।"

बापूजीकी यह आदत थी कि जिस बातको भी वे समझाने बैठते अुसकी अितनी बारीकीमें अुतर जाते जिसे हम बालकी खाल निकालना कह सकते हैं। लेकिन वे सचमुच ही बालकी खालमें से भी कुछ न कुछ खूबी निकाल ही लेते थे।

छोटेलालजी आये और अुन्होंने जो सुविधा चाही वह मैंने अमरूदके बगीचेमें कर दी। मैंने समझा था कि वे मगनवाड़ीसे तैयार छत्ते लाकर

बगीचेमें रख देंगे। लेकिन वे तो बापूजीसे भी दो कदम आगे चलनेवाले निकले। अुन्होंने मुझसे कहा कि चलो यहांके लिअे आसपासके गांवोंमें से नये छत्ते पकड़ कर ले आयें।

मैं मना कैसे कर सकता था? बापूजीने पहलेसे ही मुझे गुरुमंत्र दे रखा था। छोटेलालजी स्वयं मगनवाड़ीमें रहते थे। अुनके साथ साहूजी नामका अेक हरिजन छत्ते पकड़नेमें सहायकका काम करता था। दिनमें मेरे पास आदेश आ जाता कि आज शामको अमुक गांवमें छत्ते पकड़ने चलना है, तुम तैयार रहना। छोटेलालजीका स्वभाव और अनुशासन फौजी अफसरके जैसा कठोर था। अुनके कार्यक्रममें जरा भी गड़बड़ हो गअी कि काम समाप्त ही समझो। अिसी डरसे मैं अुनके आनेकी राह देखता रहता। वे ठीक समय पर आते और मैं चुपचाप अुनके साथ चल देता। दो चार मील जाकर किसी अूंचे आम या अिमलीके पेड़के नीचे खड़े होते और अिशारा करके कहते कि अमुक खोहमें मक्खियां अुड़ती दीखती हैं, वहीं अुनका छत्ता होगा। चलो चढ़ो पेड़ पर। चढ़नेमें मैं कोअी अुस्ताद नहीं था। हां, बचपनमें पेड़ों पर चढ़नेका कुछ न कुछ अभ्यास जरूर हुआ था। छोटे-लालजीके प्रेमभरे अुत्साहसे मैं पेड़ पर चढ़ जाता। खोहके पास जाकर वे मुझे अेक तरफसे फूंकनीसे धुआं देनेको कहते और स्वयं दूसरे मुंह पर मक्खी पकड़नेकी अपनी पेटी लगा देते। साहूजी वहीं हमारी मददमें रहता या नीचेसे आवश्यक सामान पहुंचानेमें सहायता देता। यह सब क्रिया शामको अुस समय की जाती जब सब मक्खियां छत्तेमें आ चुकतीं। मक्खियां धुअेंके कारण अिस पेटीमें चली जातीं और हम अुसे बन्द करके नीचे अुतार लेते। मक्खियोंकी रानी पेटीमें चली जाती कि अन्य सारी मक्खियां भी थोड़े ही समयमें अपने आप पेटीमें आ जातीं। छोटेलालजीने मुझे भी रानीकी पहचान करा दी थी। वह दूसरी मक्खियोंसे बड़ी और लम्बी होती है। मक्खियां पकड़कर कोअी बड़ा गढ़ जीतनेकी खुशीके साथ हम लोग आश्रममें कभी कभी रात्रिके दस-ग्यारह बजे तक लौटते थे। छोटेलालजी बड़ी सरलतासे बड़े बड़े वृक्षों पर चढ़ जाते थे। अैसा लगता था कि अुनके शरीरकी रचना ही कुछ अिसके अनुकूल है। कभी कभी अैसे अवसर भी आते थे जब मक्खियां पकड़नेके लिअे अुनको बहुत दूर जाना पड़ता और रात्रिको बाहर ही रहना पड़ता। यह ध्यानमें रखना चाहिये कि अैसी ही मक्खियां पाली जा सकती हैं, जो बड़े वृक्षों या पहाड़ोंकी अंधेरी खोहोंमें अपने छत्ते रखती हैं और

जिनका स्वभाव छत्तेके अन्दर अंडे और शहद अलग अलग रखनेका होता है। अिससे शहद निकालते समय अेक भी अंडेको नुकसान नहीं होता।

अिस प्रकार हमने ८–१० छत्ते अपने बगीचेमें जमा लिये। अुस स्थानका नाम मधुशाला पड गया था। छोटेलालजीने मक्खियोंके बारेमें मुझे सभी आवश्यक बातें सिखा दी थीं। जैसे किसी छत्तेमें दो या तीन रानियां हो जाने पर अेकके सिवा शेष अेक या दो को अलग छत्तेमें रख देना चाहिये, ताकि और मक्खियां अुनके साथ अुडने न पावें। पेटियोंके पावोंके नीचे बरतनोंमें पानी रखना चाहिये, ताकि पेटियोंमें मक्खियोंके शत्रु कीडे प्रवेश न करने पावें। जब फूलोंकी कमी होती है तब मक्खियोंको शर्बत बनाकर कृत्रिम खुराक भी देना चाहिये, अित्यादि। अिन छत्तोंसे हमारी फसलमें कितने प्रतिशतकी वृद्धि हुअी अिसका सही हिसाब तो मैं नहीं निकाल सका। लेकिन स्पष्ट ही फल और बेलदार सागोंकी — जैसे लौकी, काशीफल, तुरअी, पपीता आदिकी — अुत्पत्ति काफी बढी। वजनमें अधिकसे अधिक काशीफल ८३ पाअुडका, पपीता ११ पाअुडका और चुकन्दर ७ पाअुड तकका हुआ। चुकन्दरको देखकर अेक बार ठक्करबापाने कहा था 'अरे भाअी, बम्बअीमें तो छोटे छोटे होते हैं। अिसका नाम ही बदलना पडेगा।' सागभाजी, पपीता, नीबू और संतरा आश्रम और सेवाग्रामकी दूसरी संस्थाओंकी जरूरत पूरी करके वर्धामें काफी बेचना पडता था। मक्खियोंके झुंडोंको फूलों पर विचरते देखकर मेरे मनमें यही भाव आता था कि ये मक्खियां अलग अलग फूलोंसे पराग बदलनेका काम कर रही हैं। और मुझे बापूजीका पहले दिनका भाषण याद आ जाता। जब मैं बापूजीको यह संदेश सुनाता कि मधुशालाका काम ठीक चल रहा है और मक्खियां ठीक काम कर रही हैं, तो बापूजीका मुख प्रसन्न हो जाता और वे बोल अुठते, "तुम्हारे लिअे तो मक्खियां भी मजदूरी करती हैं। किसानका काम तो सांप भी करता है यह तुम जानते हो। खेतीमें बहुतसे कीडे होते हैं जो फसलको नुकसान पहुंचा सकते हैं। सांप अुन्हें खा जाता है। अिसमें हिंसा भले हो, लेकिन सांप किसानके लिअे अुपकारी ही है।" वास्तवमें मैंने देखा भी कि गन्नेके खेतमें सांप गन्नों पर चढकर अुन कीडोंको खा जाता था जो गन्नेको नुकसान पहुंचाते हैं। धानके खेतमें हरे धानके रंगके अनेक सांप मैंने देखे। चूहोंका तो सांप पक्का शत्रु है। मैंने सांपको बिलोंमें से चूहोंको निकालकर खाते देखा है।

मुझे आश्चर्य तो यह होता है कि मैं किसान होने पर भी अिन छोटी छोटी बातोंको क्यों नहीं जानता था और बापूजी अुन्हें कैसे जानते थे? वास्तवमें बापूजीकी दृष्टि बहुमुखी और विशाल थी, जब कि हमारी दृष्टि सिर्फ नाककी सीधमें ही देखना जानती थी। अब अिन बातोंको कौनसे स्कूल या कॉलेजमें सीखा जाय?

छोटेलालजी जैन राजस्थानके थे। सन् १९१५ में किसी बम काडमें पकड़े गये थे। लेकिन अवस्था कम होनेसे छोड दिये गये थे। सन् १९१७ में साबरमती आश्रममें बापूजीके पास आ गये और अल्पकालमें ही वे साबरमती आश्रमके अेक प्रमुख कार्यकर्ता बन गये। स्व० मगनलाल गांधीके साथ अुन्होंने अ० भा० चरखा संघका शिक्षा-विभाग अनेक वर्षो तक बडी योग्यतासे चलाया। श्री बालकोबाजी, श्री सुरेन्द्रजी और श्री तुलसी मेहरजी अुसी समयके अिनके सहयोगी प्रमुख कार्यकर्ता थे। साबरमती आश्रममें शिक्षणार्थ जानेवाले प्रत्येक विद्यार्थी पर अिन भाअियोंके अत्यन्त परिश्रमी तथा स्वाध्यायी होनेकी छाप शीघ्र ही पड जाती थी। जब पू० जमनालालजी बजाजने आश्रमकी अेकमात्र शाखा वर्धामें ग्रामोद्योगोंके विकासके लिअे श्री छोटेलालजीको माग लिया, तबसे वे अन्त तक पहले मगनवाडीमें और बादमें सेवाग्राममें अनेक ग्रामोद्योगोंको चलाते रहे। सेवाग्राममें रहते हुअे मधुमक्खी-पालनके सिलसिलेमें जगली मधुमक्खियां पकडनेके लिअे लगातार कअी दिनों तक जगलोंमें भटकनेके कारण अुन्हें टाअीफाअिड हो गया और अुन्होंने अेक दिन बापूजीको यह सदेशा भेजा कि मुझे दूसरोंसे सेवा लेकर जीना सहन नहीं होता। लेकिन अिस सदेशको पाकर बापूजी दूसरे दिन आकर अुन्हें सान्त्वना दें, अिसके पूर्व ही रात्रिमें मगनवाडीके अेक कुअेमें प्रवेश करके अुन्होंने जल-समाधि ले ली।

भाअी छोटेलालजीके आत्मघातके विषयमें अपने हृदयका दुःख अुडेलते हुअे बापूजीने ता० ११-९-१९३७ के 'हरिजनसेवक' में 'अेक मूक साथीकी मृत्यु' नामक लेखमें लिखा था

"छोटेलालकी मूक सेवाका वर्णन भाषाबद्ध नहीं हो सकता। अैसा करना मेरी शक्तिके बाहर है। मेरे सौभाग्यसे मुझे कुछ अैसे साथी मिले हैं, जिनके बिना मैं अपनेको अपंग महसूस करता हूं। छोटेलाल मेरे अैसे ही अेक साथी थे। अुनकी बुद्धि तीव्र थी। अुन्हें कोअी भी काम सौंपते मुझे हिचकिचाहट नहीं होती थी। वे भाषाशास्त्री भी थे। अुनकी

मातृभाषा हिन्दी थी। पर वे गुजराती, मराठी, बंगला, तामिल, संस्कृत और अंग्रेजी भी जानते थे। नअी भाषा या नया काम हाथमें लेनेकी अुनके जैसी शक्ति मैंने और किसीमें नहीं देखी।

"रसोअी बनाना, पाखाना साफ करना, कातना, बुनना, हिसाब-किताब रखना, अनुवाद करना, चिट्ठीपत्री लिखना आदि सब कामोंको वे स्वाभाविक रीतिसे करते और वे अुन्हें शोभते थे। यह कहा जा सकता है कि मगनलालके लिखे 'बुनाअी-शास्त्र' में छोटेलालका हिस्सा मगनलालके जितना ही था। चाहे जैसे जोखिमका काम अुन्हें सौंपा जाय, अुसे वह प्रयत्नपूर्वक करते और जब तक वह पूरा न हो जाता अुन्हें शांति नहीं मिलती थी। अुनके शब्दकोशमें 'थकान' के लिअे स्थान ही नहीं था। सेवा करना और दूसरोंसे सेवाकार्य कराना यह अुनका मंत्र था। ग्रामोद्योग संघ स्थापित हुआ तो घानीका काम दाखिल करनेवाले छोटेलाल, धान दलनेवाले छोटेलाल और मधुमक्खियां पालनेवाले भी छोटेलाल। आज मैं छोटेलालके बिना जैसा अपंग हो गया हूं, वही स्थिति आज अुनकी मधुमक्खियोंकी भी होगी।

"छोटेलाल मधुमक्खियोंके पीछे दीवाने थे। अुनकी शोधमें हलके प्रकारके मियादी बुखारने अुन्हें पकड लिया। यह अुनके प्राणोंका ग्राहक निकला। मालूम होता है अुन्हें ६—७ दिन सेवा कराना भी असह्य लगा। अंत ३१ अगस्त, मंगलवारकी रातको ११ और २ के बीचमें सबको सोता हुआ छोडकर वह मगनवाडीके कुअेंमें कूद पडे।

"अिस आत्मघातके लिअे छोटेलालको दोष देनेकी मुझमें हिम्मत नहीं। छोटेलाल तो वीर पुरुष थे। अुनका नाम १९१५ के दिल्ली-षड्यंत्र केसमें आया था। पर अुसमें वह बरी हो गये थे। किसी गोरे अफसरको मारकर फांसीके तख्ते पर चढनेका स्वप्न वह अुन दिनों देखते थे। अितनेमें वे मेरे लेखोंके पाशमें आ फंसे। और अपनी तीव्र हिंसक बुद्धिको अुन्होंने बदल दिया, और अहिंसाके पुजारी बन गये।

"छोटेलाल मुझे अपना देनदार बनाकर ४५ वर्षकी अुम्रमें चल बसे।"

२२

चरखेका चमत्कार

वापूजीने चरखा और खादीको सव ग्रामोद्योगोका मध्यविन्दु माना था। अेक सालमे स्वराज्य दिलानेकी वात भी अुन्होने चरखेके मार्फत ही की थी। वापूजीने अपने जन्मदिनके अुत्सवको भी चरखा द्वादशीका ही नाम दिया था। काग्रेसकी सदस्यताके लिअे भी चरखा अनिवार्य करनेकी अुन्होने पूरी पूरी कोशिश की थी। सक्षेपमे चरखेके लिअे वापूजीने शिवजीकी तरह घोर तप किया था। मगनलालभाअी गाधीने भागीरथकी तरह चरखारूपी गगाकी खोज की थी। और विनोवाजीने दधीचिकी तरह सतत रोज ८-८ घटे तकली और चरखे पर कात कर अपनी हड्डिया सुखा दी और चरखेका मत्र सिद्ध करके दिखा दिया। वहुतसे लोग वापूजीकी चरखेकी वात सुन कर हसते भी थे। लेकिन वापूजीके जीवनमे चरखा ओतप्रोत था। कितने ही काममे हो, कितने ही थके हुअे हो लेकिन चरखा चलाये सिवा वापूजीका दैनिक कार्य पूरा ही नही हो सकता था। जव तक वापूजी वीमार होकर विस्तर पर न पडे हो तव तक चरखेकी कभी भी नागा अुनके जीवनमे नही हुअी थी। अुन्होने लम्वे लम्वे-अुपवास किये तव भी और राअुण्ड टेवल कान्फरेसमे गये, जहा कि सोनेके लिअे भी वहुत कम समय मिल पाता था, वहा भी अुनका चरखा तो चलता ही रहता था।

आज जव मै सेवाग्रामके जीवन पर विचार करता हू तो मेरी आखोंके सामने चरखेका चमत्कार आ खडा होता है। मुझे सेवाग्राममे रोटी चरखेने ही दिलाअी थी। वापूजी कहते थे, "चरखा गरीवोका सहारा है, दुखियोका वन्धु हे और अन्धेकी लकडी है।" वापूजीके अिस कथनकी सत्यता मै अपने जीवनमे आज अनुभव कर रहा हू । अगर दशरथ ओर गोविन्द नामके लडकोको कातना सिखानेकी वात न होती तो मुझे सेवाग्राममे रोटी कैसे मिलती? अगर मेरी वुनाअी सीखनेकी वात न होती तो मै सावरमती आश्रम, विनोवाजीके पास या सावली कैसे जाता? अगर न जाता तो वापूजीके चरणोमे भी अन्त तक कैसे टिकता? अगर न टिकता तो आज ये पवित्र सस्मरण लिखनेका सौभाग्य क्योकर मिलता, जिससे सत पुरुषोकी पवित्र स्मृतियोसे मनका मैल धोनेका अवसर

मिला? अगर यह अवसर न मिलता तो फिर अिस जगतमे जन्म लेनेका भी क्या अर्थ रहता? फिर तो मेरी मा यही कहती न 'नतरु वाझ भलि वादि विआनी, रामविमुख सुत ते हित हानी।'

अर्थात् मेरा सारा ही जीवन व्यर्थ सिद्ध होता। अब मुझे वापूजीके चरणोमें देखकर अवश्य ही मेरी माको स्वर्गमे सतोपका अनुभव होता होगा। सचमुच ही जब मै यह सोचता हू कि मेरे जीवनकी नौकाको चरखेने किस प्रकार किनारेके निकट पहुचाया तो मै स्वप्न-सा देखने लग जाता हू। अेक गरीब किसानका लडका, लिखा नही पढा नही, दूसरा कोअी साधन नही, तो भी जगतके अेक महान पुरुषका पुत्र बननेका अधिकार वापूजीसे झगडकर प्राप्त किया! जब गाधी-स्मारक-निधिवाले मेरी गोसेवाकी योजनाके लिअे पैसा देनेमे देर करते है तो मै आत्मविश्वासके साथ यह कहनेकी हिम्मत रखता हू कि मेरे ही पिताके नामसे पैसा जमा किया और मुझे ही आख दिखाते हो! जिन वापूने मेरे वजट पर आख मीच कर सही की, अुन्ही वापूके नामका पैसा मुझे मिलनेमे अितनी देर क्यो? मै अितना वडा दावा करनेका ढोग नही करता हू और न किसीको गीदड-भभकी ही देता हू। जो भी कहता हू वह वापूके प्रति अटल श्रद्धाके बल पर ही कहता हू। वापूके सामने मेरे लिअे ससारकी सारी समृद्धि तृणवत् थी। वापूके प्रेमके कारण सेवाग्राम आनेवाले वडेसे वडे लोगोसे भी परिचय कर लेनेका लोभ मेरे मनमे नही आता था। मेरी यह अैठ वापूजीके प्यारके बल पर थी और वापूजीके प्यारका निमित्त बना था चरखा। जिस रोज वापूजीने मुझसे यह कहा था कि दशरथ और गोविन्दको कातना और धुनना सिखा दो, रोटी मिल जायगी, अुस दिनका चित्र मेरी आखोके सामने आज ज्योका त्यो नाच रहा है। अगर चरखा सीखनेकी वात न होती तो मै सावरमती ही क्यो जाता? अगर मैने चरखा न सीखा होता तो वापूजी मुझसे अुन लडकोको चरखा सिखानेकी वात ही क्यो कहते? अगर चरखे और धुनकीकी कला मेरे हाथमे न होती तो मै तुकडोजी महाराज जैसे सतका गुरु कैसे बनता?

जिस प्रकारसे मेरे जीवनकी नीवमे चरखा है, अुसी प्रकार सेवाग्रामके सेवाकार्यकी नीवमें भी चरखेने ही प्रथम स्थान लिया। अिसे अेक दैवयोग ही कहना चाहिये। वे दोनो लडके कुछ काम सीखना चाहते थे, यह वात तो थी ही। लेकिन अुसमे भी वडी वात यह थी कि अुनको वापूजीका सम्पर्क साधना था। अुन्होने देखा कि वापूजीको सबसे प्रिय चरखा ही है,

अिसलिअे हम भी चरखा सीखकर ही अुनके निकट पहुच सकते है। वापूजीको सेवाग्रामकी सेवाका पवित्र काम चरखेसे ही आरम्भ करनेका अवसर मिल गया तो अुसे वे कैसे छोड सकते थे? और मेरे जैसा सस्ता शिक्षक सिर्फ रोटीमे ही मिल जाय तो वापू अैसा अवसर क्यो चूकते? फिर मुझे भी तो वापूजीके पास रहनेका लोभ था ही। अिस प्रकार विना किसी योजनाके, विना कुछ सोचे-विचारे, चरखा सेवाग्रामके जीवनसे सबसे प्रथम आकर खडा हो गया। मै आज गर्वके साथ कह सकता हू कि सेवाग्रामका प्रथम शिक्षक वननेका सुअवसर नि सदेह मुझे चरखेने ही दिया। अिस प्रकार सेवाग्रामके क्षेत्रमे अुस दिनका चरखेका वीज वटवृक्षके रूपमे फला-फूला। मेरे अुस विद्यालयका आरम्भ कुअेके पासकी अेक छोटीसी कोठरीमे हुआ था, जो आज भी अपनी टूटी-फूटी हालतमे अुस घटनाकी गवाही दे रही है। लेकिन आज तो सेवाग्राममे चरखेके लिअे महल खडे हो गये है। अव अुस विचारी कोठरीका नाम भी कौन पूछता है? और शिक्षक भी वडे वडे पडित वहा आ गये है। तव मेरे जैसे विना पढे आदमीका नाम अुनकी लिस्टमे कैसे रह सकता है?

हमने सेवाग्राममे चरखेके कामको धीरे धीरे वढाया। और लोगोको भी चरखा चलाने और खादी पहननेकी वात कही। धीरे धीरे लोग हमारे पास आने लगे। श्री मुन्नालालभाअीने स्कूलमे वच्चोको तकली सिखाना आरभ किया। वुनाअी-काम भी भाअी अमृतलालजी नाणावटीने चक्रैयाकी मारफत आरभ किया। वापूजीने कहा, "अेक चरखा ही अैसा अुद्योग है जो कि छोटे-वडे, जवान-वूढे सवको दिया जा सकता है।" हमने वुनाअी-घर वनाया और कताअी-घर भी वनाया। आज जो वापूजीकी कुटी है वह दरअसल मीरावहनने गावके वच्चोको कताअी व वुनाअी सिखानेके लिअे ही वनाअी थी। आज अुस स्थानकी महिमा भले ही वापू-कुटीके नामसे हो, लेकिन वास्तवमे तो वह चरखा-कुटी ही है। चरखा ही आश्रमके पास अेक अैसा अुद्योग था, जिसे वेकारीके सामने खडा किया जा सकता था। अेक वार अकाल पडनेसे लोग परेशान हो गये। मेरे पास काम मागनेके लिअे आने लगे। खेती और गोशालामें अितना काम नही था जो अितने लोगोको दिया जा सकता। मैने वापूजीसे पूछा कि क्या किया जाय? वापूजीने कहा, चरखा तो तुम्हारे पास है ही, जो आये अुसको चरखा दे दो। मैने खेतीके अेक मकानमें चरखेका अेक परिश्रमालय खोल दिया। १०–२० चरखे नालवाडीसे मगा लिये। जो

लडकियां और बडी बहनें काम मांगती अुन्हें चरखा दे देता। चरखा संघ भी सेवाग्राममें आ चुका था। अुनका सूत चरखा संघ खरीद लेता था। अंतमें चरखा संघने सूतकी गुंडीके लिअे कताओीमें ज्वारी देनेका निश्चय किया। आश्रमका परिश्रमालय काफी दिनों तक चला और लोगोंको अुससे काफी मदद मिली। फिर वह चरखा संघमें विलीन हो गया।

गांवकी अेक सया नामक लडकी पागल हो गअी थी। अुसके घरवालोंने अुसे घरसे निकाल दिया था। अुस परिवारके साथ मेरा अच्छा संबंध था, क्योंकि अुस लडकीका पति और जेठ दोनों मेरे पास गोशालामें काम करते थे। मैंने अुस लडकीकी तलाश की, जो खेतोंमें भूखी-प्यासी घूमा करती थी और रातको भी जंगलमें किसी झाडके नीचे पडी रहती थी। मैंने अुसको बुलवाया। अुसके घरवालोंमें अुसे संभालनेकी बात की, लेकिन अुन्होंने अुसे स्वीकार करनेसे अिनकार कर दिया। मैंने देखा कि अुसके सारे कपडे और सिर जूओंसे भरे थे। अुसके सिरके बालोंमें जूअें अधिक थीं। मैंने अुसके बाल काटे। अेक दूसरी बहनको बुलाकर अुसको स्नान कराने और कपडे धोनेकी बात की। अुस बहनने कहा, भाअीजी अिन कपडोंको तो जला देना ही ठीक है। नहीं तो अिसकी जूअें मेरे अूपर चढ जायगी। मैंने वैसा करनेके लिये अुस बहनको कह दिया। बालोंको जमीनमें गाड दिया। अुस बहनने पगलीको स्नान कराया। मैंने दूसरे कपडे अुस लडकीको दिये और परिश्रमालयमें चरखा कातने बैठा दिया। वह कातने लगी। अुसकी ही मजदूरीमें अुसके खाने-पीनेकी व्यवस्था कर दी। अुसका मन चरखेमें लगा, खानेको रोटी मिली और जूओंके संकटसे मुक्त हुअी तो धीरे धीरे अुसका पागलपन कम हो गया। मैं अुसे रोज स्नान कराता था। अब तो अुसके चेहरे पर चमक आ गअी और वह ठीकसे बात भी करने लगी। यह सारा प्रोग्राम अुसका पति और घरके दूसरे लोग देखते ही थे। अिसलिये धीरे धीरे अुनका भी मन बदला। अन्तमें मैंने अुसको अुन लोगोंके हवाले कर दिया। अब तो अुसके कअी बच्चे भी होंगे। अेक दो तो मेरे सामने ही हो गये थे। जब अुसने अपनी गृहस्थी जमायी तब मैं अुससे पूछता, "क्यों सया, अुस दिनकी बात याद है न?" तो वह हंस देती। सचमुच अगर मेरे पास चरखा न होता तो अुसके पागलपनको दूर करनेका मेरे पास कोअी दूसरा अिलाज नहीं था। चरखेसे अुसके मन और तन दोनोंको काम मिला और पेटको रोटी मिली। अिसलिये अुसके मस्तिष्कमें जो विकृति आयी थी वह सब दूर हो गअी। मैं अिसे चरखेका चमत्कार ही कहता हूं।

महादेवभाअीके स्वर्गवासके बाद बापूजी जिस भक्तिभावसे महादेवभाअीके कमरेमे आध घटा हमारे साथ मौन कताअी करते थे वह दृश्य देखने लायक होता था। धीरे धीरे कताअी और बुनाअीके कामोका विकास हुआ और जहा सेवाग्रामके स्त्री-पुरुष कामकी खोजमे दूसरे गाव जाया करते थे, वहा आसपासके काफी स्त्री-पुरुष सेवाग्राम आश्रममे कामके लिअे आने लगे। मकान अित्यादिके काममे तो लोग लगते ही थे, लेकिन कताअी, धुनाअी और बादमे तो बुनाअीमे भी काफी लोगोको काम मिलने लगा। सेवाग्राम गावमे भी हमने अेक बुनाअी-घर खोला। कितने ही हरिजन और सवर्ण लडकोने बुनाअी सीखी और अुससे वे अपनी रोटी कमाने लगे। कताअी और धुनाअी भी काफी स्त्री-पुरुषोकी आजीविकाका साधन बनी। मेरा प्रथम विद्यार्थी दशरथ आज खादी-कामका निष्णात कार्यकर्ता बन गया है और हरिजनोमे सबसे पहला पक्का मकान अुसीने बनाया है। सेवाग्रामके कितने ही लडके खादीके शिक्षक बनकर बाहर भी काम कर रहे हैं। कह सकते हैं कि जो सेवाग्राम पहले अेक बिलकुल कगाल और अुजडा हुआ खेडा था, वह आज चरखेके प्रतापसे गुलजार बन गया है। फिर तो वहा चरखा सघका खादी-विद्यालय बना और सारे हिन्दुस्तानसे चरखा सीखनेके लिअे स्कूलोके मास्टर विद्यार्थी बनकर आने लगे। तालीमी सघने भी कताअी और बुनाअीका काम बहुत बढा दिया है। अुसमे भी हिन्दुस्तान भरसे नअी तालीमकी शिक्षा लेने अध्यापक और अध्यापिकाअे आती है। चरखा अुनके लिअे अनिवार्य है। सेवाग्रामका बापूराव नामका लडका वकीलका मामूली मुहर्रिर था। अुसको मैने चरखा दिया और १९४२ के आन्दोलनमे जेल भेजा। आज वह मध्यप्रदेशकी धारासभाका सदस्य है और काग्रेसका बहुत अच्छा कार्यकर्ता है। यह चरखेका ही प्रताप है।

अैसे अिस चरखेमे बापूजीकी हिमालय जैसी अचल और अटल श्रद्धा थी। वे अुसे अपनी कामधेनु और अपने मोक्षका द्वार मानते थे। अेक बार अुन्होने चरखेके विषयमें अपनी भावना व्यक्त करते हुअे लिखा था "मैं हर तारको कातते समय भारतके गरीबोका ध्यान करता हू। करोडोकी मजदूरी चरखा ही हो सकता है। अिस चरखे पर अुनकी श्रद्धा मैं कोरे भाषण देकर नही जमा सकता, स्वय कातकर ही जमा सकता हू। अिसीलिअे मैं कातनेकी क्रियाको तपस्या या यज्ञ कहता हू। मैं मानता हू कि जहा शुद्ध चिन्तन है, वहा अीश्वर जरूर है। अिसीलिअे मैं हर तारमें अीश्वरका दर्शन कर सकता हू।"

सन् १९४५ मे चरखा सघको सन्देश देते हुअे बापूजीने लिखा था

"कातो, समझ-बूझ कर कातो। जो काते वह खद्दर पहने, जो पहने वह जरूर काते। 'समझ-बूझ कर' के मानी है चरखा यानी कताअी अहिंसाका प्रतीक है। गौर करो, प्रत्यक्ष होगा। कातनेके मानी है कपास खेतमे चुनना, बिनौले बेलनीसे निकालना, रुअी तुनना, पूनी बनाना, सूत मनमाने अकका निकालना और दुबटा करके परेतना।

२८–३–'४५ मो० क० गाधी"

१९४८ के जनवरी मासकी १३ तारीखको जब दिल्लीमे बापूजीका अनिश्चित कालका अुपवास आरभ हुआ, तब मेरे मनमे यह डर पैदा हो गया था कि बापूजी अिस अुपवासमे शायद नही बच सकेंगे। मैंने बापूजीको लिखा था कि अगर आप अिस अुपवासमे चले जाय तो मेरे लिअे आपका क्या आदेश होगा। अुन्होने लिखा

"चरखेका विकास जहा तक मगनलालने किया था अुससे आगे नही बढा है। अुसका शास्त्र अभी तक अधूरा है। अुसे पूरा करना आश्रमका काम है। मेरे मरनेके बाद चाहे सारा देश चरखेको छोड दे लेकिन आश्रमको चरखेको नही छोडना है। तुम आश्रमकी नीवसे हो, वही मरना।

बापू"

अन्तमे यह भी चरखेका चमत्कार ही कहा जायगा कि जिस सेवाग्राम आश्रमके कार्यका आरभ चरखेकी शिक्षासे हुआ था, बापूजीके अवसानके बाद आज कुछ वर्षोंसे अुसका बहुतसा खर्च यज्ञकी भावनासे श्रद्धालुओ द्वारा काती हुअी सूतकी गुडियो अर्थात् चरखेसे चल रहा है। सेवाग्राम आश्रमको काचनमुक्त बनानेकी ओर अुसका खर्च सूत्रयज्ञकी गुडियोकी रकमसे चलानेकी कल्पना पहले-पहल श्री नारणदासभाअी गाधीके मनमे पैदा हुअी थी। वे राजकोटकी राष्ट्रीय पाठशालामे चरखा-द्वादशीके अुपलक्षमें जो सूत्रयज्ञ चलाते थे, और आज भी चलाते है, अुसीमे अेक वर्ष काती गअी सारी गुडिया अुन्होने पहली बार आश्रमको अिस भावनासे अर्पण की थी और अिसका प्रचार भी किया। दैवयोगसे विनोबाजीके मनमे भी यही विचार स्फुरित हुआ और अुन्होने भी अिसका प्रचार किया। बादमे तो सारे देशके सूत्रयज्ञमे श्रद्धा रखनेवाले लोगोने अिसे अपना लिया। १२ फरवरी — बापूजीका श्राद्धदिन — आश्रमके लिअे गुडीदानका दिन माना जाने लगा।

२३

बापूजीका हृदय-मन्थन

१९४२ का जुलाओी महीना था। अनवरत वर्षा हो रही थी। बापूजीकी तबीयत काफी खराब थी और कामका ढेर पडा था। बापूजीसे मिलनेवाले भी काफी थे। किशोरलालभाओीने अेक सूचना निकाली कि व्यवस्थापक मण्डलकी अिजाजतके बिना कोओी बापूजीसे मिलने न जाये। अुसका मैंने और मुन्नालालभाओीने विरोध किया। प्रार्थनाके बाद अुस सूचना पर चर्चा हुओी। किशोरलालभाओीने हमारे विरोधका तेजीसे जवाब दिया। हमें भी अुसका जवाब देना पडा। बात बापूजीके पास गओी। प्रार्थनाके बाद बापूजी बोले

"कल किशोरलालके लेख पर चर्चा हुओी यह ठीक नही हुआ। अुन्होने तो मुझे बचानेके लिअे लिखा था। यह धर्मशाला है, फिर भी अिसमें कुछ नियम होने ही चाहिये। रुग्णालय भी है। रोगियोको भी नियमका पालन करना पडता है। परतु भसाली तो हम सबसे श्रेष्ठ पुरुष है। अुसको नियम क्या? मुन्नालाल भी स्वतत्र है। अपना बादशाह है। वह कितना काम कर लेता है यह तो हम सबने किशोरलालभाओीके मकान पर देखा है। वह भी अपवाद है। बलवन्तसिंह हम सबसे अच्छा मजदूर हे। गाय और खेतीके बिना वह जिन्दा नही रह सकता है। लेकिन आज मेरे पास पडा है। वह भी अपवाद है।"

हम समझते थे कि बापू हमारे पिता हे। पिता बीमार हो और लडकोमें कोओी कहे कि तुम्हे पिताके पास जानेकी अिजाजत नही है तो यह कैसे बन सकता है?

२६ जुलाओीको विनोबाजी तथा अन्य कार्यकर्ता बापूजीसे कुछ जाननेके लिअे जमा हुअे थे, क्योकि आन्दोलन द्वार पर खडा था। बापूजी बोले

"मैंने तुम लोगोंको अिसलिअे बुलाया है कि मेरे मनमें जो विचार चल रहा है अुसे तुम्हारे सामने रख दू और तुम्हें यदि अुसमें मेरा अधैर्य या कुछ दोष दिखे तो तुम मुझे बता सको।

"आजकल मेरे मनमें अुपवासका जो विचार चल रहा है, अुसे टालनेका मैंने खूब प्रयत्न किया है और आज भी कर रहा हू। लेकिन मैं देख रहा

हू कि वह मेरे सिर पर सवार हो रहा है। मैंने आज तक बहुतसे अुपवास किये हैं और अुनमें से अेक भी असफल हुआ अैसा मुझे नहीं लगता। कितने ही तो मैंने व्यक्तिगत और कौटुम्बिक तौर पर किये हैं। अुनका परिणाम भी शुभ ही आया था। हिन्दू-मुस्लिम अेकताके लिअे जो अुपवास किया था, अुसका भी असर तो हुआ था। लेकिन वह कायम न रह सका। हरिजनोंको अलग न करनेके लिअे जो आमरण अुपवास किया था अुसका परिणाम तत्काल हुआ था। लोग मेरे पास आकर बैठ नहीं गये थे, बल्कि काम करने लगे थे। हिन्दू महासभाके अध्यक्ष भी आ गये थे और अुन्होंने भी मेरी बात मान ली थी। यह सब मुझे अच्छा लगा था। आन्दोलनकी अशुद्धिके कारण जो आत्मशुद्धिका २१ दिनका अुपवास था अुसके पीछे मेरी यह भावना थी कि अिसकी शृंखला अेक साल तक चलाअी जाय। लेकिन साथियोंके गले न अुतरनेसे वह स्थगित करना पड़ा था। लेकिन अब मैं देख रहा हू कि अिसको टाला नहीं जा सकेगा। अिस वक्त हिंसा अपने पूरे जोरसे है और जगतमें अेक प्रकारका अंधकार-सा छा गया है। हिन्दुस्तानमें भी जहर फैलाया जा रहा है। सरकार हमारे आदमियोंको ही हमारे सामने करके खुद तमाशा देखना चाहती है। अिसको मैं कैसे बरदाश्त कर सकता हू? अिसलिअे मुझे लगता है कि अब बलिदान दिये बिना यह ज्वाला शान्त नहीं हो सकेगी।

"अुपवासके दो पहलू हैं। अेक तो स्वतंत्र बुद्धिसे करना, दूसरा जनरल पर श्रद्धा रखकर करना। हिंसाकी लड़ाअीमें क्या होता है? जनरल पर श्रद्धा रखकर सिपाही अपने आपको आगमें झोंक देते हैं। तब अहिंसाकी लड़ाअीमें अैसा क्यों नहीं हो सकता? अिस बार मेरी अहिंसाकी व्याख्या भी बदली है। १९२० और १९३० में मैंने नियम बनाया था कि मन, कर्म और वचनसे अहिंसक होना अनिवार्य है। अब मैं देखता हू कि चालीस करोड़ लोगोंके दिलमें अिस बातको अुतारना और जब तक न अुतरे तब तक ठहरना योग्य नहीं है। अब मैं अितना ही कहता हू कि तुम कर्म और वचनसे तो हिंसा नहीं करना। मैं किसी सत्याग्रहीको कानून तोड़ने भेजता हू तो अुससे कहूंगा कि तुम लाठी यहां रख जाओ और किसीको गाली दिये बिना अितना काम कर आओ। जब वह मेरी अिस बातको मानकर वह काम कर आयेगा तो कामकी सफलता देखकर अुसके मनमें भी हिंसाके भाव निकल जायेंगे। और समझो कि मेरे निमित्तसे अहिंसक सत्याग्रह आरंभ हुआ और बादमें हिंसा फूट निकली तो भी मैं सहन कर लूंगा, क्योंकि आखिर तो मुझे जो अीश्वर

प्रेरणा कर रहा है अुसकी जो अिच्छा होगी वही होगा। अगर मुझे निमित्त करके वह हिंसासे दुनियाका सहार करना चाहता होगा तो मैं कैसे रोक सकता हू? वह तो अेक अैसी सूक्ष्म चीज है कि जिसका पता लगाना मनुष्यकी शक्तिके बाहरकी बात है। बिजली यो सर्वत्र है, लेकिन अुसका हम कुछ पता तो लगा ही सकते हैं। लेकिन औश्वर तो अिससे भी सूक्ष्म और व्यापक वस्तु है। अुसके लिअे तो अितना ही कह सकते हैं कि वह अैसी शक्ति है जिसके अिशारेसे यह सब कुछ चलता है। लेकिन वह क्या है और कैसी है, यह खोजना असभव है। बस, अुस पर श्रद्धा ही रख सकते हैं और वही श्रद्धा मुझसे अपना काम करा रही है।

"मैं जब जर्मन ओर अग्रेज तथा जापानके सहारकी बात सुनता हू तो अुनके बलिदानकी कीमत मेरे दिलमे बहुत बढ जाती है। 'प्रिस ऑफ वेल्स' को डुबानेवाला कितना बहादुर था कि अुसने अपने आपको जलते हुअे अेजिनमे फेक दिया और दुश्मनका जहाज डुबा दिया। अुसका कितना साहस!

"हमने तो अभी तक कुछ भी साहस नही किया हे। जेलमे जाकर 'यह चाहिये', 'वह चाहिये' अिसके लिअे ही हम लडे हैं। कुछ तुम्हारे जैसोने अभ्यास किया है। अबकी बार अुसको स्थान नही है। प्यारेलाल कहे कि कुरान पूरा कर लू या तुम कहो कि वह किताब अधूरी है अुसे लिख डालू सो नही होगा। वहा तो दो चार रोजमे पूरा काम तमाम करना है। जब हम सरकारके सब कानूनोका भग करना चाहते हैं तो अुपवास आ ही जाता हे। तब हमको जेलमे डालेगे तो हम अन्न-पानीका त्याग करेगे और अपने आपको खतम ही कर देगे।

"अब सवाल यह होता है कि अुसकी शुरुआत किससे की जाय? अिसके लिअे मैंने अपने आपको चुना है। क्योकि मेरे बलिदानके बिना काम नही चलेगा। तुम सब लोगोका मेरे साथ सहकार चाहिये। अिसमे किसीको घबरानेकी या रज माननेकी बात नही है। कर्तव्य-पालनकी बात है। आखिर तो अिस शरीरको मिटना ही है। तो अेक शुभ कार्यके निमित्त अुसे मिटने देना ही अच्छा हे।"

किशोरलालभाअी बोले, "अगर जनरल ही पहले चला जाय तो फौजका क्या हाल होगा? अिसलिअे मेरी राय है कि आप जिसको पसद

करें अुसके द्वारा आरंभ करें और अुसके बलिदानका अुपयोग कर ले। जब समय आ जाय तो आप अपना बलिदान भी दे दें।"

बापूजी — औसा कौन है? समझो जानकीबहन कहे कि मेरे शरीरकी तो कुछ कीमत नहीं है, मुझे जाने दो। या शास्त्रीजी (परचुरे शास्त्री) कहें कि मैं जाअूं।

किशोरलालभाअी — ना ना। मैं तो औसी बात कहता हूं कि जिसकी कीमत हो।

बापू — हां, मैं भी तो यही कहता हूं। समझो, शास्त्रीजीकी कीमत पैसा है और जानकीबहनकी रुपया और मेरी मोहर। अगर अिस चीजकी कीमत मोहर देनी चाहिये तो मुझे ही देनी चाहिये। और अब मेरे बलिदानका समय आ गया है, अिसका निर्णय कौन करेगा?

किशोरलालभाअी — आप ही करेंगे।

बापू — बस तो मैं आज ही निर्णय करता हूं कि पहला बलिदान मुझे ही करना चाहिये।

किशोरलालभाअी चुप हो गये। बापूने विनोबाजीसे पूछा, "तुमको कैसा लगता है?" अुन्होंने कहा, "मुझे तो ठीक लगता है। मैं समझा हूं या नहीं अिसलिअे दुहरा जाता हूं। आपके कहनेका मैं यह अर्थ समझा हूं कि स्वतंत्र बुद्धिसे भी अुपवास किया जा सकता है। जिनकी स्वतंत्र बुद्धि साथ न दे, वे जनरल पर श्रद्धा रखकर भी कर सकते हैं।

बापू — ठीक है। लेकिन अिसमें अितना और जोड़ दूं कि जब हिंसा अितनी फूट निकली है तो अुसे रोकनेका अिसके सिवा और कोअी चारा नहीं दीखता है और अिसलिअे औसा करना आवश्यक हो गया है। अगर अिस विषय पर अधिक चर्चा करनी हो तो मैं समय निकाल सकता हूं।

विनोबा — मुझे जरूरत नहीं लगती है।

अिसके बाद सभा विसर्जित हो गयी। मुझे बापूजीकी योजना पटती तो थी, लेकिन अनशनका अस्त्र आम लोगोंके सामने रखने जैसा नहीं लगता था। मैंने बापूजीको अपने मनकी बात कहते हुअे लिखा कि 'हिंसाकी लड़ाअीमें मरना जितना सरल है अुतना अिसमें नहीं है। सामूहिक रूपमें अिस प्रकारकी मृत्युसे कोअी जाति जूझी हो, औसा अुदाहरण ही नहीं मिलता है। अिसमें क्या आत्महत्याके पापका डर नहीं है?'

मुझे डर यह भी था कि बापूजी अब अधिक दिनों जीवित नहीं रहेंगे। अिसलिअे मैंने लिखा था कि 'अिस ज्वालामें मेरा खात्मा हो गया तो प्रश्न ही खतम है। जीवित रहा तो आपकी आत्मा मुझसे क्या अपेक्षा रखेगी और मेरा क्या कार्य देखकर संतुष्ट होगी? अगर आप समय निकाल सकें तो बम्बअी जानेमें पहले आपके सामने अपना दिल खोलकर मैं मन हलका करना चाहता हूं। आप मेरी चिन्ता तो नहीं करते होंगे। मेरे सब अपराधोंको क्षमा करके मुझे आशीर्वाद दीजिये कि आपको संतुष्ट करनेमें सफल होअूं।'

बापूजीने लिखा

मेरी चिन्ता न करें। दूसरोंके लिअे अनशन किया जा सकता है या नहीं? सोचनेकी बात है। मैंने तो सैद्धांतिक चर्चा ही की।

तुम्हारे बारेमें विचार तो करता ही हूं। चिंता मुद्दल नहीं। मुझे तुम्हारे बारेमें डर है ही नहीं। तुम्हारा यहां पड़ा रहना और आश्रमके काममें रत रहना मेरे लिअे पर्याप्त है और अैसा भी समझो कि अुसमें गोसेवा छिपी हुअी है। स्वामी अित्यादिसे मिलना, मुहब्बत करना। तुम्हारा यहां होना फायर बकेट-सा है। फायर बकेटमें कितनी शक्ति रहती है, जानते हो न? मैं खप गया तो भगवान मार्ग बता देगा। यों तो अिसकी नींवसे यहां हो, यहीं मरना। समय मिला तो बुला लूंगा। पर मुश्किल है।

बापूके आशीर्वाद

२७–७–'४२

अिसमें प्रगट होता है कि बापू छोटेसे छोटे सिपाहीकी बातों पर कितना ध्यान देते थे। अिसी प्रकार विचार-मंथनमें अगस्तका महीना आ गया।

बापूजी वर्किंग कमेटीकी मीटिंगके लिअे बम्बअी जानेकी तैयारी कर रहे थे। जानेके पहले दिन प्रार्थनामें बोलते हुअे बापूने कहा

"मैं कल बम्बअी जा रहा हूं। क्या होगा यह तो नहीं कह सकता, लेकिन मेरी अुम्मीद है कि ११ अगस्त तक मैं यहां वापिस आ जाअूंगा। १३ से अधिक तो नहीं। जो लोग आश्रममें हैं अुनको समझना चाहिये कि आश्रम पर कुछ भी संकट आ सकता है। हो सकता है कि सरकार हमारा खाना भी बंद कर दे। तो जिनकी पत्ते खाकर भी यहां रहनेकी तैयारी हो वे ही लोग यहां रहें, बाकी सब चले जायं। अगर संकट आने पर जायेंगे तो हमारे लिअे शर्मकी बात होगी।"

वापूजी बम्बअी जा रहे थे अुस दिन सोमवार था। गाडी लेट थी। वापू वेटिंग रूममे वैठकर अपना काम कर रहे थे। मै वाके साथ वात कर रहा था। अुनसे मैंने कहा, "वा, जल्दी लौटकर आअिये।"

वाने करुण स्वरमे कहा "जोअीअे, शु थाय छे?* आप लोगोके आशीर्वादसे लौट आये तो अच्छा ही है।"

वाका यह करुण स्वर मेरे हृदयमे वहुत ही चुभा। अुससे यह टपक रहा था कि अुन्हे वापिस आनेकी कोअी अुम्मीद नही है। और वाका यह डर सच ही सिद्ध हुआ। वा फिर लौटकर सेवाग्राम नही आ सकी।

वापूजीके लिअे गाडीमे स्थान अक्सर पहले ही निश्चित हो जाया करता था। लेकिन अिस वार अितनी भीड थी कि रेलवेवाले वापूजीके लिअे कोअी खास प्रवंध न कर सके। अुस रोज न मालूम क्यो महादेवभाअी भी लोगोसे खास तौर पर मिल रहे थे। मै अुनके साथ कोअी विशेष सवंध नही रखता था, लेकिन अुस रोज मुझे भी अुनके प्रति वडी श्रद्धा हुअी और मैंने अुन्हे प्रणाम किया। वे हसकर वोले, "अच्छी तरहसे रहना।" सचमुच वे भी हमसे हमेशाके लिअे विछुड गये।

वापूकी पार्टी गाडीमे जहा तहा वैठी, लेकिन मै वापूजी और वाको वैठानेमे लगा था। डिब्बेमे वहुत भीड थी। जैसे तैसे वापूका विस्तर अन्दर ले गया और वापूको चढाया। अुनको देखकर लोगोने थोडी जगह कर दी। अेक सीट पर वापूका विस्तर और दूसरी पर मुश्किलसे वाका विस्तर लगाया। मैंने वा और वापूको प्रणाम किया और वापूने हसकर अेक थप्पड लगाया। मै वापिस चला आया।

यो तो वापू अनेक वार सेवाग्राममे वाहर जाते थे। लेकिन अुस दिनकी जुदाअीने चित्त पर विछोहका गहरा असर किया। मनमे अैसा ही लगता कि अव अिस वार वापूजी लौटकर आनेवाले नही है, निश्चित ही पकडे जायेगे। और वही हुआ। पू० वा और महादेवभाअी तो मानो सेवाग्रामसे अुस दिन आखिरी विदा लेकर ही गये थे। भगवानकी गति कौन जान सकता है?

२४

अगस्त आन्दोलन और आश्रमवासी

९ अगस्तको सुवह ही रेडियोसे खवर मिली कि वापूजीको पकड लिया गया। वर्धामे सभा हुअी और अुसको भग करनेके लिअे गोली भी चली। और अुसमे अेक लडकेकी मृत्यु हो गअी। सेवाग्रामकी सव सस्थाओमे हलचल मची। हमारे पथप्रदर्शनके लिअे पूज्य किशोरलालभाअी सेवाग्राममे थे, अिसलिअे हम लोग निश्चित थे।

बम्बअीसे जो लोग वापिस आये, अुन्होने वापूके नामसे 'करो या मरो' नारेका कुछ अिस ढगसे अर्थ किया जो बापूजीकी अहिसाके साथ मेल नही खाता था। तोडफोडके तरीके अपनानेकी जो बात थी वह वापूजीकी अहिसामे ठीक नही वैठती थी। मैने अुसका विरोध किया। भय यह था कि आश्रमको भी सरकार जब्त कर लेगी। कुछ लोगोकी मान्यता थी कि सरकार अिस वार शायद आश्रम पर हाथ नही डालेगी। अिस आशकाको मिटानेके लिअे हमने सरकारको सीधी चुनौती दी और आश्रमको सत्याग्रहका केन्द्र ही वना दिया। आसपासके देहातके जो सत्याग्रही आन्दोलनमे हिस्सा लेना चाहते थे अुनको वहा स्थान दिया। अुसकी अेक कमेटी वन गअी। दूसरी सस्थाओसे जो लोग सत्याग्रहमे शामिल होना चाहते थे वे आश्रमके शिविरमे आ गये। मै और चरखा सघकी तरफसे श्री सुखाभाअू चौधरी मुख्य थे। वापूजीकी रक्षाके लिअे जो चार पुलिस वहा रखे गये थे अुनको गवर्नमेटने हटा लिया। अुनमे से रामपत ओझा नामक पुलिस कान्स्टेवलने अिस्तीफा दे दिया और वह आन्दोलनमे शामिल हो गया।

अुन दिनो किशोरलालभाअी 'हरिजन'के सपादनका काम कर रहे थे। वे भी अुस समयके प्रवाहमे वह गये थे और अुन्होने जनताको तोडफोडका आदेश देनेवाला अेक लेख 'हरिजन' मे लिखा था। अिसलिअे २३ अगस्तकी रातको वारह वजे पुलिसकी लारी आयी और अुनका मकान घेर लिया गया। हम सवको पता चला तो हम भी वहा पहुचे। पुलिसने अुनके मकानकी तलाशी ली और कुछ कागजातके साथ अुनको पकड लिया। किशोरलालभाअीने मुझे कहा कि तुम अिन लोगोको देशके प्रति अिनका सच्चा

कर्तव्य समझाओ। जिस पर मैंने उन्हें समझाया कि आप लोग पेटके लिये यह कैसा निन्दनीय काम कर रहे हैं। अपनी रोटीके लिये किशोरलालभाजी जैसे पुरुषको रातके बारह बजे गिरफ्तार करते आपको शर्म आनी चाहिये। अंग्रेज तो आज नहीं तो कल भारतसे जाने ही वाले हैं। तब आप क्यों उन्हें खुश करनेके लिये ऐसा घृणित और देशद्रोहका काम करते हैं?" उस समयकी उनकी मनस्थितिमें मेरी बातका क्या असर हो सकता था? वे चुपचाप किशोरलालभाजीको लेकर चले गये।

आश्रमसे काफी लोगोंने सत्याग्रह किया और जेल गये। पहला जत्था बहनोंका गया। उसमें पू० शकरीबहन, कंचनबहन, कान्ताबहन, जोहराबहन और मनु गांधी गजी। वर्धामें सभाओं और जुलूसों पर प्रतिबंध था। जिन्होंने जाकर उसे तोड़ा और गिरफ्तार हो गजी। सच बात तो यह है कि जितने भाजी आश्रममें उस समय थे ही नहीं कि जिस तरह सत्याग्रह आरंभ कर सकते।

उस समय सेवाग्रामके कुछ नौजवान भी निकले। हमें उम्मीद नहीं थी कि सेवाग्राममें से भी कुछ लोग जेलके लिजे तैयार होंगे। लेकिन जैसे लोग भी निकले जो पहले कुछ खास हिस्सा आन्दोलनमें नहीं लेते थे। श्री बापूराव देशमुख, महादेवराव कोल्हे, चन्द्रभान तथा अन्य कजी लड़के सत्याग्रहमें जुट गये। सबसे महत्त्वका आदमी तो सखाराम सावळे निकला, जो चरखा संघका बुनकर था। उस पर ६–७ बच्चोंका भार था। लेकिन वह बड़ी दृढतासे सत्याग्रहमें शामिल हुआ और कह सकते हैं कि वह सेवाग्रामके सत्याग्रहमें सर्वश्रेष्ठ सत्याग्रही सिद्ध हुआ। उसके घरमें छः बरसके बच्चेसे लेकर उसकी पत्नी तक सब लोग सूत कातकर गुजारा करते थे। सत्याग्रहियोंके परिवारोंके लिजे हमने थोड़ीसी मदद भी दी, लेकिन वह नहीं के बराबर थी।

गांवके हिसाबसे सेलूकाटेके, जो सेवाग्रामसे ५–६ मील दूर है, सत्याग्रही सबसे अधिक योग्य थे। सत्याग्रहियों पर वर्धाकी पुलिसने काफी जुल्म किये। दिनमें लड़कोंको पकड़ लेते और रातमें उनको अंधेरेमें छोड़ते और अंधेरेमें मारते। फिर भी सत्याग्रही लोग बहादुरीसे अपना काम करते रहे। श्री मनोहरजी दीवाण वर्धा जिलेके सत्याग्रहका सचालन करते थे। उनकी सूचनाके अनुसार हम सत्याग्रहके लिजे सत्याग्रही भेजते थे। रामपत ओझा भी हमारे शिविरमें शामिल हो गया। उसकी गिरफ्तारी हुजी और उसको सजा हो

गअी। जब पुलिसके अत्याचार बढे तो मैं आश्रमसे सत्याग्रहियोंकी अेक टोली लेकर वर्धा गया और सभा तथा जुलूसका कानून तोडकर पकडा गया। वर्धाके जेलमें ज्यादा जगह नही थी। अिसलिअे सरकारने तहसीलको जेल बना दिया। वहा छोटीसी गदी और अधेरी जगहमें बहुतसे सत्याग्रहियोंको २४ घटे बन्द रखते और वही खाना भी खिलाते। अिसका हम लोगोंने विरोध किया। जब अधिकारियोंने अिस पर कोअी ध्यान नही दिया तो मैं और मेरे अन्य साथी अनशन करनेके लिअे मजबूर हो गये। तब मुझे अस्पतालमें ले जाकर 'फोर्स्ड फीडिंग' (जबरदस्तीसे नाकमें नली डालकर दूध पिलाना) शुरू किया। अिस पर मैंने पानी भी छोड दिया। मजिस्ट्रेटने केस चलानेका नाटक-सा करके अुसी समय तककी सजाको पर्याप्त मानकर मुझे छोड दिया। मेरे केसमें अेक मजेदार घटना यह हुअी कि मजिस्ट्रेट श्री मेहतासे मेरा परिचय पहले हो चुका था। सेवाग्रामकी सडक बनाते समय अेक मजुला नामकी बहनका खेत, जो बीचमें आता था, मैंने अुसे राजी करके प्राप्त कराया था। तबसे वे मुझे पहचानते थे। तब मेहताजीसे मैंने हसीमें कहा था कि अेक दिन आपकी अदालतसे मुझे अपराधी करार देकर सजा होगी, यद्यपि अुन्हें अैसा अवसर आनेकी आशा नही थी। अेक दिन वे जेलमें आकर मुझसे बोले कि आपकी वाणी सत्य निकली। आपका केस मेरी अदालतमें है। मैं सजा नही करना चाहता और कलेक्टर व पुलिस आपको छोडना नही चाहते। अिससे धर्मसकट अुपस्थित हुआ है। मैंने हसकर कहा कि आप और मैं अपना अपना काम करें। अिससे मित्रतामें कोअी फर्क नही पडेगा। यह सब हो रहा था तब भसालीभाअी तो अपने चरखेमें ही मस्त थे।

आश्रममें जितनी बहनें थी वे सब जेल चली ही गअी थी। चिमनलाल भाअीको पकडा, पर सात दिन हवालातमें रखकर छोड दिया। जेलकी अव्यवस्थाके खिलाफ मैंने अुपवास किया, अिसलिअे मुझे भी छोड दिया। अुस समय वर्धामें श्री सालिग्राम सिंह अिन्स्पेक्टर और श्री ताराचन्द डी० अेस० पी० थे। अिन लोगोंने काफी जुल्म किये। पवनार षड्यंत्र केसके नामसे तार काटने और रेलवे लाअिन काटनेका अेक झूठा केस बनाया गया। झूठे गवाह तैयार किये गये। सब गवाहोंसे मैं व्यक्तिगत रूपसे मिला और पूछा कि सचमुच तुमने अैसा कुछ देखा है क्या? लेकिन अेक भी गवाह अैसा नही निकला जो अुस केसके बारेमें कुछ भी जानता हो। जिस तरहसे पुलिस कहलवाती थी वैसा ही वे कहते थे। अुसका नाटक लबा चला, जिसमें वल्लभस्वामीको दो

मालकी सजा हुअी। लेकिन बादमें अपील करने पर वे छूट गये। मुखबिरको पलट जानेके जुर्ममें सजा हुअी।

आश्रम सत्याग्रहकी सबसे प्रसिद्ध घटना तो भसालीभाअीके अुपवासकी रही, जिसका प्रचार सारे हिन्दुस्तानमें हुआ। वे बहुत समय तक सत्याग्रहकी हवामें निर्द्वन्द्व रहे। मैंने अेक दिन हंसकर अुनसे कहा कि आप वर्धामें बैठकर चरखा कातें तो कैसा हो। लोगोंको मदद मिलेगी। अुनको यह सूचना बहुत पसन्द आयी। बोले, मैं तो तैयार हूं। मैंने कहा कि काकासाहबसे पूछकर आपको वहां भेजनेकी व्यवस्था करेंगे। लेकिन अुनको अितने समयके लिअे भी रुकना नहीं था। अुन्होंने अपना चरखा अुठाया और वर्धामें लक्ष्मीनारायणके मंदिरके चबूतरे पर बैठकर कातना शुरू कर दिया। मुन्नालालभाअी, रमणलालभाअी, तथा मोहनसिंहभाअी भी वहां गये थे। दस भसालीभाअीके चरखेके आसपास बच्चे अिकट्ठे हो गये। पुलिस तो किसीका भी जमा होना कानूनके विरुद्ध समझती थी। अिसलिअे बच्चोंको अुसने धमकाया और जब भसालीभाअी तथा मुन्नालालभाअीने कुछ कहा तो भसालीभाअीको अकोला ले गये। वहां पानीके बगैर अुपवास करने पर अुन्हें फोर्स्ड फीडिंग किया गया, लेकिन सफलता नहीं मिली। बादमें अुन्हें छोड दिया गया। रमणलालभाअी और मोहनसिंहभाअीको पंद्रह दिनके बाद छोडा। मुन्नालालभाअीने कुछ कहा तो चारोंको फिर गिरफ्तार कर लिया। भसालीभाअीने जेलमें जाते ही फिर अुपवास शुरू कर दिया। अिस पर अुनको तो छोड दिया, लेकिन मुन्नालालभाअीको रख लिया। फिर तो भसालीभाअीको कअी बार पकडा और कअी बार छोडा। भसालीभाअीको लगा कि मुझे अिस अन्यायी राज्यमें जीना ही नहीं चाहिये। हम लोग अुन्हें काफी समझाते थे, लेकिन अुन्हें अुपवास करके मरनेकी धुन लग गअी।

चिमूरमें पुलिसने स्त्रियों पर काफी अत्याचार किये। अुनकी निष्पक्ष जांचकी मांग करने भसालीभाअी दिल्लीमें श्री अणेके घर पहुंचे। मैं भी साथ था। श्री अणे अुस समय वाअिसरॉयकी कौंसिलके सदस्य थे। अणे साहबने हमारा प्रेमसे स्वागत किया और आनेका कारण पूछा। हमने सारा हाल कह सुनाया और निष्पक्ष जांचकी मांग की। अणे साहबने कहा कि जहां आन्दोलन चलता है वहां कुछ अवांछनीय घटनाअें भी हो ही जाती हैं। अिसका कोअी अुपाय नहीं है। अिस अुत्तरसे भसालीभाअीको संतोष नहीं हुआ और अुन्होंने अुपवास करनेका अपना निर्णय बताया। दुर्भाग्यसे अुसी दिन श्री अणेकी अेक पुत्रीका देहान्त हो गया था। यह बात हमने अुनके मुखसे ही सुनकर जानी।

लेकिन तब भी अुन्होंने भसालीभाअीसे कहा कि चलिये, आपके ठहरनेका प्रबंध कर दूं। मुझे तो अुपवास करना नहीं था अिसलिअे मुझे भोजन कराया। थोड़े ही देरमें पुलिसवाले आ गये और हमें दिल्लीसे चले जानेका नोटिस दिया। हमने अिनकार किया तो हमें जेलमें ले जाया गया और वहांसे ८ नवंबरको हमें सेवाग्राम भेज दिया गया। १० तारीखको भसालीभाअी पैदल ही चिमूरके लिअे निकले। पुलिसने रास्तेमें ही अुन्हें पकड़ लिया और सेवाग्राम पहुंचा दिया। २० तारीखको भसालीभाअी फिर निकले और २२ को चिमूर पहुंचे। पुलिस फिर अुन्हें सेवाग्राम रख गअी। अिस तरह कअी बार हुआ। वर्धामें चिमूर-दिवस मनाया गया। अिस सारे अर्सेमें भसालीभाअीका अुपवास चालू ही था।

अेक बार जब भसाली भाअी चिमूरके लिअे पैदल निकले तो हमको लगा कि वे चिमूर तक नहीं पहुंच सकते, रास्तेमें ही कहीं अुनका शरीर नष्ट हो जायगा। अिसलिअे मैं और लीलावती बहन रेल द्वारा अुनके समाचार जाननेके लिअे चिमूर जानेको निकले। चिमूरसे चार पांच मील अिधर हमने सड़क पर भसालीभाअीको पकड़ा। अुस समय तेज धूप पड़ रही थी। भसालीभाअीने पानी भी छोड़ दिया था। वे सिर पर भीगा हुआ कपड़ा रखकर चल रहे थे। अुनकी अिस कठिन सहिष्णुताको देखकर मेरे आश्चर्यका पार न रहा। चिमूर पहुंचते ही दूसरे दिन पुलिसने अुनको वहां गिरफ्तार कर लिया और सेवाग्राम लाकर छोड़ दिया। लेकिन वे कहां माननेवाले थे? फिर निकल पड़े। तब तो हमको निश्चय हो गया कि अब भसालीभाअी चिमूर नहीं पहुंच सकते। अिसलिअे मैं, लीलावती बहन और मोहनसिंहभाअी बैलगाड़ी लेकर अुनके साथ निकले और यह तय हुआ कि चिमूरके आधे रास्तेसे अिधर यदि भसालीभाअीका शरीर छूट जाय तो सेवाग्राममें अुनके शरीरको दाह-सम्कारके लिअे ले आयेंगे और आधे रास्तेसे अुधर छूटे तो चिमूर ले जाकर दाह-संस्कार करेंगे। सेवाग्रामसे चिमूर सीधे रास्ते करीब ६३ मील पड़ता था। जब हम लोग ४० मील दूर निकल गये तो अेक रातको अेक गांवमें, जहां हमारा मुकाम था, पुलिस पहुंच गअी और हम सबको वापिस हिंगनघाट ले आयी। वहांसे भसालीभाअीको मोटर द्वारा सेवाग्राम लाकर छोड़ दिया।

सत्याग्रहकी लड़ाअीमें भसालीभाअीका अुपवास आश्रमकी तरफसे अेक महान बलिदान था। भसालीभाअी मृत्युके बिलकुल नजदीक पहुंच

गये थे। अेक रोज तो अुनकी नाजुक स्थितिको देखकर हमें लगा कि शायद रातको ही वे चल बसेंगे। अुस रोज पुलिसने बजाजवाडी पर घेरा डाल दिया था। लेकिन मेरे मनमें कुछ अैसा विश्वास था कि भसालीभाअी अुपवाससे मरनेवाले नही हैं। अन्तमें सरकारने चिमूर-काडकी जाच करनेकी भसालीभाअीकी माग स्वीकार की और ६३ दिनके पश्चात् अुनका अुपवास अीश्वरकृपासे पूरा हुआ। अुसमें वे विजयी हुअे और आज भी देहातमें बैठकर लोगोकी बहुत बडी सेवा कर रहे हैं।

अिस सत्याग्रहका अितिहास तो स्वतत्र रूपसे लिखनेकी चीज है। मुझे यहा अितना ही जिक्र करना है कि आश्रमने अुसमें पूरा पूरा भाग लिया और जितना भी सभव था सब कुछ किया।

बापूजीको पकडकर कहा ले गये? क्या हुआ? अिसका कुछ भी पता बहुत दिनो तक नही चलने दिया गया। धीरे-धीरे थोडे दिनके बाद गुप्त रूपसे पता चला कि बापूजीको आगाखा महलमें रखा गया है। कअी महीनोंके बाद बापूजीका दुर्गाबहनके नाम किया हुआ तार मिला। महादेवभाअीकी मृत्युके बारेमें अफवाह तो बाहर आ गअी थी, लेकिन बापूजीकी तरफसे कोअी प्रामाणिक खबर नही मिली थी। महादेवभाअीकी मृत्युसे आश्रमके लोगोंको बडा धक्का लगा। दुर्गाबहन और महादेवभाअीका लडका नारायण वही पर थे। आश्रममें अेकदम गहरा शोक छा गया। लेकिन दुर्गाबहन बहुत धैर्यवान निकली। अुन्होंने बहुत धीरज और समझसे काम लिया। नारायण भी बहुत समझदार लडका निकला।

गावमें महादेवभाअीकी मृत्यु पर शोकसभा की गअी। श्री दुर्गाबहनके हाथों हरिजनोंका विट्ठल-मन्दिर हिन्दूमात्रके लिअे और सवर्णोंका दत्त-मन्दिर हरिजनोंके लिअे खोल दिया गया।

नारायण स्वय भी सत्याग्रहमें शामिल होना चाहता था, लेकिन दुर्गा-बहनकी सान्त्वनाके लिअे अुसको समझाया गया और वह वही रहा।

बापूजीका अुपवास

१० फरवरी १९४३ मे बापूने आगाखा महलमें २१ दिनका अुपवास आरभ कर दिया। जब बापूजीके अुपवासका बयान निकला, तब हम सबको पता चला और भय हो गया कि शायद बापूजी अिस अुपवाससे चले जायगे। सरकारके मनमें भी कुछ अैसा ही था, अिसलिअे बापूजीसे मिलनेकी लोगोको

बहुत बडी छूट दे दी गअी थी। आश्रमसे किसीका बापूजीके पास जानेका अिरादा नही था, लेकिन अन्तमे बापूजीके चिन्ताजनक समाचार आने लगे और अैसा लगने लगा कि शायद बापूजी चले जायगे। अत अुनके दर्शन करनेकी अिच्छासे मै व्याकुल हो अुठा।

आश्रम कमेटी पहले किसीको भी खर्च देनेको तैयार नही थी। परन्तु पूनासे रामदासभाअीका फोन आया कि बलवतसिह आ सकते है। अिसलिअे कमेटीने मुझे जानेकी आज्ञा दे दी। मै २८ तारीखको पूना पहुचा। समय अितना हो गया था कि मेरी मुलाकातकी अर्जी भी मजूर नही हो सकती थी। क्योकि मुलाकातके दिन बीत चुके थे। अर्जी दी भी, लेकिन नामजूर हो गअी। सद्भाग्यसे मि० कटेली, जिनके हाथमे आगाखा महलकी व्यवस्था थी, पहले यरवडा जेलमे मुख्य जेलर थे और मेरा अुनके साथ परिचय था। जब रामदासभाअीने अुनसे कहा कि बलवतसिह सेवाग्रामसे आये है, तो अुन्होने अपने अधिकारसे मुझे भीतर आने दिया। दूसरे दिन बापू अुपवास खोलनेवाले थे। मै जब वहा पहुचा तो बापू पानी पी रहे थे। मुझे देखकर हसे और बोले, "अरे, मै तो आशा छोड बैठा था। आ गया? क्यो गायको बिलकुल ही भूल गया?" बापूके अिस वचनमे मेरे लिअे और गोसेवाके लिअे गहरी भावना भरी थी। बापूकी अुस समयकी मुद्रा और अुनकी प्रेमभरी दृष्टिका वर्णन करना मेरे लिअे असभव है।

मैने नम्रतासे कहा — मै गायको भूला नही हू। लेकिन आज कुछ नही कर सकता हू। गोसेवा ही करनी है, लेकिन मै अपने ढगसे कर सकता हू।

मुलाकाते काफी थी। बापूजी काफी थके हुअे थे। शायद मुझसे कहनेको अनेक बाते अुनके दिलमे भरी थी। पर मै नही चाहता था कि बापू अेक शब्द भी बोलनेका कष्ट करे। अिसलिअे मै अुनको प्रणाम करके हट गया। बापूजीके आगेके कार्यक्रमके बारेमे थोडी बात मीराबहनसे जान ली।

पूज्य बासे मिला। वे मुरझाअी हुअी और अुदास अेक खाट पर बैठी थी। मैने प्रणाम किया। बाने पूछा, "क्यो अच्छे हो? सेवाग्राममे सब अच्छे है?" अुन्होने सबके नाम ले लेकर आश्रमवासियोकी राजीखुशी पूछी। मैने थोडेमे सब बताया और कहा, "बा, आप जब सेवाग्राम आयेगी तो आपको वहा आराम मिलेगा।"

वाने कहा, "अव तो सेवाग्राम आनेकी आशा नही दीखती है। मालूम होता है मै तो यही मरूगी। देखे, भगवान क्या करता है।"

फुअीवा, वापूजीकी वडी वहन, को पहली वार मैने आगाखा महलमें देखा। अन्तमे प्यारेलालजी और सुशीला वहनसे मिलकर मै चला आया।

सचमुच जव मैने आगाखा महलमे प्रवेश किया तो वह मुझे स्मशान जैसा भयावना प्रतीत हुआ। और आखिर वह स्मशान ही वन गया।

२५

वाका स्वर्गवास और वापूजीकी रिहाअी

वापूजीसे मिलकर मै वम्वअी होता हुआ सेवाग्राम आ गया। वादको १९४३ के दिसम्वरमे मै नगाल चला गया। वहा मै सतीशवावूके साथ काम करता रहा। अचानक २२ फरवरी, १९४४ की रातको ९ वजे रेडियो वोल अुठा कि कस्तूरवा आज अिस दुनियासे चली गअी। सवको भारी आघात पहुचा। दूसरे दिन खादी प्रतिष्ठानमे अुपवास, सूत्रयज्ञ और प्रार्थना हुअी। सव गगास्नान करने गये और पूज्य वाको अजलि प्रदान की। मै वाके वहुत निकट सम्पर्कमे आया था, अतअेव मेरे कअी मित्रोने मुझसे वाके विषयमे कुछ लिखनेको कहा। मास्टरजी क्षितिकात झाका अनुरोध सवसे अधिक और आग्रहपूर्ण था। मैने अुन्हे लिखा

"आपकी अिच्छा है कि मै स्वर्गीय पूज्य वाके निकट परिचयके कुछ सस्मरण आपको लिखकर दू। किन्तु मै आपको अुनके वारेमे क्या लिखू? मातृप्रेमसे अतृप्त मेरा मन वाके मातृस्नेहमे सात्वना पाता था, क्योकि मेरी मा मुझे वचपनमे ही छोडकर चली गअी थी। अुनका पवित्र दर्शन और सत्सग मेरे लिअे गगा जैसा ही पवित्र था। आज मै अपनेको अनाथ वच्चेकी तरह महसूस करता हू। अुनके लिअे रातभर मेरा दिल रोया है। स्वप्नमे वापूजीको अकेला देखकर वेदना और भी तीव्र हो गअी है। किन्तु वापूजी तो अिस सवके परे है। कुछ स्वप्न-सा देख रहा हू। सचमुच पूज्य वाकी प्रेममय फटकार अव सुननेको नही मिलेगी। अुनके पवित्र सस्मरण तथा अुनके अनेक असाधारण सद्‌गुणोके विचारमे मेरा हृदय भर आता है और वुद्धिका भी वही हाल हो जाता है।

भरत महा महिमा जल रासी।
मुनि मति ठाढि तीर अबला-सी।।

"फिर भी आपका प्रेम और पूज्य बाके प्रति आपकी अगाध श्रद्धा मुझे लिखनेके लिअे प्रेरणा देती है। अिसलिअे थोडेसे घरेलू सस्मरण सिर्फ आपकी जानकारीके लिअे लिखता हू। बाका जीवन अितना सार्वजनिक था कि सब कोअी अुनके जीवनके बारेमे सब कुछ जानते है। तो भी मुझे जो अुनके चरण-कमलोके निकट रहनेका सौभाग्य मिला और मैने जिस दृष्टिसे अुन्हे देखा अुससे शायद आपको कुछ जानकारी मिले। अस्तु।

"यह तो आप जानते ही है कि बा बहुत कम पढी-लिखी थी। तो भी गुजराती और हिन्दीमे अनेक धार्मिक ग्रथोका अुनका अभ्यास चालू ही रहता था। अितना ही नही, अिस अुम्रमे भी वे अेक छोटे विद्यार्थीकी तरह गीताके श्लोकोका शुद्ध पाठ करने तथा अुन्हे कठस्थ करनेका सतत प्रयत्न किया करती थी। और हममे से जिनके पाससे वे भाषा तथा ग्रथो सबधी कुछ भी सीख सकती थी बडी श्रद्धाके साथ सीखा करती थी। अितनी पूज्य और अितनी बुजुर्ग होते हुअे भी किसीसे पढते समय वे अेक योग्य विनयी विद्यार्थीकी तरह शिष्यभावसे ही पढा करती थी। मुझे अुनको कुछ दिन रामायण पढानेका सौभाग्य मिला था। अुस समय मैने अुनसे आदर्श विद्यार्थीका पाठ पढा था।

"बाकी अितनी अुम्र होते हुअे भी और अेक महापुरुषकी सहधर्मिणी बननेका सौभाग्य प्राप्त होने पर भी अिसके अभिमानने या अिस स्थितिसे सुविधा भोगनेकी भावनाने अुन्हे स्पर्श तक नही किया था। सेवाग्राममे अितने सेवक-सेविकाओके रहते हुअे भी बा अपना काम आप ही करनेका आग्रह रखती थी। अपना चेम्बर पॉट व कमोड भी जब तक खुद बीमार होकर बिस्तरमे न पड जाये, किसीको साफ नही करने देती थी। अितना ही नही, आश्रमके भोजनालयका कुछ काम तो अपने हाथो किये बिना वे रहती ही नही थी। अिसके बिना अुनको चैन ही नही पडता था। आश्रमके बीमारोकी खबरदारी तो बा रखती ही थी। परन्तु अितनी कमजोरीके बावजूद बापूजीकी कुछ न कुछ शारीरिक सेवा किये बिना भी वे नही रह सकती थी। आश्रमके जवान लडके-लडकियो पर वे अेक माताकी तरह कडी निगरानी रखती थी।

"वाकी गोभक्ति अद्‌भुत थी। जब गोपूजाका कोअी त्यौहार आता तो वा मुझसे कहती, "वलवत, अेक बछडेवाली गाय मुझे पूजाके लिअे चाहिये।" अुनकी प्रेममय गोपूजा देखकर मुझे यशोदा माकी याद आ जाती थी। अक्सर मै अुनको देवकी नामकी गाय दिया करता था, जो वास्तवमे हमारी गोशालाकी मा थी और सचमुच देवकी जैसी ही निरीह और प्रेमकी मूर्ति थी।

"अगर आश्रममे वा न होती तो हमे त्यौहारोका पता चलना असम्भव-सा ही था। कोअी त्यौहार हुआ कि वाकी सीधीसादी प्रसादी, जो आश्रमके अस्वाद-व्रतकी व्याख्यामे आती हो, हमारे सामने आ ही जाती थी। तव पता चलता था कि आज अेकादशी या सक्रान्तिका दिन है।

"देश या विदेशके राजनैतिक मामलोमे अुनकी स्वतत्र दिलचस्पी न रहते हुअे भी वे रोजाना अखवार पढकर सब बातोकी जानकारी रखती थी। लडाअीकी अिस मानव-सहारिणी विध्वसलीलाके वारेमे सुनकर व पढकर अुनको काफी वेदना होती थी। अेक रोज कुछ बात चल रही थी तो वे वोली, "आ लडाअी तो जगतनो नाश करीने ज शान्त थशे के शु?" (यह लडाअी जगतका नाश करके ही शान्त होगी क्या?) बगालके दुष्कालके वारेमे आगाखा महलसे अेक पत्रमे अुन्होने लिखा था, "बगाळना समाचार साभळीने तो हैयु फाटे छे जाणे बगाळमा तो आकाश ज फाटी पड्यु छे कोण जाणे अीश्वर शु करशे?" (बगालके समाचार सुनकर हृदय काप अुठता है। बगाल पर तो आकाश ही फट पडा है। न मालूम भगवान क्या करेगा?) अिससे आप जान सकते है कि देशकी कितनी चिन्ता अुनको रहती थी।

"वा यद्यपि वहुत कम पढी-लिखी थी तो भी अग्रेज मेहमानोका टूटी-फूटी अग्रेजीमे ही स्वागत करती और अुनके साथ कुछ बातचीत भी अग्रेजीमे कर लिया करती थी। अगर बाहरी दुनियाकी वात वापूजीके लिअे छोड दे तो वाके बिना आश्रम सुना-सा लगा करता था।

"जिस दिन वापूजी वम्वअी गये थे, मै वर्धा स्टेशन तक अुन्हे पहुचाने गया था। गाडी लेट थी। स्टेशनके वेटिंग रूममे बापू तो कुछ लिखने लगे और हम लोग वाके पास बैठकर अुनसे कुछ बातचीत करने लगे। जब वा चलने लगी तो मेरे मनमे अुनके जल्दी लौट आनेके वारेमे शका अुठी, अिसीसे मैने प्रणाम करके कहा, वा, जल्दी लौटना। वा वोली, "हा

भैया, तुम्हारे आशीर्वादसे लौट आयी तो आनन्द ही होगा।" बाके अिन शब्दोमे वियोगकी वेदना थी और लौटनेके बारेमे निराशा। बाके करुणामय शब्द आज भी मेरे कानोमे गूज रहे है और अुनकी वह प्रेममयी मूर्ति मेरी आखोके सामने नाच रही है। शायद बाकी वही भविष्यवाणी थी, जो कल सच होकर ही रही। मेरी व्यक्तिगत श्रद्धा तो बामे अितनी बढ गयी थी कि यदि बापू और बा अेक नावमे बैठे हो, नाव डूबने लगे और दोनोमे से अेकको ही बचाया जा सकता हो और अगर अुस हालतमे मेरा बस चले तो मैं पहले बाको बचानेकी कोशिश करू। क्योकि बापूने अपनी कठोर तपश्चर्याके बलसे जिन दैवी सम्पदाओको प्राप्त किया है, अुनका अटूट भडार स्वभावसे ही बामे भरा था। आज मैं जब अपने पुराने अितिहासकी तरफ नजर घुमाकर देखता हू तो पू० बाके त्याग, अुनकी मूक तपश्चर्या और अुनकी अमर मृत्युके लायक अुपमा मुझे अेक भी नही मिल रही है।

"हिन्दू धर्मको अनेक महादेवियोने धर्ममार्ग दिखाया है, जैसे सीता, सावित्री आदिने। सावित्री तो अेक बार ही अपने पतिको यमराजसे वापिस लायी थी। सीता सिर्फ १४ वर्ष ही रामके साथ वनवासमे रही। लेकिन बा तो जन्मभर बापूके साथ वनवासमे रही और जन्मभर अुनके लिअे यम-राजसे लडती रही। और आखिरमे विजयी होकर अुन्होने अपने आपको सादर अुसके सुपुर्द कर दिया। अैसा पवित्र जीवन और पवित्र मृत्युका अुदाहरण भारतके या दुनियाके अितिहासमे क्या कोअी आपकी नजरमे है? बा जो आदर्श छोड गयी है अुससे देशके सारे स्त्री-पुरुषोको लाखो क्या करोडो वर्षो तक धार्मिक और राजनैतिक मार्ग पर चलनेकी शक्ति और प्रकाश मिलता रहेगा।

"गीताका कर्मयोग तो बाके लिअे महामत्र था। कामके बिना अेक क्षण भी रहना अुनके लिअे अस्वाभाविक था। अुनकी कार्यतत्परता देखकर हम सबको सिर झुकाना पडता था। और अिस वृद्धावस्थामे अुनकी अैसी कार्यतत्परता तथा शारीरिक और मानसिक शक्तिको देखकर हमे आश्चर्य होता था।

"बा बराबर नियमित रूपसे सूत कातती थी। जब तक बीमारीके कारण बिलकुल शय्याशायी न हो जाती तब तक अुनका सूत कातना नियमित चलता था और प्रार्थनाके समय देखा जाता था कि सबसे ज्यादा सूत कातनेवालोमे अेक बा भी होती थी। कितने ही समय तक अस्वस्थ

रहने पर भी वापू तथा आश्रमको छोडकर जलवायु परिवर्तन करना या अपने पुत्र तथा स्नेहियोंके पास जाना अुन्होंने कभी पसद नही किया।

"पूज्य वाके प्रति वापूका अितना आदर था कि जब वा कही वाहर जाती या वाहरसे आती तो वापू अपने जरूरीसे जरूरी कामको भी छोडकर वाको पहुचाने या अुनका स्वागत करने आश्रमके वाहर तक जाते थे। वापूने कितनी ही वार कहा है, 'मुझे व वाको नजदीकसे जाननेवाले लोगोमे तो अैसे ही लोग ज्यादा है जिन्हे मुझ पर जितनी श्रद्धा है अुससे कही ज्यादा वाके अूपर है।' पू० वाके जैसा पवित्र आदर्श जीवन और मृत्यु अीश्वर सबको दे अैसी प्रार्थना करे। अुनकी पवित्र मृत्युका शोक तो हम क्या करे?

मेरा मुझ पर कुछ नही, जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपते, क्या लागत है मोर।।

"बस वा जिसकी थी अुसके पास चली गयी। हम सबको भी अेक दिन जाना है। किसी सतने कहा है अैसा काम करो कि रोते आये थे, हसते हसते जाओ।

"पूज्य वा हसते हसते गयी। वे अितनी अूची व पवित्रात्मा थी कि अुनकी आत्माको हमेशा ही शाति थी। और अिसमें सदेह नही कि वे भगवानकी गोदमे शान्तिपूर्वक विश्राम करेगी।

२३-२-'४४

आपका भाअी
वलवतसिंहके सादर प्रणाम"

सन् '४४ के मअीमे वापूजी जेलसे छूट गये और कुछ दिन आरामके लिअे जुहू चले गये। मैंने वगालसे वापूजीको लिखा कि आपसे मिलनेकी अिच्छा होती है, लेकिन रुकनेकी कोशिश करता हू। वापूजीने लिखा

चि० वलवतसिंह,

तुम्हारा खत मिला। थोडे शब्द तो तुमको भी लिखू, क्योंकि थोडा थोडा प्रियजनोंको लिखता हू। तुम्हारा वहा ठीक जम गया है। सतीशवावूको मदद मिलती है, देनी चाहिये। अच्छे रहो। मेरे पास आनेकी अिच्छाको रोको।

जुहू, २१-५-'४४

वापूके आशीर्वाद

मैं वगालसे वापिस ता० २१-९-'४४ को सेवाग्राम आया। वापूजी गाधी-जिन्ना वार्ताके लिअे वम्बअी गये थे। वहासे ता० १-१०-'४४ को वापिस आये।

मैंने वापूजीको वगालका अनुभव और '४२ के आन्दोलनमे वाहर क्या क्या हुआ अुसका सव हाल सुनाया। वे कुछ नही वोले। अुन्होने दु खसे अेक लम्वी सास ली। मैंने दीपावलीके दूसरे दिन वापूजीको अपने मनकी स्थिति वतलायी। सस्कृत पढनेकी अिच्छा प्रकट की और अग्रेजीके विपयमे अुनकी राय जाननी चाही। वापूजीने लिखा

"सस्कृत अवश्य पढो। अुच्चारण शुद्ध वनानेमे किया हुआ प्रयत्न व्यर्थ नही जायगा। प्रत्येक भाषाके अुच्चारण शुद्ध होने चाहिये, परन्तु सस्कृत भाषाके लिअे शायद शुद्ध अुच्चारण अत्यावश्यक है। अग्रेजीका अभ्यास तुम्हारे लिअे विलकुल आवश्यक नही है। जो ज्ञान है अुसे व्यवस्थित करो और अुसमे वृद्धि करो।

मेरे आशीर्वाद तो तुम्हारे साथ है ही।

२१-१०-'४४ वापू

दूसरे दिन आश्रमवासियोके सामने वापूजीने आश्रमकी विश्वकुटुम्व भावना और ग्रामसेवाकी कमीके अूपर गम्भीर प्रवचन दिया। अन्तमे अुन्होने कहा, "अगर हम सेवाका तेज न वता सके तो प्रजाका पैसा खाकर यहा रहना अच्छा नही है।"

वापूजीके मनमे यह विचार चल रहा था कि अव आश्रमको विखेर देना चाहिये। वे चाहते थे कि आश्रमसे जो लोग वाहर जाकर अधिक काम कर सकते है, वे वाहर जाकर अधिक काम करे। अिस विषयमे वापूजीके साथ हमारी खूव चर्चा होती थी। मैंने वापूको अेक लम्वा पत्र लिखा, जिसका आशय यह था कि आपने यहा सव सस्थाओको वसाकर ठीक नही किया है। अुनमे आपसमे कुछ न कुछ सघर्ष चलता है और देहातका काम भी अेक दृष्टिसे नही हो पाता है। आपके रोज नये नये परिवर्तन चलते रहते है। अैसे ही आपने सावरमती आश्रमका परिवर्तन किया। अव अिसका भी करना चाहते है। यदि ये सस्थाये अलग अलग गावमे वसती और स्वतत्र रीतिसे काम करती तो अिससे गावोकी अधिक सेवा होती। वापूजीने लिखा

चि० वलवतसिंह,

तुम्हारा खत मिला। अुसमे तुमने वुद्धिका वल नही वताया है। खादी-विद्यालय आदि लाकर मैंने विगाडा नही है। मेरी ही वनाअी हुअी सस्थाओंको मेरे नजदीकमे ही कार्य करना था। अगर अुनके सव सेवक

पूज्य कस्तूरबा गोपूजाके लिअे तैयार हैं । लेखक बछडेको पकडकर बैठे हैं ।

बापूके हस्ताक्षरोका नमूना

[यह पत्र पुस्तकके पृष्ठ २९७ पर छपा है।]

अेक कुटुम्व होकर न रह सके तो दोप किसका? मेरा? हो सकता है। कि दोप देखनेवालेका? समझ-नूझकर मावरमती सत्याग्रह आश्रमका परिवर्तन किया। मेरा विश्वास है कि सच्चे होकर हमने कुछ भी गवाया नही है। आज जो मथन हुआ अुससे भी कुछ हानि नही हुअी है। हम सोते थे, जाग्रत हुअे।

कल जो हुआ अुसका नतीजा यह है कि हम अैसे ही रहेंगे तो ठीक नही होगा। जो वाहर जाकर ज्यादा सेवा कर सकते हैं, अुन्हे जाना ही चाहिये। मेरे कार्य और परिवर्तनको जो न समझ सके वे मेरे सान्निध्यसे क्या लाभ अुठा सकते है? फायर-वकेट वनो तव तो मूक हो जाओ, नम्र वनो, सवको आश्वासन रूप वनो और यह सव समझकर वनो। मस्कृत अभ्यास वरावर करो। प्रथम कार्य तुम्हारा यह है कि तुम्हारे खतमे जो विचारदोप है अुसे दुरुस्त करना। किशोरलालसे मशविरा करो। मेरे साथ सवाद करना है तो समय मागो।

२७–१०–'४४ वापूके आशीर्वाद

मुझे सतीशवावूने वहाकी गोशालाकी व्यवस्थाके लिअे कलकत्ता वुलाया था। आश्रमके कामकाजके वारेमे वापूजीको कुछ सूचनाये देनी थी। वापूजीको मैंने लिखकर वताया। अुसके जवावमे वापूजीने लिखा

चि० वलवतसिंह,

तुमने ठीक सावधान किया है। जो हो सके करूगा। जैसे हम समग्र हैं, अैसा ही फल आयेगा।

कौन जानता है कल क्या होगा? रामजीने नही जाना था कि प्रातःकालमे क्या होनेवाला है। वहाका काम ठीक करके निश्चित होकर वापिस आ जाओ।

सेवाग्राम, २०–११–'४४ वापूके आशीर्वाद

सचमुच वापूके वारेमे तो अैसा ही हुआ। किसको पता था कि ३० जनवरी १९४८ की सायप्रार्थना वापूजी नही कर सकेगे? लेकिन मेरा अेक अेक क्षण ओीश्वरके हाथमे है अैसा अुनका अटल विश्वास था। वही विश्वास अुनके अन्त समय पर काम आया। अुस घडी सिर्फ अुनके मुहमे रामका नाम ही निकला। अैसा विश्वास प्राप्त करनेकी हम सवके मनमे लगन पैदा हो।

२६

महादेवभाओी और पूज्य बाके पुण्यस्मरण

जब बापूजीकी तबीयत ठीक रहती थी तब आश्रममे शुरू शुरूमे तकलीसे सूत्रयज्ञ आरभ हुआ और बापूजी असमे मौजूद रहते थे। अुस समयका गाम्भीर्य देखने लायक होता था। सारा वातावरण यज्ञमय बन जाता था। आगाखा महलसे छूटनेके बाद बापूजी जब सेवाग्राममे रहते तब यह सूत्रयज्ञ महादेवभाओीके अुस कमरेमे चलता था, जिसमे बैठकर महादेवभाओी अपना सारा काम करते थे। भगवान अपने भक्तकी किस तरह सेवा करता है, यह बापूजीके महादेवभाओीके प्रति जीतेजागते प्रेमसे प्रत्यक्ष दिखाओी देता था। अुस समय अैसा ही प्रतीत होता था जैसे बापूजी महादेवभाओीका जप कर रहे है और महादेवभाओी बापूके सामने हस रहे है। क्योंकि महादेवभाओी सूत्रयज्ञके बारेमे बहुत दृढ और नियमित थे। कितना भी काम हो, ३७५ तार तो वे कातते ही थे। आश्रममे सूत्रयज्ञका यह क्रम काफी दिन तक चला।

२२ फरवरी १९४५ को बाकी पहली बरसीके समय बापूजी सेवाग्राममे ही थे। अुस रोज सुबहसे ही गीता-पारायण हुआ। सूत्रयज्ञ तो था ही। मैंने बापूसे कहा कि बाको रामायण बहुत प्रिय थी, असलिअे अुसका पाठ होना चाहिये। अत रामायणका पाठ भी सारे दिन चला। शामको सामूहिक प्रार्थना हुओी। बापूजीने अुसमे बाके प्रति गहरी श्रद्धा व्यक्त करते हुअे कहा

"सूर्यकी गतिके हिसाबसे आज बाको गये अेक वर्ष पूरा होता है। चन्द्रकी गतिसे महाशिवरात्रिके दिन अवसान हुआ था। यह खेदका प्रकरण नही है बल्कि जन्मके दिनकी तरह बडा आनन्द होना चाहिये। मै जन्म और मृत्युमे बडा फर्क नही मानता। आत्माका न जन्म है न मृत्यु। हम बाकी आत्माको चाहते थे। अुसका तो कभी हनन नही होता है।

"अैसे दिन बाह्य रूपसे तो हम धार्मिक क्रियामे ही बिताते है। आज २४ घटा चरखा चला। वह मेरे पास धार्मिक विधि है। बलवतसिंहकी प्रेरणासे दिनभर रामायण भी चली। सुबह गीता-पारायण हुआ। मगर अिससे हमारा पेट नही भरता। हम लोग सोच-समझकर धार्मिक क्रिया करे, अीश्वरको स्वीकार करे। अीश्वर अूपर नही, नीचे नही, हृदयस्थ है।

सचमुच तो वह हर जगह है। शास्त्रमे जो लिखा है कि चन्द चीजे खाली हो सकती है वह हवासे खाली होनेकी बात हो सकती है। हवासे खाली करो तो भी कुछ तो रह ही जाता है। भौतिक शास्त्रवालोने तो यह देख लिया है कि हवामे भी सूक्ष्म कोओी चीज है। आध्यात्मिक शास्त्रवालोने देख लिया है कि अीश्वर सब जगह है। हमारी सब धार्मिक क्रियाओका वह अीश्वर साक्षी है।

"कल मैंने कहा कि पहले हमें अपना पाप धोना है। कल विवाह था। पहले पाच मिनट मे पाखाना देखने गया। वहा बदबू थी, आखोने मैला देखा। मैला क्या भौतिक पाप नही है? मैला रखनेमे हमने बडी गलती की है। अैसे ही पाप हमने यहा भी किये होगे। तो हमे देखना है कि हमारे पाखाने और रसोअीघर बिलकुल साफ है या नही, रसोअीका काम बराबर चलता है या नही? क्यो हम अेक-दूसरेको दुःख देते है? क्यो मच्छर-मक्खी बढते है? यह हमारे पापकी निशानी है। अिनके बढनेका कारण अभी तक मेरे हाथमे नही आया। लेकिन अिससे हमारा पाप मिट नही जाता।

"अिस शुभ दिन हमने चरखा चलाया, दूसरा धर्मकार्य किया। अुसके हम लायक थे या नही, अुसका चिह्न यह है कि हम सफाअी रखते है या नही। अिसे पाप न कहो, दोष कहो। मगर मेरे सामने वह अेक ही चीज है। अिस पापका बदला आगामी जन्ममें नही, अिसी जन्ममे मिल जाता है। अिस तरह देखे तो हमारा जीवन सरल और आनन्दमय बन जाता है।

"कान्तिका पत्र था। अुसमे दो विद्वानोका अुल्लेख किया है। अेकने कहा, 'चरखा चलाना मैं धर्म नही मानता। यह तो रूढि हो गअी है, अिस-लिअे चलाता हू।' किसीको देखकर चरखा चलानेसे वह धर्मकार्य नही होगा, अुससे स्वराज्य नही आवेगा। वह तब होगा जब हम अुसके शास्त्रको, अुसकी शक्तिको समझ ले। अिस तरह बिना विश्वास चरखा चलानेवाले आश्रममें तो नही होने चाहिये। यहा सब चरखा नही चलाते है। वह मैं सहन करता हू। देखकर करनेवालोको मैं मना नही कर सकता। मगर अितना बता देता हू कि अुससे कार्यसिद्धि नही होगी।

"दूसरे विद्वानने कहा, 'प्रार्थनामे मैं मानता नही।' वह अुनका दोष नही। अुसका कारण यह है कि हम प्रार्थना करनेवाले प्रार्थनाको जीवनमें ओतप्रोत नही करते। अुन्होने मुझे चेतावनी दी कि तुम्हारे आसपास क्या सच्चे आदमी है या धोखा देनेवाले, तुम्हारे नसीबमे निराशा ही निराशा

है। मुझे निराशा नही। मैं तो अपना धर्म पालन करता हू, बता देता हू। पीछे मुझे क्या? वह विद्वान गीता पर प्रवचन देते है, प्रार्थनामे बैठते है, मगर रिवाजके कारण करते है।

"अगर प्रार्थनामे मन घूमता रहे, अीश्वरमे न रहे, तो प्रार्थनामे हाजिरी मात्र भले ही हो हम वहा नही है। हमारे शरीर और मनमे द्वन्द्व चलता है। आखिर मन जीत जाता है। यह सब कहनेका हेतु अितना ही है कि आज जिसे हम धर्मदिन मानते है, अेक स्वच्छ अनपढ बूढी औरतके नामसे, अुसके स्मरणमे जो करते है अुसे पूरे मनसे करे, वह सच्ची चीज हो।"

अुसी दिन मेरी भतीजी चि० होशियारी आश्रममे आयी। अुस रोज रातको तो समय नही मिला, लेकिन २३ तारीखको सुबह मैं अुसे बापूके पास ले गया। वह तो सिर्फ बापूजीके दर्शन करनेके लिअे और अुनको अेक चद्दर भेट करने आयी थी। मैंने बापूजीसे कहा, "बापूजी, आप अिस लडकीको पहचानते है?" क्योकि १९३९ मे वह दिल्लीमे बापूजीसे मिल चुकी थी। बापूजीने कहा, "हा, क्यो नही।" और हसकर बोले, "क्यो अब तो नही जायगी?" अुसका सेवाग्राममे रहनेका कोअी अिरादा नही था, लेकिन बापूके अिस वचनने अुसको बाध लिया। अुसने कहा, "हा, आप रखेगे तो रहूगी आपके पास।" बापूने कहा, "अब तो यही रहना है।" बापूके अुस वचनका अितना चमत्कारिक असर अुस पर हुआ कि कुटुम्बके सब लोगोका विरोध सहन करके भी वह अभी तक आश्रममे है। अिस तरह न मालूम कितने लोगोको बापूजीने अपनी प्रेमडोरीमे बाधा था। वे कहा करते थे कि अेक बार जो मेरी चिमटीमे आ जाता है वह निकल नही सकता है। बात सच थी। क्योकि आदमीको जो चाहिये अुसकी पूरी पूरी सुविधा बापूजी अुसके लिअे कर देते थे, और अुसका अुचित अुपयोग भी कर लेते थे। आदमी जाय तो भी क्या बहाना लेकर जाय?

बापूजी कलकत्ता जा रहे थे। अुसी दिन महिलाश्रममे कोअी अुत्सव था, जिसमे अुनको आशीर्वाद देने बुलाया गया था। सुबह ही बापूजी महिला-श्रम गये। मैं भी बापूजीके साथ था। बाके नामसे बापूजीको दो साडिया भेट दी गयी। साडिया हाथमे लेकर अुन्होने बोलना शुरू किया

"आप लोगोने बाके निमित्तसे मुझे दो साडिया दी है यह अच्छा है। बा अनपढ थी तो भी अुसका दिल स्त्रियोकी अुन्नतिके लिअे काफी तडपता था। अुसका जीवन सादा और अेक देहातीका-सा था। अुसका

आचार-विचार भी हमारी सस्कृतिका प्रतीकरूप था। वा मेरे हर सकटके समय मेरे साथ खडी रही और निरक्षर होने पर भी मेरे वडे वडे मेहमानोका सत्कार करनेमे और मेरी वडी वडी लडाअियोमे शामिल होकर साथ देनेमें कभी पीछे न रही। अन्तमें अेक अन्तिम लडाअीके मोर्चे पर मुझे अकेला छोडकर चली गअी।" यह कहते कहते वापूका गला भर आया और वाणी वन्द हो गयी। आखोमे अश्रुधारा वहने लगी। वाके लिअे पहली ही वार मैंने वापूको अिस तरह रोते देखा।

महिलाश्रमकी लडकियोका दिल भर आया और कअीके आसू निकलने लगे। अुसके वाद वापू अधिक नही वोल सके। वीरेंसे कहा, "आज वगालमें क्या चल रहा है? वहा लाखो लोग भूखसे मर गये। अभी भी वहाकी हालत सुधरी नही है। हिन्दू-मुस्लिम झगडे भी चलते है। मैं अिसमें क्या कर सकूगा यह तो अीश्वर ही जाने।"

वापूजी वगाल गये और शीघ्र ही लौट आये। २२ मार्चका दिन था। सुवहकी घटी पर श्री कृष्णचन्द्रजी गीता लेने आये। मैं जगा। रामनामकी जगह पू० वाका नाम मनमें स्फुरा। साथ ही रामायणमें से अुस दिनके लिअे विषय खोजने लगा। अहल्याका अुद्धार सामने आकर खडा हो गया और साथ ही पू० वाकी वात्सल्य-मूर्ति। मैं स्वप्न नही देख रहा था। जाग्रत था परतु विलकुल स्पष्ट मैंने नही देखा। वाने वोलना आरभ किया "जो वलवन्त, अहल्या कोअी पथ्थरनी शिला न हती जे रामनी पदरज लागवाथी स्त्री वनीने आकाशमा अूडी गअी अे तो मारा जेवी कोअी भोळी अने अभण वाअी हशे अेनी जड वुद्धिने लीधे तुलसीदासे अेने पथरा जेवी वर्णवी हशे अेने काअी आघात के समाजनो दड लाग्यो हशे.[1] कुछ भूल भी हुअी होगी।

---

१ वाने तो शायद सारी वात गुजरातीमें ही कही होगी, किन्तु वह मुझसे हिन्दीमें भी वोलती थी। आज यह सस्मरण लिखते समय मुझे पता नही है कि अुन्होंने क्या क्या वातें गुजरातीमें कही और क्या क्या हिंदीमें। लेकिन अुस दिनकी मेरी डायरीमें जैसा लिखा है वैसा अविकल रूपमें मैंने यहा दिया है। गुजराती वाक्योका अर्थ "देखो वलवन्त, अहल्या कोअी पत्थरकी शिला न थी जो रामकी पदरज लगनेसे स्त्री वनकर आकाशमें अुड गअी। वह तो मेरे समान कोअी भोली और अनपढ वाअी थी। अुसकी जडवुद्धिके कारण तुलसीदासने अुसका पत्थर जैसा वर्णन किया है। अुसे कोअी आघात लगा या समाजका दड मिला होगा।

283

अुसने रामकी पदरज याने पदसेवा और सत्संगके प्रतापसे पवित्र और बुद्धि-शालिनी बनकर समाजमे अुच्च स्थान प्राप्त किया होगा। अे ज अेनो अुद्धार जो ना, हु पण पथरा जेवी ज हती ना? पण बापुनी सेवाने प्रतापे आज जगत मारी पूजा करे छे ना?"[२]

मुझे बाकी दलीलने मंत्रमुग्ध कर दिया। मन आनन्द-सागरमे गोते खाने लगा। आखे बाके प्रेमसे भीनी हो गअी। हृदय गद्‌गद हो गया। मै मोहवश बासे पूछ बैठा, "अच्छा बा! आप बापूको अकेला और आश्रमको सूना बनाकर क्यो चली गअी?"

बाने तुरन्त ही जवाब दिया, "देखो बलवन्त, यह तुम्हारा मोह है। मैंने जो किया वह करना मेरा धर्म था। अब मेरा शरीर जर्जरित हो गया था, अुसे अच्छी अवस्थामे रखना असभव हो गया था। बापूके लिअे, तुम सबके लिअे, मित्रोके लिअे, देश-विदेशके अुन सब लोगोके लिअे, जो बापूको पहचानते है, मै चिन्तारूप बन गअी थी। और बापूजीकी कुछ भी सेवा करनेके लिअे मेरा शरीर निकम्मा बन गया था। मेरे लिअे यही अेक मार्ग था। जिस प्रकार मैंने बापूकी सेवा करके अुनके कामोमे मदद की थी, अुसी प्रकारसे अपनी शारी-रिक सेवाका भार अुनके अूपरसे अुठाकर भी क्या मैंने अुनकी सेवा नही की है? और देखो, आज तो मै बापू और तुम सबके लिअे सच्चे रूपमे सहज प्राप्त हो गअी हू। जब मेरा शरीर था तब तो आश्रममें, आगाखा महलमे, या और किसी स्थान पर रहनेसे दूसरे स्थानमे मेरा अभाव रहता था। तुमको सब कामोसे छुट्टी लेकर या काम अधूरे छोडकर मुझे रामायण सुनानेके लिअे मेरे पास आना पडता था। अब तो मै सबके लिअे सब स्थानोमे सहज प्राप्त हू न? अच्छा तुम बताओ कि अब मुझे रामायण सुनानेके लिअे तुमको कुछ भी झझट करनी पडती है? या कुछ भी काम छोडकर अिधरसे अुधर जाना पडता है? या मुझे समझानेकी कोशिश करनी पडती है? तुम्हारे मनमे जब मेरा स्मरण होता है और रामायणका मनन चलता है तब मै समझती हू और खुश होकर तुमको आशीर्वाद देती हू। अितना ही नही, तब तो तुम मुझे अर्थ समझाते थे, अब तो मै भी तुमको समझाती हू। तो तुम ही बताओ कि तुमको मेरे शरीर रहते हुअे जो लाभ था अुससे आज कम है या अधिक?"

---

२ यही अुसका अुद्धार। देखो, मै भी तो पत्थर जैसी ही थी न? बापूकी सेवाके प्रतापसे आज ससार मेरी पूजा करता है न?

मेरे पास क्या दलील थी जो मै वाके शरीर रखनेकी सार्थकता सिद्ध कर सकता? आखिर वाके मुहकी तरफ देखता रहा। वाका चेहरा अुगते हुअे सूर्यके समान स्वच्छ और तेजोमय लेकिन आ भरकर देखा जा सके अितना शान्त था। मुख पर किसी प्रकारकी अुदामी या वुढापेकी झलक नहीं थी। वा फिर वोली, "देखो, तुम गायोसे दूर रहते हो यह मुझे विलकुल पसन्द नही है। मैने तो अुस समय भी वापूके साथ झगडा किया था। पण तारा गुस्साथी वापु मूझाय वीजानी साथे झघडानो भय रह्या करे अने ववी वातो तो वापु वारीकीथी क्या छाणे? पण अेने काओी नथी। तु गुस्सो छोड आज भले गायथी अलग छे पण गायने मनथी वीसरजे मा गाय तो आपणी साची मा छे गाय न होय तो आपणे अेक डगलु चाली शकीअे नही"*

मुझे विचार आया कि रामकृष्ण परमहसके जीवनमे जो कालीके दर्शनकी वाते आती है वे अिसी प्रकारसे हुअी होगी। सच वात तो यह है कि हमारा मन ही सव कुछ है। मनमे जिम प्रकारके सस्कार और सकल्प होते है वैसे ही हम होते है। मैने जो वाके दर्शनकी वात लिखी है यह कोअी स्वप्न नहीं है, न मेरी गढी हुअी वात है। मै तो अुस समय शून्यवत् हो गया था। थोडी देरके लिअे अपने आपको भूल गया था।

मैने वापूजीके सामने यह सारी वात रखी और पूछा कि अहल्याके वारेमे अुनका क्या मत है? वापूजीने लिखा

> अहल्या आख्यानका जो अर्थ वाने दिया वह ठीक है। वह अेक है। दूसरे भी अर्थ हो सकते है। जितने भक्त और अुनके भाव अितने और अैसे अर्थ होते है।
>
> २२–३–'४५ वापू

---

* परतु तेरे गुस्सेसे वापू घवराते है। दूमरोके साथ झगडेका भय रहना है। सारी वाते तो वापूजी वारीकीमे नही देख सकते है। पर अिसका कुछ नही। तू गुस्सा छोड। आज भले ही तू गायसे अलग है पर गायको मनसे मत भूलना। गाय तो हमारी सच्ची मा है। गाय न हो तो हम अेक कदम भी नही चल सकते।

२७

कुछ महत्त्वकी बातोंमें बापूकी सलाह-सूचना

मुन्नालालजीने बापूजीके सामने अेक अैसी योजना रखी कि जो आश्रमके नौकर हैं वे भी आश्रमके भोजनालयमे भोजन करे। अुनको अूपरके खर्चके लिअे थोडासा पैसा दिया जाय और अुनके भोजनादिमे जो अधिक खर्च हो वह आश्रम सहन करे। अिससे अुनके साथ भाअीचारा बढ सकेगा और हम अुनके जीवनमे प्रवेश कर सकेगे।

मुझे यह योजना अव्यवहार्य लगती थी। अुसी समय मीराबहन मुझे किसानाश्रम, मूलदासपुर (हरद्वार और रुडकीके बीच) मे गोशालाकी व्यवस्थाके लिअे बुला रही थी। लेकिन मेरी भतीजी होशियारी थोडे दिन पहले आश्रममे आयी थी और अुसे मेरे बिना अकेले रहना अटपटा-सा लगता था। अिस नौकरोके प्रयोगके बारेमे मैंने अपनी शका बापूजीको बताअी थी और मीराबहनके पास जानेके बारेमे अुनसे पूछा था। पचगनीसे बापूजीका अुत्तर आया

चि० बलवन्तसिंह,

अब होशियारीको मत सताओ। मेरे आने तक ठहर जाओ। मीराबहनको लिखो। होशियारीका दुःख मै समझ सकता हू। मैने मीराबहनको अेक खत अिसके पहले लिखा है। जो प्रयोग मुन्नालाल नौकरोके मार्फत करते है अच्छा है। अैसा ही करना चाहिये। निष्फल हो सकता है तो अर्थ होगा कि हमारी अहिंसा बहुत अधूरी है। गलती समझमे है। नौकरोको हम नौकर न समझे, हमारे सगे भाअी समझे। कुछ बिगाडे, कुछ चोरे, ज्यादा खर्च हो जाय, यह सब व्यर्थ नही होगा, अगर हम अुनको कुटुबी समझे तो। अिसे सोचो।

मैने सचालनकी सूचना चिमनलालको की है अुसे सोचो और हो सके तो सचालक प्रतिमास बदलो।

१२–५–'४५ बापूके आशीर्वाद

होशियारीको मैंने खादीके अध्ययनके लिअे खादी-विद्यालयमें भेज दिया, जहा अुसका मन काममें लग गया। नौकरोंके प्रयोगके बारेमें मैं अब तक सहमत न हो सका था। मैंने यह सब बापूजीको लिखा। अुनका अुत्तर आया।

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। अब होशियारीको शांति देना, काम और अभ्यास करने देना।

नौकरोंके बारेमें जो मुन्नालाल करते हैं अुसमें सलाह मेरी है। अच्छे हेतु रखते हुअे अुस मुताबिक हम न चलें तो दोष हमारा है। हेतुकी निर्मलता मलिन नहीं होती है। काम कठिन है। मैं चाहता हूं कि सब अुसमें मदद दें। नौकरोंको अपने आचारसे बतायें कि वे नौकर नहीं हैं लेकिन हमारे भाअी-बहन हैं। हम अपना काम करें, शरीरको आलस्यसे बचावें, अिस शिक्षणमें तनिक भी फरक नहीं हुआ है। धैर्यसे अिसे समझो। न समझमें आये तो मुझे बार बार पूछो।

२५–५–'४५ बापूके आशीर्वाद

यह नौकरोंका प्रयोग थोड़े दिन तक चला। मुन्नालालभाअीने अिसके पीछे बहुत मेहनत की। नौकरों पर कुछ असर भी हुआ। लेकिन धीरे धीरे वह बंद हो गया।

साबरमतीमें बापूजीने आश्रममें रसोअी आदिके सामूहिक कामके लिअे नौकरोंसे काम न लेनेका नियम रखा था। लेकिन सेवाग्राममें तो जानबूझ कर आश्रमके रसोअी आदिके काममें हरिजन नौकर रखे गये थे। अिसमें बापूजीका अुद्देश्य हरिजन और देहातियोंके साथ घुलमिल जानेका था, जिसमें देहातियोंकी आश्रमके साथ अेकरूपता सध सके। अैसी स्थिति साबरमतीमें नहीं थी। सेवाग्राममें बापूजी देहातियोंके साथ बिलकुल अेकरूप होनेका प्रयत्न करते थे। छोटी छोटी बातोंमें बापूजी बहुत तत्पर और सावधान रहते थे और जिसको अेक बार अपना लिया अुसको फिर मांकी तरह ममत्वमें पकड़े रखते थे।

चि० होशियारी आश्रममें आयी तो सही लेकिन मेरे भाअी और भाभीको यह पसन्द नहीं था। मेरे भाअी अुसको वापिस ले जानेके लिअे आये।

होशियारीने कहा कि मैं वापूजीकी अिजाजतके बिना वापिस नही जा सकती। अुसने वापूजीको तार दिया। मैने पत्र लिखा। वापूजीका अुत्तर आया

चि० वलवन्तसिंह,

चि० होशियारीका तार मिला था और कल शामको तुम्हारा खत भी मिला।

होशियारीके पिताजीको मेरी सलाह है कि वे मेरे आने तक होशियारीको ले जानेकी चेष्टा न करे। और क्योकि आश्रममे आ गये है तो मेरे आने तक ठहर जावे और आश्रमके काममे पूरा हिस्सा ले, जिससे वे कुछ सीखेगे, आश्रमका अनुभव लेगे और आश्रम पर बोझ भी नही पडेगा। होशियारी मुझे तो अुतनी ही प्रिय है जितनी अपने पिताको। अगर होशियारीको असतोष रहता तो मै कुछ भी नही कहता। लेकिन होशियारीको सपूर्ण सतोष है। वह शिक्षा ले रही है और अूचे चढती जाती है। आश्रम सपूर्ण नही है, लेकिन आश्रम बुरा नही है। आश्रमने किसीका विगाडा नही है। कअी लोग आश्रममे रहकर अूचे चढे है। जो अच्छे है अुनको कभी कष्टदाअी सिद्ध नही हुआ। अिसलिअे होशियारीके पिताजी अितना अितमीनान रखे कि आश्रममे रहकर होशियारीका अनिष्ट कभी नही होगा। अधिक तो मेरे आने पर मुलतवी रखता हू। आज तो मेरा अितना ही विनय है कि होशियारीके पिताजी महीना भर आश्रममे न भी रह सके तो भी होशियारीको न ले जावे। मेरे आनेके वाद अैसा निर्णय होगा कि होशियारीको वापिस जाना ही चाहिये तो तुम ही अुसको ले जाओगे।

आश्रम-व्यवहार ठीक चलता होगा। नौकरोके वारेमे हम वाते करेगे।

पचगनी, ७–६–'४५ वापूके आशीर्वाद

अिस पत्रमे वापूजीका साधकके लिअे कितना प्रेम और अुदारता और अुनके रास्तेमें आनेवालोके लिअे कितना विनय भरा है? 'अैसो को अुदार जग माही? विनु सेवा जो द्रवे दीन पर, राम सरिस कोअु नाही।' तुलसीदासका यह पद सभी महापुरुषोंके लिअे लागू होता है।

अुसी समय मैं सेवाग्रामसे मीराबहनके किसानाश्रमके लिअे चल दिया और मेरे गावमे कुछ झगडा था, अुसको निवटानेके लिअे रास्तेमे ठहरा।

होशियारी अपने वच्चे गजराजको घर छोड आयी थी। अुसके पिताजी अुस वच्चेको अिस कारण नही भेजना चाहते थे कि अुसके खयालसे वह आश्रमसे

घर चली आयेगी। होशियारीके मनमें द्वन्द्व चल रहा था। वह लडकेके बिना भी नहीं रह सकती थी और आश्रम भी नहीं छोड सकती थी।

बापूजीने अुसे समझाया कि लडकेको भूल जाओ। अगर तुम्हारी सच्ची तपश्चर्या होगी तो तुम्हारे लडकेको तुम्हारे पिताजी तुम्हारे पास छोड जायेंगे। वह समझ गअी और यह निश्चय हो गया कि वह अब लडकेको लेने घर नहीं जायगी। लेकिन मैंने लडकेकी खराब हालत देखकर बापूजीको लिखा तो अुन्होंने पहली ट्रेनसे ही अुसको लडकेके लिअे भेजा। पहली रातको ही बापूजी अिस बात पर अटल थे कि अुसे लडकेको लेने जानेकी जरूरत नहीं है, लेकिन मेरा पत्र पहुंचते ही तुरत अुसको रवाना कर दिया। मुझे बापूजीने लिखा

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारे खत मिले। वहांका झगडा तुम्हारी हाजरीसे मिटे तो बहुत अच्छा है।

होशियारी बहादुर है, सफलता अुसे मिलेगी। अच्छा है तुम भी वहीं हो। मुझे अच्छा रहता है। मीराबहन तुम्हारे लिअे तडप रही है।

डॉ० शर्माने* जो बनाया है अुसे देखना। अच्छा होगा। अुनकी प्रवृत्ति भी देख लो। यहांका काम ठीक चलता है। तुमने जो रास्ता बनाया है वहांसे बाल्कृष्णके यहां जा नहीं सकते।

सेवाग्राम, २७–७–'४५ बापूके आशीर्वाद

* * *

अेक बार बापूजीकी तदुरुस्ती कुछ कमजोर थी। पेटमें भारीपन होनेसे अुन्होंने केस्टर आअिलका जुलाब लिया था। आभाबहन अुनको स्नान करा रही थी। स्नानघरमें से अेकाअेक आभाके चिल्लानेकी आवाज आयी कि दौडो, दौडो, बापूजी गिर गये। मैं स्नानघरके नजदीक ही था। दौडकर गया तो देखा कि टबके पास जमीन पर बापूजी बेहोश होकर निश्चेष्ट पडे हैं। यह देखकर मेरा मुंह पीला पड गया और मैंने समझा कि बापू हमेशाके लिअे चले गये। मैं न तो किसी दूसरेको आवाज दे सका, न बोल सका। स्तब्ध

* डॉ० हीरालाल शर्माने खुर्जाके पास अेक प्राकृतिक चिकित्सालय खोला था। बापूजीने अिस कामके अभ्यासके लिअे अुन्हें अमेरिका आदि भी भेजा था।

होकर बापूके माथे पर हाथ धरकर बैठ गया। दो मिनटमे बापूजीको होश आया। आभा जो बिलकुल सूख गअी थी, वह भी खुश हुअी। बापूजीने हमसे कहा कि अिसकी कोअी चर्चा नही करना है। मैने ओीश्वरको अनेक धन्यवाद दिये और अैसा ही समझा कि बापू जाते जाते रह गये।

अिसके पश्चात् बापूजी दिल्ली चले गये, क्योकि भारतीय स्वतत्रता संग्राम अपने निष्कर्ष पर पहुच रहा था। अुसके बाद अुन्हे सेवाग्राममे रहनेका अवसर बहुत ही कम मिला।

* * *

आश्रमके बगीचेमे तीन चार प्रकारके आमके पेड थे। अुनमे अेक पेडके आम बहुत ही मीठे और स्वादिष्ट होते थे। अुसके फल भी बहुत कम और सो भी हमेशा नही आते थे। अिस बार वह पेड खूब फला और फल भी अच्छे आये। मेरे मनमे लालच हुआ कि ये आम बापूजीको खिलाने चाहिये। बापूजी दिल्लीमे थे। मैने सोचा किसी दिल्ली जानेवाले आदमीके साथ भेज दू। वर्धामे कुछ परिचित मित्रोसे पूछताछ की कि कोअी दिल्ली जानेवाला हो तो मुझे बताये। श्री गगाविशनजी बजाजने मुझसे कहा कि आप स्टेशन पर आम ले आना। कोअी न कोअी परिचित मिल ही जायगा, मैं भेजनेका प्रबध कर दूगा। मैं स्टेशन पर आमकी टोकरी ले गया लेकिन कोअी मुसाफिर अैसा अपना परिचित नही मिला, जो आम बापूजीके पास पहुचा सके। रेलमे जो भोजनका डिब्बा होता है अुसके व्यवस्थापकसे गगाविशनजीका परिचय था। अुन्होने अुससे कहा और वह पहुचानेको राजी हो गया। अुसने आम तो पहुचाये लेकिन बापूका थोडा समय भी लिया। बापू बहुत काममे थे तो भी जब अुस आदमीने मेरा नाम लिया तो अुन्होने थोडा समय दे ही दिया। अिस पर बापूजीने अुससे तो कुछ नही कहा, लेकिन मुझे अेक पत्र लिखा

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। आम मिले। आम क्यो भेजे? सेवाग्रामकी कोअी खाद्य वस्तु मुझे भेजनेसे क्या फायदा? नुकसान तो बराबर है ही। नुकसान यो कि जो चीजका वहा बहुत ही अुपयोग है अुसे जहा वह अनावश्यक है वहा भेजनेसे अविचार ही सिद्ध होता है। और हम विचार-हीन कभी न बने। मैने आम खाये। अच्छे थे। लेकिन जो फल हिन्दुस्तानमे कही भी मिलते है वह सब फल मेरे पास रखे जाते है। अैसी

हालतमे सेवाग्रामके आमकी क्या जरूरत? अब सुनता हू कि वहासे भाजी भेजते हो। अगर नही भेजी है तो मत भेजो। अिसमें कितना समय जाता है? हमारे पास जो समय है वह प्रजाका है। और रेलवेवालोंका अनुग्रह भी अैसी वातमें क्यों लें? यह सब फटकारके रूपमे नही है, लेकिन सावधानीके लिये है अैसा समझो।

होशियारी और गजराज ६ दिनसे यहा है। मैंने तो कहा था कि यहा आना नही चाहिये था। फजूल समय गया है और गजराजका तो नुकसान ही हुआ है। कहती है आज चली जायगी।

मेरे ठहरनेका शायद आज निश्चित हो जायगा।

नअी दिल्ली, २५–५–'४६ वापूके आशीर्वाद

आमके वारेमें मैंने अपनी भूल समझी और वापूजीके सामने अुसे स्वीकार किया और आअिन्दा अैसी कोअी चीज न भेजनेकी वात अुन्हें लिखी। अिसके जवावमे वापूजीने लिखा

चि० वलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। आमके वारेमें समझ गये वह काफी है। सारा जीवन सावधानीसे ही अच्छा चल सकता है।

होशियारीका खत आया कि वह भाअीकी शादीके वाद आश्रममे जायगी। मैं अुससे वहुत वात नही कर सकता था। किसीके सामने देखनेकी फुरसत दिल्लीमे नही मिलती थी। मुसीवतसे गजराजके वारेमे वात कर सका था। और अुसे मेरे पीछे पीछे जहा रहू वहा आनेका मोह छोडनेको कहा था। अुसके परिणाममें वह घर चली गअी। मुझे लगता है कि आश्रममे वह शायद ही अव आगे वढ सके। वापिस आवे तो आश्रमसे नही जानेकी मुरादसे और गजराजको सुधारनेके ही लिअे आवे। अवलोकनसे मैंने पाया है कि गजराजको होशियारीने ही विगाडा है। वह विचारी दूसरा जानती ही नही है तो करे क्या? लेकिन गजराज तो विगडता ही है।

तात वहीं वना लेते है वह वहुत ही अच्छा है। और वगीचा भी अच्छा कर रहे है अैसा अनन्तरामजी लिखते हैं।

मसूरी, ४–६–'४६ वापूके आशीर्वाद

अनाजकी कमीसे सेगावमे कुछ लोगोकी स्थिति बहुत खराब होती जा रही थी। लोग मेरे पास आये और कहने लगे कि आश्रमकी तरफसे कुछ मदद होनी चाहिये। आश्रममे अिस प्रकारकी कोअी व्यवस्था नही थी कि किसीको आर्थिक मदद दी जा सके। मैंने लोगोसे कहा कि मैं कोशिश करूगा कि दुकान (श्री जमनालालजीकी)की तरफसे आपको कुछ मदद मिल सके। लेकिन दुकानवाले भी बादमे कुछ ढीलेसे पड गये। मैंने बापूजीको लिखा कि सेवाग्रामकी स्थिति खराब होती जा रही है। लोगोको कुछ मददकी जरूरत है। यह विपत्ति अभी देखनेमे छोटीसी लगती है, लेकिन आगे चलकर यह बडी हो सकती है। आप सभाजी (जो जमनालालजीकी तरफसे सेवाग्रामका काम देखते थे) को लिखे तो कुछ हो सकता है। बापूजीने मुझे लिखा

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। बिलकुल ठीक है। जो आपत्ति है अुसको छोटी समझनेकी कोअी आवश्यकता नही है। जो छोटी समझकर आवश्यक वस्तुको छोड देता है वह अन्तमे कुछ नही कर पाता है। तुमने जो वचन दिया है अुसका पालन करना ही होगा। अब मैं जो करना है वह शुरू कर देता हू। अिसके साथ सभाजीका खत है वह पढो और ठीक हो तो अुन्हे भेज दो।

मसूरी, ६–६–'४६ बापूके आशीर्वाद

* * *

बापूजी बगालमे थे। नोआखालीका तूफान शुरू हो गया था और अुसमे पडनेके लिअे बापूजी वहा चले गये थे। मैंने भी वहा जानेकी बापूजीसे अिजाजत मागी। बापूजीका अुत्तर आया

चि० बलवन्तसिंह,

मैं खुद तो लेटे-लेटे क्या लिख सकता था? जो अैसा काम करनेवाले थे अुनको अलग अलग कर दिया। अब खेच (कामके बोझ)के कारण मनु मेरे पास पडी है और काम दे रही है। तुम्हारे खतका सब अुत्तर मैं नही लिखवा सकूगा। याद भी नही है। यहा आनेके बारेमे अगर मैं नही लिख चुका तो लिखवाता हू कि अिस वक्त वही रहो।

वही तुम्हारा धर्म है। स्वस्थचित्तसे गुस्साको रोककर स्थितप्रज्ञ जैसे रहना है।

श्रीरामपुर, २६–१२–'४६ वापूके आशीर्वाद

वापूजी विहार और वगालके दगोंके मामलेमे अितने फस गये थे कि सेवाग्राम वापिस आना अुनका असभव वन रहा था। अुक्त पत्रसे भी वापूका वगाल-विहारके हिन्दू-मुसलमानोके पागलपनके विषयमे दुख टपकता है। अेक भाअीको अुन्होने लिखा, 'या तो वगालमे सफल हूगा या यही पर देह छोडूगा।' अिस दृढ निश्चयके साथ वापूजी अुस आगमे कूदे थे।

* * *

सेवाग्राममे मेरे पास कोअी खास काम नही था। मैंने सोचा कि मैं खुर्जाके आसपासके देहातोमे जाकर वही वैठ जाअू। आश्रमकी गोशाला गोसेवा सघके पास चली गअी थी और अव वहासे भी तालीमी सघके पास जा रही थी। अुसकी हालत दिन पर दिन विगडती जा रही थी। यह भी मुझे अच्छा नही लगता था और अन्य भी अैसे प्रश्न थे जिनको वापूजी ही सुधार सकते थे। मैंने वापूजीको लिखा कि या तो आप यहा आकर अिन सवको ठीक कीजिये और नही तो मुझे जानेकी अिजाजत दीजिये। वापूजीने लिखा

पटना, १७–४–'४७, शामको

चि० वलवन्तसिह,

तुम्हारा खत मिला। होशियारीके वारेमे समझा। अुसके लिअे भी खत अिसके साथ रखता हू। मेरा खयाल है कि तुम्हारे खुर्जा जानेकी कोअी जरूरत नही है। तुम्हारा धर्म सेवाग्राममे रहकर जो काम हो सके वही करनेका है। गजराजका ठीक चल रहा होगा। कृष्णचद्र विनोवाजीके साथ रहकर प्रगति कर रहा है, यह मुझे वहुत भाता है। गोशालाका तो क्या कहू? मेरा आजकलमे सेवाग्राम आना करीव करीव असभव है। अगर विहार तथा नोआखालीसे छूट सकू तो सव सभवित हो सकता है। यहा गरमी वहुत सख्त पड रही है। देखे, अीश्वर मुझे कैसे रखता है।

वापूके आशीर्वाद

अुसी समय आश्रमके व्यवस्थापक श्री चिमनलालभाअीकी तबीयत बहुत खराब हो रही थी और वे आश्रमका भार नही सभाल सकते थे। अुनकी कमजोरी और आग्रहके कारण व्यवस्थाका काम मुझे सौपा गया था। आश्रमके बगीचेकी बाडकी लकडी अेक छोटासा लडका निकाल रहा था। मै पास ही खडा था। यह देखकर मुझे अुस बच्चे पर गुस्सा आ गया और मैंने अुसको दो-चार चाटे लगा दिये। बच्चा आश्रममें ही काम करनेवाले हरिका भानजा था। अिस बातका हरिको भी दुःख हुआ। मुझे भी खूब दुःख हुआ और मैंने बच्चेके मातापिताके सामने अुसको मारनेकी भूलके लिअे क्षमा मागी।

मैंने बापूजीको लिखा कि अैसी छोटी छोटी बातो पर मुझे गुस्सा आ जाता है, तो मै आश्रमका व्यवस्थापक कैसे बन सकता हू। बल्कि मुझे तो आश्रम छोड देना चाहिये। बापूजीने लिखा

दिल्ली, ५–५–'४७

चि० बलवन्तसिह,

तुम्हारा खत मिला। तुम्हारे हाथ बडी जिम्मेदारी आयी है। मुझे विश्वास है कि तुम यह बोझ अच्छी तरह अुठा लोगे। क्रोधको जीतना होगा। यह काम जगलोमे होता नही है। क्रोधका मौका आने पर भी जब अकुशमे रहता है, तब ही दबता है कि नही यह समझमे आ सकता है। जो दृष्टान्त तुमने क्रोधका दिया है अुसमे मुझे आश्चर्य नही होता है। लेकिन जो पद तुमने लिया है वह तुम्हे बचा लेगा। लडकेके मातापितासे सरलतामे क्षमा माग ली सो बहुत अच्छा हुआ।

बापूके आशीर्वाद

आश्रमके भाअी अनन्तरामजीकी तबीयत खराब रहती थी। खास तौरसे अुनका दिमाग परसे काबू चला जाता था और वे कुछ भी बोलने लगते थे। वे आश्रमकी खेतीमे मेरे साथ साथ काम करते थे। अुन्होंने बीमारी और खेतीके बारेमे बापूजीको खत लिखा। बापूजीका अुत्तर आया

मसूरी, ५–५–'४७

चि० अनन्तराम,

तुम्हारा खत मिला। किसानोको आसमानी आपत्तिका सामना करना पडता है। यह करते हुअे भी वही मुख्य साधन है जिस पर जगत निर्भर रहता है। अिसलिअे तुम दोनो काम कर रहे हो यह मुझे बहुत अच्छा

लगता है। तुम्हारी चित्तशातिके लिअे अब तो मैं सिवा राम-नामके और कोअी अिलाज नही बता सकता हू। यह अनुभवसे पाया है। अुसकी शर्त दो है। पहली, वह नाम हृदयसे लेना चाहिये। और दूसरी, वह लेनेके जो कानून मैंने बताये है अुनका पालन होना चाहिये। अुनका पालन बहुत ही आसान है।

बापूके आशीर्वाद

२८

'सेवाग्रामके सेवकोके लिअे'

बापूजीने सेवाग्राम आश्रमके सेवकोको किसी विषयमें मार्गदर्शन देनेके लिअे अेक सूचना-बही बना ली थीं। जब अुनके मनमे कोअी सूचना करनेका विचार आता तो वे बहीमे लिख देते और आश्रमके व्यवस्थापक अुनकी नकल करके सब आश्रमवासियोको सुना देते थे। ये सूचनाये अैसी है जो सामूहिक जीवन जीनेवाली सार्वजनिक सस्थाओ, परिवारो और अन्य सबके लिअे भी अुपयोगी सिद्ध हो सकती है। अिसलिअे मै यहा बापूजीकी अैसी कुछ कीमती सूचनाओका नमूना पाठकोके सामने रखता हू —

सेवाग्रामके सेवकोके लिअे

मुझे पूछा गया है कि यहा किसी बारेमें नियम है क्या? है, क्योकि जब साबरमती आश्रम बन्द किया, तब मैंने बताया था कि हम सब जगम आश्रम बनते है और कही भी जाय आश्रम-जीवन और अुसके नियम साथ लेकर चलते है। अिसलिअे प्रार्थना आदि ज्यो की त्यो कायम है। अुठनेका समय भी कायम रहा है। अवश्य सयोगवशात् सिद्धान्तोको छोडकर दूसरी बातोमे परिवर्तन कर सकते है। जैसे कि यहा किया है। हम जानबूझ कर हरिजन नौकरोको रखते है। क्योकि अुसमे अुनकी सेवाकी भावना है। लेकिन यद्यपि नौकर रखते है तो भी अुनको हमारे भाअी समझकर बरताव करना चाहिये। अिसलिअे जो कार्य मजदूरीका भी हम कर सकते है वह हम ही करे। जो हमसे नही हो सके तो हम दूसरे साथीकी मारफत करावे। अुनसे भी न हो सके तो वही हरिजनोसे लेवें।

ता० ६-६-'३८ बापू

जिस कमरे (आदि-निवास) मे हम बैठते है, अुसमे सुघडता नही है। बहुत सामान मैंने देखा वह निकम्मा है। निरीक्षण करके अुसे हटाना चाहिये। जिधर मैं बैठता था वहा जो केस पडी है वह अनावश्यक है। सदूक पर सब सामान जा सकता है। हमारा परिग्रह कमसे कम होना चाहिये। याद रखा जाय कि ११ व्रतोमे अपरिग्रह भी है।

ता० १२–६–'३८ बापू

आज दु खद बीना बन गअी। अेक लडका हमारे खेतके नजदीक गैया चराता था। अुसको रोकनेकी चेष्टा की गयी। वह नही माना। बलवन्तसिहने अुसको धक्का मारा। यह बात हमारे लिअे शरमकी है। मैंने ग्रामवासियोको कह दिया है कि अगर दुबारा अैसा बलवन्तसिहसे हो जायगा तो वे सेगाव छोडेगे। हमे समझना चाहिये कि हम सेवक है, मालिक नही। ग्रामवासियोकी दयासे ही रह सकते है। हमको किसीको गाली देनेका या स्पर्श करनेका कुछ भी अधिकार नही है।

ता० १९–७–'३८ बापू

अितनी बाते हम याद रखे

१ थूक भी मल है। अिसलिअे जिस जगह हम थूके या मैले हाथ धोवे वहा बरतन कभी साफ न करे।

२ टेपसे सीधा पानी अिस्तेमाल न करे। अिसमे अधिक पानीका खर्च होता है और ज्यादा आदमी अेक टेपसे अेक ही वक्तमे पानी नही ले सकते है। अिसलिअे अपने लोटेमे पानी निकाले और लोटेके पानीसे मुह साफ करे। फिर लोटे साफ जगह रखनेकी व्यवस्था भी होनी चाहिये।

ता० ६–८–'३८ बापू

मेरी सलाह है कि सब नियमपूर्वक सूत्रयज्ञ करे। अिस बातमे हमे बहुत सावधान रहना चाहिये।

ता० ६–१–'४० बापू

खानेके बारेमे हरअेकको मर्यादा रखना आवश्यक है। गुडका, घीका, दूधका, भाजीका प्रमाण होना चाहिये। भाजी अेक समयके लिअे आठ औस काफी समझी जाय। भोजनमे कुछ बिगडे तो अुसकी टीका खानेके समय करना असभ्यता है। अिसलिअे हिसा है। खानेके बाद चिट्ठी लिखकर

व्यवस्थापकको बताया जाय। कोअी चीज कच्ची रह जाय तो छोड देना। अितनी भूख रह जाय तो कोअी हानि नही होगी, लेकिन गुस्सा न किया जाय।

सब काम सावधानीसे होना चाहिये। हम सब अेक कुटुम्ब है, अैसी भावनासे काम लेना आवश्यक है।

ता० २२-१-'४० बापू

आजकल मैं जो कुछ लिखता हू अुसको आज्ञारूप न माना जाय। सब अपनी बुद्धिका अुपयोग करके जो करे वही सही माना जाय।

ता० २४-१-'४० बापू

नमक भी चाहिये अुतना ही लेवें। पानी तक निकम्मा खर्च न करे। मैं आशा करता हू सब (लोग) आश्रमकी हरअेक चीज अपनी और गरीबकी है अैसा समझकर चलेंगे।

ता० ३०-१-'४० बापू

सबको जानना चाहिये कि सेगावमे काफी जहरी साप रहते है। अीश्वरकी कृपा समझे कि अब तक किसीको सापने नही काटा है। लेकिन सावधान रहना हमारा धर्म है। अीश्वर सावधानको ही सहायता देता है। अिसलिअे मेरी सलाह है कि जब तक हो सके लालटेनका सहाय ले। अिसी तरह अधेरेमे जूते भी पहनें।

ता० १३-२-'४० बापू

मैं सुनता हू कि कअी सज्जन जब खाना छोडते है तो अुसकी खबर रसोडेमे पहुचाते नही है। जिसका नतीजा यह आता है कि खाना पडा रहता है। अिसलिअे प्रार्थना है कि जो पहलेसे जानते है कि अमुक समय खाना छोडना है वे वक्त पर रसोडेमे खबर भेज दे। यह नोध और दूसरी जो नित्यकी है अुने दीवाल पर रखना चाहिये।

ता० ७-३-'४० बापू

मेरी आशा है कि सब अुबला हुआ पानी ही पीते है। वर्षा-ऋतुमे हमारे कुअेंके पानीमें काफी खराबिया रहती है। मलेरियासे बचनेके लिअे सब रातको हाथ-पैरो पर मिट्टीका तेल लगाकर सोवें। सिर पर भी लगाना चाहिये। खाना चबाकर खाया जाय। दस्त हमेशा साफ आना ही चाहिये।

न आवे तो अेरडीके तेलाका जुलाब लेवे। धूपसे वचना, काम करते समय सर पर टोपी या कुछ कपडा होना चाहिये।

ता० ६–७–'४० बापू

जो सूत्रयज्ञ चल रहा है (राष्ट्रीय सप्ताहके सवधमे १२ घटेके दो अखण्ड और ता० ६ तथा १३ को २४ घटेके अखण्ड) अुसमे अितना किया जाय

(१) हरअेककी पूनीका वजन।

(२) अुसमे कितना वजन सूत निकला।

(३) कचरा कितना रहा। सव टूटा हुआ सूत अिकट्ठा किया जाय, अुसका अुपयोग हो।

(४) तारका आक, मजवूती, समानता।

(५) प्रत्येक गुडी पर कातनेवालेका नाम दिया जाय।

ता० ७–४–'४१ बापू

लडके या वडे आपसमे या लडकियोसे निरर्थक मजाक न करे। कामकी वातमे निर्दोष विनोदको जगह है। वह अेक कला है। प्रथम तो वगैर कारण मौन ही धारण करना शुद्ध वोलीकी जड है।

आश्रममे अिर्दगिर्द वहुत गदगी रहती है। अिसलिअे अेक आश्रमवासीको जिम्मेवारी सिर पर लेनी चाहिये। अहिसामे शौच तो आता ही है।

ता० १५–४–'४१ बापू

मेरा वी० पी० (ब्लड प्रेशर) तभी कम रहेगा जव यहाके लोग अपना-अपना काम ठीक तरहसे चलावे और कोओी भी आपसमे झगडा न करे। यहाका सव काम मेरे आदर्शके अनुसार चलावे और चले।

ता० २८–१०–'४१ बापू

अेकादश व्रतसे फलित होनेवाले और सुव्यवस्थाके लिअे अन्य अुपनियम निम्नलिखित है

सव निवासी स्थायी या अस्थायी अपना अेक भी क्षण निकम्मा नही जाने देगे। यहा रहनेवाले आश्रमकी सव सामाजिक सेवामे हिस्सा लेगे और जव आश्रमका कुछ काम नही रहता है तव कातेगे या रुअीकी किसी क्रियामे अपना समय देगे। स्वाध्याय रातको ८ से ९ तक कर सकते है और दिनमे

(अुस समय) जब आश्रमका कुछ कार्य नहीं दिया गया है और कमसे कम अेक घंटा तक कात लिया हो।

बीमारी या अनिवार्य कारणके लिअे कातनेसे मुक्ति होगी।

बगैर कारण कोअी वार्तालाप नहीं करेंगे। अूची आवाजसे कोअी नहीं बोलेंगे। आश्रममें नित्य शांतिकी छाप पडनी चाहिये। अैसे ही सत्यताकी छाप। अेक-दूसरेके साथ हमारा व्यवहार प्रेममय और मर्यादामय होना चाहिये। और अतिथि या देखनेवालोंके साथ सभ्यताका। कोअी कैसा भी वेश पहनकर आवें, गरीब-से लगे, तो भी अुनके प्रति आदरसे बरताव होना चाहिये। अूच-नीच, गरीब-अमीरका भाव नहीं होना चाहिये। अिसका मतलब यह नहीं है कि कोअी नाजुक अतिथि आ जावे तो अुसकी तरफसे अैसी आशा रखें कि वह भी हमारी जैसी सादगीसे रह सकता है। आतिथ्यमें अतिथिके रहन-सहनका हमें हमेशा खयाल रखना होगा। अिसीका नाम सच्ची सभ्यता है। आश्रममें कोअी अनजान मनुष्य आ जावे तो अुनके आनेका प्रयोजन पूछना चाहिये। और आवश्यकता होने पर व्यवस्थापकके पास अुसको ले जाना चाहिये। यह धर्म सब आश्रममें रहनेवालोंका है। क्योंकि किससे पहली भेंट अैसे लोगोंकी होगी, अिसका हमें पता नहीं चल सकता।

हरअेक मनुष्य जो कुछ करे, कहे, सोच-विचारकर और विचारपूर्वक करे। जो कुछ करे अुसमें ध्यानावस्थित और तन्मय हो जाय। सब खाना औषध समझकर और शरीरको आरोग्यवत रखनेके लिअे खाया जाय और शरीरकी रक्षा भी सेवाकार्यके लिअे ही की जाय। अिस दृष्टिसे मनुष्यको मिताहारी अथवा अल्पाहारी होना चाहिये।

खाना जो मिले अुससे संतोष माना जाय। कुछ खाना कच्चा या बिगडा हुआ लगे तो अुसी समय शिकायत न की जाय, लेकिन बादमें विनयपूर्वक रसोडेके व्यवस्थापकको बताया जाय। बिगडा हुआ या कच्चा खाना छोड दिया जाय। खानेमें आवाज न किया जाय। आहिस्ते आहिस्ते मर्यादा और स्वच्छतापूर्वक अीश्वरका अनुग्रह मानते हुअे खाना चाहिये।

हरअेक मनुष्य अपने बरतन बराबर साफ करे और बताअी हुअी जगह पर रखे।

अतिथि या दूसरे अपनी थाली, लोटा, दो कटोरी और चम्मच साथ लावें। अपनी लालटेन, बालटी और बिस्तरा भी। कपडे वगैरा आवश्यकतासे

अधिक न होने चाहिये। कपडे सब खादीके होने चाहिये। अन्य वस्तुअे यथासभव देहाती या कमसे कम स्वदेशी होनी चाहिये।

सब हरअेक वस्तु अपनी जगह पर रखे और कचरा कचरेकी जगह पर। पानीका भी दुर्व्यय न किया जाय।

पीनेका पानी अुबला हुआ रहता है और बरतन भी अतमे अुबले पानीसे धोने चाहिये। कुअेका कच्चा पानी पीने योग्य नही माना जाता है। अुबलते हुअे पानी और गरम पानीका भेद समझना आवश्यक है। अुबलता हुआ पानी वह हे जिसमे दाल पक सकती है, जिसमे से काफी भाप निकलती है। अुबलता पानी कोअी पी नही सकता।

कोअी रास्तेमे न थूके, न नाक साफ करे। अैसी क्रिया अेकात जगहमें जहा किसीका चलना फिरना नही होता वही की जाय।

पाखाना-पेशाब भी नियत जगह पर ही किया जाय। यह दोनो क्रियाओके बाद सफाअी होना आवश्यक है। पाखानेका बरतन हमेशा अलग ही रहता है, रहना चाहिये। पाखाना जाकर साफ मिट्टीसे हाथ धोने चाहिये और धोनेके बाद साफ कपडेसे पोछने चाहिये। पाखाने पर सूखी मिट्टी अितनी डालनी चाहिये कि अुस पर मक्खी न बैठ सके और देखनेमे सिर्फ सूखी मिट्टी ही नजर आवे।

पाखाना बैठते समय ध्यानसे बैठना चाहिये, जिससे बैठक न बिगडे और पाखाना अपनी जगह पर ही पडे। अधेरेमे लालटेन जरूर ले जाय।

कोअी चीज जिस पर मक्खी बैठ सकती हैं ढकना आवश्यक है।

दतौन अेक जगह बैठकर शात चित्तसे करना चाहिये। खूब चबा चबाकर बारीक कूची करके दात और मसूडोको आगे पीछे घिसना चाहिये। घिसते समय जो थूक पैदा होता है अुसे थूक देना चाहिये। निगलना नही चाहिये। दात अच्छी तरह साफ होनेके बाद दतौन चीरकर दोनो चीरोंसे जीभ अच्छी तरह साफ करना और बादमे मुह खूब साफ करना और नाक भी पानी चढाकर साफ करना चाहिये। दतौनकी चीर पानीसे अच्छी तरस धोना और अुसे अेक बरतनमे अिकट्ठी करना चाहिये। सूख जाने पर अुसे जलानेके काममे लाना चाहिये। नियम यह है कि कोअी चीज व्यर्थ नही जानी चाहिये।

निकम्मे कागजात जो दूसरी तरफ लिखनेके काममे नही आ सकते अुन्हे जला देना चाहिये। कागजके साथ और कोअी चीज नही मिलाना चाहिये।

भाजी वगैरा साफ करनेसे जो कचरा वचता है अुसे अलग रखके खाद वनाना चाहिये।

फूटा काच अेक निश्चित जगह किसी खोकेमे डाला जाय, अिधर अुधर हरगिज नही।

कोअी आश्रम देखनेको आते है अथवा हमारे अतिथि होते हैं तो अुनसे हम मोहव्वत करे। अुनको परायापन नही लगना चाहिये।

आश्रममे सव वस्तु अपनी जगह पर होनी चाहिये और कोना-कोना साफ होना चाहिये। दरवाजे पर धूल नही होनी चाहिये। वह चिकने नही होने चाहिये।

जो काम जिसके सिर है अुसे वह वडी सावधानीसे करे।

सामुदायिक काममे सव पूरी हाजिरी भरे, वरतन माजनेमे खूब सफाअी होनी चाहिये।

पाखाने हमेशा सूखे होने चाहिये। मैले पर सूखी धूल हमेशा होनी चाहिये।

पानीकी कोठीके नजदीक वहुत पानी रहता है, वह ठीक नही है। खाना हमेशा ढका होना चाहिये। मक्खी न वैठने पावे।

खानेमे सव अस्वाद-व्रत ध्यानमे रखे और सव वस्तु औषध समझकर खाय। कोअी समय (कभी) कुछ कम मिले तो अस्वस्थ न वने। जो मिले वह अीश्वरकृपा समझकर ग्रहण करे।

प्रार्थनामे जो कुछ है अुसका अर्थ वरावर समझे। आश्रमकी सव वस्तु निजी है अैसा समझकर अुसकी रक्षा करे और अुसको अिस्तेमाल करे।

ता० ८-१२-'४१ वापू

मेरा खयाल है कि कमसे कम अेक समयके लिअे कच्ची भाजिया ही खानेसे वडा फायदा होता है। भाजियोमे पालक या लूनीकी पत्तिया, शलगम, गाजर, गोवी, मूली, टमाटर ले सकते है। अिसमे क्षार मिलते है, दात मजवूत होते है, हाजमे पर अच्छा असर होता है। और पकी खाते है अुससे चौथे हिस्सेमे काम निपटता है। वरावर चवानेकी आदत होती है, स्वाद पकी भाजीसे अधिक रहता है। मैंने तो दो महीने तक यह प्रयोग किया है। जिनको खास हरज नही है वे प्रयोग करके देखें।

सब अपने अपने काममे अधिक जाग्रत रहे। जैसा व्यवस्थित काम होना चाहिये वैसा नही हुआ है। स्वच्छताके बारेमे काफी सुधारणाको स्थान है।

ता० ७-२-'४२ बापू

मेरी सलाह है कि आवश्यकतासे अधिक (बरतन) किसीके पास न रहे और जिनके पास नये बरतन हैं वे पुराने ले, जिससे मेहमानोके लिअे अच्छे रह सके।

ता० ८-२-'४२ बापू

आश्रममे हममे से कोअी स्वादके लिअे न खाय, जीनेके लिअे खाय। जीना भी जीनेके कारण नही लेकिन सेवाके लिअे। अिसलिअे अेकका देखकर दूसरे न करे। जैसे कि अगर किसीको भातकी आवश्यकता है तो अुसके लिअे पकाया जाय, अिसलिअे दूसरे भी मागे अैसा नही होना चाहिये। सामान्यतया कोअी रोटी और भात दोनो न खाय, लेकिन किसीके लिअे आवश्यक है तो दोनो दिये जावे। नियम वही है, स्वाद नही।

अिसमे से यह तो सहज प्राप्त होता है कि जिसको अीश्वरने धन दिया है वे हकसे स्वाद न करे। यहा रहनेका सब फायदा वे गुमा देगे, अगर स्वादके कारण कुछ भी चीज खरीदेगे।

आजकल अच्छा होगा यदि सब कमसे कम दो बार लाल पानीसे कुल्ला करे। लाल पानी किसे कहा जाय डॉक्टर दाससे समझ ले। सामान्य नियम यह है कि पानीका रग गुलाबके फूलसा होना चाहिये।

ता० २७-४-'४२ बापू

बात यह है कि हम अपना जीवन विचारमय करे। काम कम करना है तो कम करे, लेकिन जो करे सो बन पडे वहा तक सपूर्ण करे। अिसीलिअे मैंने कहा है कि अगर हम अपने जीवनको (भजनमे) गाते हैं अैसा करे और सेवाग्रामको आदर्श बना सके तो हमने सब किया।

ता० १९-१-'४५ बापू

मैंने कल सुना कि नागु जो आश्रममे छ बरससे काम कर रहा है अुसे न दिशाका ज्ञान है न हिन्दुस्तानके अितिहास भूगोलका। अगर अैसा ही है तो हमारे सोचनेकी बात है।

ता० ११-२-'४५ बापू

अुपवास करके देह छोडनेवाले श्री धर्मानन्द कौशाम्बीका अंतिम दर्शन।

२९

धर्मानन्दजी कौशाम्बी

चिमनलालभाओीकी तबीयत काफी कमजोर हो गअी थी। मुझे अुनकी चिन्ता हो रही थी। मेरी सूचना थी कि अुनको अुरुलीकाचन जाना चाहिये या सेवाग्राममे ही किसी प्राकृतिक चिकित्साके जानकारको बुलाकर अुसकी सूचनाके अनुसार चलना चाहिये। अुसी समय पू० धर्मानन्दजी कौशाम्बीको बापूजीने आश्रममे भेजा। अुनकी तबीयत काफी खराब थी। अुनको कुछ भी हजम नही होता था। अुन्होने सिर्फ पानी पर रहकर शरीर छोडनेकी बापूजीसे सलाह मागी थी। अपने अतिम सस्कारके बारेमे अुनके मनमे यह विचार था कि मेरी अन्त्येष्टि क्रिया सस्तीसे सस्ती की जाय, और अुन्हे लगता था कि जमीनमे दफनाना सबसे सस्ता है।

चकैया (हरिजन लडका) को, जिसे श्री सीताराम शास्त्रीने १९३५ मे बापूजीके पास भेजा था, कुछ बीमारी हो गअी, जिससे अुसको बार बार चक्कर आते थे। अुसकी डॉक्टरी परीक्षा करानेके लिअे बबअी भेजनेका निश्चय हुआ। यह सब मैने बापूजीको लिखा। बापूजीका अुत्तर आया

सोदपुर, १२–५–'४७

चि० बलवन्तसिह,

तुम्हारे तीनो खत मेरे सामने है। चिमनलालभाओीकी तबीयत अच्छी रहे या न रहे मुझे अच्छा लगेगा कि वह वही रहनेका निश्चय करे। दुबेजीको बुलानेसे कुछ भी फायदा नही होगा। दूध, फल और कच्ची-पक्की भाजी काफी खुराक है। मूगफली खानी हो तो पानीमे ३६ घटा रखकर खाये। ठडे पानीमे बैठनेसे फायदा हो सकता है। यह सब करते हुअे, राम-नाम लेते हुअे, जो हो सो होने देना। अुरुलीका विचार अुनके लिअे नही कर सकता हू।

कौशाम्बीजी कुछ भी हजम नही कर सकते है तो भले पानी पर रहें। पानी न पी सके तो भले देह जाय। भीतरी शाति है तो सब कुछ है। फिर भी जैसे विनोबा कहे सो करो। यह सब अुन्हे सुनाओ।

चकैया बम्बअी पहुच गया है, अैसा खत लीलावती बहनका है। मैने चकैयाको लिखा है। डॉ० पुरधरको भी, जो आख देखते है।

होशियारीका भीतर ठीक है तो दुबारा बीमार होनी नही चाहिये। तुम्हारी परीक्षा ठीक हो रही है।

राह न देखी जाय। कौशाम्बीजीके विषयमें लेकिन खबर दी जाय। मैं तो दहन पसन्द करूंगा। लेकिन अुस बारेमे मेरा आग्रह नही।

बापूके आशीर्वाद

कौशाम्बीजी विनोबाजीकी सलाहसे अल्पाहार कर रहे थे। ता० ४–५–'४७ को वह भी अुनकी अनुज्ञा लेकर अुन्होंने बन्द कर दिया। अुनका शरीर धीरे धीरे क्षीण हो रहा था। किन्तु अुनकी चित्तकी प्रसन्नता और बुद्धिकी तीव्रतामे लेशमात्र भी फर्क नही पडा था। वे आनदके साथ प्रयाणकी तैयारी कर रहे थे। धर्मानदजी बौद्ध थे। लेकिन सचमुच अीश्वरकी शक्तिमे अुनकी अपार निष्ठा थी। अुन्होंने योगाभ्यास भी काफी किया था। अपनी मृत्युका दर्शन वे सब स्पष्ट रूपसे अैसे ही कर रहे थे, जैसे कोअी सामने खडे हुअे आदमीको देख सकता है। अुसके बारेमे छोटी छोटी सूचनाअे भी हमको वे करते थे। अपना अनुभव भी सुनाते थे। अेक दिन प्रार्थनाके पश्चात् मुझसे कहने लगे "आपके बारेमे मुझे यह कहना है कि आप क्षत्रिय है, बुद्ध भी क्षत्रिय थे। आपको बौद्ध धर्मके कुछ वाक्य बताना चाहता हू।" अुन्होंने जो कुछ बोला वह अिस प्रकार था "यो वे अुप्पतित कोध रथ भन्त व धारये। तमह सारथिं ब्रूमि रस्मिग्गाहो अितरो जनो।। (जो लोग अुछलते क्रोधको चक्राकार घूमनेवाले रथकी तरह नियत्रणमे रखते है, अुन्हे मैं सारथि कहता हू, दूसरे तो केवल रस्सी पकडनेवाले है।)" कहने लगे, "आपको भगवानका वचन सुनाया है। अिसको ध्यानमे रखकर कुछ रोज अभ्यास करना चाहिये। अभी तो आपके पास काफी समय है। अितनेसे आप काफी कर सकते है। आप मेरे पाससे कुछ चाहते थे, अिसलिअे मेरी अिच्छा हुअी कि आपको कुछ बताना ही चाहिये। मैं आपको आशीर्वाद देता हू। आपका कल्याण होगा।" फिर अुन्होंने अपने ध्यानका अनुभव सुनाया और बोले, "आज जो अितनी शातिका अनुभव मैं कर रहा हू वह अुस साधनाका ही फल है। मनुष्यकी परीक्षा मृत्युके समय ही होती है। अगर अुसकी कुछ साधना सफल होगी तो अुस समय अुसके अवश्य ही काम आयेगी और वह शातिका अनुभव करता करता शरीर छोडेगा। हमको अपनी कीर्तिके लिअे कुछ भी नही करना चाहिये। जो करना है सो अच्छे गुणोंके विकासके लिअे करना चाहिये। क्रोध सबको आता है। जिसमे क्रोध

नही वह मनुष्य किसी कामका नही। लेकिन जो क्रोधके वशमे होकर अपना काबू खो बैठता है वह अुससे भी बुरा है। क्रोधको अपने काबूमे रखकर मर्यादासे बाहर न जाने देना ही पुरुषार्थ है। बापूजीमे यही शक्ति है। आपको क्रोधको काबूमे रखनेका अभ्यास करना है और निष्काम भावसे खूब काम करते जाना है। अिसीसे आपका कल्याण हो जायगा। मेरी आत्मा आपसे बडी खुश है कि आप जिज्ञासु है। जिज्ञासु होनेसे मनुष्य कितना ही बुरा हो अेक रोज सत्पुरुष बन ही जाता है।"

कौशाम्बीजीका दिल प्रेमसे सराबोर था। मुझे अुनकी वाणीमें साक्षात् भगवानकी कृपा बरसती मालूम हुअी। वे आगे कहने लगे

"बापूजीने मेरा अनशन छुडवाया। अुस समय मुझे कोअी तकलीफ नही थी, खुजली भी नही थी और अुस समय मै आरामसे मर सकता था। लेकिन बापूजीने मेरे अूपर दया करनेके लिअे, मुझे अुपवाससे निवृत्त करनेके लिअे तार दिये। मैंने अुनकी प्रेरणासे पिछले २३ सितम्बरको अनशन छोड दिया और तबसे आज तक काफी दुःख पाया और अन्तमे फिर वही अनशन करना पडा। लेकिन अिसमे बापूका तनिक भी दोष नही है, क्योंकि बापूजीने सब दयाभावसे ही किया था। अिसमे मुझे जरा भी दुःख नही है, क्योंकि भगवान बुद्धने कहा है कि 'खन्ती परम तपो तितिक्खा।' (तितिक्षारूपी क्षमा ही परम तप है।)

"बापूजीकी कृपासे मुझे अिस तितिक्षाका अवसर मिला। अिसमे मेरी कसौटी हो गयी। मुझे जो खुजली आती है अुसके सहन करनेमे आनन्द मानता हू। यह सब बापूजीकी कृपा है। मेरी अिस प्रकारकी मृत्युसे बापूजीको आनन्द मानना चाहिये, क्योंकि अुनका अेक भक्त अिस कसौटीमे से गुजर रहा है और शान्तिपूर्वक प्रयत्न कर रहा है। अन्तके क्षण तक क्या होगा यह तो भगवान ही जाने।"

मैंने यह सब वर्णन बापूजीको लिखा। बापूजीका जवाब आया

पटना, १६–५–'४७

चि० बलवर्तसिंह,

तुम्हारा खत प्रार्थनाके पहले लिखा हुआ मिला। कौशाम्बीजीका पढकर आनंद होता है। साथमे अुनके लिअे खत रखता हू। मिलने तक देह होगा तो खत अुनको दे देना या पढा देना।

अुनके आश्रममे रहनेसे आश्रम पवित्र होता है, अिसमे मुझको कोअी शक नही है।

शकरन्का खत अिसके साथ है।

बापूके आशीर्वाद

अन्त्येष्टि सस्कारके विषयमे कौशाबीजीने सब बापूजी पर छोडा था। अतअेव बापूजीका दूसरा पत्र आया:

पटना, २०–५–'४७

चि० बलवतसिंह,

तुम्हारा खत मिला है। अिससे पहले अैसा कोअी खत मिला नही है जिसमे कौशाबीजीके शरीरका मृत्युके बाद क्या करना यह पूछा हो।

लेकिन आज शकरन्का खत है अुसमें सब विगते दी है। कौशाबीजी आखरका निर्णय हम पर छोडते है तो अग्नि-सस्कार ही सबसे अच्छी क्रिया है। यह बात जगतमान्य हो रही है। अुसमें खर्च भी ज्यादा नही है, न होना चाहिये। दफन करनेमे भी शास्त्रीय तरीकेसे करे तो काफी खर्च होता है। बाकी चीजें तो अुन्होने लिखवाअी है। पाली अित्यादिके बारेमें अुनका अमल होगा ही अैसा अुनको कहा जाय। मेरी अुनमे प्रार्थना है कि अब अैसी बातोको भूल जाय और अतरध्यान होकर देह छूटना है तो छूटे, रहना है तो रहे। अुनसे यह भी कहना कि पाली भाषा तो लकामें सीखी जायगी। लेकिन बौद्ध धर्म सीखनेका क्षेत्र लका है अैसा मेरा दिल नही मानता। बौद्ध धर्मकी अूपरी बात जाननेसे रहस्यका ज्ञान होता नही है।

गोविन्द रेड्डीका खत आया है। अुसका अुत्तर पढो और जो निर्णय करना है सो करो।

दस्तखत ता० २१ को प्रात बापूके आशीर्वाद

धर्मानदजीने बापूको लिखवाया था कि अुनकी मृत्युके बाद कुछ विद्यार्थियोको हर साल लका भेजा जाय, जो पाली भाषा सीखकर बौद्ध

धर्मका प्रचार भारतवर्षमे करे। अिसके अुत्तरमे ही बापूजीका अुपर्युक्त अुत्तर था। अुक्त पत्रके अुत्तरमें कौशाबीजीने लिखवाया

सेवाग्राम, २५–५–'४७

पू० बापूजी,

सादर प्रणाम। यदि श्री कमलनयन बजाज आग्रहसे मेरे अूपर अेक हजार रुपयेका बोझा न छोड जाते तो स्मारकके बारेमे मेरे दिलमे कोअी विचार नही आता। पैसा आनेके बाद जो विचार मुझे सूझे, लिखवाये। लेकिन अुमकी जरा भी चिन्ता नही है। मै तो सर्व भार आपके अूपर छोडकर सतुष्ट रहता हू। रातको आकाश देखकर बहुत सुख पाता हू। यह सब आपके आशीर्वादका ही सुफल समझता हू। सिलोनमें बौद्ध धर्मका रहस्य नही रहा है यह मै भी जानता हू। अुन लोगोके साथ अेक बरस रहकर मैने बहुत अनुभव लिया है। लेकिन अुनके साथ रहनेसे भगवान बुद्धके जमानेकी कुछ कुछ याद कर सकता था और अुससे मुझे बहुत लाभ हुआ है। अभी तक अुसकी यादसे बहुत आनन्द मिलता है। बाकी सब भूल गया हू। आम और नीम अेक ही जमीनमे बढते हे, लेकिन आमका फल अलग होता है, नीमका अलग।

अशोकके शिलालेखोका अर्थ अग्रेज आनेसे पहले हम भूल गये थे। पाश्चात्य विद्वानोके प्रयत्नसे ही अुनका अर्थ हम लोग समझ सके है। हमारे विद्वानोने भी पाश्चात्योका अनुकरण करके बहुत कुछ लिखा है। लेकिन अशोक राजाके अत्यत सहृदय वचनोको पढकर कितने पडितोका हृदय कपित होता होगा? अिसलिअे मेरा कहना है कि प्राचीन सस्कृत खडहरोमें मिल गया है तो भी सज्जन अुसमे बहुत सबक सीखते है।

अभी जो आदमी सिलोन जानेवाला है वह अैसा भक्त थोडा ही हो सकता है? वह यहाकी डिग्री लेकर वहा सिर्फ ज्ञान बढानेके लिअे जायगा। तो भी हमारा कर्तव्य है कि अुसका गुजारा वहा पर अच्छी तरहसे चल सके अिसलिअे काटछाट न करके अुसके गुजारेके लिये काफी पैसा मिलना चाहिये। आजकल जो शिक्षायत्र चल रहा है अुससे जो फायदा अुठा सकते है वह अुठाना चाहिये।

भवदीय
धर्मानद कौशाम्बी

अुसी दिन किशोरलालभाअीका पत्र बारडोलीसे आया

बारडोली,
दिनाक २५–५–'४७

प्रिय बलवन्तसिंहजी,

आपका विस्तृत पत्र मिला। श्री कौशाम्बीजीकी सारी सूचनाअे लिख भेजी अिससे खुशी हुअी। अुनमे से जिनका पू० बापूजीसे सबध है वे अुनको लिख भेजी होगी। मुझे दु ख है कि मै अुनके अतिम दिवसोमे अुनका लाभ अुठा नही सक रहा हू। जूनमे वर्धा पहुचनेका विचार तो है, लेकिन अुतने दिन तक अुनके शरीरका टिकना मुश्किल हे। और मै अैसी कठोर अिच्छा भी कैसे करू कि सिर्फ मै अुनको मिल सकू अिसलिअे अुनकी यातना बढती रहे। अिसलिअे मन ही मन अुन्हे दूरसे नमस्कार भेजता हू।

अुनकी 'आपवीती' (गुजराती) आपने पढी है या नही? बहुत पढने योग्य है। सत्यधर्मकी खोजके लिअे पुरुषार्थी मुमुक्षु क्या क्या करेगा और कितने कष्ट अुठायेगा अिसकी अुसमे तवारीख है। और बादमे जो अुन्होने प्राप्त किया अुसे जगतको वितरण करनेके लिअे भी अुन्होने जीवन थक जाय तब तक परिश्रम किया है। बहुत बडे भडारमे से अच्छेसे अच्छे मोती चुन चुन कर अुन्होने हमे दिखा दिये है। वे बडे सत पुरुष है। यह अेक भाषालकार नही, सच बात है। अुनकी जन्म-तारीख आपने मालूम कर ली होगी। न की हो तो कर ली जाय।

श्री चिमनलालभाअी बहुत कमजोर हो गये है यह जानकर खेद होता है। अच्छा होता गर्मीमे वे थोडे दिन पूना जाते। अब भी जाय तो ठीक रहेगा अैसा मेरा खयाल है।

चि० होशियारीकी तबीयत अच्छी हो रही है जानकर सतोष हुआ। चि० गजराजके लिअे कुछ अच्छी तरहसे सोच लेना चाहिये। अुसकी नाक ठीक हो जानी चाहिये।

आपके कुअेको अभिनन्दन। अब बहुत धान्य बढा होगा।

गर्मी यहा पर बहुत हे। लेकिन यहा लू नही बरसती। हवा अक्सर चलती रहती है। फिर भी यहाकी हवा बम्बअीके जैसी है। अिसलिअे पसीना सूख नही पाता और ठड भी मालूम होती हे। और रातको हवा बन्द हो जाती है तब तीन चार घटा बुरा मालूम होता हे। गर्मीके कारण मेरा स्वास्थ्य कुछ ठीक है। और गोमतीको भी यहा बहुत तकलीफ जैसी नही

हुअी है। हा, अपनी अगुली या शरीरके किसी भागको अिजा कर ले तो अुसका क्या किया जाय?

अब यहासे निकलनेकी अिच्छा कर रहा हू। पर सेवाग्रामवालोके जो पत्र आते है वे आनेसे रोकते है। आज ही श्री जाजूजीका बम्बअीसे पत्र है कि अिस वक्त सेवाग्राम न जाना अच्छा है।

आपका
किशोरलाल

मु० कौशावीजीको मेरा प्रणाम कहना। चि० होशियारी और गजराजको आशीर्वाद।

लि० गोमती

किशोरलालभाअीको मैंने पू० कौशावीजीका सारा समाचार लिखा था। और भी आश्रमके समाचार लिखे थे। अुसके जवाबमे अुनका भाव और विवेचना, मनोरजन, गभीरता तथा व्यावहारिकतासे भरा अूपरका पत्र आया। गोमतीबहनके हाथमे शाक काटते समय चाकू लग गया होगा तो अुसका भी जिक्र कर दिया। पू० कौशावीजीके लिअे अुनके दिलमे बडा आदर था। परन्तु अुनसे मिलनेकी तीव्र अिच्छा होते हुअे भी अुनके सकल्पके कारण ही अुनको शारीरिक यातना क्यो सहन करनी पडे, यह विचार कितना अुदात्त है! यह पत्र मैंने कौशावीजीको सुनाया तो वे बहुत खुश हुअे और बोले, किशोरलालजी तो बडे विवेकशील पुरुष है। अुनको लिखो कि मुझसे न मिलनेका दुःख न माने। आखिर तो हमारी आत्मा अेक ही है और वह मिली हुअी है।

आश्रमके ११ सालके जीवनमे कौशावीजीकी मृत्यु पहली मृत्यु थी। अैसी आदर्श मृत्यु मैंने अपने जीवनमे कभी नही देखी। वे रातको अपने पास सोनेको मुझे कभी नही कहते थे। लेकिन मृत्युकी पहली रातको मुझसे कहने लगे कि, "आज तुम मेरे पास सोओ। रातको बारह बजे जब चन्द्र सिर पर आयेगा तब मेरी मृत्यु होना सभव है। तुम सावधान रहना। मेरे कफनके लिअे नये कपडेका अिस्तेमाल नही करना। मेरे जो पुराने कपडे है, अुनका ही अिस्तेमाल करना है।" वे सब कपडे धो-धाकर साफ रखे थे।

अुन्होने अपना सारा सामान आश्रमके सुपुर्द कर दिया था। सिर्फ अेक घडी अपने लडकेके लिअे अिसलिअे रखी थी कि शायद वह अुनका

कुछ चिह्न रखना पसद करे। अुनके लडके और लडकीके बार बार बम्बअीसे पत्र आते थे और वे अुनको देखनेके लिअे सेवाग्राम आना चाहते थे। लेकिन कौशाम्बीजीने आग्रहपूर्वक अुनको नही आने दिया। तीन जूनको रातके बारह बजे तक मै अुनके पास था।

अुस समय गोआमे अेकातमे अुन्होने जो योगाभ्यास किया था अुसका बहुतसा वर्णन अुन्होने सुनाया। मृत्युका पहलेसे पता कैसे चल सकता है, अिसकी साधना भी अुन्होने की थी। अपना पुराना बहुतसा अनुभव भी मुझे लिखाया। अुन्होने 'आनापान' भावनाकी बात बतायी, जिसकी पूरी साधनासे मनुष्य अपने अन्तिम श्वासको भी अच्छी तरह जान सकता है। वे बोले

"जैसा योग रहता है वैसी ही आनापान भावना रहती है। लेकिन अुस भावनामे कुम्भक श्वास रोकना, पूरक श्वास भीतर ग्रहण करना, रेचक श्वास छोडना नही होता है। सिर्फ श्वासोच्छ्वासका खयाल रखना पडता है। अिसका सक्षिप्त वर्णन 'समाधि-मार्ग' मे मैने किया है। विस्तृत वर्णन पाली ग्रथोमे, विशेषत 'विशुद्धि-मार्ग' मे है। यद्यपि यह भावना अलग है तो भी अिसका अुपयोग अन्य कअी भावनाओमे होता ही है। अिस भावनाका मैने विशेष अभ्यास नही किया है। थोडासा तो करना ही पडा था, लेकिन अुसका अभी अच्छा फल मिल रहा है।

"रातको मुझे जरासी नीद आती है तब मेरा मुह खुल पडता है और जीभ बिलकुल सूख जाती है और अुस पर काटे खडे हो जाते है। जब अेकाअेक जागता हू तब क्या करना और क्या नही करना अुसका भी खयाल नही रहता है। कल-परसोसे अुस आनापान भावनाकी मददसे अिस कष्टके अूपर काबू कर रहा हू।

"अुस भावनाके वर्णनमे यह कहा गया है कि जो यह भावना पूरी तोरसे करेगा वह अपना अतिम श्वास भी जान सकेगा। अुसका अेक अुदाहरण भी वहा दिया है। लेकिन मेरा तो पूरा अभ्यास नही है। मै नही जानता हू, अत क्या होगा।

"यह डॉ० बारदेकरजी अथवा काकासाहबको बतलाना। वे अिसका अुपयोग कर सकते है। अुनके पास अेक कापी दे देना।"

अुनकी आज्ञानुसार मैने अेक कापी डॉ० बारदेकरको दी थी।

अुन्होने कअी कुअे और विहार बनवाये थे, जिसका बहुत दिलचस्प वर्णन अुन्होने मुझे बताया था। अुनको कुओसे बडा ही प्रेम था। अुसी

समय आश्रमके खेतमें दक्षिणकी ओर जो बडा अडाकार कुआ है, वह बन रहा था। अुस कुअेको देखनेकी अिच्छा अुन्होंने प्रकट की। मेरी अिच्छा तो पहलेसे ही अैसी थी कि कौशाबीजीके हाथमे ही अुसका शिलान्यास कराअू। परन्तु अैसी कमजोर हालतमे अुन्हे कैसे वहा तक ले जाअू, यही सकोच मेरे मनमें था। जब अुन्होंने स्वय अुत्साह बताया तो मैं स्ट्रेचर पर अुनको कुअेके पास ले गया। अुनके हाथमे अुसमें अेक पत्थर लगवाया। अुस कुअेका नाम 'कौशाबी-कूप' रखा। अुसमें अुनके जन्म और मृत्युकी तारीख पत्थरमें खुदाकर लगवानेकी बात थी। अिस सबधमे बादको कुअे पर अिस प्रकार स्मृतिपत्र खुदवाया गया

"जिनका सलिल-सा निर्मल जीवन था, ४ मअीमे आमरण अुपवास द्वारा आमन्त्रित मृत्युदेवको अतिथिवत् क्षणभर विश्रामके लिअे छोड जिन्होंने २२ मअीको जीवनके अिस सनातन स्रोतको आशीर्वाद दिया, अुन श्री धर्मानन्दजी कौशाम्बीकी पावन स्मृतिमें।

जन्म गोवा — निर्वाण सेवाग्राम
९–१०–१८७६ — ४–६–१९४७"

अुस रातको बारह बज गये। मै जाग रहा था। अुन्होंने मुझसे कहा कि अब तुम सो सकते हो। आज रातको तो मै नही मरूगा। मै जाकर सो गया। प्रात अुनके पास गया तो वे प्रसन्न थे। करीब १२ बजे अुन्होंने कहा कि मेरी जानेकी तैयारी है। दो बजे थोडा पानी लिया और मकानके सब दरवाजे खोलनेके लिअे कहा, मानो अुनको अैसा प्रतीत हो रहा हो कि अुनको कोअी लेनेके लिअे आया है, अथवा अुनके जानेके लिअे दरवाजे खोल देने चाहिये। अिस प्रकारसे वे कभी दरवाजे नही खुलवाते थे। धीरे धीरे शरीर शिथिल होता गया और ठीक २॥ बजे वे शात हो गये। अुनका अतका सास निकलने और सावधानीसे बात करनेके बीचमे दोनोंका अन्तर दस मिनटसे ज्यादा नही था।

५ बजे अुनके भौतिक शरीरका दाह-सस्कार हुआ। काकासाहब और विनोबा मौजूद थे। विनोबा वेदमत्रोंका पाठ कर रहे थे। बडा ही सुन्दर दृश्य था। जितना भव्य कौशाम्बीजीका जीवन था, वैसी ही भव्य अुनकी मृत्यु हुअी।

कबीरका यह भजन अुनके जीवन और मृत्युको पूरी तरह लागू होता है 'दास कबीर जतनसे ओढी, ज्योंकी त्यों धरि दीनी चदरिया।' अुनकी मृत्युका

सारा वर्णन मैंने बापूको दिल्ली लिख भेजा था। अुन्होंने ता० ५–६–'४७ के अपने प्रार्थना-प्रवचनमे कौशाम्बीजीको अजली देते हुअे कहा था "जो अपनी डोडी पीटते-पिटवाते है, अुन्हे तो हम बहुत चढाते है। पर जो मूक सेवक है, धर्मकी सेवा करते है, अुन्हे लोग पहचानते भी नही। अैसे अेक आचार्य कौशाम्बीजी थे। वे हिन्दुस्तानके (बौद्धधर्म और पालीके) आगेवान विद्वान थे। अुन्होने स्वय फकीरी पसद की थी। वे प्रार्थनामय थे। अीश्वर करे हम सब अुनका अनुकरण करे।"

अुनकी सेवा और मृत्युसे मुझे आश्रमके अस्तित्वकी सार्थकताका प्रत्यक्ष भान हुआ। आश्रमके बल पर बापूजी किसी भी आदमीको आश्रममे आकर रहनेका खुले दिलसे निमत्रण दे सकते थे। अिसीलिअे बापूजी कहा करते थे कि चरखा सघ जैसी सब सस्थाअे मैंने ही बनायी है। लेकिन आश्रम जैसी दूसरी सस्था मै भी नही बना सका।

अिसमे हम आश्रममे रहनेवालोकी विशेषता नही थी। विशेषता बापूजीके अुस शुभ सकल्पकी थी। बाहरसे हमारे ही लोग आश्रमकी अनेक प्रकारकी आलोचनाये करते थे और करते है, परन्तु मैं नम्रतासे लेकिन दृढतासे यह कह सकता हू कि वे आश्रमके महत्त्वको समझनेमे असमर्थ रहे है। मै आज आश्रमसे अितनी दूर बैठा हू, लेकिन देखता हू कि आश्रम मेरे चारो तरफ लिपटा हुआ है।

बापूजीकी पूर्ण कल्पनाका अमल जीवनमे करना तो शायद कल्पनाकी ही बात रहेगी। लेकिन अुसका थोडासा जो स्पर्श हो सका है, अुस परसे बापूजी आश्रमकी मारफत क्या चाहते थे अिसका खयाल करके बापूजीकी महानता और अपनी कमजोरीके सामने मेरा सिर झुक जाता है।

आश्रम शब्द प्राचीन है लेकिन बापूजीने अुसमे नवीन जीवन फूककर अुसको जिस तरह सजीव किया, अुससे अनेक लोगोके जीवनमे स्फूर्तिके नये अकुर देखनेको मिलते है। बापूजीके सामने कभी मेरे मनमे भी अैसा आ जाता था कि बापूजीके आसपास हम निकम्मे आदमी अिकट्ठे हो गये है। लेकिन जब अेक अेक आश्रमवासीके बारेमे मै सोचता हू तो मुझे लगता है कि अुनके पास अूपरसे कितने भी कमजोर क्यो न मालूम हो पर हृदयके सच्चे साधक ही ठहर सकते थे। अीश्वर हमे सच्चे रूपमे आश्रमवासी बननेकी विवेकबुद्धि और शक्ति दे, यही प्रार्थना है।

कुछ प्रश्नोंका बापूजीका हल

पिछले प्रकरणमें चक्रैयाका जिक्र आ चुका है। वह बम्बअी गया था। अुसके साथ प्रभाकरजी किसी डॉक्टरको भेजना या खुद जाना चाहते थे, क्योंकि अुनकी बीमारी खतरनाक थी। बापूने बम्बअीके डॉक्टरोंसे लिखा-पढी करके सब व्यवस्था कर दी थी। मैंने बापूजीको अिस बारेमें लिखकर पूछा तो बापूजीने जवाब दिया

भंगीनिवास, नअी दिल्ली
२४–५–'४७

चि० बलवंतसिंह,

तुम्हारा खत मिला। मैंने जो टेलिफोनसे कहला भेजा था वह यह था कि चक्रैयाके लिअे जो कुछ भी हो सकता है सब हो रहा है। अिसलिअे अुनके पास किसीको भेजनेकी आवश्यकता नहीं है। फिर भी मैं मनाअी करना नहीं चाहता। अुनके दिलमें लगे कि जाना ही चाहिये तो जा सकते हैं। और अब गया तो है ही। अस्पतालमें लडकियोंके लिअे हम फिक्र न करें। विजयाबहन तो है ही। चांद, जोहरा वगैरा अच्छी लडकियां हैं। फिर तो हमारा जैसा नसीब।

बापूके आशीर्वाद

परीक्षा करने पर चक्रैयाके मगजमें फोडा निकला। अुसका आपरेशन किया गया और दुर्भाग्यसे टेबल पर ही अुसका शरीर चला गया। अिससे बापूजीको काफी दुःख हुआ। अधिक दुःख तो अिस बातका था कि चक्रैया प्राकृतिक चिकित्सामें विश्वास रखता था और अिस प्रकारके आपरेशन आदिकी झंझटमें नहीं पडना चाहता था।

अुसने बापूजीको अेक पत्र लिखा था कि प्राकृतिक चिकित्सा करते करते यदि मेरा शरीर चला जाय तो अुसकी चिन्ता नहीं है। लेकिन दुर्भाग्यसे वह पत्र बापूजीके हाथमें तब पहुंचा जब चक्रैया अिस लोकसे विदा हो चुका

था। अगर पत्र पहले मिल जाता तो बापूजी तारसे अुसका आपरेशन रोक देते। लेकिन अीश्वरको यही मंजूर था।

चक्रैया प्रयत्नशील, नम्र और बड़ा अच्छा सेवक था। जन्मभर आश्रम जीवन जीनेका और सेवा करनेका अुसका दृढ़ निश्चय था। अुसके बारेमें बापूजीने दिल्लीकी प्रार्थना-सभामें दुःख प्रकट किया और कहा था "वह सेवाग्राममें मेरा बेटा बन गया था। अुसका चरित्र आदर्श था। कुदरती अिलाजमें अुसका विश्वास था। मुझे यह कहनेमें गौरव मालूम होता है कि चक्रैया सचेत हालतमें रामनाम जपते हुअे ही मरा।"

* * *

सेगांवमें बहुत लोग गठाअीका काम करते थे और अुसमें से कठिया वगैरा पिरोते समय कुछ सोनेके मनके चुरा लेते थे। अेक गोंड कुछ चीज कहींसे चुराकर लाया, अैसा गांवके लोगोंको पता चला। गांवकी पंचायत हुअी और अुसको कोड़ोंकी सजा दी गअी। अुस गांवका अेक राजपूत तहसीलदार था। अुसने अपने हाथसे अुस गोंडको खूब पीटा। यह सब किस्सा मुन्नालालभाअीने बापूजीको लिखा। बापूजीने लिखा कि यह सारा किस्सा क्या है, कैसे हुआ, क्यों हुआ? बापूजी गोंडको भी हरिजन समझते थे। मैंने सारा किस्सा बापूजीको लिखा और बताया कि वह गोंड था लेकिन गोंड हरिजन नहीं होते हैं। बापूजीने लिखा

नअी दिल्ली,
१४–७–'४७

चि० बलवंतसिंह,

तुम्हारा खत मिला। गोंडके बारेमें दुःखद किस्सा है। हम अहिंसासे बहुत दूर हैं, प्रयत्नशील रहें।

दूसरा लिखनेका समय नहीं है। वहां जो हो सके किया करो। गलतियां होंगी ही। अुन्हें दुरुस्त करना और आगे बढ़ना हमारा धर्म है।

गोंड हरिजनका भेद मैं भूल गया था। कोड़े और बेंतका भेद भी न किया।

बापूके आशीर्वाद

* * *

अेक रोज आश्रमकी गाडीमे माल भरकर मैं वर्धा शहरमें बेचने जा रहा था। रास्तेमें बैलका पेट फूला और वह तुरत मर गया। अिसका मुझे बहुत दुःख हुआ। यह सारा किस्सा मैंने बापूजीको लिखा और अपना दुःख भी बताया। बापूजीने लिखा

नअी दिल्ली,
२४-७-'४७

चि० बलवंतसिंह,

बैलके बारेमें पढकर दुःख हुआ। मैं समझता हू कि किसानको बैल पुत्रवत् होता है। गोवंश-वृद्धिका शास्त्र बहुत कठिन है। काश्तकारी सहयोगसे ही फलदायी होगी। बहुत हिस्सा अंग-मेहनतसे होना चाहिये। मैंने नोआखालीमें तो अंग-मेहनतसे खेत साफ करनेको कहा है। वहा बैल मिलते ही नही है। बहुत मारे गये। नया बैल खरीदना नही अैसा मेरा अभिप्राय रहेगा। कहा तक खरीदते जाय? यह सारा शास्त्र विचारणीय है।

तुम्हारा स्वप्न सुन्दर था। अैसा ही हम वर्तन करे तो मामला शीघ्र ही हल हो जायगा।*

'साधो मनका मान त्यागो' भजनका मनन करो।

बापूके आशीर्वाद

* * *

---

* मैंने अेक रातको यह स्वप्न देखा था कि मुझे दो मुसलमान अेक बडे मकानमें बुलाकर ले गये और मेरे पीछेसे अुन्होंने दरवाजा बन्द कर दिया। फिर अुनमें से अेकने छुरा निकाला और मुझसे बोला कि हम तुम्हें मारेंगे। मैं अुससे भयभीत नहीं हुआ। और स्वस्थ रहते हुअे मैंने अुत्तर दिया कि भले तुम मुझे मार दो, लेकिन अिसका परिणाम अच्छा न होगा, तुम्हें पछताना पडेगा। क्योंकि मैं तुम्हारा दुश्मन नही हू, बल्कि दोस्त हू। अितना सुनते ही अुसका चेहरा प्रसन्न हो गया और वह बोला कि हम तो तुम्हारी परीक्षा ले रहे थे। यह स्वप्न मैंने बापूजीको लिखा था और यह भी लिखा था कि अगर प्रसंग आने पर जागृतिमें भी अितना धीरज रख सकू तो कितना अच्छा हो।

आश्रममे और सेवाग्राममे गायका दूध कम पड रहा था। चम्पावहन,* जो आश्रमके ही मकानमे रहती थी, भैसका दूध लेनेकी अिजाजत चाहती थी। मैने बापूजीको लिखा। बापूजीका जवाब आया

नअी दिल्ली,
२७–७–'४७

चि० बलवतसिह,

तुम्हारा लम्बा पत्र मिला। अब तक आश्रममे या तो सेवाग्राममे कही भी गायके दूधका घाटा रहे यह असहनीय है। घाटा दूर करनेके लिअे जो अिलाज लेने चाहिये सो लो। चम्पाबहनको भैसका दूध लेना पडे यह हमारी शर्म माननी चाहिये। अगर अुसको रहने दे तो हम किसी दामसे भी गायका दूध न दे सके तब तो लाचारीसे अुसको भैसका दूध देना होगा। जाजूजीसे मिलकर अिसका निचोड लाना होगा।

बापूके आशीर्वाद

* * *

भारतीय स्वतत्रताके दिन पास आ गये थे। देशमे रक्तकी होली और साम्प्रदायिक पागलपन जोरो पर था। अिस दावानलको पीते हुअे भी बापू आश्रमको भूले न थे। आश्रमकी गोशाला नष्ट-सी हो रही थी, क्योकि तालीमी सघ गाय नही रखना चाहता था। मैने बापूजीको लिखा कि अितनी मुसीबतसे मैने गोशाला जमाअी थी और अब वह बन्द हो रही है। अिससे मुझको दुख होता है। बापूजीने लिखा

हैदरी मैन्शन, कलकत्ता,
१५–८–'४७

चि० बलवतसिह,

मै तो यहा बडे हजूममे पडा हू। मेरी परीक्षा हो रही है। नोआखाली अब तो छूट गया है।

गोशालाके बारेमे सब पढ गया। यहासे मै क्या राय दू? मै अितना जानता हू कि सेवाग्राममे गाय रहनी चाहिये। गोशाला चलनी

* बापूजीके घनिष्ठ मित्र डॉ० प्राणजीवन महेताकी पुत्रवधू।

चाहिये। वह कैसे हो सके, नहीं जानता हूं। मैं आर्यनायकम्‌जीको लिखता हूं।

बापूके आशीर्वाद

गोशाला तालीमी संघके हाथमें जानेसे स्थिति अैसी हो गयी थी कि आश्रमको दूध मिलना मुश्किल हो गया था और सेवाग्रामका दूधका सारा संगठन छिन्नभिन्न हो गया था। मेरे मनमें अैसा विचार हो आया कि क्यों न गायका दूध पीना ही छोड़ दूं। अपने मनका यह मन्थन मैंने बापूजीको लिखा था। बापूजीकी तरफसे मनुका पत्र आया

नअी दिल्ली,
२०–९–'४७

मु० बलवंतसिंहजी,

आपका पत्र बापूको मिला। बापू तो जवाब नहीं लिख सकते हैं। अुनके पास अेक मिनटकी फुरसत नहीं है। बापूजीने जो कहा है मैं लिख देती हूं।

'गोशालाके लिअे दुःख नहीं मानना चाहिये। जो हुआ सो हुआ। अीशावास्यका श्लोक क्या है? अपना कुछ नहीं है, सब कुछ अीश्वरका है। गायका दूध नहीं छोड़ना चाहिये। गायका दूध छोड़कर बकरीका ले तो अुसमें गायकी सेवा नहीं है। देहातसे गायका दूध आता है सो अच्छा है। और देहाती गायोंकी सेवा करो, अुनका दूध बढाओ। और अिर्दगिर्दके देहातोंकी गायोंको बढाना, अुनको कौनसा चारा दे तो अच्छा दूध निकले और कौनसी अच्छी वनस्पति दे तो अच्छा दूध निकले, यह सब देखो। और वही सच्चा आदर्श है। तुमको वहांसे कहीं नहीं जाना है। वहां कुछ हो जाय तो जरूर मरना। वहां जो हो सके करो। काफी काम तो पड़ा है।'

यह बापूजीने बताया था सो लिख दिया है। पू० बापूजी वैसे तो ठीक हैं। लेकिन थकान बहुत जल्दी लगती है। आप सब अच्छे होंगे और सब हाल सुशीलाबहनने बताया ही होगा।

मनुका सादर प्रणाम

मैं गोशालाके विषयमें निराश हो गया था और अपने कठोर परिश्रमसे बनाअी हुअी चीजको अिस तरह बिगड़ते देखकर सचमुच मुझे दुःख

होता था। मैंने मनुके मारफत वापूजीको लिखा। अुसके जवावमें सुशीलावहनने लिखा

बिडला हाअुस, नअी दिल्ली,
२५-१०-'४७

श्री वलवर्तसिंहजी,

आपका मनुकी ओरका पत्र वापूजीको पढकर सुनाया। वे कहते हैं कि आप क्यों अिस तरह निराश होते हैं? गोशाला वन्द कहां हुअी? विस्तृत हो गयी। सब गांवके ढोरोंकी अुन्नति करना, दूध अच्छा हो, ढोरोंकी नसल अच्छी हो, लोग प्रामाणिक मनसे दूध बेचना सीखें, दूधमें पानीकी मिलावटके लिअे परीक्षा-विज्ञान—यह सब आप कर सकते हैं, करना चाहिये। अुसे वे सच्ची गोसेवा मानते हैं। आप कुशल होंगे। अब जल्दी मुलाकात होगी। वापू अब अच्छे हैं।

सुशीलाका प्रणाम

३१
शांतियज्ञमें प्राणार्पण

वापूजीकी सेवाग्राम आनेकी बात चल रही थी। सन् १९४६ के अगस्त मासमें वापूजीने सेवाग्राम छोडा था। अुस समय किसको पता था कि अब वापूजी यहां कभी वापिस नहीं आयेंगे? अितने लम्बे समयके लिअे जेलको छोडकर वापूजी सेवाग्रामसे कभी बाहर नहीं रहे थे। चरखा संघ, तालीमी संघ वगैरा संस्थाअें भी चाहती थीं कि वापू अेक बार सेवाग्राम आ जायं तो वे अपने बहुतसे प्रश्न अुनके सामने रखकर हल कर लें। हम लोग भी चाहते ही थे। लेकिन अेकके बाद अेक संकट वापूजीके अूपर अैसा आता रहा कि अुनके लिअे सेवाग्राम आना असंभव बन गया। ११ फरवरी १९४८ को जमनालालजीकी पुण्यतिथिके निमित्तसे तथा और भी दूसरे कामोंसे वापूजीको सेवाग्राम आनेका आग्रह किया गया। वापूजीने अुसे स्वीकार भी किया। अखबारोंमें भी अैसी खबर आने लगी कि 'वापूजी वर्धा जा रहे हैं।' लेकिन बापूजीकी ओरसे हमें कोअी सीधी सूचना नहीं मिली थी।

२७ जनवरीको हमने प्यारेलालजीको तार दिया कि बापूजीके आनेकी तारीख निश्चित कर दे, ताकि हम कमरा आदि ठीक कर ले। तारका भी कुछ जवाब नही मिला। फिर भी हमने तैयारी तो शुरू कर ही दी थी। बापूजी सेवाग्राम आयें यह तो सब लोग चाहते ही थे। दूसरे लोगोकी भी अुत्कट अिच्छा रही होगी। लेकिन मैं तो बिलकुल अधीर हो रहा था।

ता० २९-१-'४८को बापूजीका नअी दिल्लीसे लिखाया हुआ नीचेका पत्र अुनके अवसानके बाद मुझे मिला था। यह मेरे नाम अुनका अतिम पत्र था। अिसलिअे यहा दे रहा हू।

नअी दिल्ली,
२९-१-'४८

श्री बलवतसिहजी,

बापूजीने कहा सो मेरे शब्दोमें लिख रहा हू। होशियारी बहन बीचमें यहासे खुर्जा जा आअी। कल ही वापिस आअी है। और आज ही खुर्जा वापिस जायेगी। कारण यह है कि वे कहती है कि वहा कोअी वैद्यराज है जो अेक महीनेमें अुन्हें अच्छी कर देनेके लिअे कहते है। होशियारी बहनने अुनका अुपचार लेना पसद किया है और बापूजीने भी अुसे ठीक समझा है। बापूजीने कहा कि होशियारी चगी हो जावे तभी सेवाके काममें दिल लगा सकेगी, अिसलिअे मैंने अुसके लिअे वैद्यराजकी दवा कराना कबूल किया है। यह पत्र चिमनलालभाअीको भी दिखा देंगे।

बाकी चिमनलालभाअीके खतमें से पढना। अिति।

सेवक
बिसेनके नमस्ते

सेवाग्राम छोडे बापूजीको बहुत समय हो गया था। अिस बीचमें मैंने नये नकशेका अेक कुआ बनाया था। वह २१ फुट लम्बा और १० फुट चौडा अडाकार था, जिसमें लोग तैरना चाहें तो तैर सकें। बडा ही सुन्दर दीखता था। सेवाग्राममें रहते तब बापूजी बाहरकी सडक पर घूमने निकला करते थे। अुस सडक पर बहुत धूल अुडती थी। अिसलिअे अिस कुअेवाले खेतमें ही बापूजीके घूमनेके लिअे मैंने रास्ते बनाये थे। खेतीमें और भी कअी प्रकारके सुधार किये थे, जिन्हें बापूजीको दिखानेका मेरे मनमें

वडा अुत्साह था। मै सोच रहा था कि वापूजी कब आवे और कब ये सव देखकर प्रसन्न होकर मेरा श्रम सफल करे। अुनके शीघ्र आनेकी आशा रखकर मैने वे खेतवाले रास्ते साफ कर दिये थे, और अुनकी आवश्यक मरम्मत कर दी थी। अब मै सफाओीमे लगा था। कूडे-करकटको अेकत्र करके कम्पोस्ट खादके गड्ढोमे गाडना चाहता था। ३० जनवरी, १९४८के दिन मै यही काम कर रहा था। वर्धाके सरकारी कम्पोस्ट खाद विभागका अेक कर्मचारी भी मेरा साथ दे रहा था। मनमे यह अुल्लास था कि वापूजी अिन रास्तो पर चलकर आनन्दित होगे तथा कम्पोस्ट खादके गड्ढोको देखकर अपने 'बूलम से धन' पैदा करनेके सूत्रको कार्यान्वित हुआ देखकर सन्तुष्ट होगे। अिस अुल्लासने मुझे लगातार श्रमकी थकावटका अनुभव नही होने दिया था।

शामका भोजन करनेके वाद मै अपने कमरेके सामने खडा था कि श्रीपत वावाजी घवराये हुअे मेरी तरफ आये और अुन्होने यह सवाद सुनाया 'भाअू, वापूजी गेले।' (भाअी, वापूजी गये।) मैने समझा अुनके कराची जानेकी सम्भावना थी, वहा गये होगे। अिसलिअे यह प्रश्न किया कि वे कहा गये? तव वावाजीने अत्यत करुण स्वरमे यह सुनाया कि ३ गोलिया मारकर किसी आदमीने वापूजीकी हत्या कर दी। मुझे सहसा अिस पर विश्वास न हुआ। तुरन्त ही मै प्रार्थना-भूमिकी ओर गया। और वहा यह सवाद मिला कि वर्धासे श्री करदीकरका टेलिफोन आया था कि शामकी प्रार्थना-सभामे जाते समय किसीने वापूको गोलीसे मार दिया। यह रेडियो पर सुना गया था। फिर भी विश्वास वैठा नही।

जव रातको ८ वजे रेडियो पर प० जवाहरलाल नेहरू तथा सरदार वल्लभभाअीके वक्तव्य सुने तव कही लाचारीसे विश्वास हुआ। सोचने लगा कैसी दैवकी लीला है! महात्मा सुकरातको अुनके देशवासियोने जहर पिलाकर अुनके प्राण लिये। महात्मा अीसाको अुन्हीके देशवासियोने फासीकी सजा देकर परलोकवासी वनाया। यही दशा वापूजीकी हुअी! लेकिन मै यह नही सोच पाता था कि वापूजी जैसे अहिंसक महात्माको मारनेके लिअे क्यो कर हत्यारेका हाथ चला होगा।

हमने प्रार्थना की। तत्पश्चात् सव साथ वैठे। वर्धाके कलेक्टर तथा पुलिस कप्तान हमारे पास आये और अुन्होने सहानुभूति प्रगट की। भाअी मुन्नालालजीने यह सूचना रखी कि किसीको दिल्ली जाना चाहिये और तदर्थ

अपनी तैयारी बताओी। वे दिल्ली गये। मैं यह सोचकर रह गया कि अुनकी आत्मा मुझे रोता देखकर कहीं यह पूछ बैठे कि 'मेरे साथ रहकर तुमने यही सीखा है? अिस मृतदेहको देखनेके लिअे गायोको छोडकर यहा कैसे आ गये?' तो मैं अपने हृदयका समाधान कैसे करूगा? दूसरे, अब वहा पुलिसका कडा पहरा होगा। अुसमे अन्दर प्रवेश कठिनाअीसे ही होगा। अब वे मुझे स्वय तो बुला नही सकते, न प्यारका थप्पड ही लगा सकते है। तो जानेसे लाभ भी क्या? अित्यादि विचारोमें मैं मग्न हो गयी।

मैंने बहुतेरी विधवाओके प्रति सहानुभूति प्रगट की होगी। परतु विधवाकी वास्तविक मनोदशाका अनुभव मुझे अुसी समय हुआ। बापूजीके चले जानेसे मेरे सीग व दात तो गायब हो ही गये थे। अैसा प्रतीत हो रहा था मानो मैं सारी शक्ति खो बैठा हू। जीवनमे अेक लबे अर्सेके बाद नितान्त शून्यता-सी लगने लगी। लगता था कि अब किसकी प्रसन्नता और आशीर्वाद प्राप्त करनेके लिअे शरीर श्रम करेगा। फिर अुस हत्यारे मानवका खयाल आया। मनने कहा, अुसने बापूजीको मारकर समस्त मानव-जाति पर प्रहार किया है और अपनी आत्माका भी साथ ही साथ हनन किया है। बापूजीकी आत्माको तो अुस पर दया आओी ही होगी और अुनकी ओरसे अुसे क्षमा मिल ही चुकी होगी। और आगे सोचता गया दैवकी अिच्छाके बिना पत्ता भी नही हिलता। बापूजी हिन्दू-मुसलमानोंकी मारकाटको रोकनेके लिअे अपने प्राणोकी बाजी अिससे पहले दो बार लगा ही चुके थे। परतु त्रिकालदर्शी दैवको विदित था कि शातिका मूल्य अुनके मूल्यवान प्राण ही हैं। तभी दैवने हत्यारेको यह कार्य करनेकी बुद्धि और साहस दिया होगा। अेक अन्य विचार आया कि बापूजीने सत्य, अहिंसा, प्रेम, त्याग, वैराग्य अेव लोकहितार्थ जीवन अित्यादि सर्वोत्कृष्ट दैवी सपत्तियोका जो मदिर निर्माण किया था, अुस पर 'प्राणार्पण' का कलश शेष था। सो भी चढ जानेसे वह मदिर अब अेक अत्यत देदीप्यमान कलशसे सुसज्जित हो गया है।

यदि वे किसी अुपवासके कारण या असाधारण बीमारीके कारण मृत्यु प्राप्त करते तो अुसके पहले कितना घटाटोप छा जाता? सारे देशमे कितनी दौडधूप मचती, अुनकी सेवाके लिअे कितनी होड की जाती? कोअी अपनेको सेवाका प्रथम अधिकारी मानता और सेवाका कोअी अधिकारी सेवासे वचित रह जाता। परन्तु दैवको यह बात प्रिय न थी, अिसलिअे किसीको अुसने अेक क्षणका भी अवसर नही दिया। अिस प्रकारके विचारोंसे मैं सान्त्वना प्राप्त

करनेका प्रयत्न करता रहा। अितनी शून्यता मैंने जीवनमे कभी किसी प्रिय-जनके मरने पर अनुभव नही की थी जितनी अुस दिन अनुभव की।

कृष्णके जानेके बाद अर्जुन भी अितना शक्तिहीन हो गया था कि भीलोने थप्पड मारकर अुससे गोपियोको छीन लिया था। अुसके बाहु तथा गाण्डीव ज्योके त्यो थे, परतु कृष्णका पीठबल चला गया था। अैसा ही हाल हम सेवाग्राम आश्रमवालोका बापूजीके चले जानेसे हो गया।

* * *

रातको मैंने स्वप्न देखा कि नागपुरमे शामके समय बापूजीका बडा भारी जुलूस निकल रहा है। देखनेकी अिच्छासे मै भी अुधर बढा तो देखा कि जुलूसके सब लोग लौट गये है और बापूजी अकेले ठडका अनुभव कर रहे है। कपडा भी पासमे नही है। मुझे बापूजीको अिस प्रकार अकेला देखकर दुःख और आश्चर्य हुआ। मै दौडा और बापूजीको सहारा देकर अेक किसानके घर ले गया। अुससे स्थान और कपडे मागे। दिन छिप चुका था। ठड बढ रही थी। मै अुसके घरमे बापूजीके लायक स्वच्छ स्थान खोजने लगा। बापूजी कुछ बोलते नही थे। अिसका भी मुझे आश्चर्य हो रहा था। अिस प्रकारकी विचित्र अवस्थामे मैंने बापूजीको कभी नही देखा था। अितनेमे आख खुल गअी। सोचने लगा, बापूजी पर कोअी सकट तो नही आ पडा है? दिल्ली चलू क्या? किसीको कुछ खबर दू क्या? अगर दू तो क्या दू? आखिर स्वप्नकी बात है यह सोच कर रह गया। (ता० २८–१–'४८ की डायरीसे)

अब ३० जनवरीकी दुर्घटनाके बारेमे सोचता हू तो अिस स्वप्नका मेल अुसके साथ बैठता है। अुस दिन ठीक शामके समय बापूजी सबसे अलग होकर अेकान्तमें यमुनाके किनारे राजघाट पर चिरनिद्रामे सो गये। मनमे लगता है अगर मैंने अुस स्वप्नको थोडा महत्त्व दिया होता और दिल्ली जाकर कुछ सावधानी रखनेकी व्यवस्था की होती तो शायद बापूजीको बचा लेता। यह भी लगता है कि अगर अुस रोज मै अुनके साथ होता तो गोडसेके द्वारा दूसरी गोली न चलने देता। लेकिन यह विचार भी अेक स्वप्न ही है। विधिका विधान कौन टाल सकता है? मुझे तो यह भी लगता है कि बापूजी जानबूझ कर भगवानमे लीन हुअे थे। अुनको जानेका आभास मिल गया था। और अुनके मनमे जानेका सकल्प भी हो गया था। मानव-जातिको अहिंसाका सही रास्ता बतानेका यह अन्तिम अुपाय अुनके पास था सो भी जगतके सामने रखकर अपना काम पूरा करके वे चल गये। जगतके लिअे

अिससे वड़ी देन अुनके पास नहीं थी। और भगवानके पास भी अुनके लिअे अिससे अच्छी मृत्युकी देन क्या हो सकती थी? भक्तके लिअे भगवानके पास कुछ भी अदेय नहीं है और वह जो करता है भक्तकी सलाहसे, अुसके अन्तरको जानकर, ही करता है। यह भी वापूजीकी मृत्युने सिद्ध कर दिया है।

'जन्म जन्म मुनि जतन कराहिं। अन्त राम कहि आवत नाहिं॥'

भक्तकी परीक्षाकी भी अिससे वड़ी कसौटी और क्या हो सकती है कि अन्तका अेक शब्द भी निकले तो वह रामनाम ही निकले? सच पूछा जाय तो भगवान और भक्त दोनों खिलाड़ी हैं और अेक-दूसरेकी कसौटी करनेके अनेक खेल खेलते हैं। तभी तो तुकारामने गाया है:

माझें मन पाहे कसून। चित्त न ढळे तुझ पाया पासून॥
कापूनि देयी न शिर। पहा कृपण कीं अुदार॥
मजवरी घाली घण। परि मी न सोडी चरण॥
तुका म्हणे अति। तुजवाचून नाही गति॥

(मेरा मन कसकर देख। चित्त तेरे पाससे नहीं हटेगा। मैं सिर काटकर दे सकता हूं। तू देख मैं कृपण हूं या अुदार। मेरे सिर पर घन पड़ेगा तो भी मैं तेरे पैर नहीं छोडूंगा। तुकाराम कहते हैं कि अन्तमें तेरे विना मेरी गति नहीं है।)

यह भक्त और भगवानका नाता है, जिसे वापूजीने अपने जीवन और अपनी मृत्युसे सिद्ध करके दिखाया।

* * *

कअी दिनोंके वाद श्री रामकृष्ण वजाज दिल्लीसे अेक पात्रमें वापूजीकी भस्मका अेक भाग लेकर सेवाग्राम आये। जहां पूज्य वापूजीकी दिव्य मूर्तिके दर्शनोंकी लालसा सेवाग्रामवासियोंके मनमें थी और अुनकी प्रेमभरी चपत खानेको सव तरस रहे थे, वहां ताम्रपात्रमें अेक मुट्ठीभर भस्म आती देखकर सवका धीरज टूट गया।

जव अुस पवित्र कलशको मैंने संभाला तो मेरे शरीरमें विजली-सी दौड़ गअी और आंखोंके सामने अंधेरा-सा छा गया। मैं सोचने लगा कि वापूको हंसते हुअे आते देखकर हम सव लोग हंसते थे। प्रत्येकके मिलनमें अपनी अपनी खूवी होती थी। मैं तो सवके पीछे चुपकेसे जाकर अुनके चरणोंमें पड़ा करता था। जव अुनकी नजर मुझ पर पड़ती तो चपत लगाते और चौंककर पूछते,

'अच्छा आ गया? तेरा गो परिवार कैसा है?' मैं कथा सुनाता कि अितनी गायें व्याअी हैं, अितने बच्चे हैं, अितना दूध होता है, अित्यादि।

आज यह सब किसको सुनाअूं? मैं वापूजीको नया कुआं दिखाना चाहता था, नये रास्तों पर अुनको चलाना चाहता था। आखिर अुस पवित्र कलशको लेकर अुन्हीं रास्तोंसे होकर मैं कुअें तक गया। दूसरे लोगोंको यह सब अटपटा लगा होगा। लेकिन मैं विवश था। मैं पुकार पुकार कर कह रहा था, 'वापू, यह सब देख लीजिये।' मैं नहीं जानता था कि लोग मेरे पागलपनको देख रहे थे या नहीं।

वापूने हमको जन्मभर यह पाठ पढ़ानेका प्रयत्न किया था कि जिस प्रकार किसीका जन्म लेना खास खुशीका कारण नहीं है अुसी प्रकार मृत्यु भी दुःखका कारण नहीं है; वल्कि मृत्यु तो हमारा परम मित्र है। अुसके आनेसे रोना क्या? आज वह सारा अुपदेश न जाने कहां चला गया था। हृदयकी वनावटमें भगवानने कुछ अिस प्रकारके पुर्जे लगाये हैं कि अुनके तारोंको अमुक प्रकारका स्पर्श होते ही आंखोंकी नालियां वहने लगती हैं। अिसका क्या किया जाय?

३२

वापूके अन्तेवासी विभिन्न सेवाक्षेत्रोंमें

आखिर वापूका सदाका वियोग भी सहा गया और आश्रमके विषयमें गंभीरतासे कअी वातें सोची गयीं। आश्रमवासियोंने मिलकर यह निश्चय कर लिया था कि अबसे हम लोग आश्रमके लिअे किसीसे चन्देकी याचना नहीं करेंगे। खेती करते हुअे स्वावलम्वी रहनेका यत्न करेंगे और जो भी कष्ट अुठाने पड़ें अुन्हें अुठाते हुअे अन्त तक आश्रमको निभावेंगे।

यह प्रश्न विनोवाजीके समक्ष गया, क्योंकि वापूजीके वाद हमने विनोवाजीसे मार्गदर्शनकी याचना की थी और अुन्होंने कृपापूर्वक आश्रमका मार्गदर्शन करते रहना स्वीकार कर लिया था।

विनोवाजीने हमारे प्रश्नका अेक गंभीर और अुदात्त हल ढूंढ़ निकाला — सूतांजलिका। अिसके दो शुभ परिणाम हुअे। आश्रमको थोड़ी रकम मिलने लगी तथा सूत्रयज्ञकी भावनाने जनताका मानसिक स्तर अूंचा अुठाया।

हमारे लिअे यह वड़े संतोषका विषय है कि तभीसे आश्रम अपनी खेतीके वल पर ही विना वाहरी चन्देके चल रहा है। रेड्डीजीने खेतीमें अनेक प्रयोगों और अथक परिश्रमके द्वारा खूव प्रगति कर ली है, जिससे अुत्पत्ति काफी वढ़ गअी है।

वापूजीके सामने ही आश्रमवासियोंको अुन्हें सतानेवाले अपंग तथा रोगियोंकी अेक जमात समझा जाता था। पर वास्तवमें अैसा था नहीं। जहां अेक ओर रोगियोंकी सेवा करना वापूजीके आश्रम-जीवनका अेक विशेष कार्य-क्रम था, वहां दूसरी ओर अुनके आसपासके कार्यकर्ता वापूजीको अपना जीवन अर्पण करके रहते थे और अुनकी आज्ञानुसार कैसा भी कार्य करनेको तत्पर रहनेमें अपनेको धन्य मानते थे। वे वापूजीके हृदयमें अुत्पन्न होनेवाले अनेक विचारोंको तुरन्त ही कार्यरूप देनेके लिअे अुनकी जीती-जागती प्रयोगशाला थे। वापूजी स्वयं ही अुन्हें वात्सल्यमयी मांकी तरह अपनी छातीसे लगाये रहनेकी ममतासे मुक्त नहीं थे। परंतु यह स्पष्ट समझ लेना चाहिये कि अुनमें से प्रत्येक वापूजीका आदेश पाकर कहीं भी जाकर कैसा भी सेवाकार्य अुठा लेनेकी क्षमता रखता था।

वापूजीने अेक वार अेक प्रतिज्ञा-पत्र निकालकर यह आदेश दिया था कि जो आश्रमवासी अुनके मरनेके वाद आश्रममें मरणपर्यन्त सेवा करनेके निश्चय-वाले हों वे अुस पर हस्ताक्षर कर दें। कुछ भाअियोंने अुस पर हस्ताक्षर किये थे। मैंने सिर्फ अिसीलिअे नहीं किये कि वापूजीके वाद न मालूम परि-स्थितियोंका कैसा तकाजा हो, यद्यपि निश्चय तो मेरा भी वैसा ही था। वापूजीको विश्वास हो गया था कि चिमनलाल, मुन्नालाल, कृष्णचन्द्र, वलवन्तसिंह, पारनेरकर ये सव लोग यहीं रहनेवाले हैं। हम लोग सेवाग्रामको अपना घर मानने लगे थे। वापूजीके वाद जव जवाहरलालजी सेवाग्राम पधारे तव अुन्होंने यह जानना चाहा कि यदि वाहर जाकर कार्य करनेकी आवश्यकता आ पड़े तो हम लोग जानेको तत्पर हैं या नहीं। तव मैंने सवकी तत्परता वतलाते हुअे यह स्पष्ट कर दिया था कि हम कहीं भी जाकर काम करें, लेकिन सेवाग्राम ही मरणपर्यन्त हमारा घर वना रहेगा। अिसी निश्चयके अनुसार जव विनोवाजीने, जिन्हें हमने अपना मार्गदर्शक वना लिया था, मुझे राजस्थानमें जाकर गोसेवाका कार्य करनेका आदेश दिया तव अनिच्छा होते हुअे भी मुझे सीकर आ जाना पड़ा। कृष्णचन्द्रजीको अुन्होंने ही अुरुलीकांचन भेजा, जहां वे आज प्राकृतिक चिकित्सालयकी भारी सेवा रहे हैं। पारनेरकरजी

ऋषिकेशमें पशुलोकका संचालन कर रहे हैं। चिमनलालभाओी तथा मुन्नालाल-भाओी सेवाग्राममें ही हैं। ओीश्वरकृपासे यह सिद्ध हो गया है कि हममें से कोओी वैसा पंगु सिद्ध नहीं हुआ जैसा कि लोगोंका खयाल था। वापूजीके सामने आपसमें हमारे बीच स्वभाव-भिन्नताके कारण कभी कभी चकमक झड़ जाती थी। लेकिन आज अेक-दूसरेसे सैकड़ों मील दूर होते हुअे भी हमारे बीचका स्नेह सगे भाओी-वहनोंके स्नेहसे भी कहीं अधिक और श्रेष्ठ है।

आश्रमकी बहनोंका में स्वयं परिहास किया करता था कि बापूके बाद आप लोगोंके हाल कैसे होंगे? जब मैं अुनसे पूछता कि वापूजीके मरनेके वाद आप लोग क्या करेंगी, तो वे बेहद चिढ़तीं और कहतीं अैसे अमंगल वचन क्यों मुंहसे निकालते हो। लीलावती बहन और अमतुलवहन तो लड़ने पर आमादा हो जातीं। आज सभी यह देख सकते हैं कि अिन बहनोंके काम हम भाअियोंके कामोंसे भी ज्यादा चमक रहे हैं।

लीलावती बहनने ३७ वर्षकी अवस्थामें पढ़ना शुरू किया और डॉक्टरीकी सनद हासिल की। आजकल सौराष्ट्रको अुनकी डॉक्टरीकी सेवाका लाभ मिल रहा है। राजकुमारी बहन, जो सचमुच वापूकी राजकुमारी थीं, आजकल भारतकी केन्द्रीय स्वास्थ्यमंत्रिणी हैं और अुनकी सेवा सराहनीय है। सुशीलाबहन अेक कुशल डॉक्टर हैं। दिल्लीकी प्रादेशिक विधानसभाके अध्यक्षपद पर भारतमें ही नहीं सारी दुनियामें पहुंचनेवाली वे सर्वप्रथम महिला हैं। आजकल विनोबाजीके भूदान-आन्दोलनमें प्रमुख भाग ले रही हैं। बहन अमतुस्सलामकी तो बात ही क्या कहनी? मृत्युको धोखा देनेमें वे सिद्धहस्त हैं और यह देखकर आश्चर्य होता है कि न मालूम किस आन्तरिक शक्तिके आधार पर वे अितना काम कर लेती हैं। अपने साथी कार्यकर्ताओंके प्रति अुनका माता जैसा स्नेह होता है। वे सतत सेवाकार्यमें लगी रहती हैं। किसी काममें थकने या निराश होनेका तो अुनके जीवनमें स्थान ही नहीं है। अुनके प्रत्येक सेवाकार्यमें वापूजी और वाके प्रति अुनकी जीती-जागती श्रद्धाका प्रत्यक्ष दर्शन होता है। अुनके व्यक्तित्व और वाणीमें अितना प्रभाव है कि कोओी भी अुनकी वातको टालनेकी हिम्मत नहीं कर सकता। मैं वहुत दिनोंसे अुनकी कब्र खोदनेकी फिक्रमें हूं, लेकिन वे वार वार लंबी सांसे भरनेकी नौवत आ चुकने पर भी अुठ खड़ी होती हैं और झट अपने आपको किसी महत्त्वपूर्ण सेवाकार्यमें लगाकर मृत्युको दुविधामें डाल देती हैं। अव तो मुझे यह शंका होने लगी है कि कहीं वे ही मेरी चिता पर दो

लकड़ी डालनेकी अपनी मुराद पूरी न करें। आजकल वे पटियालामें सुन्दर खादीकार्य कर रही हैं।

मीराबहन तो पांडवोंकी तरह हिमालय पर चढ़नेमें मशगूल हैं। पहले हरद्वारमें अुन्होंने किसानाश्रमकी और ऋषिकेशमें पशुलोककी स्थापना की, क्योंकि गौओंके पीछे वे पागल हैं। ऋषिकेशसे आगे बढ़कर टेहरी गढ़वालमें अुन्होंने पक्षीलोककी स्थापना की और पशुसेवा तथा गोसेवाका काम किया। जब मैं हिमालय-दर्शनके लिअे गया तो मैंने देखा कि हिमालयका वह भाग अुनकी सेवाकी सुगन्धसे महक रहा था। वहांकी जनता तो अुन्हें अपनी सेवाके लिअे प्रेषित अीश्वरका दूत ही मानती थी। अब वे हिमालयमें अन्दरकी ओर बढ़ गअी हैं और काश्मीरमें गोसेवाका कार्य कर रही हैं।

मेरी भतीजी होशियारीने मेरे मना करने पर भी अपने अिकलौते बेटेका मोह त्याग कर निसर्गोपचार आश्रम, अुरुलीकांचनमें कुशल सेविकाका काम करनेकी योग्यता प्राप्त कर ली है।

पुष्पाबहन १९४२ के आन्दोलनके बाद बम्बअीके वातावरणमें से निकल कर अविवाहित रहनेके अपने निश्चय द्वारा अपने मातापिताको गहन चिन्तामें छोड़कर आश्रममें आअी थीं। कअी लोगोंको अैसा लगा था कि वे आश्रमके कठिन जीवनको ग्रहण करनेमें असमर्थ रहेंगी। लेकिन वे डटी हुअी हैं और नागपुरके निकट टाकड़ी ग्राममें भंसालीभाअीके साथ अुत्तम ग्रामसेवाका काम कर रही हैं।

मेरा अिन समस्त बहनोंकी सेवाभावनाके सामने अनायास ही मस्तक झुक जाता है। यह सब बापूजीके आशीर्वादोंका और हम लोगोंसे अुन्होंने जो आशायें रखी थीं अुनका ही शुभ परिणाम है अैसा मानना चाहिये।

३३

अुपसंहार

मैं काफी लिख गया तो भी मेरा हृदय बापूजीके सत्संगके और अपने २५ वर्षके आश्रम-जीवनके संस्मरणोंसे अभी और छलाछल भरा हुआ है, जिन्हें लेखनीबद्ध करना कठिन है। अिन संस्मरणोंके जरिये बापूजीके पावन चरित्रका महज अेक छोटासा अंग ही स्पर्श हुआ है। अुनका चरित्र अितना महान और अितना विशाल था कि मेरा यह प्रयास कुछ कुछ अुस हाथी जैसी बात सिद्ध होगा, जिसे अनेक अंधोंने स्पर्श द्वारा पहचान कर अनेक भिन्न-भिन्न आकृतियोंका बताया था। अपने अपने कथनमें सब सच्चे थे, लेकिन पूर्ण सत्यसे सब कितने दूर थे!

मैं नहीं जानता मेरा यह अल्पसा प्रयास पाठकोंके लिअे कितना अुपयोगी सिद्ध होगा। परन्तु स्वयं अपने लिअे कहूं तो अिन पंक्तियोंको लिखते हुअे मुझे भगवन् नामस्मरणके पावन प्रभावका सच्चा महत्त्व समझमें आया है। कहा जा सकता है कि अिस प्रयासमें मानसिक जप और ध्यानकी महिमाकी झांकी भी मुझे हुअी है। व्यास भगवानको श्रीमद् भागवत लिखकर जैसी शांतिका अनुभव हुआ था, वैसी ही शांतिका अनुभव मुझे बापूजीके अिन पवित्र और मधुर संस्मरणोंको लिखकर हुआ है। अिस प्रयत्नमें अपने आध्यात्मिक पिता बापूजीके बहुत बड़े ऋणसे यत्किंचित् अुऋण होनेका संतोष भी मेरी आत्माको हुआ है, जिनका हृदय रामके निवासके योग्य था, जो राममय थे। यह वस्तु अुनके जीवन और मृत्युसे सिद्ध हो चुकी है। बापूजीके जीवनका सार हमें अिन पंक्तियोंमें मिलता है:

> काम कोह मद मान न मोहा। लोभ न छोभ न राग न द्रोहा॥
> जिनके कपट दंभ नहीं माया। तिन्हके हृदय बसहु रघुराया॥
> सबके प्रिय सबके हितकारी। दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी॥
> कहहि सत्य प्रिय वचन विचारी। जागत सोवत सरन तुम्हारी॥
> तुम्हहि छाड़ि गति दूसरि नाहीं। राम बसहु तिनके मन माहीं॥
> जननी सम जानहि परनारी। धनु पराव बिष तें बिष भारी॥

जे हरषहिं पर संपति देखी। दुखित होहिं पर विपति विसेखी।।
जिनहि राम तुम प्रानपिआरे। तिन्हके मन सुभ सदन तुम्हारे।।

अिन संस्मरणोंको लिखते समय जहां मुझे आध्यात्मिक आनंद और आध्यात्मिक खुराक मिली है, वहां मैं बापूजीके प्यार और ममताका स्मरण करके रोया भी खूब हूं। मुझे तो अैसा ही प्रतीत होता है कि:

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।
अजानता महिमानं तवेदं मया प्रमादात् प्रणयेन वापि।।
यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि विहार शय्यासनभोजनेषु।
अेकोऽथवाऽप्यच्युत तत्समक्षं तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम्।।

ये सब अपराध मैंने बापूजीके साथके अपने व्यवहारमें अज्ञानवश किये थे। अिसके लिअे मेरा हृदय निरन्तर बापूसे क्षमा-याचना करता ही रहता है।

अधिक क्या कहूं? 'जड़ चेतन गुणदोषमय, विश्व कीन्ह करतार। संत हंस गुण गहहिं पय, परिहरि वारि विकार।।' अिस नियमके अनुसार मेरे आत्मवत् पाठकवृन्द मेरे दोषोंकी तरफ ध्यान न देकर अिसमें से बापूजीके गुणरूपी दूधको ग्रहण करके संतोष मानेंगे। और मेरी त्रुटियोंके लिअे मुझे अुदारतापूर्वक क्षमा करेंगे।

जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन्ह तैसी।

परिशिष्ट – १

मेरी अभिलाषा

वापूजीके जानेके वाद में असहाय-सा वन गया था। अन्दर ही अन्दर दु:खका कीड़ा घुनकी तरह दिलको खाता रहता था और कभी यह दु:ख वाहर भी आता था तो साथी कहते कि अगर आप अिस प्रकारसे धीरज खोयेंगे तो हमसे क्या होगा। अिसलिअे भी मैं अपने मनको दवाकर रखता था। जव विनोवाजीने गोसेवाके निमित्तसे मुझे राजस्थान भेजनेकी वात निकाली तो मैंने अपनी अनिच्छा तो वताअी, लेकिन जिस प्रकार वापूजीके सामने अड़ जाता था अुस प्रकारसे अड़नेकी हिम्मत मैं खो वैठा था। वापूजीके वाद आश्रमका मार्गदर्शन विनोवाजीको सौंपा गया था, अिसलिअे विनोवाजीकी वात टालना मुझे अुचित नहीं लगता था। अेक विचार और भी मेरे मनमें काम कर रहा था। जव वापूजीके सामने आश्रमवासियोंके वाहर जानेकी वात निकलती तव मैं विरोध करता, तो लोगोंको लगता था कि हम लोग पंगु वन गये हैं और वापूजीके साथ चिपके रहना चाहते हैं। अिसलिअे भी अव वाहर जाकर अपने पैरोंको आजमा देखना मेरे लिअे जरूरी हो गया था। विनोवाजीके कहनेसे मैं राजस्थानमें आकर गोसेवाका काम तो करने लगा था, लेकिन मेरा मन तो आश्रममें ही था। क्योंकि आश्रमको मैंने अपना घर वना लिया था और वापूजीकी अिच्छा तो स्पष्ट ही थी कि अुनके वाद हम लोग आश्रम न छोड़ें। अैसी मनस्थितिमें मैंने २१–४–'५५ को अखवारमें पढ़ा कि सेवाग्राम आश्रम और वापूजीकी कुटी वंद करके आश्रमवासी भूदान-यज्ञमें भाग लेंगे; अिसलिअे दोनों वन्द कर दिये गये हैं। अिस समाचारसे मुझे गहरी चोट लगी, लेकिन मन मसोसकर चुप रहा। अिसके वाद सेवाग्रामसे मुझे भाअी प्रभाकरजीका पत्र मिला। साथमें विनोवाजीके दो पत्रोंकी नकल भी मिली। अुस परसे मैं समझा कि यह सव विनोवाजीकी प्रेरणासे हुआ है।

वे पत्र यहां दिये जाते हैं:

सेवाग्राम (वर्धा),
दिनांक १८–४–'५५

प्रिय भाअी वलवन्तसिंहजी,

नमस्कार।

साथ विनोवाजीके दो पत्रोंकी नकलें हैं। आज शामको ५–३० वजे सामूहिक कताअी और प्रार्थनाके वाद आश्रम और वापू-कुटी वन्द रहेगी।

श्री चिमनलालभाओी, अनन्तरामजी, मुन्नालालजी दवाखानेमें रहेंगे। कंचन वहन फिलहाल वरहानपुर जा रही हैं।

विनोवाजी आजके प्रार्थना-प्रवचनमें आश्रम-आहुतिके वारेमें वोलेंगे। शायद अखवारोंमें वह आयेगा। १ मअीसे दो टुकड़ी निकलेंगी। भूदान-कार्य समाप्त होने तक टोलियां घूमती रहेंगी। विनोवाजीका आदेश आनेके वाद फिर टोलियां आश्रममें आवेंगी। लेकिन वह दिन कव आवेगा प्रभु जाने।

आप तो अच्छे होंगे। मैं १ मअीको दक्षिणके भागमें जा रहा हूं। फिर राम जाने।

आपका
प्रभाकर

पड़ाव, तारावोओी,
अुत्कल पदयात्रा, १३–४–'५५

श्री चिमनलालभाओी,

भूदान-यज्ञ कार्यमें आश्रम होमनेकी कल्पना आप लोगोंको रुचि, यह जानकर खुशी हुओी। दिनांक १८ को आश्रम खाली किया जाय। आप और अनंतरामजी फिलहाल दवाखानेमें जायं। अनन्तरामजी आपकी कुछ सेवा भी करेंगे।

वापू-कुटी वंद करके कुंजी छगनलालभाओीके पास दी जाय। आगेकी व्यवस्था सर्व-सेवा-संघ सोचेगा। तव तक देखनेके लिअे आनेवाले कुटीको वाहरसे देखेंगे और भूदानके कार्यमें लगनेका आदेश अुससे अुनको मिल जायगा। वाद सर्व-सेवा-संवसे परामर्श कर सोचा जायेगा।

हमारी तरफसे छगनलालभाओी थोड़े दिन कुंजी संभालनेकी जिम्मे-वारी अुठा लेंगे अैसी मैं आशा करता हूं। वापूके सवसे पुराने साथी शायद आज वे ही हैं।

विनोवाके प्रणाम

पड़ाव, तारावोओी,
१३–४–'५५

श्री छगनभाओी,

चिमनलालभाओीको लिखे पत्रकी नकल साथ है। अिस कदमका रहस्य आप तो समझ लेंगे। वापूने कओी वार अैसे प्रयोग किये हैं। आज

यह आहुति अपरिहार्य हुअी है। कुंजी संभालनेका कार्य थोड़े दिनके लिअे आप अुठा लेंगे। वाद सर्व-सेवा-संघ देख लेगा।

विनोवाके प्रणाम

मैंने प्रभाकरजीको जो पत्र लिखा वह भी यहां देता हूं:

गोसेवा-आश्रम, सीकर,
दिनांक २२-४-'५५

प्रिय भाअी प्रभाकरजी,

आपके पत्रके साथ विनोवाजीके पत्रोंकी नकल भी मिली। यह समाचार मैंने अखवारमें पढ़ लिया था। यह जानकर मुझे तो धक्का-सा लगा है। मेरा मत आप लोगोंसे भिन्न है। मैं किसी भी कीमत पर आश्रमको वन्द करनेके पक्षमें नहीं हूं। आप लोगोंका कदम मुझे विलकुल नहीं रुचता है। मनमें आया कि मैं खुद आकर आश्रमको खोलूं। लेकिन यहांके कामको छोड़कर भागूं तो वही होगा जो आप लोग कर रहे हैं। सब कामोंसे अधिक मेरी ममता आश्रमसे है, लेकिन मेरे साथ विनोवाजीने और आप लोगोंने जो वर्ताव किया है अुससे मेरा मन खट्टा हो गया है।

श्री चिमनलालभाअी और अनन्तरामजी तो अपनी तवीयतको जैसे तैसे चला रहे थे। अुनके शरीरमें शक्ति तो है ही नहीं। आश्रमकी रक्षा करना ही अुनके जीवनका सर्वोत्तम अुपयोग था। लेकिन अुनको अैसा ही जंचा है तो क्या किया जावे? अिससे भूदानमें कितनी मदद मिलेगी यह तो अनुभव वतायेगा। हां, आप आंध्र जायें यह ठीक है। मुन्नालालजी भी वाहर निकल सकते थे। लेकिन आश्रम वन्द करना मेरी नम्र रायमें मैं भूल मानता हूं। आप लोगोंको आश्रम वन्द करनेका अधिकार है तो मुझे अपनी राय देनेका तो अधिकार है ही। भावनाके वेगको शान्त करके गंभीरतासे विचार करनेकी नम्र सूचना है।

आप लोगोंका पुराना साथी लेकिन आजका विरोधी,

वलवन्तसिंहके सवको प्रणाम

फिर अुनका कोअी जवाव नहीं मिला। और मैं मन ही मन कुढ़ने और सोचने लगा कि अव क्या करना चाहिये। मनमें आता कि सेवाग्राम चलकर वापूजीकी कुटीको खोलकर वहीं वैठ जाअूं। लेकिन कुछ तो सीकरका काम

और कुछ यह विचार मुझे रोकता था कि विनोवाजी और दूसरे आश्रम-वासियोंने जो किया है अुसके वीचमें मैं क्यों पड़ूं।

ता० २५–६–'५५ को हैदरावादमें गोसेवकोंकी सभा थी। मुझे अुसमें जाना था। वर्धा वीचमें पड़ता था। मेरे मनमें द्वन्द्व चला कि वर्धा अुतरूं या नहीं। क्योंकि वापूजीकी कुटी और आश्रमको वन्द देखनेकी मुझमें हिम्मत नहीं थी। मैंने आश्रमके व्यवस्थापक श्री चिमनलालभाअीको पत्र लिखा कि मैं हैदरावाद जा रहा हूं। २४ को वर्धासे गुजरूंगा। लौटते समय अुतरनेका विचार तो नहीं है। अगर अुतरा तो सीवा आश्रममें ही आअूंगा। वहीं ठहरूंगा और वहीं खाअूंगा। मैं हैदरावादसे २८ जूनको लौट सका। श्री चिमनलालभाअीने अिस डरसे कि मैं कहीं सीधा ही न चला जाअूं मुझे गाड़ीसे अुतारनेके लिअे स्टेशन पर श्री कंचनवहनको भेजा। मैं अुतरा और सेवाग्राम गया। अुस समय चिमनलालभाअी और दूसरे आश्रम-वासी कस्तूरवा दवाखानेमें रहते थे। मुझे वहीं पर अुतारनेकी सूचना थी, लेकिन मेरा निश्चय सीवा आश्रम जानेका था। अिसलिअे मैं सीधा आश्रमको गया। आश्रमको खाली और वापूजीकी कुटीको वन्द देखकर मुझे तीव्र वेदना हुअी। मैंने हरिभाअूसे कुटीकी चावी मांगी तो अुसने वताया कि चावी चिमनलाल भाअीके पास है। मैंने लानेको कहा और मैं वरामदेमें वैठकर प्रार्थना करने लगा। अितनेमें हरिभाअू चावी ले आया और कुटी खोली। मैंने 'प्रभु मोरे अवगुण चित न धरो' भजन आरंभ ही किया था कि मेरे धीरजका वांध टूट गया। मैं वापूजीके वैठनेकी जगह पर औंधा पछाड़ खाकर गिर पड़ा और जोरसे चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगा। अितनेमें चिनमलालभाअी दूसरे आश्रमवासियोंके साथ वहां आ गये। मेरे वुरे हाल देखकर सवकी आंखें गीली हो गअीं। चिमनलालभाअी मुझे अुठाने और धीरज वंधानेका प्रयत्न करने लगे तो मैंने अुनको सुनाया कि क्या हमें वापूजीने अिसलिअे पाला था कि हम अुनके वाद आश्रम और कुटीको वन्द करके चले जायं? रोना वन्द करना मेरे कावूसे वाहर हो गया था। मेरा मगज फटा जा रहा था। मुझे तो डर था ही, दूसरे साथियोंको भी डर हो गया था कि कहीं मेरे हृदयकी गति न रुक जाय। लेकिन अितने पुण्य नहीं थे, अिसलिअे सिर पर पानी और भीगा कपड़ा रखनेसे कठिनतासे रोना रोक सका। वादमें सवने मिलकर प्रार्थना की।

मेरे जीवनमें अिस प्रकारका यह पहला आघात था। मैंने अनेक कुटुम्वी-जनों और मित्रोंको खोया है। लेकिन मेरा धीरज कभी अितना टूटा हो और

किसीके लिअे भी मैं अितना रोया होअूं यह याद नहीं आता। मैंने निश्चय किया कि आजसे कुटी खुली रहेगी। और आश्रममें दोनों समय प्रार्थना और सूत्रयज्ञ भी चलेगा। कोअी न आया तो मैं अकेला ही यह करूंगा। अितना निश्चय करनेके बाद मेरा दिल कुछ हलका हुआ। अिस निश्चयके अनुसार शामको आश्रमकी प्रार्थना-भूमि पर प्रतिदिन प्रार्थना होने और बापूकी कुटी खुली रहनेकी मैंने घोषणा कर दी। प्रार्थनामें गांवके ५०–६० व्यक्ति आये थे। अुन्हें अिससे बड़ी खुशी हुअी। लेकिन आश्रमके कोअी लोग अुस दिन प्रार्थनामें शरीक नहीं हुअे। दूसरे दिन २९ तारीखको मगनवाड़ीमें सर्व-सेवा-संघकी कार्यकारिणीकी सभा थी। और अुसमें कुटीके प्रश्न पर चर्चा होनेवाली थी। भाअी राधाकृष्णजी बजाजने आग्रहके साथ सूचना की कि मैं और चिमनलालभाअी सभामें आयें। मेरी अिच्छा तो नहीं थी लेकिन अुनके आग्रहसे गया। जब सभामें कुटीका प्रसंग निकला तो मैंने कहा कि पहले थोड़ी बात मेरी सुन लीजिये। बादमें आगेका सोचना ठीक होगा। लोगोंने मेरी बात सुनना कबूल किया। मैंने कहा कि कुटी तो मैंने कल खोल दी है। अुसकी तीन शर्तें भी रख दी हैं:

१. कुटी हर समय खुली रहेगी।

२. आश्रममें दोनों समय प्रार्थना चलेगी।

३. सूत्रयज्ञ नियमित रूपसे होगा।

अिस पर सब लोग चौंके। क्योंकि मेरा नाम राय देनेवालों या कुटीका निर्णय करनेवालोंकी अुनकी लिस्टमें नहीं था। लेकिन संघके अध्यक्ष धीरेन्द्रभाअी मजूमदारने बड़ी खूबीसे काम लिया। वे बोले, बस कुटी तो खुल ही गअी है। खुली जाहिर कर दो। भाअी राधाकृष्णजीने कहा कि कल ३० तारीखसे खोलना ठीक होगा। धीरेन्द्रभाअीने कहा, कलसे क्यों? आजसे क्यों नहीं? वे चुप रहे। शंकरराव देवजीने कहा कि अभी तो दलवन्तसिंहजीके दो प्रश्न हल करने बाकी हैं। प्रार्थना और सूत्रयज्ञ कौन करेगा? अितनेमें आशालताबहन और आर्यनायकम्‌जी खड़े होकर बोले कि अिन दो बातोंकी जवाबदारी हम लेते हैं। सबके चेहरे खुशीसे खिल अुठे। मेरी खुशीका तो पार न रहा। आशाबहन और आर्यनायकम्‌जी अुसी समय सभासे अुठकर सेवाग्राम चले गये। अुन्होंने बापूजीकी कुटीको सजाया और शामको बड़ी ही प्रसन्नताके साथ सबने प्रार्थना की। सेवाग्रामके लोग भी खुश हो गये, क्योंकि कुटी बन्द होनेका अुनको भी बड़ा दुःख था।

मेरी तीनों शर्तें स्वीकार हो जानेसे मेरी आत्माको काफी शांति मिली और सन्तोष हुआ। लेकिन मेरी हार्दिक अभिलाषा यही थी और है कि सारा आश्रम फिरसे खोल दिया जाय और बापूजीके कुछ योग्य साथी वहीं रहें, जो आश्रमकी मुलाकात लेनेवाले भाओ-बहनोंके सजीव सम्पर्कमें रह कर बापूजीके अुस पुण्य कार्यक्षेत्रकी रक्षा करते रहें। मेरी यह नम्र सूचना मैंने विनोबाजीके सामने आग्रहपूर्वक रखी है, लेकिन अभी तक अुन्होंने अुस पर गौर नहीं किया है। आज भी मैं बार-बार विनयपूर्वक अुनसे और सर्व-सेवा-संघसे यह निवेदन करता हूं कि वे मेरी सूचना पर गहरा विचार करें और सेवाग्राम आश्रमको खोल दें। बापूजीने अेक प्रतिज्ञा-पत्र तैयार किया था, जिसमें लिखा था: "मेरे मरनेके बाद अपने मरने तक जो आश्रममें ही रहें वे ही अिस पर सही करें।" मेरी नम्र रायमें तो अुसका यही अर्थ होता है कि बापूजीके मरनेके बाद भी आश्रम अुनके सहयोगियोंके जीवन-काल तक तो कमसे कम चलता रहे और भावी पीढ़ीको सच्चे आश्रम-जीवनकी और अुदात्त जनसेवाकी प्रेरणा देता रहे।

आज आश्रम और बापू-कुटीकी देखरेख तथा रक्षाका काम सर्व-सेवा-संघके हाथमें है। श्री अुका बाबाजी कुटीकी सेवा बड़ी ही श्रद्धा और तत्परतासे कर रहे हैं। हरिभाअू और नारायण आश्रमकी साफ-सफाओका काम अुसी श्रद्धासे कर रहे हैं। आश्रमकी खेती सहकारिताके आधार पर भाओ नामदेव राणे बड़ी लगनसे चला रहे हैं। भाओ अनन्तरामजी अपनी कमजोर तबीयत रहते हुअे भी कस्तूरबा दवाखानेसे जाकर अुनको कीमती सहायता देते रहते हैं। श्री चिमनलालभाओ अत्यन्त दुर्बल अवस्थामें भी आश्रमके मकान और खेती आदि सब चीजोंकी देखभाल बड़ी चिन्ताके साथ करते हैं और आश्रम-परिवारके जो लोग बाहर हैं अुनके साथ पत्रव्यवहार द्वारा सजीव सम्पर्क बनाये रखते हैं। आश्रमकी मुलाकात लेनेवालोंकी आवभगतका भार भी अुन्हींके सिर पर है। वे सन् १९१७ से अन्त तक बापूके साथी रहे और अुनके अनन्य भक्त हैं।

भले अिसे कोओ ममत्व कहे, लेकिन मेरी ममता और श्रद्धा बापूकी अिस तपोभूमिके प्रति अपनी मांके जैसी ही है। सचमुच आज भी मुझे अुससे आश्वासन मिलता रहता है। मैं मानता हूं कि मेरे ही जैसी श्रद्धा और भक्ति देश-विदेशके अनेक श्रद्धालु जनोंकी भी अुस तपोभूमिके प्रति है और सदा बनी रहेगी।

१

बापूके समयकी आश्रमकी प्रार्थना

प्रातःकालकी प्रार्थना

बौद्धमंत्र

नं म्यो हो रें गे क्यो ।
नं म्यो हो रें गे क्यो ।
नं म्यो हो रें गे क्यो ।।

नित्यपाठ

हरिः ॐ ।
ओशावास्यं इदम् सर्वम् यत् किं च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधः कस्यस्विद् धनम् ।।

प्रातःस्मरणम्

प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरद् आत्मतत्त्वम्
सत्-चित्-सुखं परमहंस-गतिं तुरीयम् ।
यत् स्वप्न-जागर-सुषुप्तम् अवैति नित्यम्
तद् ब्रह्म निष्कलम् अहं न च भूत-संघः ।।१।।
प्रातर् भजामि मनसो वचसाम् अगम्यम्
वाचो विभान्ति निखिला यद् अनुग्रहेण ।
यन् 'नेति नेति' वचनैर् निगमा अवोचुस्
तं देव-देवम् अजम् अच्युतम् आहुर् अग्र्यम् ।।२।।
प्रातर् नमामि तमसः परम् अर्कवर्णम्
पूर्णं सनातन-पदं पुरुषोत्तमाख्यम् ।
यस्मिन् अिदम् जगद् अशेषम् अशेषमूर्तौ
रज्ज्वां भुजंगम अिव प्रतिभासितं वै ।।३।।
समुद्रवसने ! देवि ! पर्वत-स्तन-मण्डले ! ।
विष्णु-पत्नि ! नमस् तुभ्यम् पादस्पर्शं क्षमस्व मे ।।४।।
या कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवला या शुभ्र – वस्त्रावृता
या वीणा-वरदण्ड-मण्डित-करा या श्वेतपद्मासना ।

या ब्रह्माऽच्युत-शंकर-प्रभृतिभिर् देवैः सदा वंदिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥५॥

वक्रतुण्ड ! महाकाय ! सूर्य-कोटि-सम-प्रभ !
निर्विघ्नं कुरु मे देव ! शुभ-कार्येषु सर्वदा ॥६॥

गुरुर् ब्रह्मा, गुरुर् विष्णुर्, गुरुर् देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥७॥

शान्ताकारं भुजग-शयनं पद्मनाभं सुरेशम् ।
विश्वाधारं गगन-सदृशं मेघवर्णं शुभांगम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर् ध्यान-गम्यम् ।
वन्दे विष्णुं भव-भय-हरं सर्वलोकैकनाथम् ॥८॥

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।
विहितम् अविहितं वा सर्वम् अेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे ! श्री महादेव ! शम्भो ! ॥९॥

न त्वहं कामये राज्यम् न स्वर्गं नापुनर्भवम् ।
कामये दुःख-तप्तानाम् प्राणिनाम् आर्तिनाशनम् ॥१०॥

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्ताम्
न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः ।
गो-ब्राह्मणेभ्यः शुभम् अस्तु नित्यम्
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ॥११॥

नमस् ते सते ते जगत्कारणाय
नमस् ते चिते सर्वलोकाश्रयाय ।
नमोऽद्वैत-तत्त्वाय मुक्तिप्रदाय
नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय ॥१२॥

त्वम् अेकं शरण्यं त्वम् अेकं वरेण्यम्
त्वम् अेकं जगत्पालकं स्वप्रकाशम् ।
त्वम् अेकं जगत्-कर्तृ-पातृ-प्रहर्तृ
त्वम् अेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ॥१३॥

भयानां भयं, भीषणं भीषणानाम्
गतिः प्राणिनां, पावनं पावनानाम् ।

बापूकी छायामें

महोच्चैः पदानां नियन्तृ त्वम् अेकम्
परेषां परं, रक्षणं रक्षणानाम् ॥१४॥
वयं त्वां स्मरामो, वयं त्वां भजामो
वयं त्वां जगत्-साक्षि-रूपं नमामः।
सद् अेकं निधानं निरालंबम् ओशम्
भवाम्भोधि-पोतं शरण्यं व्रजामः ॥१५॥

अेकादश व्रत

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह ।
शरीरश्रम, अस्वाद, सर्वत्र भयवर्जन ॥
सर्वधर्मी समानत्व, स्वदेशी, स्पर्शभावना ।
हीं अेकादश सेवावीं नम्रत्वें व्रतनिश्चयें ॥

क़ुरानसे प्रार्थना

अअूज़ु बिल्लाहि मिनश् शैत्वानिर् रजीम्।
बिस्मिल्लाहिर् रह्मानिर् रहीम।
अल् हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन।
अर् रह्‌मानिर् रहीम, मालिकि यौमिद् दीन।
ओयाक न अ़बुदु व ओयाक नस्तओन।
इह्‌दिनस् सिरातल् मुस्तक़ीम ।
सिरातल् लज़ीन अन् अ़म्त अलैहिम;
गैरिल् मगज़ूबे अ़लैहिम वलज़्ज़ु आलीन॥
आमीन

बिस्मिल्लाहिर् रह्मानिर् रहीम।
क़ुल हुवल्लाहु अहद् । अल्लाहुस्समद्।
लम् यलिद्, वलम् यूलद्;
व लम् यकुल्लहू कुफ़वन् अहद्॥

जरथोस्ती गाथा

(पारसी प्रार्थना)

मज़दा अत मोइ वहिश्ता
स्रवा ओस्वा श्योथनाचा वओचा।

बापूके समयकी आश्रमकी प्रार्थना

ता—तू वहू मनंघहा
अशाचा अिघुदेम स्तुतो
क्षमा का श्श्रा अहूरा फेरखेम्
वस्ना हअि श्येम् दाओ अहूम् ।।

[नोट : अिसके बाद भजन, घुन और साप्ताहिक गीता-पारायण होता था ।]

सायंकालकी प्रार्थना

यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैर्
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैर् गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थिततद्‌गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ।।

स्थितप्रज्ञ-लक्षणानि

अर्जुन अुवाच

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किम् आसीत व्रजेत किम् ।।१।।

श्री भगवान् अुवाच

प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ ! मनोगतान् ।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस् तदोच्यते ।। २ ।।
दुःखेष्वनुद्विग्न-मनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।
वीत-राग-भय-क्रोधः स्थितधीर् मुनिर् अुच्यते ।।३।।
यः सर्वत्रानभिस्नेहस् तत् तत् प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।।४।।
यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस् तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।५।।
विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः ।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ।।६।।
यततो ह्यपि कौन्तेय ! पुरुषस्य विपश्चितः ।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ।।७।।

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥८॥
ध्यायतो विषयान् पुंसः संगस् तेषूपजायते।
संगात् संजायते कामः कामात् क्रोधोऽभिजायते ॥९॥
क्रोधाद् भवति संमोहः संमोहात् स्मृति-विभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात् प्रणश्यति ॥१०॥
राग-द्वेष-वियुक्तैस् तु विषयान् इन्द्रियैश् चरन्।
आत्मवश्यैर् विधेयात्मा प्रसादम् अधिगच्छति ॥११॥
प्रसादे सर्वदुःखानाम् हानिर् अस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥१२॥
नास्ति बुद्धिर् अयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना।
न चाभावयतः शान्तिर् अशान्तस्य कुतः सुखम् ॥१३॥
इन्द्रियाणां हि चरताम् यन् मनोऽनुविधीयते।
तद् अस्य हरति प्रज्ञाम् वायुर् नावम् इवाम्भसि ॥१४॥
तस्माद् यस्य महाबाहो! निगृहीतानि सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस् तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥१५॥
या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥१६॥
आपूर्यमाणम् अचल-प्रतिष्ठं
समुद्रम् आपः प्रविशन्ति यद्वत्।
तद्वत् कामा यं प्रविशन्ति सर्वे
स शान्तिम् आप्नोति न कामकामी ॥१७॥
विहाय कामान् यः सर्वान् पुमांश् चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिम् अधिगच्छति ॥१८॥
एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति।
स्थित्वाऽस्याम् अन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणम् ऋच्छति॥ १९॥
(भगवद्गीता, २ : ५४-७२)

[नोट : प्रार्थनाके अन्तमें भजन, धुन और रामायणका पाठ होता था।]

२

वर्तमानकालीन प्रार्थना

प्रातःकालकी अुपासना

नं म्यो हो रें गे क्यो।
नं म्यो हो रें गे क्यो।
नं म्यो हो रें गे क्यो।।

औशावास्य अुपनिषद्

ॐ पूर्ण है वह, पूर्ण है यह
पूर्णसे निष्पन्न होता पूर्ण है।
पूर्णमें से पूर्णको यदि लें निकाल
शेष तब भी पूर्ण ही रहता सदा।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

१. हरिः ॐ औशका आवास यह सारा जगत्
जीवन यहां जो कुछ अुसीसे व्याप्त है।
अतअेव करके त्याग अुसके नामसे
तू भोगता जा वह तुझे जो प्राप्त है।
धनकी किसीके भी न रख तू वासना।

२. करते हुअे ही कर्म अिस संसारमें
शत वर्षका जीवन हमारा अिष्ट हो।
तुझ देहधारीके लिअे पथ अेक यह
अतिरिक्त अिससे दूसरा पथ है नहीं।
होता नहीं है लिप्त मानव कर्मसे,
अुससे चिकटती मात्र फलकी वासना।

३. मानी गयी हैं योनियां जो आसुरी
छाया हुआ जिनमें, तिमिर घनघोर है,
मुड़ते अुन्हींकी ओर मरकर वे मनुज
जो आत्मघातक शत्रु आत्मज्ञानके।

४. चलता नहीं, फिरता नहीं, है अेक ही,
वह आत्मतत्त्व सवेग मनसे भी अधिक,

अुसको कहीं भी देव धर पाते नहीं,
अुनको कभीका वह स्वयं ही है धरे।
वह अुन सभीको, दौड़ते जो जा रहे,
ठहरा हुआ भी छोड़ पीछे ही गया।
वह 'है', तभी तो संचरित है प्राण यह,
जो कर रहा क्रीड़ा प्रकृतिकी गोदमें।

५. वह चल रहा है और वह चलता नहीं
वह दूर है, फिर भी निरंतर पास है।
भीतर सभीके बस रहा सर्वत्र ही
बाहर सभीके है तदपि वह सर्वदा।

६. जब जो निरन्तर देखता है, भूत सब
आत्मस्थ ही है, और आत्मा दीखता
सम्पूर्ण भूतोंमें जिसे, तब वह पुरुष
अूबा किसीके प्रति नहीं रहता कहीं।

७. ये सर्वभूत हुअे जिसे हैं आत्ममय,
अेकत्वका दर्शन निरन्तर जो करे,
तब अुस दशामें अुस सुधीजनके लिअे
कैसा कहां क्या मोह, कैसा शोक क्या?

८. सब ओर आत्मा घेरकर आत्मज्ञ सो
है बैठ जाता, प्राप्त कर लेता अुसे—
जो तेजसे परिपूर्ण है, अशरीर है
यों मुक्त है तनुके व्रणादिक दोषसे,
त्यों स्नायु आदिक देहगुणसे भी रहित—
जो शुद्ध है, वेधा नहीं अघने जिसे।
वह क्रान्तदर्शी, कवि, वशी, व्यापक, स्वतन्त्र
सब अर्थ अुसके सध गये हैं ठीकसे
सुस्थिर रहेंगे जो चिरन्तन कालमें।

९. जो जन अविद्यामें निरन्तर मग्न हैं,
वे डूब जाते हैं घने तमसान्धमें।
जो मनुज विद्यामें सदा रममाण हैं
वे और घन तमसान्धमें मानो धंसे।

वर्तमानकालीन प्रार्थना

१०. वह आत्मतत्त्व विभिन्न विद्यासे कथित
अेवं अविद्यासे कथित है भिन्न वह।
यह तथ्य हमने धीर पुरुषोंसे सुना,
जिनसे हुआ अुस तत्त्वका दर्शन हमें।

११. विद्या-अविद्या—अिन अुभयके साथमें,
हैं जानते जो मनुज आत्मज्ञानको
अिसके सहारे तर अविद्यासे मरण
वे प्राप्त विद्यासे अमृत करते सदा।

१२. जो मनुज करते हैं निरोध अुपासना
वे डूब जाते हैं घने तमसान्धमें
जो जन सदैव विकासमें रममाण हैं
वे और घन तमसान्धमें मानो धंसे।

१३. वह आत्मतत्त्व विकाससे है भिन्न ही
अेवं विभिन्न निरोधसे।
कहते अुसे अेवं विभिन्न निरोधसे।
यह तथ्य हमने धीर पुरुषोंसे सुना
जिनसे हुआ अुस तत्त्वका दर्शन हमें।

१४. ये जो विकास-निरोध, अिन दोके सहित
हैं जानते जो मनुज आत्मज्ञानको
अिसके सहारे मरण पैर निरोधसे
पाते सदैव विकासके द्वारा अमृत।

१५. मुख आवरित है सत्यका अुस पात्रसे
जो हेममय है, विश्व-पोषक हे प्रभो,
मुझ सत्यधर्माके लिअे वह आवरण
तू दूर कर, जिससे कि दर्शन कर सकूं।

१६. तू विश्वपोषक है तथा तू ही निरीक्षक अेक है
तू कर रहा नियमन तथा तू ही प्रवर्तन कर रहा
पालन सभीका हो रहा तुझसे प्रजाकी भांति है।
निज पोषणादिक रश्मियां तू खोलकर मुझको दिखा
फिरसे दिखा अेकत्र त्यों ही जोड़ करके तू अुन्हें।
अब देखता हूं रूप तेरा तेजयुत कल्याणतम
वह जो परात्पर पुरुष है, मैं हूं वही।

१७. यह प्राण अुस चेतन अमृतमय तत्त्वमें
हो जाय लीन, शरीर भस्मीभूत हो।
ले नाम ओश्वरका अरे संकल्पमय
तू स्मरण कर, अुसका किया तू स्मरण कर।
संन्यस्त करके सर्वथा संकल्प निज
हे जीव मेरे, स्मरण करता रह अुसे।

१८. हे मार्गदर्शक दीप्तिमन्त प्रभो, तुझे
हैं ज्ञात सारे तत्त्व जो जगमें ग्रथित।
ले जा परम आनन्दमयकी ओर तू
ऋजुमार्गसे, हमको कुटिल अघसे बचा।
फिर-फिर विनय नत नम्र वचनोंसे तुझे।
फिर-फिर विनय नत नम्र वचनोंसे तुझे।

ॐ पूर्ण है वह, पूर्ण है यह
पूर्णसे निष्पन्न होता पूर्ण है।
पूर्णमें से पूर्णको यदि लें निकाल
शेष तब भी पूर्ण ही रहता सदा।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

सायंकालकी अुपासना

यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैर्
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैर् गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः।

अर्जुनने कहा

१. स्थितप्रज्ञ समाधिस्थ कहते कृष्ण हैं किसे,
स्थितधी बोलता कैसे, बैठता और डोलता।

श्री भगवानने कहा

२. मनोगत सभी काम तज दे जब पार्थ जो,
आपमें आप हो तुष्ट, सो स्थितप्रज्ञ है तभी।

३. दुःखमें जो अनुद्विग्न, सुखमें नित्य निःस्पृह,
वीत-राग-भय-क्रोध, मुनि है स्थितधी वही।
४. जो शुभाशुभको पाके न तो तुष्ट न रुष्ट है,
सर्वत्र अनभिस्नेही, प्रज्ञा है अुसकी स्थिरा।
५. कूर्म ज्यों निज अंगोंको, अिन्द्रियोंको समेट ले—
सर्वशः विषयोंसे जो, प्रज्ञा है अुसकी स्थिरा।
६. भोग तो छूट जाते हैं निराहारी मनुष्यके
रस किन्तु नहीं जाता, जाता है आत्म-लाभसे।
७. यत्नयुक्त सुधीकी भी अिन्द्रियां ये प्रमत्त जो
मनको हर लेती हैं, अपने बलसे हठात्।
८. अिन्हें संयमसे रोके, मुझीमें रत, युक्त हो,
अिन्द्रियां जिसने जीतीं, प्रज्ञा है अुसकी स्थिरा।
९. भोग-चिन्तन होनेसे होता अुत्पन्न संग है,
संगसे काम होता है, कामसे क्रोध भारत।
१०. क्रोधसे मोह होता है, मोहसे स्मृति-विभ्रम,
अुससे बुद्धिका नाश, बुद्धिनाश विनाश है।
११. राग-द्वेष-परित्यागी करे अिन्द्रिय-कार्य जो,
स्वाधीन वृत्तिसे पार्थ, पाता आत्म-प्रसाद सो।
१२. प्रसाद-युत होनेसे छूटते सब दुःख हैं,
होती प्रसन्नचेताकी बुद्धि सुस्थिर शीघ्र ही।
१३. नहीं बुद्धि अयोगी के, भावना अुसमें कहीं,
अभावन कहां शान्त, कैसे सुख अशान्तको।
१४. मन जो दौड़ता पीछे अिन्द्रियोंके विहारमें,
खींचता जनकी प्रज्ञा, जलमें नाव वायु ज्यों।
१५. अतअेव महाबाहो, अिन्द्रियोंको समेट ले—
सर्वथा विषयोंसे जो, प्रज्ञा है अुसकी स्थिरा।
१६. निशा जो सर्वभूतों की, संयमी जागते वहां,
जागते जिसमें अन्य, वह तत्त्वज्ञकी निशा।
१७. नदी-नदोंसे भरता हुआ भी,
समुद्र है ज्यों स्थिर सुप्रतिष्ठ,

त्यों काम जिसमें सारे समावें,
पाता वही शान्ति, न कामकामी।

१८. सर्व-काम-परित्यागी, विचरे नर निःस्पृह,
अहंता-ममता-मुक्त, पाता परम शान्ति सो।

१९. ब्राह्मी स्थिति यही पार्थ, अिसे पाके न मोह है,
टिकती अंतमें भी है, ब्रह्मनिर्वाण-दायिनी।

नाम-माला

ॐ तत्सत् श्री नारायण तू, पुरुषोत्तम गुरु तू,
सिद्ध बुद्ध तू, स्कन्द विनायक, सविता पावक तू।
ब्रह्म मज्द तू, यह्व शक्ति तू, ओशु-पिता प्रभु तू,
रुद्र विष्णु तू, राम कृष्ण तू, रहीम ताओ तू।
वासुदेव गो-विश्वरूप तू, चिदानन्द हरि तू,
अद्वितीय तू, अकाल निर्भय, आत्म-लिंग शिव तू।

अेकादश व्रत

अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य असंग्रह।
शरीरश्रम अस्वाद सर्वत्र भयवर्जन॥
सर्वधर्म समानत्व स्वदेशी स्पर्शभावना।
विनम्र व्रत निष्ठासे ये अेकादश सेव्य हैं॥